८५०२ — चा०

अर्पन

मनहर छंद

परम उपकारी गुनी सरल स्वाभाव धारी।
महान् तपश्वी जपी शुद्ध आचरन है ॥
संसार के पिता जष्ट संयमें पूजीता ॥
पायो आपही के प्रशाद ज्ञन तप धन है।
आपके सहाय रचे ग्रंथ भये प्रस्तार ॥
भयो प्रसिद्ध हैद्रावाद यह दक्खन है ॥
श्रीकेवल ऋषिजी महाराजकोअमोल शिशु
अघोद्धार कथागार रची करत अर्पन है।

आदार

मनहर छंद

कच्छ स्वच्छ देश माय अष्ट कोटी सम्प्रदाय ॥
मोटे पक्षे पूज्य श्री कर्म सिंह के चेले हैं॥
शुद्धा चारी कविश्वर समीदमी ज्ञानागर॥
मुनिश्री नागचन्द्र ज्ञाना नन्दे खेले हैं ॥
आपनेयाददीकथारी।किन्नर्नाताकेअनुसारी॥
स्व बुद्धि ग्रंथआधार यामे सम्बन्ध मेलेहैं ॥
लिखीपोथीतहांपठाइ लेपरशंस्यापीछीआइ॥
ता लिये अभार ताको मानत अमोलहै ॥

प्रस्तावना.

श्लोक—अष्टादश पुराणाय । व्यासस वचनंद्वयं ॥
परोपकाराय धर्मायः । पापाय पर पीडनं ॥

चौपाइ—सर्व विस्व में प्रकट बात।धर्म से सुख पापसेदुःखपात
योंजान मूर्खेच्छु औ धर्म करे।पाप का नाम लेतेही डरे
परन्तु धर्म पाप का भेद । जानत कोइक यह बडी खेद
धर्म नाम ले पाप निपाय।धर्म कों पाप जान छिटकाय॥
मनुष्य कों अग्नि मांहे जलाय।नरमेध सोयज्ञ कहलाय
यज्ञका कर्ता स्वर्ग में जाय।यों जूलम करंनधर्मइच्छाय
जग भूषण नरकों हीजलाय।धर्ममाने यहआश्चर्यआय
तो क्या कहूं अन्यकरेलघुपाप।जो करते भोगतेसंताप।
दुःखी बीमार कों मारने मांय।कितने ही धर्म रहेमनाय
सिंहसर्पविच्छु पट मल तांय।क्षुद्रिकहेमारे धर्मकहाय
यों खोटा धर्म रह केइ करे।जिससे दुःखपाते हैं अपर॥
ताते केते कहे धर्म दुःख दाय।पापही से कहते सुखपाय
केते बने हैं नास्तिक मति। धर्म पाप सब झूट कथा ॥
ऐसी भ्रमणा जग की देख।बोले व्यासजी करन विवेक

ता अनुसार गणधर महाराज। शास्त्र रचे सो तारे आज ॥
जिन में पृथक२अधिकार। दुःख दायक जो पाप अठार ॥
दृष्टांत भी पृथक २ दिये। बहु सुखी सो जाने रिये॥ २७ ॥
सर्व धर्मेच्छु को जानन काजाएकही ग्रंथ में साजा सो साज
दृष्टांत से शीघ्र समझ में आयाताहिये छत्तीस कथी कथाय
कितनी मूल शास्त्र अनुसार। कितनी ग्रंथ से पढी सुनी धार॥
क्षेत्र काल भाव समय के जोग।रचा ग्रंथ ये बुद्धिके योग ॥
छन्द बंध बनाया यह ग्रंथ।परन्तु अशुद्धीयों रही अत्यन्त॥
पिंगल गण से यह है विरुद्ध।कोविद कवी के भाव अशुद्ध ॥
ज्यों शिशु प्रकट तें जबान।बोले तोतला अशुद्ध उमंगान ॥
ताको शुद्ध करे प्रेमी सज्जन।त्यों यह ग्रंथ मानो कवी जन॥
शिशू आप को जान अजान।हँसो मतसुधारो करुणा आन
यह विज्ञाप्ति पंडितों से करी।ताके समर्पण पोथी यह धरी।
पाठ को! पढीये इस दत्त चित्ता।यत्ना से सोधी ग्रहण करो।हित
मुरोल मतिये अवगुण त्याग। अथोद्धार कीजो महाभाग॥
येही नम्र अमोलक अरजी।मान ना तो है आपकी मरजी।
कथक पाठक को आशय प्रमान।फल निश्चय होवेगा सुजान

ग्रंथ रचिता का संक्षिप्त जीवन.

इंद्रविजय-छंद.

मरुस्थल देशके मेड़ते शेहर में शेठ कस्तूर चंदजी धन धारी ।
व्योपार काज आये मालवे में आसटे में रहे पत्नी संगारी ॥
चार पुत्र तज सेठ अकस्मात् मुवो। पत्नी जवाराबाई दीक्षाधारी।
वर्ष अष्टादश संयम पाल सो। पहोंची स्वर्ग में आत्म उद्धारी।
ताके [illegible] पुत्र केवल चंद रहे सो शेहर भोपाल में आइ ॥
[illegible] मार्गी का प्रतिक्रमण । आदि पढे तान के मत सांइ ॥
धर्मी के स्थान देखे हिंसकृत्य। मात्र मति से सो न रुचाइ ॥
पुण्य जोग तहां साधु मार्गी के। साधु कुंवरजी ऋषि पधार्याइ ॥
सुन सद्बोध [illegible] जानदया धर्म। धर्मका ज्ञान पठण जब [illegible]
[illegible] वैराग्य [illegible] भये दीक्षा की। [illegible] राजनमो हुसरी।
पुत्र पालन [illegible] मरा। चले मारवाड रतलाम उतरीया।
[illegible] श्रावक कस्तूर चंदजी। तरुण स जोड ब्रह्मचर्य धारी।
सो लाये पुण्य उदय [illegible] विवाहा की यास दीनी दर्शारी।
[illegible] वैरागी [illegible] फिर [illegible]॥
सुन केवलचंद [illegible] ब्रह्मचर्य। आये भोपाल धर्मका मारी॥
[illegible] रतलाम के [illegible] में। [illegible] वर्ष वये दीक्षा लीनी ॥
[illegible] की [illegible] जीका ज्ञान पढे फिर [illegible]।

—

ग्रन्थ प्रसिद्ध कर्ता का संक्षिप्त

जीवन चरित्र.

मनहर—छंद.

लाला राम नारायण, के पुत्र सुखदेव सहाय ॥
धर्म ज्ञान नीती दया लक्ष्मी से सोभावे हैं ॥
अग्रवाल वंश में अवतंस जवेरी में श्रेय
लख्खो रुपे लेन देन दरबार में थावे हे ॥
संसारिक कार्यों माहे।लख्खो रूपे खरच करे ॥
स्वजन पर जन को सो शक्ति सर पोषावे हैं ॥
दान शाळा चलत मिलत सदाव्रत तहां ॥
"राजा बाहदर" पद्वी सिरकार से पाये हैं ॥ १ ॥
रहते दिल्ली के पास महेंद्रगढ ग्राम मांहे ॥
उन्नीसो बीस पोष् पुनम जन्म पावे हैं ॥
पुज्य श्री मनोहर दासजी के समुदाये ॥
मंगळ सेन महाराजाके शिष्य सो कहावे हैं ॥
व्यापार करण आये (दक्षिण,) हैद्राबाद, मांये ॥

खरची हजारों रूपे मंदिर बंधाये है ॥
स्वामी वत्सल प्रभावना आदिधर्मोन्नति करी।
साधु दर्शन बिन जैन मंदिर में जावे हैं ॥ २ ॥
लसठ शाल पुण्य अधिक विशाल भये ॥
तीन ठाने साधुजी महाराज यहां आये हैं ॥
तपस्वी केवल ऋषीजी अमोलक ऋषिसंग।
सुखाऋादिजी क्षेत्र नवा यह बनायेहै ॥
चारकमानमांय दीनीलालाजी रहनेको जाय!
ताते जैन धर्म सबगाम में फैलायेहै ॥
लालासुखदेव नितसुनेमुनिके व्याख्यान
ताते सत्यधर्महीका तत्वहीये पायेहै ३ ॥
बने दृढ श्रद्धावन्त शक्तिसी करणी करंत।
महा लाभकारी ज्ञान दान जान लियाहै ॥
हजारों खरचरूपे छपाइ पुस्तक हजारों।
भारतके धर्मेच्छुकों अमूल्य लाभदियाहै ॥
नोंपेनवे धर्मीयाको कान्फरन्स शभाकरी ॥
धर्मके सवस्थानेपोप यशजबर लियाहै ॥
ज्वालाप्रसाद जैसे पुत्ररत्न है लालजीके।
सदाग्हो सुखी यह एसोंका सफल जियाहै ॥ ४ ॥



 सूचना 

दक्षिण हैद्राबाद, के ज्ञान वृद्धि खाते से, जैन तत्वप्रकाश आदि ग्रंथों तथा मदन श्रेष्ट के आदि चरित्रों वगैर. जो पुस्तकें प्रसिद्ध हुइ थी उनकी प्रतों अब सिलक में नहीं रही है. इस लिये कोइ भी साहेब मंगानेकीतकलीफ लेनानहीं

खुश—खबर

(१) ध्यान कल्प तरु ग्रंथ की द्वितियावृति और केवल नंद छंदावली की चतुर्थावृति, फक्त इन दो पुस्तकों की थोडी सी प्रतों सिलक मे हैं जिनों को चाहिये सो टपाल खरच के चार आनेके स्टापभेजकरनिम्नलिखितपते से मंगा लीजियेजी.

☞ राजा बहादुर लाला नेतराम, राम नारायण, जौहरी चार कमान—(दक्षिण,) हैद्राबाद.

और

गुरुस्थान रोहण शत द्वारी

बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी लिखरहे हैं यह ग्रंथ बहुत ही गहन (ऊंड) विषय का होने से इसे लिखने में बारह महीं नें व्यतित होने का संभव है. फिर प्रसिद्ध हुवे बाद जो टपाल खरच के आठ आने के स्टांप के साथ चेउदह गुणस्थान के नाम अर्थ सहित लिख कर ऊपर लिखे हुवे पते पर भेजेंगे उन को ही भेजा जायेगा.

"सम कीतोसत्व जय विजय चरित्र"

यह ग्रन्थ अति रसिक रास बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी रचितहोलि तक छापकर बाहिर पडनेवाला हैं सो यहांकेज्ञानवृद्धि खातेकेतरफसेअमूल्य दियाजायगा.

सेक्रेटरी—ज्ञानवृद्धिखाता.

अघोद्धार कथागार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी.

अर्धोद्धार कथागार ग्रंथ की विषयानुक्रमणी

इति अठोद्धार कथासार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी

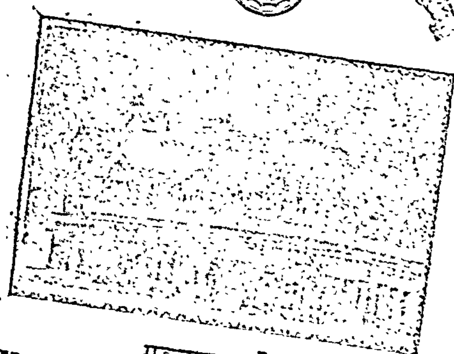
समाप्तम्

ॐ परमेश्वराय: नमः

अघोद्धार-कथासार



बीकानेर (राजपूताना)



मङ्गलाचरणम्

...हा जय जय श्री जिनदेवकी । जय जय श्रीगुरुदेव ॥
...र जय श्री दयाधर्म की । शिव सुखदे अह मेव ॥ १ ॥
...मूं अरिहंत सिद्धको । आचार्य उपाध्याय ॥
...मादि सर्व साधुको । प्रणामूं शीश नमाय ॥ २ ॥
...दि नमूं आदिनाथको । नमूं शांति जिनराय ॥
...नेमि पार्श्व प्रभू । नमूं हृद मानके पाय ॥ ३ ॥
...करूं श्रीगुरुचरण । ज्ञान दान दातार ॥
... जिनवाणी तुरी । शारदा दाता सार ॥ ४ ॥
...हि नर्व जेह पढ़ । वारम्वार नमस्कार ॥
...कथा ने रचूं । अघोद्धार-कथासार ॥ ५ ॥

नंबर विषय पृष्ठांक

मंजिल सतरवीं मायामोसोपापोद्धार-पूर्वविभाग-गूढअसत्य

मंजिल सतरवीं का उत्तर विभाग—"सरल सत्य"

मंजिल अठारवीं—मिथ्या दंशण शल्य पापोद्धार पुर्व-विभाग—मिथ्यात्व ३७६

मंजिल अठारवीं का—उत्तर विभाग—सम्यक्त्व ३९

शीखर—उपसंहार—सर्व पापोद्धार पुर्वविभाग—पाप ४२

शीखर—का उत्तरविभाग धर्म

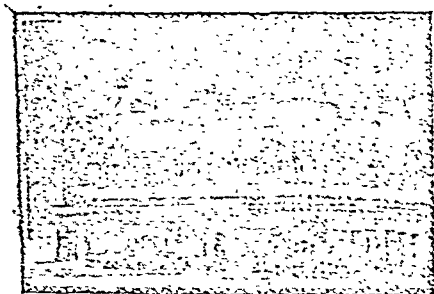
इति अघोद्धार कथागार ग्रंथकी विषयानुक्रमणी

समाप्तम्

ॐ परमेश्वराय नमः

अघोद्धार-कथागार





मङ्गलाचरणम्

दोहा जय जय श्री जिनदेवकी । जय जय श्रीगुरुदेव ॥
जय जय श्री दयाधर्म की । शिव सुखदे अह सेव ॥ १ ॥
प्रणमूं अरिहंत सिद्धको । आचार्य उपाध्याय ॥
गौतमादि सर्व साधुको । प्रणमूं शीश नमाय ॥ २ ॥
आदि नमूं आदिनाथको । नमूं शांति जिनराय ॥
नमूं नेमि पार्श्व प्रभू । नमूं वृद्ध मानके पाय ॥ ३ ॥
नमन करूं श्रीगुरुचरण । ज्ञान दान दातार ॥
नमन्ने जिनवाणी नमी । शारदा दाता सार ॥ ४ ॥
गुणोत्कृष्ट सर्वे जेह छे । [illegible] नमस्कार ॥
इनको [illegible] ॥ ५ ॥

* प्रवेशीका. *

लोकालोक वरणन्–मनहर–छन्द

सर्वज्ञ केवल धार । अनंत ज्ञान मझार ।
लोकालोक अवलोके । करामल' वत है ॥
अलोक अनन्तान्त । आकास्ति काय व्यापन्त ॥
ताके मध्य लोक पिन्ड । पंचास्ति रूपत है ॥
धर्मो धर्म आकाश । जीवैरु पुद्गल खास ।
इनो से व्यवहार सब । सत्यासत्य भापत है ॥
पुद्गल पर्याय रूप । पलटत ज्यू छांय धूप ।
अमोल अनूप गत । जिन वेन सत है ॥ १ ॥

" लोक वरणन् ॥ इन्द्रविजय–छन्द "

तीन विभाग बने इस लोकके ।अधो मध्यपातालबटानो॥
नीचे नरक मध्ये तिर्य लोक। ऊर्ध्वमें स्वर्ग ऽपवर्गबखानो
घनवाय तनवायघनोदधी। ® व्योमवलिये सर्वलोकघेरानो
सप्तनरकमध्यद्वीपअसंख्यहै।स्वर्गछव्वीसवरअपवर्गमानो॥
प्रथमननरकेकंआंतरमें।दशजातिकेभवनवासी।सुररहावे ॥
मध्य लोकके अंतरेमे । सोलह जातिके व्यन्तर बसावे ॥
मध्य तिर्यच नर जोतषी दीपे संपूर्ण लोकमें सुक्ष्मभरावे
बादर जीव हैं लोक के देशमें।यह प्रमानसिद्धान्त बतावे॥

' रहें आवले के फलके माफिक. ×मो. ® आकाश

मध्यलोक वरणन्—चौपाइ छन्द

मध्य लोकमध्य मेरुपहाड । दशसहश्राजोजनमूलमें जाड
एक लक्ष जोजन ऊंचाकहा । चारवन चुलिका सदिपरहा
उसके चौफेर गोलाकार । जंबूद्वीप लक्षजोजन विस्तार ॥
पूर्वपश्चिममेंमहाविदेह क्षेत्रउतरदक्षिणगिरीक्षेत्रविचित्र
देव कुरु उत्तर कुरु पास । निषद नीलवंत पर्वत खास ॥
ताडिग क्षेत्रहरी रम्यकजात । महाहेम रूपी गिरीतापास
ताडिगक्षेत्रहेमवय एरणवया चूलहेमशीखरीगिरि तांये॥
ताडिग क्षेत्र भरत एरावंतालवणो दधी सर्व द्वीप घेरंत ॥
ताहे घेरा द्वीप धातकी खंडाजंबू से दुगुने क्षेत्र गिरी मंडा॥
ता चौफेर कलो दधी समुद्रापुष्कर द्वीप ताहे घेरा सुद्र ॥
पुष्करमध्यमानुषोत्तरपहाडाआगेमनुष्यनहीं है गिडआड॥
आगे द्वीप सागर दुगुने असंख्य । तामेंरहते देव तिर्यंच ॥
अंतिम स्वयंभू रमण सागर । समुच्चय रचना कही इसपर ॥
अब आगे कथूं मूल मडाणानसादि मत पढो सुनो दयान ॥

भरत क्षेत्र वरणन—दोहा छन्द

प्रथम जंबूद्वीप में । दक्षिणादिशीसिरदार ॥
भरत क्षेत्रमें वर्ते । काल उभय प्रकार ॥ ११ ॥
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी । सागर थीत क्रोडाक्रोड ॥
छः छः आरे दोनुको वहने उतरने प्रौढ ॥ १२ ॥
सुखमां सुखम सुखम मं । सुखमां दुःखम तीन ॥

दुःखमां सुखम दुःखमरूं । दुःखमां दुःखम चीन ॥
सागर कोडा कोडके । चार तीन दो एक ॥
सहस्र बेचाली वर्ष नुन्य । पंचम षष्टम लेख ॥ ।

चंपानगरी वरणन्—चोपाइछन्द

इस अवसर्पणी कालके मांय । चौथा आरा गया वर्ताय ॥
ता समय अंग नामे देशमझार।चंपानगरी वसती मनोहार
बारह जोजन की लम्बी कही।नव जोजन चौडाइसे रही।
ऋद्धी समृद्धी करी पूर्ण भरी ।शोभित सक्षात् स्वर्गपुरी
रजाजी के ऊंचे आवास । जाने जाकर लगे हैं आकाश ॥
साहुकारों की हवेलीयों । दुकानो की श्रेणी छबीलीयें॥
रत्नो में झलके भरे नवरंग । गुमट कळश देख होवे दंग ॥
धर्मशाळ देवालय जान । दानशाळ वियाशाळ बखान
पुस्तकशाळ और औषधशाळ।अहारपानीकीशाळविशाळ
मध्ये में राज भुवन चौगान।जोहरी बाजार सराफा खास
बजाज,मेवाफरोस सोनार।कंदोई काच्छी मणीआर ॥
लोहकार चित्रकार कुंभार । अनुक्रमें सब भरे भन्डार॥

* पहिला सुखमा सुखमा आरा चार क्रोडा क्रोडी सागरोपमका.
दूसरा सुखम आरा तीन कोडाकोडी सागरोपमका.
तीसरा सुखमां दुःखम आरा दो क्रोडा क्रोडी सागर.
चौथा दुःखमा सुखम आरा बयालीस हजार वर्ष कम एक क्रोडा क्रोड सागर का.
पांचवा दुःखम आरा २१००० वर्ष का.
छट्ठा दुःखमा दुःखम आरा २१००० वर्ष का.

सत्यवंत अल्पइच्छि दयाल ।व्योपारीलेने देते बहूत माल॥
सत्य वंत है लक्ष्मी वास । निश्चिन्त करते सुख विलास ॥
दाता भुक्ता दानी विनीत ।गुणी गुणग्राही चले सूरीत ॥
परधन हरण पंगूसे जान । परस्त्री निरक्षण अंध समान ॥
मुक्क बोलन पर अवरण वाद। बहिरे सुणन पर निंदा नाद
चोरचुगल नट खट अरूजार । नगरी मेंनहीं बहुत नरनार
साता पाले सती संत गुणवंत। भिख्यारी थोडे तहां मिलंत
यहतो कहा नगरीअलंकार।और क्या करेंज्यादा विस्तार
दोहा—चंपानगरी को घेरीया । प्रकार द्रढउतंग ॥
विचित्र कांगूरे लगे । बुरज गोख सुरंग ॥ ११
मूल विस्तीर्ण वर सांकडा । गौ पूछ संस्थान॥
उंडी अंध जल से भरी । दुर्गम खाइ जान॥ १२
अस्त्र शस्त्र सब सज भरे । सत्घनी नाल कबान ॥
तीर तेग भालादिके । अनेक अरी गंजान ॥ १३ ॥

पूर्ण भद्र बाग वरणन्—उपजति—छन्द,

बागों बगीचे बहुतगा बारे। पूर्णभद्रबागसबमेंसिरकारे
अनेकवृक्षोंवेलीबहूतप्रकारे।पटऋतूकेसुखसदाउसमझारे
आमजामलींबूंरूनीमअनार। मोरछलीनारंगीकचनार ॥
बहुडपिंपलउम्बरकेरकेला।आसोपल्लवसेतूतबेलवेला ॥
सागपलासरूतालममाला अरणी खिरणीतिमरूऔरताल
बदामफणसरसीनाफलरासफल चंदनअगरतगरकोटवल

इत्यादिझाडोंसेवनसोभराहे।घटघोरछाइपेखतहराहे।१६
मंडप पे वेलीयोंकेइप्रकार।अंगूरचमेली चंपककचनार ॥
तोरुंककडी धीयारुनागरवेल।जाइजूइमोगरा कदूफेल १७
मध्यमध्यक्यारोंमेपुष्परंगढंग । केइकलीकेईफूलेहैं चंग ॥
गेंदाकेवडारुगुलाबगुलजारसेवतीकेतकीमालतीगंधसार
भ्रमर मकरंद मदमस्तकरेशोर।पक्षियोंकेगमबेठेढोरढोर
हंससारसचकवा रुचकोर।मेनातोतालवातीतरचीडीमोर
बदक बगले कउवेटेंक चंडूल।रुपारेलगणेशवेटेर बुलबुल
नीलकंठकोकिलमुर्गारुकावराचालिचांसगरुडपपयराशीकरा
तालावकूवेवावहादेपुष्करणी।नेरोकुंडझरणेलगेजलझरणा
छोडेहैंफूवारेचहुतप्रकार कोठीबंगलेहैंछप्परछटादार॥२१
उसवागकेमध्यआशोकवृक्ष।अतिरमणिकसर्ववृक्षोंमेश्रेष्ट
मूलऊंडाकन्दरहाफेलाय।स्कन्धऊपरशाखावहुतशोभाय
प्रतिशाखपत्रपुष्पफलभार। सघनरक्तवरणसदासुखकार
तसतलसपृथ्वीशिलापटएक। सोसिंहासनसंस्थानसूरेक
श्यामवरणकोमलरेशमजैसा।चित्रविचित्रसफांकांचतेसा
इत्यादिवरणनूवागकाजानो।अनेकजीवउसभेरहेसुखमानो

पूर्णभद्र यक्षकावरणन्-शीखरिणीछन्द

उसीबगीचेमांही।पूर्णभद्र यक्ष देवालय ॥
पुराना कहवाइ । घुमट कळशा सुवर्ण मय ॥
ध्वजा पाताका घंटा । पुष्प धूप दीप मुद्गल सय

महिमा जग फेलाइ । जातरी वहु आते आकर्षय॥ २५॥

राजाकावरणन्–मनहरछन्द.

चंपा नगरी के स्वामी । कोणिक नामे सुनामी ।
राज राजेश्वर महा-हेमवन्त समान हैं ॥
वल प्रथम सुघेन । तनु प्रथम संस्थान ।
लक्षण व्यंजन वपु शोभे देव वान हैं ॥
न्याय नीति में निपुण । शांत दांत आदि गुण ।
अपनी प्रजा को सोतो । जाने जिन जान हैं ॥
धर्म कर्म मर्म जान । अपने पर को पैछान ।
पलावे अखंड आन । नृप गुण खान हैं ॥ २६ ॥
पुरुषों मे सिंह समान । कमल पुंडरिक मान् ।
गंध हस्ती ज्यों प्रधान । ऐसे गुनवान हैं ॥
दल है प्रवल पास । कोप पूर्ण धन रास ।
शत्रू ओं का कीया नाश । दास रहे रान हैं ॥
राज है इन्द्र के जैसा । तेज है अग्नि के तैसा ।
यम जैसा क्रोध । योधा भीम के समान हैं ॥
न्यायी जैसे राम । दोनो देश के हैं श्याम ॥
इत्यादिक गुणोंके धाम । कोणिकराजन है ॥ २७ ॥

राणी गुण वरणन–हरीगीत छंद

धारणी राणी मधुरवाणी ननणलक्षणगुणज्ञहे॥
दूपण रहित है शीलभूपण । रूपअपछरा सुज्ञहै ॥

कलावती विचारातें कौशल्यता सब मन टरें ॥
व्यवहार स धन धर्म राधन इन गुण पतिचित्तरहे ॥

प्रधान गुण वरणन् सवैया (२३) सा

सुबुद्धिप्रधानचौविद्यानिधाननीतिन्यायजानोविचक्षणत
रंग्वराजमानप्रजासन्मानभरेहैंकोपानसुदक्षणते ॥
हुंसजोन्यायकर्गसिमजायासबेसुखदायासुरक्षणते ॥
रूपनेजयानेहगुणपुण्यग्यान ।ऐसहैदीवान। हैजक्सनते ॥

कोणिक राय का नियम-भुजंगीछंद

धर्मारम्भकाकोणिकराया,। जिनवचननित्यसुणनेउमाया
पग्यादुकेपुरुषरम्याडम्नकाम,जिमसेजिनेन्द्रकथानित्यपमे
नोकरबहुनउमकीआज्ञामाहीं, समाचारनित्यसोदेतेपढइ
महावीरजिनआजयहांपपधारे। औरभीयेग्यदेनामसचारे
बोमबाहुक्लेकोणिककोसुणाइ ।प्रीतिदानउमेदेने बहुताइ
किन्नृवमेजिनगृहकार्यकरनाजिनदर्शनउमगीदलधारना
दोहा—यों धर्म कर्म दीपावने। वनें कौणिक राय ॥
कर्म कथा तो अपार है।पहा धर्म कथा वरणाय॥२४॥

॥ श्री महावीरस्वामीके गुणकावरणन॥

नमुथुणं का अर्थ—पद्धरी छंद

नमस्कार अरिहंत भगवंतको।धनधानिक धर्मनउग्यवाये

१ पहुर्नों के लिए (बन का स्थान) २ धर्म कथा करने वाला

ज्ञान वाणीअपायापागम पूजा।इनचोगुण भगवंतपदपाय आदिकरधर्मचउतीर्थस्थापनकिये। गुणिनस्वयंबोधपाये पुरुषमेंउत्तमपशूमेंज्योंसिंहसन। पुंडरिकपुष्पज्योंमहकाये शूरगंधहस्थीज्योंअभयदत्तेचक्षोज्ञानचक्षुद धर्मसगलाये शरणसवजंतुकोजिवितसंयमदेद्वीपसमजगोद्धर्मसुखदाये भ्रमणभवसागरबेठज्योगुणागर चाउरंतचक्रवर्ती जिनंदा अप्रतिहतज्ञानदर्शनधारक निवृतछद्मस्तकेवलीदिणंदा कर्मोकोजीतेजीताते होअन्यकोजगतिरतारोंप्राणीसदिदा बुद्धतत्वज्ञबोधितकरोसर्वको। मुक्तरागद्वेषमूकावो वन्दा सर्वज्ञसर्वदर्शीइच्छकाशिवअचलआरोग्यअनंतअक्षयस्थान अव्याबाध सदा पुनरावर्ती नकदा। ते प्राप्त भयेभगवान।

श्रीमहा वीर प्रभू का शरीर का वरणन्-नाराच छंद्

श्री वीर धीर का शरीर सुवर्ण वर्ण शोभता ॥
सम चतुरस्र सस्थान सत हस्त उंच लोभता ॥
वज्र वृषभ नाराच संघयण प्राक्रमी होर्जा अति ॥
सहस्र अष्ट लंछनें वपु दीपे दिव्याकृति ॥ ७ ॥
जल मल कलंक रज लेप कदा नहीलागता।
नहीं दुष्ट लक्षण व्यंजन न दुष्ट जागता ॥
महकता सुगंध श्वास प्रकाशिक छंय है।
अत्युत्तम जगके प्रमाणु आप अंग निपाये है ॥
शिखरी शिखर सम उंच बारा अंगुल शीश है ।

घन श्याम चीगटे फिरते, कुर्वली बाल ईश है ॥
अर्ध चन्द्र सम तेज भल भलाट भाल है।
संपूर्ण शशी सम मुख, कान्ती धर विसाल है
कृष्ण भमुह धनुष्याकार प्रमाणो पेत कान है ।
विस्मित नेत्र युगल सो तो कमल के समान है ॥
गरुड पक्षी जैसा नाक होठ रूण भाँत है ।
दाडिम कली के समान सीर्से दोय दाँत है ॥ ४ ॥
सिंह समो स्कंध ग्रिवा चतु अंगुल प्रमाण है ।
जानु लग वहां लम्ब करतल रक्त वान है ॥
सूर्य चन्द्र चक्र मच्छ आदि शुभ लक्षणे ।
कोमल कर कमल पुष्ट दीपते सुलक्षणे ॥ ५ ॥
करां गुली अछिद्र नख अरुण रंग दीपता ।
श्री वत्स स्वस्तिक युक्त हृदय अंग ओपता ॥ ॥
उनारा उदर मच्छ सम नाभी कमल विकशी ।
सिंह समान कटि भाग गुलन्दी अर्थ पंथ ॥ ६ ॥
न लंग इंद्रिय स्थान करा अगुर्ची लेप है ।
केली सम उतारी जंघ जानु गुप्त रेप है ॥
चरण कूर्म तुल्य नख रक्त स्निग्ध साफ है ।
दर्शन मगर ध्वजा आदि लक्षण शुभ ज्यार है॥ ७ ॥
नख स्निग्ध सर्व वपु सूर्य सम प्रकाशता । ॥
अर लक्षण दर्शन मन विस्मय नहीं मावता ॥ ॥

पेखत वदन मन हरण करे नरेन्द्र इन्द का ॥
वंदन सदा होवे मेरा पदे एसे जिन्द का ॥ ८ ॥

चौतीस अतिशय—मनहरछन्द

वधे नहीं नख केश । रोग नहीं तन लेश ।
उज्वल हे मांस रक्त । सुगन्धी उश्वास हे ॥
न दिखे अहार निहार । धर्म चक्र नभ मझार
तीन छत्र श्वेत चमर । मणी आसनास हे ॥
ध्वजा पताका परिवार । अशोक तरू हे लार
प्रभा मंडल प्रकाश । भू होवे समरास हे ॥
कंटक उलट होवे । ऋतू सुखदाइ सोवे ।
योजन में वायु शुभ । अचित वर्षास हे ॥ १ ॥
अचित पुष्पों के ढग । इन्द्री विषय मन लग
शब्द दिक पांचों खोटे नाशी अच्छे होवे हें ॥
योजने वाणी सुणाय । अर्ध मागधी भाषाय ।
आर्या नार्य समजे सर्व । वेर भाव खोवे हे ॥
मानी नर नमें आय । वादी से उत्तर न थाय
पच्चीस जोजन चोवाजू । उपद्रव्य विगोवे हें ॥
मरी मारी रोग नाशे । चक्री भय न आवे पासे
अति वृष्टि अना वृष्टि । दुर्भिक्ष न जोवे हें ॥ २ ॥
वरोक्त उपद्रव्यहोय । प्रभु आगमने मोय ॥

नाश पाये क्षीण मांहे । अतिशय चौतीस के ॥
जन्म से तो होवे चार। पंदरे केवल धार ।
पंदरे देवता किये । होवे जग दीस के ॥
तीर्थंकर नाम कर्म । उपार्जन ताके धर्म ।
जाणत जगत् जंतु । होवत मुनीश के ॥
ऐसे पद धारक । निवारक सकल अघ ।
वंदत अमोल पद । नित्यही जिनीश के ॥ ३॥

पैंतीस वाणीगुण—छप्पयछन्द.

वाणीगुण पैंतीस। संस्कारे युक्तउचारे ॥
योजन एक सुणाय। तुच्छतानहीलगारे ॥
गंभीर जोंशब्द। प्रतिछंदी उपजावे ॥
सरल रागणी युक्त। श्रोता तल्लीन बनावे॥
यह सात गुन कहे उचारके। अब कहुं अर्थके जेह॥
शब्द थोडे और अर्थ बहुत। सूत्र कहाते तेह॥
आद्यअन्त अविरोध। अर्थ अवगमजावे॥
संशय उपजत नाय। दोष किंचितुं नहीं पावे॥
सर्वको शीघ्र सुहाय। देश काल उचितमिल ताकही॥
तत्त्व ही तत्त्वं प्रमाण। निसार विस्तरकदाही॥
कहानी जैसी वानी मृदी। स्वस्तुति नहीं परनिंदहे॥
निज अनत से अधिक। सर्वज्ञ कहे जग विद है ॥२॥

योग्यता सैम गुण कथे । उपकार अैवस्यहां थावे ॥
।छिन्न भिन्नैं अर्थ न करे । नियमैं व्याकरण से गावे॥
मध्यस्त बैंचन सुखदा।रे।श्रोता अैश्चर्य सुणी धारे॥
हृदय प्रेगमे अर्थ । विलम्बे विश्राम न ड्यां[illegible] ॥
प्रश्नालैं बिन पूछे लहे । कहे अपेक्षा युत स्फुटक॥
स्ताविकै वाक्य अर्थ सिद्धै करे । थकते नैंही कभी कथक

अठारह दोष रहित—इन्द्राविजयछन्द

नहीं है मिथ्यात्वअज्ञानक्रोधे,मानमाय लोभरै तिअरति
नानद्रे।शोकैअलिफैवेदनहीं चोरी मैंत्सरैभयैनहींविपति
परे नहीं हिंसा।प्रेमाजंगनहीं।क्रीडां।हांसीनहींकरतेसोपति
दोष अष्टादशाजनमेंनपाइत नाहीअमोलनमेजगपति ॥
दोहा—यह गुण कपे जिनराजके किंचित संक्षेप मझार
आगे सधु सतीयों तने । कुच्छ गुण कहूं उचार
बीर जिनन्दकी आणमें।साधु चउदह हजार
छत्तीस सहस्र है साधवी ।उत्तमोत्तम गुण धार॥

॥ साधुगुन—इन्द्रविजयछन्द ॥

उग्रभोगराज नायकोग्रवक्षत्री भट्ट जोधा सेना पति ॥
[illegible] [illegible] बहुतही एं की भाग हुवेतिन जति॥
जाति कुल बल रूप विनय विज्ञान लाइवदि धरे संपती॥

अनित्यऋद्धी किंपाकजेंभोग, धिनअध्रुव जाणी तजीरनी
केइत्व साधु भये अध मासके, मास वर्ष केई बहुत है जुना
मतिश्रुति अवधीमनपर्यः, केवली त्रियोग बली नहीं नुन
अनुग्रहभियनिहालकरकेइ, लब्धी धारीप्रगटे जब पुन।
तन अंग स्वेद के मेलखेकारकेरफर्शसेहोवे रोगसबछुना
केइमुनिकोठगबुद्धिधारक । बीजबुद्धिपडबुद्धिधारी ॥
पदानूसारणीसीभन्नश्रुतिकाखी रमधुघृतवयणउचारी ॥
अक्षिण माणसीउज्जुमतिवराविपुलमतिविक्रयत रचारी ॥
जंघाचारणविद्याचारणआकाशमार्गेंहोवेइच्छाचारी ॥
ज्ञानदर्शकचारित्रतिहुनिर्मळमहावृत्तसुमितीगुप्तिधरंता
लज्जावंतहळुद्रव्य भावसे । धैर्य, तेज, शोभा, यशवंत॥
क्रोधमानमाय लोभइन्द्रिय निद्रानिन्दाप रिसहजीपंता
जीवंतआसमरणभयत्यागी, तेमुनिपादअमोलनमंता ॥
वृतगुनचरनकरननिग्रहरु, निश्चयआर्यवमार्दवप्रधाना ॥
लाघवक्षमानिर्लोभविद्यामंत्र, वेदब्रह्मचर्यश्रेयजाना ॥
पंयनियमसत्यशौचउत्तमहैमनोहरमूरतीतपनिधाना ।।

---

१ जैसे कोठार में रखीहुइ वस्तुका विनाश नही होता है. त्यों पढे हुये ज्ञान का नाश नहीं होवे. व राजा का भंडारी जैसे इच्छित वस्तुदेताहत्योंइच्छित ज्ञान देवे २ जैसे शुद्ध खेत में डाला हुवा बीजयोग्यवृष्टीसेवृद्धापावे त्योंज्ञानमाद्धिपावे. ३जैसेवस्त्रकेपडलखोलनेसेविस्तारपावे

अदीनअल्प-उत्सूकसूभावीविचरतेआगेकराजिनआन ॥
द्वादशांगगणीप्रतिमाधारकसर्वअक्षरकीउत्पातिजाने
भाषासर्वकेपारगामींकेइ,प्रश्नोत्तरनहटेकोइटाने ॥
आत्मवादज्ञानकरेस्थापन,तजेप्रवादजोमतपेछाने ॥
गुणरत्नागरधर्मवृद्धीकर,जिननहीतोभीजिनसमाने

साधु को शुभोपमा—मनहर छन्द.

कुंतीयात्रण वणिकसे । अखट गुणों के धर
कांसा पात्र निरलेप । संखसे निरंगणा ॥
रुके नहीं जीव जैसे । कीट न लगे कंचन से
स्वच्छ आरिसा के परे । कुरम इन्द्री दमना
अलेपि कमल समान । निरालम्ब ज्यों असमान
वायु ज्यों विहारी मुनी शशी शीतल करना
सूर्य ज्यों प्रकाश करे । गंभीर समुद्र परे ।

त्यों ज्ञान धपे ४ एक पद के अनुसार से सर्वग्रंथ समज जावे. ५ सूक्ष्म शब्द सुने- तथा एक वक्त में अनेक शब्द सुने. ६ खीर के सेहन के और घृत के जैसे उनके वचन प्रग में. ७ अल्प वस्तु उनके स्पर्शने अमृत होजाय ८ ऋजु मती कुछ कमी और विपुलमती संपुर्णाइ अढाद्वीप के जीवोंके मनकी बातजाने. ९ मल्लपना. १० निर्भिमान पना. ११ हलकापना १२ मानपके ज्ञानके

पक्षी से अनियत वासी।स्थिर नग शु:शना ॥१॥
भारंड ज्यों अप्रति बंध । सत्य पक्षी गेंडा श्रृंग॥
निर्मळ शरद ऋतुनीर ।गंधहस्तीज्यों शूर हे ॥
भारी खमेंजेसे बेल ।अचल सिंह सकेल ।
क्षमापृथवी समान । वन्ही ज्योंदिसनूर हे ॥
सीतल बावना चंदन । निर्मंगत्व पडा सदन ।
अखूट द्रह नीरज्यों सास्त्र ज्यो कर्म चुरहे ॥
उदधी द्वीप ज्योंअधरा । नाग कंचुज्यों संनार ॥
ऐसी अनेक औपम शुभ मुनि गुण भरपूरहे ॥२

अप्रति बंध कथन—छप्पय छंद

श्री श्रमणभगवंतके।प्रतिबंधकिंचित नाहीं ॥
तजेयह चार प्रकार । द्रव्य क्षत्र काल भावाही ॥
द्रव्यं-सचित अचित । मिश्रकी ममता त्यागी ॥
क्षेत्रें ग्राम नगरका । पक्ष तजन हे सोभागी ॥
काल सेसमय मात्रका । प्रमाद कदापि करेनहीं ॥
भावे पतली कषाय जस । उनमुनीको वंदन सही॥१॥
वर्षाऋतूके चउ मास मे रहे एकही जे स्थाने ॥
बाकी आठही मांस में ।एक एक मांस प्रमाणे ॥
अधिक काल नहीं रहे । फिरे जन.पद में सदाइ ॥
बारे वार एक रात्री । मांस की पंक्ति गिनाइ ॥

रक्षा करने संयमकी । और तारन भव्य जनतांय ॥
यों विचरे मुनिवर सदा । सम भाव परिसह सहाय ॥
सम निंदक वंदक । कचन पापान को जाने ॥
सुख दुःख में सम भाव ।राग द्वेष तजे गुमाने॥
दोनो लोक सुख आस । फास यह मोटी ताडी ॥
कर्म निकंदन खप । प्रीति शिव रमणी से जोडी ॥
पाले संयम सतरह विधे । बारह प्रकार के तप मांय ॥
निज आतम को भावे सदा । सो ही मुनी मुक्ती पाये ॥

वारह प्रकारे तप-दोहा छन्द.

सर्व तप वारह तरेह । वाह्य षट प्रकार ॥
अभ्यान्तर भी छेही है । करत सदा अणगार ॥ १ ॥
अणसणे-त्यागे आहारको । उणोदरी कम खाय ॥
वृती संक्षेप-भिक्षाचरि । रस परि त्याग कराय ॥ २ ॥
काया क्लेश धर्मार्थ दे । संलेहना-निग्रह योग ॥
वाह्य तप यह छेःकहे । किये जाने दृष्ट लोग ॥ ३ ॥

दीतवार से दीनवार तक (७ दिन) रहे उसे एकरात्री कहने हैं. ऐसी एक महीने की पांचरात्री होती है एक महीनेमे एक वार पांच वक्त आता है.

विनय-सदा नम्र हो रहे । वेया वच सुख उपजाय ॥
सज्झाय करे मूल सूलकी । ध्यान तत्वार्थ ध्याय॥ ४ ॥
अलोचना करे पापकी । कायोत्सर्ग ममत्व त्याग ॥
अभ्यन्तर गुप्त तप यह । करत मुनि वड भाग ॥ ५ ॥

सत्तरह प्रकारे संयम-अडील छंद.

संयम सतरह प्रकारे पाले मुनिवरा ।
पृथवी पाणी अग्नि वायु वनस्पति स्थावरा ॥
इन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री पंचन्द्रित्रसहे ।
अजीव वस्तु यहदश सदा रक्षक हे ॥ १ ॥
मन वच काय त्रयोग पापसे गोपवे।
प्रीति सव पर धरे । उपयोग न लोपवे ॥
अयोग वस्तू परिठाय पूंजी प्रेक्षी चले ।
आत्मार्थी मुनिराज से यह क्रिया पले ॥ २ ॥

संसार 'समुद्र' वरणन-इन्द्रविजय छंद

संसार सागर महा-भयंकर। जन्म मरण रूप नीर भरा है॥
वियोग वियोग की तरंगउठाचिंताविस्तार तहां विस्तरा है ॥
धन मारण कलोल उठे तहां अपमान रुप फेण उवरा है॥
निकेडांगरओडजाआतेह । कपायपाताल कळश उचरा है ॥
की वेल चडे अति उंची।मोहभमरपडेगोते खिलाइ ॥

प्रमाद अजगर प्रात वहूते । कुगुरु मच्छ रह भरमाइ ॥
मगर इन्द्री रूप फास में डालता।पाखंड है शंख शीपके साइ
क्लेश कीचड सद्गुण रत्न मोती । ऐसा जगोदधी है दुःख दाइ

धर्म 'जहाज' वरणन् इन्द्रविजय छंदः

जग सिन्धुसे तारण कारण।सतरह संयम के पटिये बनाये ॥
बारह तप रुप कीलेसे जोडे ।धैर्यता कूवा स्थंभ लगाये ॥
वैराग्य वायू से ध्यान ध्वजा उडे।उपदेश रुपिय चाटू हलाये
सम्यक्त्व मुकान सुमार्ग दांरत नियामिक भगवंत कहलाये॥
सार्थ वाही साधूजी वणे अरु।क्रिया क्रियाणा मांय भराया ॥
केवल ज्ञान दुर्बीन लगाकर ।आगम से मुक्तीपंथ बताया ॥
सत्यनी शील उधम गोळ से ।कर्म व्याघाती पहाड गिराया।
ऐसे वाहन चड स्वर्ग गये केइ।केइक सीधे मोक्ष सिधाया॥१।
दोहा-धर्म जहाज आरूढ हो । निर्यामक जिन रांय ॥ ॥
जग जंतू उद्धार को । फिरे जग सिन्धु मांय ॥ १
पुर्वोक्तादि गुण भरे । संत सति परिवार ॥
अंग देश चंपा ढिगे । उप नगर रहे उसवार ॥ २
शक्रेन्द्र लब्ध ज्ञान से । धर्मोन्नती के काज ॥
समव सरण रचाना रचनासुर को हुकम कियाज॥३
चंपादिग सुर आय कर । अद्भुत रचना रचाय ॥
सोहि ग्रन्थ अनुसार मे । किंचित यहां वरणाय ४ ॥

विनय-सदा-नम्र हो रहे । वेया वच सुख उपजाय ॥
सज्झाय करे मूल सूलकी । ध्यान तत्वार्थ ध्याय॥ ४ ॥
अलोचना करे पापकी । कायोत्सर्ग ममत्व त्याग ॥
अभ्यन्तर गुप्त तप यह । करत मुनि बड भाग ॥ ५ ॥

सत्तरह प्रकारे संयम-अडील छंद.

संयम सतरह प्रकारे पाले मुनिवरा ।
पृथवी पाणी अग्नि वायु वनस्पति स्थावरा ॥
द्वन्द्री तेन्द्री चोरिन्द्री पंचन्द्रिसरहे ।
अजीव वस्तु यहदश सदा रक्षक हे ॥ १ ॥
मन वच काय त्रयोग पापसे गोपवे।
प्रीति सबै पर धरे । उपयोग न लोपवे ॥
अयोग वस्तू परिठाय पूंजी प्रेक्षी चले ।
आत्मार्थी मुनिराज से यह क्रिया पले॥ २ ॥

संसार 'समुद्र' वरणन्-इन्द्रविजय छंद

संसार सागर महा-भयंकर। जन्म मरण रूप नीर भरा है॥
संयोग वियोग की तरंगउठे।चिंताविस्तार तहां विस्तरा है ॥
बंधन मारण कलोल उठे तहां अपमान रुप फेण उवरा है॥
कर्मकेडोंगरओडेजाआति । कषायपाताल कळश उचराहे ॥
की वेल चढे अति ऊंची।मोहभमरपडेगोते खिलाइ ॥

प्रमाद अजगर मांस वहूत । कुगुरु मच्छ रहे भरमाई ॥
मगर इन्द्री रूप फास में डालता।पाखंड हे शंख शीपके साइ
क्लेश कीचड सद्गुण रत्न मोती । ऐसा जगोदधी हेदुःख दाइ

धर्म 'जहाज' वरणन्‌-इन्द्रविजय छंद.

जग सिन्धुसे तारण कारण।सतरह संयम के पटिये बनाये ॥
वारह तप रूप कीलेसे जोडे ।धैर्यता कूवा स्थंभ लगाये ॥
वैराग्य वायू से ध्यान ध्वजा उडे।उपदेश रूपिय चाटू हलाये
सम्यक्त्व सुकान सुमार्ग दोरत निर्यामिक भगवंत कहलाये॥
सार्थ वाही साधूजी वणे अतःक्रिया क्रियाणा मांय भराया ॥
केवल ज्ञान दुर्वीन लगाकर ।आगम से मुक्तीपंथ वताया ॥
सत्घनी शील उद्यम गोळ से ।कर्म व्याघाती पहाड गिराया।
ऐसे वाहन चड स्वर्गगये केइ।केइक सीधे मोक्ष सिधाया॥१।
दोहा-धर्म जहाज आरूढ हो । निर्यामिक जिन रांय ॥ ॥
जग जंतू उद्धार को । फिरे जग सिन्धु मांय ॥ १
पुर्वोक्तादि गुण भरे । संत सति परिवार ॥
अंग देश चंपा डिगे । उप नगर रहे उत्तार ॥ २
शुक्रेन्द्र लब्ध ज्ञान से । धर्मोन्नती के काज ॥
समव सरण रचाना रचन।सुर को हुकम कियाज॥ ३
चंपाडिग सुर आय कर । अद्भूत रचना रचाय ॥
सोहि ग्रन्थ अनुसार से । किंचित यहां वरणाय ४ ॥

समवसरण वरण-अरल छन्द.

प्रकोटे तीन वनाय । पहिला रूपा तणा ॥
सुवर्ण कंगुरे सुचंग । दूसरा हेमज मणा ॥
रत्न कंगुरे भलकाय । तीसरा रत्नो महीं ॥
कोशीसे मणी रत्न । रवी सम प्रभा कहीं ॥ १॥
एकेक कोटके अन्तर । तेरेसो धनुष्य रहा ॥
प्रथम के पक्तिये हजार । दो सहेश्र दोनों के कहा ॥
पांच हजार सब सडी । हाथ २ के अंतरे।
अढाइ कोशका ऊंचा । समवसरण इस तरे ॥ २॥
समव सरण मध्य भाग । सिंहासरण मणिका किया ।
पाद पीठीका युक्त । सिंह सम शोभी रिया ॥
अशोक वृक्ष तस लार । सर्वगुण शोभिता ॥
अचित्त कुसुम के ढग सुगन्ध मन लोभिता ॥ ३ ॥
उपर लटके हें छत्र । एकेक पर तीन हे ॥
चोसठ जोडे चमर । ढुलत समचीन हे ॥
पृष्ठे प्रभा मंडल । प्रकाश अतिही करे ॥
यह विध रचना रची । सुर आनंद धरे ॥ ४ ॥

श्रीजिनागम-मनहर छंद.

रजनीका भया हे नाश ।रवी को भयो प्रकाश।

आवश्यक क्रिया से । निवृत्ति मुनि पाये हैं ॥
आगे जिनराज । पीछे सर्वही समाज ।
कोटी सुर नर केइ चंपा बार आये हैं ॥
समव सरण मांय । सिंहासण बैठे जिनराय ।
अष्ट प्रतिहारकर । अधिक सोभाये हैं ॥
बारह प्रकार भरी परिषद् मंडल मझार ।
चतुर्मुखी जिन सन्मुख नमी रहाये हैं ॥ ५ ॥
साधु साध्वी परिवार । विमानिक सुरिसार ।
नर्मी बैठे अग्नि कूण । अति हर्षाये हैं ॥
श्राविका श्रावक विमानिक तीनो इशान में ।
भवनी व्यन्तर जोतिषी यह वायू कूण रहाये हैं ॥
इन तीनो की देवीयों सो बैठी है नैरुत्य कूण ॥
तिर्यंच तिर्यंचणी और बहुत ही समाये हैं ॥
भरा परिषदा ठाट हर्षानन्द गह गाट ।
अमोल वाणी सुणन अति उमगायेहैं ॥ ६ ॥

बधाइ की— चौपाइ

कथा प्रवा दुकमो उस अवसरोयह रचना देखी हर्ष अति धरे
यथा उचित शृंगार सजाय।न्या कइ हो सभा मे आय॥१॥
उस वक्त कोणिक महाराज । उस सभा मे बैठे सवसाजा।
गण नायक दंड नायक पान । मानान्य शायसलार उद्यान
मांडवी कोडंबी अरु मंत्रीमागनक द्वार पाल आनंद इन॥

शेट शेन्यापति सार्थ वाह । सन्धीपाल दूत आदि बहु ता।
गृह नक्षत्र तारा गण में शशी। नरेश्वर की शोभा इशी।
बहु प्रवादु रु नमी वशाय।जीति पालो जीता अन्य के ताय॥४॥
जिन के दर्श की अति इच्छा करो।नाम सुनकर हर्ष उरधरो।
सोही श्रमण भगवंत महावीर।पूर्ण भद्र बाग में विराजे धीर।
सुण वयण नृप अतिही उमंगाय।हृदय नयन प्रफुलित थाय
अंगकी अंगीया तंग अति भई।कुंडल मुकट विद्युत चमकई
हर्षानन्दे उठे तत्काल । सुवर्ण पनहीं पग सेती निकाल ।
एकसाडउित्तरासणमुखपेकिया।जिनेन्द्र सन्मुख शमामेंगिया
सतअष्टपग जा त्रिराजियं।वाया ढीचण तल डाया ऊभाकिये
कर जोड शिरपे आवर्तकिये।तीन वक्त धरणी लगादिये॥८॥
नम्र रहेयों करे हैं उचार। अरिहंत भगवंतको नमस्कार ॥
धर्मआदितीर्थ के करतार ।स्वयं बुद्ध पुरुषोत्तम सिंहसार ॥
पुंडरीक गंधहस्तीसिप्रधान।लोकोत्तम नाथ हितकर द्वीपमान
अभय चक्षु मार्ग दातार। सरण जीवित्व बोध देनार ॥ १०
धर्मोप देशक नायक सार्थवाह।धर्मचक्रीजगद्वीप अराह ॥
अप्रतिहतज्ञान दर्शनधार।निवृते छद्मस्त जिनजितावनार ११
तिरे तारो बुद्ध बोधो हो जग। मुक्त मुक्त कर्ता सर्वज्ञ ॥
शिवअचलआरोग्यअबाध।पुनरावर्तिनहीं ते सिद्ध साध ॥१२
ऐसा पद पाये उन्हे नमस्कार।पावेंगे उनको नमो वार वार॥
नमूं नमूं भगवंत महावीर। विराजे आप मेरे पुर नीर ॥ १३

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible] ।

अष्ट मंगल आगे कोतल चेल।और अनुक्रमें शोभितखिले॥
दोनों तरफ देखत नर नाथ। सब प्रजा नमें जोडे हात॥
नयन हृदय कर माल सेवने।नृप सत्कार सें हर्षे घने॥२४॥
दोहा—यह वरणन हुवा रायका।जिन वंदन विध सार ॥
अब उत्साह पुरजन को। कहूं सूत्र अनुसार॥

पुरजन को दर्शन का उत्सह—इन्द्री विजय छन्द

भव्य जनों ज्ञानी जिन आगम।घर बजार में गम जमजावे
हर्षी वधाइ दे आपसमें। सीघ्र चलो वक्त दुर्लभ पावे॥
अहो भाग्य आये भगवंतजी।श्रीमहावीर वर नाम शोभावे॥
पूर्ण भद्र वने सब संगमे। तब संयम से आत्म भावे॥ १
जिन नाम गौत्र सुने श्रवनसे।कोटी भवों के पाप विलावे
तो वंदन प्रश्न पूछन का। फळ का वर्णन् कैसे कहा वे २
महा पुण्योदय भक्ति मिले यह।अपूर्व ज्ञान की कथा सुनावे
कोलाहल मचा यों शेहर में।चलो २ शीघ्र वारम लावे॥२॥
जिन वंदन सत्कार नमन सन्मान सदा सल्याण करंता॥
साक्षात् देव यह ज्ञान गुणागर।विनय किये सब पाप हरंता
पर्युपासना इहभय पर भवमें। हितकर सुखकर क्षेमकरंता॥
निश्चय अनुक्रमें दे मोक्षही। यों कीर्ति सब जन उचरंता
उग्रकुली केइ भोग कुली अरुराजक्षत्री कुल विप्र सुजानो
भांडचौधा सार्थ वह भटजी। इश्वर तलवर मंडली करानो

इत्यादि सब सज्जन परजन । संग लिये किये वडा मडानों
निज २ सक्तो सा साज सजाई पदचर केइ स्वारी सजानों
केइ वदन पूजेन के कारण।दर्शन सत्कार सन्मान तांइ ॥
प्रश्न पूछन पेखन रचना। सुणन व्याख्यान अपूर्व तांइ ॥
केइक श्रावक के व्रत धारन । अणगार होवन केइ उमाइ
केइ आचार व्यवहार श्रम धरायों नाना विधी जन इच्छाइ।

वंदनाविधि–छपय छंद.

यह विधि राज परजा । जिनेश्वर वदने आये ॥
आयाढिग जब बाग । अतिशय जिन देखाये ॥
वाहन स्थंभ किये । उतर धरणी पर ठाडे ॥
अन जान को विधी । जान नर तहां देखाडे ॥
पंच अभिगम संच के । करिये जिनवर धोक
सूत्रानूसारसे सो कहूं । जो किये सवही लोक ॥ १ ॥
खड्ग छत्र ओर चामर । मुकट पन्ही के ताइ ॥
नृपती तजे यह पंच । अन्य जो जा ढिग थाइ ॥
आये दगीचे मांय । पंचविध अभिगम धारे ॥
सचित द्रव्य दूर रखे । अचित धारण जोग धारे ॥
उत्तरासंग पन्ना मुखकोकर्ग।दृष्यन होथ दो जोडीया॥
एकाग्र मन जिन दरश होवत अभीगमनान सोहिया॥२
आये भगवन्त पास । [illegible]

तीखूत्ता के पाठसे । विधी वन्दे जिन राई ॥
त्रियोग से भक्ति करत । काया से नामि बेटाई ॥
वचन से भगवन्त वचन । तेहत प्रमाण वधाइ ॥
अत्यन्त संवेग मनमें धरत। तीव्र धर्म अनुराग को ॥
यह अवसर जग मांही।मिलता हे महा भाग्य को ॥३॥
सुभद्रा राणी आदि । सब वाइयों तहां आई ॥
धर्मानु रागे हुल्लसाय । अनिमेष पेखे प्रभु तांइ ॥
लुळी २ वंदन करे। देखने त्रप्ती नहीं पावे ॥
सवही ऊभी रहे । सुनन जिन वचन उमावे ॥
ओर भी परिषद भरी है अति।मर्याद धर रहे हर्ष भर॥
उमंग जिन वाणी सुनन की ।यथा मेग मयूर पर॥४ ॥

देशना वर्णन् खडका छन्द

परिषदगइभरा।श्रावकयतिऋषिवरा ।देवनराकिन्नरासहश्रगमो
महावीरमहाधीरगंभीरवाणीवदाशरदऋतुमेघगाजसुरमो ॥१
उयोंदुंधवीनादकोरंचखगसाद हृदय आहलादउरसहाखमो ॥
ऊटहृदयथकीकंठमेंफिरछकी।मस्तकेधोरजिभ्यासुजमो ॥ २ ॥
सर्वअक्षरजो।डअखे।डअमोड।अने।डशेकछोडमोडजवाणी ॥
अनमणमनगमणरमणभव्यगणचितेहितमितपूरजोसुखदाणी
सर्वदेशभापाभगीसर्वसमजेखरी ! वैमसंशयहरी गुण खानी
सरसमृग्सअमरसनरिमहें।हिरसअभीरससवरमेप्राणी॥ ४॥

योजनप्रमानव्याख्यानवयानासुनातेसुजानसोवानप्यारा ॥
आर्यअनार्यआर्यहितकार्यसौ॥निज २ भाषामेंसमजेसारा ॥५
देशमागधतणीअर्धवाणीभणी॥अर्धसवदेशनीमिश्रधारा ॥
नीरज्योंहीरहदयवीजपरगमें॥त्यौ नवमनरसेंसोउचारा ॥ ६॥
अहोभव्यसांभलोमेटमनआमलो॥लोक अलोककीअरित मानो
जीवअजीव कर लोक पूर्ण भरा॥बंधरू मोक्ष यह सत्य जानो
पुण्य रू पाप के फल पावे सवी॥आश्रव आय संवर रुकानो
वेदते निर्जराहोतहै क्षिण क्षिण॥यों जान प्राणी बंध मत ठानो

॥ अठारह पाप वरणन्–चोपाई छन्द ॥

पहिला पाप प्रणाती पात । स्व पर आत्म की करे घात ॥
दूसरा पाप है मृषा वाद ।झूठ बोले उपजावे असमाद ॥१
तीसरा पाप अदत्तादान । चोरी करे लेवे वस्तु विन आन॥
चौथा पाप कहा मैथुन । कुशील सेवे नर नारी निगुन॥२॥
पंचम पाप परिग्रह कहा॥पर वस्तु की ममत्व जो करी रहा॥
छट्ठा पाप तो जानो क्रोध। आत्म परात्म उपजे विरोध ॥
सातवां पाप तो है जी मान । अहंता भाव धरे अज्ञान ॥
आठवां पाप माया गुप्त रही ।दगा छलनकी क्रिया नहीं ॥
नवमां पाप तो जानिये लोभ॥घटे तृष्णा नहीं आना थोभ॥
दसवां पाप धरे जो राग । मनोज्ञ वस्तु मे करे लाग॥५ ॥
ग्यारवां पाप तो होना द्वेष । अन गमती वस्तु मे द्वेष ॥

तीखूत्ता के पाठसे । विधी वन्दे जिन राई ॥
त्रियोग से भक्ति करत । काया से नामि बैठाई ॥
वचन से भगवन्त वचन । तेहत प्रमाण वधाइ ॥
अत्यन्त संवेग मनमें धरत। तीव्र धर्म अनुराग को ॥
यह अवसर जग मांही।मिलता है महा भाग्य को ॥३॥
सुभद्रा राणी आदि । सब बाइयों तहां आई ॥
धर्मानु रागे हुल्लसाय । अनिमेष पेखे प्रभु तांइ ॥
लुळी २ वंदन करे। देखने त्रपी नहीं पावे ॥
सबही ऊभी रहे । सुनन जिन वचन उमावे ॥
और भी परिषद भरी है अति।मर्याद धर रहे हर्ष भर॥
उमंग जिन वाणी सुनन की ।यथा मेग मयूर पर ॥४ ॥

देशना वर्णन् खडका छन्द

परिषदगइभरा।श्रावकयतिरूपिवरा ।देवनरकिन्नरासहश्रगमो
महावीरमहार्थारगंभीरवाणीवद।शारदऋतुमेघगाजसुरमो ॥१
ज्योंदुंधवीनादकोरंचखगसाद हृदय आहलादउरसहासमो ॥
ऊटहृदयथकीकंटमेंफिरछकी।मस्तकेघोरजिभ्यासुजमो ॥ २ ॥
सर्वअक्षरजो।डअघे।डअमोड।अने।डशंकळो।डर्मोडजवाणी ॥
अनमत्रनगमणरमणभव्यगणचितेहितमितपूरजोसुखदाणी
सर्वदेशभाषाभगीसर्वरसमजेरसी ! येमसंदायहरी गुण खानी
सरसमुग्सअमरसनविरमेहे।हिरसअमीरससवरमेप्राणी॥ ४॥

येजिनप्रमाणन्याख्यानवचनासुनातेसुजानलोवानप्यारा ॥
आर्यअनार्यधार्यहितकार्यसौंनिज २ भाषामेंसनजेसारा ॥५
देवनागदतणीसर्ववाणीनिर्णीअर्थसवदेशनीसिद्धचारा ॥
नीरज्यौंहीरहद्रवीजिररगमेंत्यौंतवतनरमेंसोउचारा ॥ ६॥
अहोनिश्चलांसंतोंमेटमनआनलोलोक अलोककीअस्ति मानो
जीवअजीव कर लोक पूर्ण सराबंधरू मोक्ष यह सत्य जानो
पुण्य रू पाप केफल पावे सबीआश्रव आय संवर रुकानो
वेदते निर्जराहोतहैक्षिग क्षिपायौं जान प्राणी वंध मत ठानो

॥ अठारह पाप वरणन—चोपाई छन्द ॥

पहिला पाप प्रणाती पात । स्व पर आत्म की करे घात ॥
दूसरा पाप है मृषा वाद ।झूठ बोले उपजावे असमाद ॥१
तीसरा पाप अदत्तादान । चोरी करे लेवे वस्तु बिन आन॥
चौथा पाप कहा मैथुन । कुशील सेवे नर नारी निगुन॥२॥
पंचम पाप परिग्रह कहापर वस्तु की ममत्व जो करी रहा॥
छट्ठा पाप तो जानो क्रोध। आत्म परात्म उपजे विरोध ॥
सातवां पाप तो है जी मान । अहंता भाव धरे अज्ञान ॥
आठवां पाप माया गुत रही ।दगा छलनकी क्रिया कही ॥
नववां पाप तो जानिये लोभ।जहे तृष्णा नहीं आता थोभ।
दशवां पाप धरे जो राग। मनोज्ञ वस्तु से करे लाग॥५ ॥
ग्यारवां पाप तो होता द्वेष । अन गमती वस्तु से रेष ॥

चार वां पाप मचावे क्लेश । कूसम्न झगडे करे विशेष ॥६॥
तेरवा पाप है अभ्याख्यान।खोटा वजा (आल) देव अजान
चउदवा पाप होता पैशून्य। चुगली कर पर गुन करे नून्य
पन्नरवापापपरपरिवाद।निन्दाकरेउपजावेविषवाद ॥
सोलवापापरतिअरती।हर्षशोकजोधरतेचेती ॥ ८ ॥
सतरवापापहेमायामोपा।कपटयुक्तझुठकादोपा ॥
अठारवामिथ्यादंशणशल्य।कुमतश्रद्धारखेप्रबल ॥ ९ ॥
कर्मबंधकरताहैअठारेपाप।अनंतकालसेदेसंताप ॥
जहांलगनछूटेइनकासंग।तहांलगनहींसुखकारंग ॥ १॥
दोहा—दुःख भुक्तते जीव यह । घबरावत है अपार ॥
परंतुदुःख दायक यह ।पाप न छोडे को वार ॥१॥
अहोसुखेच्छु प्राणियों । सुणो यह सद्बोध॥
शीघ्र तजोसब पाप को । धर्म बरो लोसोध ॥२॥

अठारह धर्म वरणन्—चोपाइछन्द

पहिलाहैअहिंसावृत्त।निजपरआत्मदयाजो करत ॥
दूसराअमृषावृतविचार । हितमितनिर्वद्य वयण उचार ॥१॥
तीसरादत्तवृतजोनरगृहे।आज्ञाविनकुछनासंग्रहे ॥
चोथा वृत ब्रह्मचर्य धार।कुशीलइच्छासर्वनिवार ॥ २ ॥
पंचमवृत निर्ममत्वधरो। सचितअचितपरिग्रहपरहरे॥
छट्ठा वृत है क्षांति प्रधान।खमो परिसह न वदो जवान॥३
सातवां वृत मार्दवन्तज मान । विनय कर होवो गुनवान॥

आठवां वृत आर्यवत्सल । बाह्य भ्यान्तर रहे निर्मल ॥४

नवमां मुक्ति वृत तृष्णा त्यागाप्र त से तोपे बड भाग ॥

दशवां वृत बने वीत राग । न करे कर्म बंध अनु राग ॥५॥

एकादश वृत प्रेमी बने । द्रोह तजे द्वेष बुद्धि हने ॥

बारवां वृत सबसे सम्य करे । कदाग्रह का मूलपर हरे ॥६॥

तेहरवां वृत करे गुणाकिधापान दे अल्प अन्य का सहे आप ॥

चउदवां वृत गंभीरता धरे गुणावगुण जाण हिये संगोपे ॥७॥

पन्द्रवां वृत करे गुणानु वाद । कदापि न बदे को अपवाद

सोलवां वृत वैराग्य चित धरे । रति अरति सदा पर हरे ॥८

सतरवां वृत सरल सत्य बदे बाह्य भ्यान्तर निर्मल रहे ९

अठारवां वृत सम्यक्त्व सदा धोराहुदंशन इच्छा कदापि ना

यह अठारह वृत निश्चय स्वरूप । कर्म काटे जो धारे अरूप

स्वरूप कहके मुनि यहाँ काप । अक्षय परमानन्दी बनाय ॥

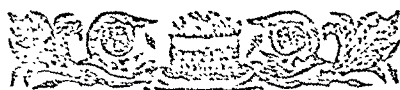
दोहा—मोक्ष रुचि वन्त जो भव्य तनके पोइ मांय ॥
स्वरूप मनी के सनजाय वाकिल्लानी जिन दर्शाय ॥ १
इन अठारह पापका । जिन ने सेवन कीन ॥
ते इस भव पर भव विषे निज बिति लीना ॥ २ ॥
इन अठारह वृत का । जिन ने पालन कीन ॥
ते इस भव पर भव विषे सुख सेवे लीना ॥ ३ ॥
इन दोनों वस्तुन का । प्रथक कीजिए मांय ॥
म्हारो दिखियना कपीरनासे बनाय ॥ ४ ॥

किति सूत्रानु सार से। कितनी ग्रन्थ अनुसार ॥
पढी सुणी युक्ति सजी। कथुं ग्रंथ विस्तार ॥ ५ ॥
पाठक श्रोता दत्त चित्त पठण करो आद्यन्त ॥
सुगेल मति ग्रहो सारको। आशय लक्ष ठवन्त ॥६॥
पनो गुन वन्त दुर्गण तजो। जाण सत्य दृष्टान्त ॥
कथक प्रकाशक श्रम को। सफल करो श्रेष्टान्त ॥ ७॥
अघोद्धार कथागार की। भूमी का वरणी येह ॥
अगल भुवन रचना रचुं। ऋषि अमोलख केह ॥८

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषीजी महाराज रचित अघोद्धार कथागार ग्रंथ की भूमिका .



समाप्तम्



॥ मंजिल पहिला प्राणातिपात पापोद्धार ॥

पूर्व विभाग—"हिंसा"

प्राणा पात (हिंसा) का अर्थ—दोहा छन्द

'प्राण' जिनेश्वर दश कहे । अति पात करे घात ॥
प्राणाति पात सो पाप है । सर्व पाप सर कहात ॥ १ ॥
पचेन्द्री के प्राण पंच । तीन जोग के तीन ॥
श्वासोछ्वास रु आयुष्य । दश प्राण लो चीन ॥ २ ॥
चार प्राण एकेन्द्री के । स्पर्श काय आयु श्वास ॥
छः प्राण है बेन्द्री के । रसना वचन प्रकाश ॥ ३ ॥
सात तेन्द्री के घ्राणा धिक । चौन्द्री के चक्षु अठ ॥ ४ ॥
असन्नी पंचेन्द्री के कान है । सन्नी के मन दश ॥ ५ ॥

प्रश्न व्याकरण सूत्रानुसार प्राणातिपात पापका वर्णन

दोहा—प्रश्न व्याकरण सूत्र के । प्रथम अध्याय मझार ॥

प्राणती पात जिन वरणवा। सो यहां करूं उचार ॥५॥
पापकैसा? रू नाम तस?। क्या कारन से होय? ॥
तस फैळ जो जगमें करे । पंच प्रश्नोत्तर जोय ॥ ६ ॥

प्राणातिपात के दुर्गुण—चोपाइ छन्द

पात्रा-यहहैप्रथमहीपाप।'चंडो'-कपायकरदेसंताप ॥
'रुद्दो'-बुरा,'खुद्दो-'अधर्म।'सहस्सिओ-'अविचारका कर्म ॥७॥
'अणारिओ'-यहीअनाचार।'णिग्घिणो'नहींसुज्ञालगार ॥
'णिस्सेसो'-अविश्वासस्थान।'महाभय'अतिभय'यहीमान।८ ॥
: पइभओ'-येहैअनंतहीडर।वहणाओ'-सुणतहीं चमकेनर ॥
'तासणओ'-अतित्रासउपजाय।'अणज्जो-अनार्यकृत्यकहाय ९
:उवव्वेणओ'-इससेउद्वेगउपजंत।'णिरवयकी'-नभलीअपेक्ष तं ।
'अधर्मस्थान'गतसुखपिर्वाम॥निक्लुणो-निर्दयदेनर्कवास १०
'महाअज्ञान'कायहदातार।वहूतमरणदीनताकरतार ॥
'यहवावीसगुणहिंसाकेकहे।सूत्रार्थयुक्तलिखदहे ॥ ११॥

प्राणातिपात पापकेनामार्थ—चोपाइछन्द

प्राणवंध,मूलशरीरनाश।अविश्वासस्थानहिंसाहेखास ॥
अकार्यघातमरणरुवध।उपद्रवअतिपातयहसध ॥ १२ ॥
आरंभसंभारंभसारंभकहाय।आयु-उपद्रव-भेदनिवार-गलाय ।
चलायसकोचयः छः एकथ।मृत्युअसंयमकरणासंद ॥ १३ ॥

धैशिहरण,परभवैगमन।दुर्गतिपडन,पापविस्तरन् ॥
।पैलाभशेरीरविच्छेद।जीवित अंतकरदेतहैखेदं ॥१४ ॥
महतैव्यद्वैपरभारापरितापकर, इन्द्रीविनाशैनार ॥
।विनिर्कालनगोपैनगुणखंडन।येतीसनासहिंसाकेगिन ॥

प्राणातीपातपाप मे भेद–अरल छन्द

दोय प्रकार के जीव । त्रस स्थावर कहे ॥
स्थावर पंच प्रकार । त्रस चार तरह रहे ॥
पृथवी पाणी वन्ही वायु । वनस्पती स्थावरा॥
वेन्द्री तेन्दी चोरिन्द्री । पचेन्द्री त्रस खरा ॥ १६ ॥
अनन्तान्त पुण्य योग्य । पंचेन्द्री पद लये ॥
इस से हीन पुण्य होय । *चो ती वे एक रहे ॥
इस लिये महापाप । पंचेन्द्री वध का कहा ॥
उस से ओछा पाप । ओछी इन्द्री का रहा ॥ १७॥
येही सूत्र का सरस । अनुक्रमे लीजीये ॥
प्रथम पंचेन्द्री घात । का पाप सुणीजीये ॥
नंतर चोरेन्द्री तेन्द्री । वेन्द्री एकेन्द्री काकहा ॥
प्रश्नव्याकरण प्रथम । अध्याय के अनुसार यहां॥१८॥
पचेन्द्रीके चार प्रकार । नरक देव पशु नरा ॥
नोप कर्म है आयुष्य । नरक और सुरवरा ॥
मुख्यत्व मनुष्य करघात । तीनो का न करा ॥

*चोरिन्द्री· तेन्द्री, वेन्द्री, एकेन्द्री–कहते हैं.

इसलिये तिर्यंच घात का । वरणन् यहां उच्चरा॥ १९॥

तिर्यंच पचन्द्री के भेदानु भेद–इन्द्रविजय.

जलचरस्थलचरखेचरउरचराभूजचरमूलभेदपंचजानो ॥
जलचररहेसदापानीकेआश्रयामच्छकच्छमगरादीमानो ॥
स्थलचरआश्रयरहेपृथवीकोग्रामवासीवनवासीवखानो ॥
गौ महिषछगअश्वगजखरांऊंटघोडाथानरबेलश्वानो ॥ २० ॥
मृगशामरचमरीगायर्मीडा। रोझखरगोपीसिंह सियाला ॥
चर्खी रोहीवाघ चीताअरु,। तरखछुवरआदि है बिडाला ॥
खेचर गमन करे आकाश मेंातोता सारस मयूर मराला ॥
चक कउवे चीडीयों केट तरहासुची मुर्गी चकवे कौंचाला२॥
परेवे कावर चटकरू तीतराहोल ढेंक चील आदी बहुताई
उर पर चलने पेट रगडकर अजगर सरप अलसिये साइ॥
भुज चलपे भुज पर चलते हैंानोल घुल उंदर विसमराइ॥
इत्यादि भेद तिर्यचपंचेन्द्रीकोसंज्ञीअसंज्ञीदोभेदरहाइ॥२२॥

॥ पचेन्द्री की हिंसाका कारण-मनहर छन्द ॥

चंरम चर्बी धातु मांस। रक्त जगर फिफास ।
मेजी हीयां आंतां पित्तं । अर्थ यत्र कारणे ॥
दांत हाडहाटमीजी नख आंखें कांन गिजी ।
नशों नैंक नींदी श्रृंग । दांट पौंच्र मारने ॥
सिंघ सिर्वी केश । वस्त्र व्याकरण एम ।
कारण कहे जिनेश । पचेंद्री को मारने ॥

तुच्छ मतलब काज । करत वडा अकाज ।
जैसेनापने को डारेगोशिर्ष चंदन जारने ॥ २३ ॥

चमडे केलियेहिंसा—मनोहरछन्द

कारण छब्बीस कहे । हिंसाके जिनेशयह ।
प्रथम चरम काज । हिंसा जग होवे है ॥
धर्मात्म वजे अकुल कुत नहीं लजे ।
वडे स्थल चर के सो कट्ट शत्रु जोवे हैं ॥
नगारा नोबत ढोल । तवले तासे आदि और ॥
चरम के वाजिन्त्र । बनानेका कहे सो वे हैं ॥
बुलंद आवाजा ताजी जमडी के लावो बनाय ।
ताही हम लेंगे ऐसे जन्म को विगोवे हैं ॥ १४ ॥
जीवते पशु के ताइ । चुनादि जेहर पिलाइ ।
मरते तुरत चरम उदेडे अज्ञानिया ॥
ताका वाजिन्त्र बनाय । देत धर्मीको लाय ।
परिक्षा करत अच्छा मुखे से वखानिया ॥
देवालय चडाय ते वजाइ के धर्म मनाय ।
लग्नादि प्रसङ्ग तस ध्वनी मंगल मानीया ॥
एसी नीच ताइ भाइ कलीमें उत्तम गिनाइ ।
वहुने शरम आइ कैसे कथे जानीयां ॥ २५ ॥
धर्म के ग्रन्थोपर वहीयोपुस्तकों पर ।

इसलिये तिर्यंच घात का । वरणन् यहां ऊचरा॥ १९॥

तिर्यच पचन्द्री के भेदानु भेद—इन्द्रविजय.

जलचरस्थलचरखेचरउरचर।भूजचरमूलभेदपंचजानो ॥
जलचररहेसदापानीकेआश्रय।मच्छकच्छमगरादीमानो ॥
स्थलचरआश्रयरहेपृथवीके।ग्रामवासीवनवासीवखानो ॥
गो महिषछगअश्वगजखर।ऊंटघोडाश्वानखेलश्वानो ॥ २० ॥
मृगशामरचमरीगायगेंडा। रोझखरगोपसिंह सियाला ॥
पखा। रोहीवाघ चीताअरू,।तरखसुवरआदि है बिडाला ॥
खेचर गमन करे आकाश में।तोता सारस मयूर मराला ॥
घक कउवे चीडीयों केइ तरह।सूची मुखी चकवे क्रौंचाला२॥
परेवे कावर बदकरू तीतर।होल ढंक चील आदी बहूताई
उर पर चलते पेट रगडकर अजगर सरप अलसिये साड॥
भुज बलसे भूज पर चलते हैं।नोल घून ऊंदर विसमराइ॥
इत्यादि भेद तिर्यचपचेन्द्री।के।सन्नीअसन्नीदोभेदरहाइ॥२२॥

॥ पचेन्द्री की हिंसाका कारण-मनहर छन्द ॥

चांम चरबी धातू मांस। रक्त जगर ढिकाम ।
मंजी हीया अंता पितं । अर्थ यत्र कारणे ॥
दांत हाडहाडमीजी नख आंखं कानं गिजी ।
नशों नेक नैडी श्रंग । दांट पीम मारने ॥
लिंग दिवसी केशे । स्थन व्याकरण एम ।
कारण कहे जिनेश । पचेंद्री को मारने ॥

तुच्छ मतलब काज । करत बडा अकाज ।
जैसेतापने को डारे।गोशिर्ष चंदन जारने ॥ २३ ॥

चमडे केलियेहिंसा—मनोहरछन्द

कारण छव्वीस कहे । हिंसाके जिनेशयह ।
प्रथम चरम काज । हिंसा जग होवे है ॥
धर्मात्म वजे अकुल कृत नही लजे ।
वडे स्थल चर के सो कट्टे शत्रू जोवे हैं ॥
नगारा नोवत ढोल । तवले तासे आदि और ॥
चरम के वाजिन्त्र । वनानेका कहे सो वे हैं ॥
वुलंद आवाजा ताजी जमडी के लावो वनाय ।
ताहीहम लेंगे ऐसे जन्म को विगोवे हैं॥ २४ ॥
जीवते पशु के ताइ । चुनादि जेहर पिलाइ ।
मरते तुरत चरम उदेडे अज्ञानिया ॥
ताका वाजिन्त्र वनाय । देत धर्मीको लाय ।
परिक्षा करत अच्छा मुखे से वखानिया ॥
देवालय चडाय ते वजाइ के धर्म मनाय ।
लग्नादि प्रसङ्ग तस ध्वनी मंगल मानीया ॥
एसी नीच ताइ भाइ कलीमें उत्तम गिनाइ ।
वहने शरम आइ कैसे कथे जानीयां ॥ २५ ॥
धर्म के ग्रन्थोंपर वहीयांपुस्तकों वर ।

चमडे के पुट्ठे केइ पवित्र चडाव ते ॥
हाथ पाय मोजे अरू सोवन के सेजे ।
आदि वस्त्र के स्थान केइ चरन को लगावते ॥
ऐसे केइ काम मांइ चमडा अधिक आइ ।
महंगा भाव भया तब लोभी लल चावते ॥
आगिनत पशू विन मोत मार चरम कहाडे ।
खरीदे काम मे लेवे ते पाप हिस्सा पावते ॥ २६ ॥

चरवी के लिये हिंसा—मनोहरछंद

इस कली मांही धिनताइ तो फेलाइ भाइ ।
घृतादि उत्तम मांही चरवी को मिलाइ है ॥
कितनेक तेल ठाइ संचे मील गिरनी मांही ।
चरवी ही लगाइ ऐसे खरच वधाइ है ॥
लोभी दमडे वचाइ चरवी की भइ महगाइ ।
अज्ञानी अनेक पशू मारे चरवी त्तांइ है
धूप दीप भोजन मे। अभ्यंग अरू अंजन मे ।
चरवीही भराइ ऐसी भ्रष्टता मचाइ है ॥ २७ ॥

मांसकेलिये हिंसा—मनोहर छन्द

कहा ग्रन्थ पावा नु। वालेनहीं अनिखेद मानु।
रस्ना लोभानु वने भ्रष्ट विद्वानो है ॥

बजे वेदरु कुरान तामें धर्म शास्त्र मान ।
तामें हिंसा के बयान ठानें अर्थ पलटाना है ॥
विष्टातुल्य सृष्ट मांस भ्रष्ट भक्षण की आस॥
यज्ञ मांही मेलादिसे शुद्ध कीयो मानो है ॥
खावत खिलाय अपडूबे अन्य को डुबाय ।
ऐसे मिथ्या धर्मीयोंको कलीको जमानो है ॥ २ ॥
वजत है देवी मातादिक बाप जी कहलाता ।
केइ स्थापना स्थापता । निज मतलब पुराता है ॥
काटे गरीबोंके गले । रक्त के वहां नाले चले ।
कैसे मात बाप भले । पुत्र को जो खाता है ॥
पूरे पेटही की खाड । हित्या देव सिर चाड ।
देखो मतलबी भोले मतलबी ठगाता है ॥
खोटे तेहवार स्थापाये । क्रोडों पचेन्द्री मराये ॥
कदा अन्य को सताये।नहीं मिले स्वप्न साता है ॥३॥
देखीये पवित्राचारी।रखे अशुचिही न्यारी।
न्हाय धोय तिलक धारी तेही मांस ही के अहारी है ॥
स्वजन जो मरे तो स्मशाण जाय अग्नि धरे ।
ताही के तो घर परे रहे सूतक धारी है ॥
पशू मार घर वार करे चूले पर तैयार।
ताको करे मुख अहार । का सूतक विचारी है ॥
अहो सुनो हो प्रवीन । मतवनो मही हीन

यने चारों सद्य लीन। तो दो अभक्ष टारी है॥ ३०॥
अपवित्र मांस अहार। महा रोग का भंडार।
महा अन्याय करतार। देखत घिन कार है॥
आमी पेशाची उत्पत्त। ना पाक पेशाची सत।
करने वजूही तुरत। कैसे करें सो स्वीकार है॥
यागी युरोप अमेरीकान। यने बहुत विद्वान॥
जान मांस से नुकसान। वह् किया परिहार है॥
नहीं हिंदका आचार। करे शास्त्रही पुकार।
देखो दृष्टांत विचार। बनो आत्म हितकार है॥३१

रक्त के लिये हिंसा—मनोहर छन्द.

वस्त्र रक्त से रंगाय। रक्त औषधी कराय।
मक्कर शुद्धही बनाय। जान आश्चर्य आप है॥
अपवित्र से पवित्र। करें गति यह विचित्र।
कैसे मन माने मित्र। क्या बुद्धि विकलाय है॥
शिरा मोज सुख काज। करें बड़ा यों अकाज॥
कैसा मिला ये समाज। बुद्धिवंत कहलाय है॥
स्टानिमित पशुघात। जग में होवे अमाप।
ताको अधिकारी सबही भोगवीही थाय है॥३२॥

दांत के लिये हिंसा—मनोहर छंद

अहो? अनर्थ आति करत हे मुड माते ॥
तित्तर हजार हाथी । वर्षोवर्ष मारे है ॥
औरभी अनेक जीव । मारत करत रीव ।
हड्डियों निकाल करे खिलौंने तैयार हे ॥
हाथी दाँत के कहाय । मन मूर्ख लोभाय ।
न देखे गजब तांय । तासेभूषन श्रृंगारे हैं ॥
धरे देख के आनंद । करे कठिण कर्म बंध ।
घनी पाप भागी मंद डूबे कालो धारे हैं ॥ ३३ ॥
उत्तम जाती भी कहाइ । दया धर्मी ही वजाइ ॥
खोटि हडीयों स्थापाइ ।यह देख शर्म आइ है ॥
धातु के भूषण तजी । चुडे दाँतो केई सजी
केइ प्रतिमा घडाइ धर्म उपकरण बनाइ है ॥
गिने जाकी अतआइ । अशुद्धताहो ही मनाइ ।
तेही हडी खंड लाइ । धर्मभोजन निपाइ है ॥
होवे कपाल आन्याइ । चारों फुट गइ भाइ ॥
कैसे हटी यह निटाइ थाकी सब पंडिताइ है॥३४॥

दवाइयों के लिये हिंसा—मनोहर छंद

...त्य दया होन नाश । हिंसाका बधे प्रकाश।
...न तिन देखनहीं । हृदय धन्गन है ॥
...स्नति की दवाइ । ...

न ता जात है बिरलाड ।अंग्रेजी पनगान है ॥
कॉडलीवर आदि कह । प्रत्यक्ष जाने सबेह ।
पचेंद्री पिलाड ताको अर्क कहात है ॥
'कॉटक' अर्क की जो थाय । मदीरा तामे मिला
कैसे उत्तम से लेवाय जो। अशुचीजनात है ॥३५॥

पाँखो के लिये हिंसा—मनोहर छंद

अहा क्षेणिक की शोभा । तामे गये मुढ लोभा ।
पाडे गरीबोंमें रोवा शोभा अपनी बता नको ॥
पक्षी गरीब अनाथ । ताको गृही दुष्टहाथ।
डाले पांखाही उपाड झपट से हैवानको ॥
टोपी आदिके लगाय । चले वडे अकडाय।
तैसे कचकडा वनायाशरे काछवे की जानको॥
डबीखिलोने ढकन ।ओप ताताही को चडन ॥
यों हिंसा रही फेलाय कहां लोंवडाबु वखान को॥३६॥

हिंसक को दंड—मनोहर छंद

ऐसी अनेकही जाव । जीव [illegible] णाय
मूल सुत्र ही फरमांय । त [illegible] म
तेहै अबुद्ध [illegible] । नही [illegible]
होय बहु [illegible] पावे

जो पंचेन्द्री हणाय । सो तो निश्चय नरक जाय
कृत्य कर्म फल पाय । जैसे यहां ठाणिये ॥
एसी दोनो भव मांय । हिंसा हैजी दुःख दाय ॥
छोडो सुख कीजो चहावायह अमोल वैन जानीये ॥

विकेन्द्री का वरणन—चौपाईछन्द.

रिन्द्री के चार इन्द्री होयाकाया मुख नाक आँख जोय
र्सी मच्छर तीड पतंगाविच्छु तेकडे आदि भृंग॥ ३० ॥
न्द्री के इन्द्री तीन कहीाकाया मुख नाक ही लही ॥
ूं लीख चींटी कुंथवे जानाउदइ पिस्सु खटमल दी मान
द्री के काया मुख ये दोयासंख सीप लट गिंडोला होय॥
तीन विकेन्द्री विकल स्वभावाकर्म वश रहे दुःख पाव ॥

विकेन्द्रीकी हिंसाकावरणन—इन्द्रविजयछन्द.

निज सुख मानी जन अज्ञानी । अर्थ अनर्थ विकेन्द्री मारे
हित के काज मारे भँवरी ।अरु धूंवा कर मच्छर संहारे ॥
दीपक माहे पडे आ पंतगी ये प्रवाही वस्तु मक्खी विदारे ॥
मारे खटमल ज्यूं लीख फोडेचींटी कुंथु को कौन निहारे॥४१॥
तडी वस्तु केति भाजी मुहुअरु ।विकेन्द्री रहते ता मांही ॥
ताहे पचावत खावत के तहां।श्रत्य[illegible] ... को सो खाइ ॥
मोरी नाली पर उल पाणी [illegible] ... मारे कीडे तांइ॥
[illegible] के ... [illegible] ... विकेन्द्री मराइ॥

डउपकरणघरविखरेकोनिमकंआरभोजनमें खावे ॥
रअने कसेंहारणकारगापृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
लीभीअर्थहनेपृथवीसोसंदमर्दजिनेदफरमावे ॥ ४७ ॥
नीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनमें जगवेअर्थावे ॥
चादिअर्थअरु अनर्थहीपानीकीहिंसाकहनहीहोवे ॥
चनरावनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
लायाजिन्नकरन्नरानरीडीसु ववायुहनेनावे ॥ ४८ ॥
वस्पतिवनस्पतीघातकारनेघरहवीयापकानेनिनावे॥
मोजेनसेनोशाटपाटलानृशालडाल्लवानपडेहवनावे ॥
ानिन्द्रभीवावेहननेंडरनेदननेदेयावि अभिपशूठावे॥
हवेस्थानजोकरिकिपेहै गोलपडेशालेवाईकोकरावे ॥४९॥
ोसिरणीनीकोचांगिसूटियोमिडीदोनेपिवंअथिनस्थानो ।
गाधर्मालवेदेनवेज्ञ्मूनवाहिलनेनस्पुलवारिलेतानो ॥
गोविकीसोलस्नोगोटदाहनेजेगपुडकोडाग्मेगपालटानो ॥
होगकेनाटअरहटमेनीडेडोहथीयारहापाधेनुएनजानो ५०॥
ोडघरविखराओस्वहुतहोवनस्पतिवधहनकरजहोइ ।

किंतेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप नहीं मा-
नते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. सू. [illegible]
सूत्र के नवम आश्रव द्वार के नवम अध्ययन में पृथ्वी काय
की हिंसा के कारण में ([illegible]) कारण गिनाये. [[illegible]] [illegible]
) [illegible]. और [[illegible]] [illegible] [४] धर्मस्थान
है. इन के बनाने वालों को हिंसक मंद बुद्धि और
[illegible] वाले कहे हैं.

कितने सुद्र क्षुद्री विकेन्द्री मारन के मांहि धर्म [illegible]
केसे हें क्षुद्रीयों पूछीये ताहीं स सो कहे नाहक हमको ।
तासे कहो जो सतावे सो क्षुद्री मारे सो महा क्षुद्री क्यों नी
पेट के काज अकाज करो तुम तैसेही ते करे क्या फेर पांवे

स्थावर जीवों के प्रकार–इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर [illegible]
सुक्ष्म सो भणीये सब लोकमे ताकी घात को करन न पां
बादर सो दीस चरम चक्षु न लोक केदश तिरछे [illegible]
सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ की सो महा पस्तावे॥ ४१
एक कण एक बुन्द निगाम्य एक ग्रटठ में जीव असंख्य
पारेवा प्रमाण शरीर माफक सब तन की जंबूद्वीप न पावे॥
वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लेवे॥
अनर्थ [illegible] मनहीं [illegible]॥ ४०

स्थावर की हिंसा वरणन– इन्द्र विजय छंद

पृथवी [illegible] ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

डउपकरणोंघरविखेरकेनिमकक्षारभोजनमें खावे ॥
ौरअनेककसंहारणकारगापृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
सीभीअर्थहनेपृथवीसोसंद्रमखजिनेंद्रफरमावे ॥ ४७ ॥
ानीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवस्त्रधोवे ॥
चादिअर्थअनर्थहीपानीकीहिंसाबहुतहीहोवे ॥
चनरांचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
खावाजिन्न रुनस्र रात्रत्सरीछोमु ब्रन्नायुहनेसोवे ॥ ४८ ॥
अवकहूंवनस्पतीघातकारनघरहथीयारपकानेंनिपावे॥
मोजनसेजोपाटपाटलामूशलऊखलचोनोंपडेहवनावे ॥
ाजिन्त्रनोवावोहनमंडरमेंवनतोरणपिंजरेपेशूठावे॥
देवस्थानजोलीपक्तियेदृढ रशालपडेशालवेदिकोकरावे ॥४९॥
ीसरणीनोकोचांगखूंटियोंमडीशभोपेत्रओथ्रमनेंस्थानो ।
गंधमालचंदनवस्त्रझूसरा।हलसेमारकुलपारथसानो ॥
शैविकीपालखीगोडावाहनजोगरुडकोठारमांगपालठानो ॥
द्वारकेपाटअरहटसूलीछडीहथीयारहाथांधनएरनजानो ५०॥
खोडोघरविखेराओरबहुतहीवनस्पतिवधइनकेकाजहोइ ।

कितनेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप)नहीं मानते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण सूत्र के प्रथम आश्रव द्वार के प्रथम अध्येयन में पृथवी काय की हिंसा के कारण में (२६) चोबाल प्रतिमा, [२७] देरालय, और [३०]पोशाल यह [४] धर्मस्थान इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धिये और ने वाले कहे हैं.

कितने मुड क्षुद्री विकुन्धी मारन के मांह धर्म बतावे
केसे हैं क्षुद्रीयों पूछीय ताही स सो कहे नाहक हमको [illegible]
नाम कहो जो मतावे सो क्षुद्री मारे सो महा क्षुद्री बतावे
पेट के काज अकाज करो तुम तैसेही ते कर क्या फेर पावे

स्थावर जीवों के प्रकार–इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे
सूक्षम सो भाखिये सब लोकमे ताकी घात को करन न [illegible]
बादर सो दोय [illegible] लोक केदश तिरछे [illegible]
साथे अनथे दो प्रकार हिंसा अनर्थ करे सो महा पस्तावे॥ [illegible]
एक [illegible] एक बुन्द [illegible] एक [illegible] में जीव असंख्य॥
[illegible] जंबुद्वीप न [illegible]॥
वनस्पति में [illegible] अनंत अनंत जीव [illegible]
अनर्थ [illegible] गुणाण [illegible] मनमें [illegible]॥ [illegible]

स्थावर की हिंसा [illegible] – इन्द्र विजय छंद

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

डउपकरणेंघरविखरेकोनिमकैंझारभोजनमें खावे ॥
ारअनेकसंहारणकारणपृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
कितीभीअर्थहनेपृथवीसोसंदर्मर्ल्जिनेंदफरमावे ॥ ४७ ॥
ानीकीघातकोरकरस्नानकोपीवनमेंजनवेत्रयोवे ॥
ोचादिअर्थअऽअनर्थहीपानीकीहिंसाबहुतहीहोवे ॥
चन रांधनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
खायाजिनअंदरपापनशीठीसु ववायुहनेगावे ॥ ४८ ॥
अवकहूंवनस्पतीघातकारनधरहर्षीयापगपहानेनिरावे॥
सोजेनसेवांवाटपाटेलामूर्शलडाग्वलदोनोंपडेंहवनावे ॥
धाजिनघनोंवावोंहनमंडे रमंवननतोरंगपिंजरेपशू ठावे॥
देवेंस्थानजोदीपकिंयहंगोलपडेंशालेवाइकोंकरावे ॥४९॥
नीसरणीनोकोचांगिवृटियोंनिशानोंमेंपिवेंअथवनेस्थानों ।
गधमेलपेदेनवेश्वर्स्त्रनराहेलनेमारकुंलवारेथेलानो ॥
शविवेकीपोलमोगोदीवाहनजागंगुदकोठांमेंमांगपोलेदानों ॥
ह्रेगेकपाटअरहटनेमीठेईहोधीपारहापधेनणेंगनजानों ५०॥
क्रोडांघरविखराओंग्बहुतहोवनस्पतिसबइनकाजहोइ ।

जिनके धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप) नहीं मानते हैं उनके लिए दान ध्यान में लेना चाहिये. [illegible] वस्तु के बचन आस्रव द्वार के बचन अवेदन में पृथवी काय की हिंसा के कारन में ([illegible]) पांचवां [illegible], [[illegible]] [illegible]) [illegible] और [३०] [illegible] [४] धर्मस्थान . इन के बनाने वालों [illegible] और उने पाप होते हैं.

कितने मुढ क्षुद्री विक्रेन्द्री मारन के माहि धर्म वतावे ॥
केसे हैं क्षुद्रीयों पूछीय ताहां स सो कहे नाहक हमको सतावे
तासे कहो जो सतावे सो क्षुद्री मारे सोमहा क्षुद्री क्योंनी थावे
पेट के काज अकाज करो तुमतैसेही ते करे क्या फेर पावे?॥

स्थावर जीवों के प्रकार–इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे ॥
सुक्ष्म सो भरीये सव लोकमे ताकी घात को करन न पावे
वादरर सो दीखे चरम चक्षुते लोक केदश तिरछे विशेपावे
सार्थ अनर्थ दो प्रकारहिंसा अनर्थ कर सो महा पस्तावे॥ ४४
एकबुंद जल एक कुंवा तिणगय. एक झपठ में जीव असंखे ॥
पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंखे॥
वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लंखे ॥
अनर्थ दायक स्थावर का वध जाणे सुज्ञाणसो मनमें सं .

स्थावर की हिंसा वरणन्– इन्द्र

ने कृपी खेत वनावन।पुष्करण।
. कवर क वदीका।खाड
रे रेस्ते पीज पकिये।प्रसाद
वना
नार।

[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ २७ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ २८ ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible]

[illegible] ।
[illegible]

कितने मुढ क्षुद्री विकेन्द्री मारन के माह धर्म बतावे ॥
कैसे हैं क्षुद्रीयों पूछीय ताहा स सो कहे नाहक हमको सतावे
तासे कहो जो सतावे सो क्षुद्री मारे सो महा क्षुद्री क्यों नी थावे
पेट के काज अकाज करो तुम तैसेही ते करे क्या फेर पावे?॥

स्थावर जीवों के प्रकार–इन्द्र विजय छंद

पृथवी पाणी अग्नि हवा वनस्पती पांचो स्थावर कहावे ॥
सुक्ष्म सो भरीये सब लोकमे ताकी घात को करन न पावे
बादर सो दीखे चरम चक्षुते लोक के देश तिरछे विशेषावे
सार्थ अनर्थ दो प्रकार हिंसा अनर्थ करे सो महा पस्तावे॥ २४
एक कण एक बुन्द तिणग्य. एक झपट में जीव असंखे ॥
पारवा भ्रमर जवार सरसव सम तन करे जंबूद्वीप न पंखे॥
वनस्पती में संख्य असंख्य अनंत जीव एकी तन लंखे ॥
अनर्थ दायक स्थावर का वध जाणे सुज्ञाण सो मनमें संखे॥ २५

स्थावर की हिंसा वरणन्– इन्द्र विजय छंद

पृथवी हने कृषी खेत बनावन पुष्करणी थावी क्यारो कूवा ॥
सर तलाव कंवर रु देहीका बाड़ आराम विहार गेंद थुंभा॥
द्वार झोखे रस्ते पाज पाकिये प्रासाद मोळ भवन घर सूवा॥
लेन दुकान रु प्रतिमा बनावे देरासर चित्रसभा भी हुवा॥ २६
देवाल्य पांगे रु भूंयारा ताल खोजन खोजन धूंनू बनावे ॥

भंडउपकरणोघरविखेरेकोनिमकेक्षारभोजनमें खावे ॥
औरअनेकसंहारणकारणपृथवीकेकोगिनतीलगावे ॥
किसीभीअर्थहनेपृथवीसोसंदमखेजिनेंद्रफरमावे ॥ ४७ ॥
पानीकीघातकरेकरस्नानकोपीवनभोजनवस्त्रधोवे ॥
सोचादिअर्थअरअनर्थहीपानीकीहिंसावहुतहीहोवे ॥
पचनपाचनजालनदीपकआदिअर्थअनर्थवन्हीखोवे ।
पंखावाजिन्त्रवस्त्रपात्रलरीछीमुखवायुहनेसोवे ॥ ४८ ॥
अन्नकहूंवनस्पतीघातकारनधरहथीयारपकानेनिशावे॥
भोजनसेजोपाटपाटलामूशलउखलवीनोपडहवनावे ॥
धोजिन्त्रनोवावोहनमंडरभेवनतोरेणपिंजरेपेशूठावे॥
देवस्थानजोलीपक्किपेट्ट रशोलपडशालवेदिकोकरावे ॥४९॥
नीसरणीनोकोचागेखूटियोमेडीरोभापेंत्रओश्रमेस्थानो ।
गंधमालचंदनवस्त्रझूंसराहिलंमारकुलिपारथसानो ॥
शोविकोपोलखीगोढोवाहनंजोगगुढकोठारसोगपोलठानो ॥
द्वारकेपाटअरहटमूलीछिडीहैथीयारहाथधिनएरनजानो ५०॥
खोडोघरविखेराओरयहुतहीवनस्पतिवधहनकेकाजहोइ ।

कितनेक धर्मस्थान बनाने में हिंसा (पाप)नहीं मानते हैं उनकोयह बात ध्यान में लेना चाहिये. प्रश्न, व्याकरण सूत्र के प्रथम आश्रय द्वार के प्रथम अध्येयन में पृथवी काय की हिंसा के कारण में (२६) चोयाल प्रतिमा, [२७] देरासर, (२९) देवालय, और [३०]पोशाल यह [४] धर्मस्थान के ही नाम हैं. इन के बनाने वालेको हिंसक मंद बुद्धिये और दुर्गति में उपजने वाले कहे हैं.

यतेक स्थावर हिंसाऊ कारण सूत्रानुसार कथे इहां सोइ॥
महा मूर्ख रुद्र मति कषाया शक निजात्म दुर्गत विगोइ॥
धमार्थ काम हणे अज्ञानाही अनर्थ हनंअति दुःखलेहसोइ॥५१

हिंसकों को सद्बोध–मनहर छन्द

सर्व पाप में अव्वल । सर्व पाप में सबल ।
सर्व दुःख काही मूल । हिंसा ही को जानी है ॥
नर्क का है येही द्वार।जगमें भ्रमावन हार ।
विर्दंघे बहु प्रकार।हिंसा दुःख खानी है ॥
सर्व को अहित कार । धर्मीयों करे तिरस्कार ।
धर्म संयम की कुठार । हिंसा ही बखानी है॥
जो इसका करे स्वीकार । वोही बजे गंवार ।
देख जानी जग मझार।अमोल सोच आनीये॥५२॥
अहो ! आश्चर्य आय।अहिंसा सर्व सरसाय ।
निज पर भेद कीया मोह मुढ अज्ञानीयां ॥
देवता का नाम लेय।पूजादि क्रिया करेय ।
निज पेट पुरण अनर्थ बहु ठानीयां ॥
अपने मंगल काज । अन्यका करे अकाज ।
यहां से मंगल होवे । अहो भोले प्राणीयां ॥
हृदे में विचार होय।सुगुरु कहत बहु लोय ।
हिंसा के [illegible] आनीयां ॥५३ ॥

काल नही वृष्टी होवे । अचिन्त जग डूवोवे ।
इच्छित फले न शाख। हिंसाते के प्रसाद ते ॥
कमाइ भी नष्ट थाय । भयंकर रोग आय ।
बाल विद्वा भइ केइ । करे अप वाद ते ॥
खाने नहीं नहीं मिले अन्न। पानो विन मरे जन।
भूकम्प अग्नि रु हवा । होत असमाद ते ॥
इस थोडे काल मांय । जैसे हिंसा वृद्धि पाय ।
तैसे दुःख अधिकाय ।अमोल हिंसा जाद ते ॥५५
नहीं है धर्म जहां हिंसा लव लेश होय ।
नहीं है शास्त्र जामें हिंसा का उपदेश है ॥
नहीं है वृत जामे कोइ तरह हिंसा करे ।
नहीं हैं गुरू जी जो तो हिंसा के थपेश है ॥
नहीं है सुगुन जहा हिंसा का रसीला पन ।
नहीं है देवता जो हिंसा में माने एस है ॥
आरम के हित काज हिंसा करे सो अज्ञानी।
अमोलकहे दोनो भव ताहे दुःख विशेप है ॥५६॥
निर अपराधी जीव ताही को उपजावे रीव ।
स्वार्थ साधन मारे अनर्थ करत है ॥
रन्न मांहे रहाय । ते तो निर्माल्य घांस खाय ।
पापी ताहीं केइ जाय प्राण को हरत है ॥
झाड पे किलोल करे मिले जहांसे पेट भरे

ते काले ते समय मझार। 'मिया ग्राम' याजा सुख कार ॥
'विजय क्षत्री राज तहां करे।न्याय नीति से प्रजा अनुसरे॥
मृगावती राणी गुन खान।शीलवती रूप इन्द्राणी मान ॥
ग्राम बाहिर इशान कोन माय।चंदन पादप बाग सुखदाय

दोहा—उसी काल उसी अवसरे महावीर जिन राय ॥
साधू सध्वी परिवारे । विराजे बाग में आय ॥५ ॥
राजा प्रजा सुन हर्षाये । सज हो वंदे जाय ॥
भव्यो द्धारन जिनेश्वरा । धर्मोपदेश सुनाय ॥ ६ ॥

चोपाइ

तहां एक अंध पुरुष भी आया।एक नर जेष्टीका सहाही लाय
दारिद्री अंगहीन पुण्यहीन बालविखेरमक्षी घेरादीन ॥ ७ ॥
कोलाहल बहूत नरका सुन।विरागम जाणी हर्ष धुन ॥
विधीसे प्रभूको वंदना करी ।धर्मोपदेश सुनो हर्ष भरी॥८॥
गौतमस्वामीजेष्टशिष्य प्रभूजीको।ज्ञानचरित्तसअतिहीनीके।।
दयालु उस अंध नरको देख।संशयी विस्मित हुये विशेख॥
देशना सुन सब परिषद जाय।गोतम स्वामी प्रभूजी ढिग आय
पंच अँग नमन कर वंदन करी।करांजली जोडी पूछे मन धरी
अहो प्रभू!ऐसी जगमेंकोइ नार।जन्मान्ध बालक जणनार॥
प्रभुकहेगोतम दत्तचित्त सुनो।इसनगरमेंइससेदुःखीघनो॥११॥
विजय राजकी रानी मृगावती ।सगा लोढा पुत्र प्रसवती ॥

जन्मान्ध बहीरा मुंगा तेहान हस्त पाद मांस पिंड देह॥१२॥
बहुत रोग अंगमें प्रगट भये।अठ्यय फक्त अंकूर रूप रहे॥
भोंवरा में गुप्त रख पाले तस।भेदन कोई जाने यस॥१३॥
प्रभू वाणी सुन गौतम उमंगाय।पुनर्पि पूछे शीश नमाय॥ ॥
आज्ञा होय तो देखूं में जाय।यथा सुख करो प्रभू फरमाय॥१४
गौतजी मृगा राणी घर आय।वंदना करी राणी अति हर्षाय॥
नमी कहे भली कृपा करी।मेरे लायक फरमावोचाकरी॥१५॥
गौतम कहे देवानु प्रिय सुन।तुज पुत्र प्रेक्षन है मुज मन॥
राणी तत् क्षिण घरमें जाय।छोटे चारों पुत्र लाइ सजाय॥१६॥
नमस्कार करा कहे देखो श्वामा।'गौतमजी'कहे इनसे नहीं काम
जेष्ट पुत्र अंगोपांग हीन।मृगा लोढा नाम गुप्तरखा जिन॥१७
सुन राणी अति आश्चर्य भइ।कोन ज्ञानीएसी गुप्तबात कही
गौतम'कहे मुझ गुरुजी सर्वज्ञ।उनने कही उनसे नहीं कुछ अज्ञ
'राणी कहे पूज्य उभे रहो । सोही बताऊं आप जो कहो ॥
शीघ्र राणी भोजन घरआय।वस्त्र बदल काष्ट गाडी लाय॥१९
उसके खपत अहार उसमें धरा।डोरी खेंच चली शिशु परा॥
कहे गौतम से पीछे२पधारियेगौतम राणी संग भोंयरेमे गये
सविनय राणी करे कथन।श्वामीजी मुख नाक कीजे बंधन॥
दुर्गंध यहां अवेगा असराल।दोनो ही नाक ढके तत्काल॥२१
कोटडी द्वार तब खुल्ला किया।उलटा कर गाडा गुडा दिया॥
गुडता कुँवर आया अहार पास।सब अंग लोटा अहारमें त्रास

तन झरित रक्त पिरु अहारमेंमिला।अन्नस उसने वैसाही गिला
प्रत्यक्ष गौतम देखी यह हवाल।आत्म हुई वैराग्यसें लाल॥२३
अहो २ दुःख यह नर्क समान।सुने सो प्रत्यक्ष देखूं यह स्थान
कैसे कर्म इस जीवने किये।ताके कटुक फल यह लिये॥२४॥
फिर आये भगवंत के पास ।वंदन कर दिया देखा प्रकाश ॥
स्वामी पूर्व भव इसका सुनाइये।क्या कठिण कर्म ये उपाइये॥
दी अंतराय कियाअभक्ष अहार।हिंसादि पाप सेवे अठार॥
आलोचना निंदना विन मरी।नर्क जैसी यह विति वरी॥२६
दोहा—भगवंत कहे गौतम सुनो ।हिंसा अति दुःख कार ॥
वाया सो फल पाइया।कहूभवंत उचार ॥ २७ ॥

चोपाई

जंबुद्विप के भरत मझार।नगर वसता नामें'शत द्वार' ॥
'धनपति'राजाराज वहांकरे।उस नगरढिगअग्निकोणपरे॥२८॥
"विजयवर्द्धन'नाम खेडावसे । एकाइ राठोड मालक तसे ॥
वोथा अधर्मी पापीष्ट अति।कुकृत्य कर धरताअति रति॥२९
निर्दय कठिण हृदय वे विचार।दूसरे के दुःख की नहीं दरकार॥
प्रजा को अति देता संताप।लांचगृहीदंडकरताअमाप॥३०॥
एकही गुन्हा बहुते शिर धरी।लूंटे धन लिया कोश भरी ॥
ज्योंहायलाहकरेबहुतलोक।खुशीहोवेउनकोसोविलोक॥३१॥
मतलब विन नहीं सुने पुकार।लूंट के प्रजा करी निराधार ॥

सुनी अनसुनी बनादे बात।नहीं माने तो जबरा से थपात॥३२
देखी अदेखी अदेखी देखी कहे।ली अनली यों बदलता रहे॥
हिंसा सदा करता सो अपार।मृगया उपर बहुत ही प्यार॥३३॥
ऐसी तरह संचे बहुत कर्म।स्वप्न में नहीं किया जरा धर्म ॥
ऐसे बहुत काल बीता तबी।पाप बांदगी बताइ जबी॥३४॥
एक दम प्रगट भये सोलेही रोग।महा विकाल दुःख का भोग
नीर विन मीन परे तड फडे।क्षिण भरता ख चैन नहीं पडे॥३५

सोलह रोगके नाम—शार्दुल विक्रीडित छंद.

श्वास खांस ज्वर दहा ज्वर अरू कुक्षी शूल भगंदरं ।
दृष्ट शूल अजीर्ण हर्ष,मस्तक शूल अरुची धरं ॥
कर्ण चक्षु वेदना महा खुजली कुष्ट जलोधरं ।
षोडश राज रोग यह कहे,पापो दये प्रगटे भयंकरं ॥३६॥

चोपाइ

नोकर को तब कहे पुकार । उदघोषणा करो ग्राम मझार ॥
एकाइ ठाकुर के तनमांय । राजरोग सोलह प्रगटाय ॥३७॥
एकही रोग जो करेआराम । मुह मंगा तस देंगे इनाम ॥
नफर तब तैसाही करा । ग्राम में सर्वस्थान विस्तरा ॥ ३८॥
बहुत लालची आये वैद्य।जाने शास्त्र मिटावे खेद ॥
नाडी प्रेक्षी निर्णय करे।जीभ नेत्र मूत्र मल द्रष्टी धरे॥३९

कर निरधार करे उप चार।मर्दन विलेपन वमन निहार ॥
स्नान करावे ओषधी पाय।छेद भेद दहनादि उपाय॥२०॥
कंद मूल छाल पान विनाश।कडु कटु उपाव किये बहु तास
परन्तु रोग एकही नहींगया।उलटादुःखअधिकहीभया ॥
दोहा—रोगो पचार बहु जगत् में।कर्मो पचार न कोय॥ ८
हंस २ बान्धे प्रणीयां । भुक्ते न छूटे रोय॥ २२ ॥

चौपाइ

कर उपचार थके सब वैद्य ।मनमें पाये अतिही खेद ॥
एसा देख ठाकुर उसवार।मरण निश्चय हुवा मन मझार ।
बहुत हिंसा कर संचिये भोग।भोगव न सका तृष्णा योग॥
मरती दफ प्रत्यक्ष सो पेख।मुर्छा जागी मनमें विशेख॥२४ ॥
आर्त रौद्र धरता चित्त ध्यान । अढाइ सो वर्ष आयु प्रमान ॥
मरकर रत्नप्रभा नर्कमेंगया । एक सागरोपम स्थितीवहां रया ॥
वहांसे चव यहां लिया अवतार । मृगाराणी कुंखीमझार ॥
राणी के उस गर्भ संयोग । महा उज्वल प्रगटे तनरोग ॥२६॥
पतीकाभी अनुराग कम भया । अती शोग राणी मन रहया
खोटा गर्भराणी जानलीया । उसे पाडनेका निश्चय किया॥

---

* "कडाण कम्मा न मोक्ख अत्थी" उत्तराध्ययन सूत्र.
अर्थात् कृत कर्म के फल भोगवे बिन छुटका नहीं।

क्षारे कडवे ओपद लिये । वमन विरेचन बहुतहरै किये ।
मंत्रादि किये उपाव अनेक ।तोभी गर्भनहीं पाडाया छेक
दुःखे २ गर्भवृद्धिपाय । गर्भमे उसका तन सडजाय ॥
कान आँख नाक अपानद्वार। दो दो नाडीके वहे सदाद्वार
रक्त पीरु पडे सदा वहार । भस्माग्नि रोग लगा दूःखकार
जो अहार आहारे वो जीव । भस्मभूत हो देवैतसरीव॥५०
राध रुधीर पीरु रुप थाय । उसीको पीछा ले सो खाय ॥
यों मास नव पुर्णही भये । तव शिशुने जन्मज लिये ॥५१
जन्मान्ध वहीरा अंगोपांगहीन।देखके राणी डरी हुइ खीन
दासी हाथ दिया उकरडे डलाय।दासी राजाकोखबरदीज
कहे राजा राणी पासआय।प्रथम पुत्र यों कीजे नाय ॥
आगे न जीवेगा तुम संतान । इसे पालिये गुप्त घर स्थान
राणी मानी राजाकी कही । तुम देखा तैसे पाले सो सही
निर्दय बंधे चीकणे कर्म । महाविस भोगवे हिंसा के वर्म॥५
परन्तु इतने से छूटेगा नहीं। पेखो आगे भवान्तर सही
बीसवर्षआयुष्यभोगकरी।वैताड गिरे सिंह होवेगा मरी॥५
वहां सेप्रथम नर्कसागर स्थिती।वहां से नवल होवेगा दुर्मति
वहां से दूसरी नर्क सागर तीन।वहांसिपक्षी होवेगा मलीन५
तीसरीनर्कसातसागरदुःखरोग।सिंहहोकरेगादुष्ट भोग ॥
चोथीनर्क, सर्प, नर्कपंचमी।दुष्टनारी, छट्टी नर्करमी ॥५

हिंसकनरहोनर्कसातवींजायाजलचर +कुलकोडीमुक्काय ॥
थलचरखेचरउरपरभुजपराचोरिंद्रीतेंद्रीबेंद्रीहोकर ॥५८ ॥
कटु वृक्ष वायू अग्निविषेपाणीपृथवी मर २ उपजसे॥
असंख्य भव योंहोगा दुःखीभोगवतोकर्मछुटेंगेनकी ॥५९॥
सुप्रतिष्टनगर में सांढ होय । मृत्त्काखिणद्व मरेगा सोय॥
सुप्रष्ट नगर धर्मी शेठ घर । पुण्य जोग पूत पने अवतर ॥
धर्मशास्त्र पढ हो प्रवीनासंयम ले तपसे कर्म कर खिन ॥
प्रथमस्वर्गदेवहोमहाविदेह मांयानरहो कर्मखपामोक्षसिधाय।
दोहा—हिंसाफलदर्शावयाविपाक सुत्र अनुसार ॥
कथा कथी ते पढी सुनीविचारो हृदय मझार ॥ ६२ ॥
एकही भव हिंसा थकी ।असंख्य भव लिये दुःख॥
विषम फल यों हिंसा के। जाणी तनो लो सुख ॥ ६३ ॥

+कुल कोडिका हिसाव-पृथवी कायकी बारेलाख क्रोड (बारा लाख को क्रोड गुनेकरे) कुल, आप काय के सातलाखक्रोडकुल, तेउकायके तीनलाख क्रोड कुल, वायूकायके सातलाख क्रोड कुल, वनस्पती के अठाइस लाख क्रोडकुल, बेंद्रीके सातलाख क्रोड कुल, तेंद्री के आठ लाखक्रोड कुल, चोरिंद्री के नवलाख क्रोड कुल, जलचरके साडी बारे लाख क्रोडकुल, स्थल चरके दशलाख क्रोड कुल, खेचर के बारेलाख क्रोड कुल, उरपर के दश लाखक्रोडकुल, भुजपर के नवलाख क्रोडकुल, नरक के पचीस लाखक्रोडकुल, देवता के छब्बीसलाख क्रोडकुल, और मनुष्य के बारे लाख क्रोडकुल, यों सर्व एक क्रोड साडीसताणवे लाखक्रोड (१९७५०००००००००००) कुल होते हैं.

हिंसककनरहोनर्कलातबीजायाजलचर +कुलकोडीसुकाय ॥
थलचरखेचरउरपरभुजपराचोरिंद्रीतेंद्रीबेंद्रीहोकर ॥५८ ॥
कदु वृक्ष वायू अग्निबिपोपाणिपृथवी सर २ उपजसे॥
असंख्य भव योंहोगा दुःखीभोगववोकर्मछुटेंगेनकी ॥५९॥
सुप्रतिष्टनगर में सांढ होय । मृत्तिकाखिणदव मरेगा सोय॥
सुप्रष्ट नगर धर्मी शेठ घर । पुण्य जोग पूव पने अवतर ॥
धर्मशास्त्र पढ हो प्रवीनासंयम ले तपले कर्म कर खिन ॥
प्रथमस्वर्गदेवहोमहाविदेह मांयानरहो कर्मखपामोक्षसिधाय।
दोहा—हिंसाफलदर्शावयाविपाक सुत्र अनुसार ॥
कथा कथी ते पढो सुनोविचारो हृदय मझार ॥ ६२ ॥
एकही भव हिंसा थकी ।असंख्य भव लिये दुःख॥
विषम फल यों हिंसा के। जाणी तनो लो सुख ॥ ६३ ॥

+कुल कोडिका हिसाब-पृथवी कायकी बारेलाख क्रोड (बारा लाख को क्रोड गुनेकरे) कुल, आप काय के सातलाखक्रोडकुल, तेउकायके तीनलाख क्रोड कुल, वायूकायके सातलाख क्रोड कुल, वनस्पती के अठाइस लाख क्रोडकुल. बेंद्रीके सातलाख-क्रोड कुल. तेंद्री के आठ लाखक्रोड कुल.चोरिंद्री के नवलाख क्रोड कुल. जलचरके साढी बारे लाख क्रोडकुल.स्थल चरके दशलाख क्रोड कुल; खेचर के बारेलाख क्रोड कुल. उरपर के दश लाखक्रोडकुल. भुजपर के नवलाख क्रोडकुल. नरक के पचीस लाखक्रोडकुल. देवता के छव्वीसलाख क्रोडकुल, और मनुष्य के बारे लाख क्रोडकुल, यों सर्व एक क्रोड साडीसताणवे लाखक्रोड ([illegible]) कुल होते हैं.

मंजिल पहिला—प्रणातिपात

उत्तर विभाग—"दया"

दोहा—प्रथम मंजिल के विषे।जो कहे प्राणी भेद ॥
उन सबकी रक्षा करो।जरा न देवे खेद ॥ १ ॥
बाह्य स्वरूप दया तना । येहीज हे पुण्य वन्त ।
अंत्तर भेद अनेक हैं।सो वरणू धरी खन्त ॥ २ ।
प्रश्न व्याकरण सूल के ।पहिले संवर द्वार ॥
दया भगवति के कहे।साठ नाम जगा धार ॥ ४
ता अनुसारे यहां लिखूं। सुत्रार्थ उभय युक्त ॥
आराधी जीव अनंतही।गये और जावेंगे मुक्त॥४

दयाके ६० नाम—चोंपाइ

निव्वाण'-मोक्षकोयहीदातार।'निव्वुही' निवृत्तीभवाकरतार
,संति'शांति, 'किंति'कीर्तिकरे।'कंति'-कान्ती, 'रईय'रतीवरे
,विरइय'-विरती, 'सुयंग'-सूत्रअंग।'तित्ति' तृप्तकरे, 'दया'-अभं
,'विमुत्ति'कर्मबंधसेयहछोडाय।'खंति'-क्षमाअराध कराय॥६
,समत्ताराहण'सम्यक्त्वआराधन।'महंति'-सबसेबहीगुणघन
'बोहो'-बोध'बुद्धिदातार।'धिई'-धैर्य, 'समिद्धि'समर्थकरतार
रिद्धि'-ऋद्धि, 'विद्धी'वृद्धीकरे।ठिई', -दीर्घायु, 'पुठि'-पुष्टीवरे

नंदि आनन्द, भद्दा भद्रकरता विशुद्धि निर्मलदयाहोधार
लद्धि-लब्धीअनेक उपजाया। विसिठ्ठ विशिष्टकीर्तिफैलाय ॥
दिठ्ठी सम्यक्त्वदृष्टि.मूलगुण। कल्लाणं मंगल प्रमोद भूषण
सिद्धावास अंश्य वरोकंत। केवलज्ञानस्थान, शिवसुखकरंत
समिई-अच्छीरीतिप्रवृताय। सीलै-आच.रतनदयासीलनाय ॥
तवो मे सीलधर संवरगुप्ति। ववसाय धीर येही उत्सुकति ॥
यज्ञ गुणायतन जाननहार। अप्रमाद विश्वास विश्वासधार॥१॥
अभयअमरीचोक्खीपवित्रा। शुद्ध पूजा निर्मल प्रभा अति हित१
निर्मल साठ नाम ये कहे। जिनेश्वर पद दया को यह देवे ॥१२॥

जीव दया पालने वाले—मनहर छन्द

साधु सो आत्म साधे। संपूर्ण दया अराधे।
छेही काय न विराधे। आत्म सम जानके ॥

☞ यहां जो दयाके ६० नाममें ५० वा नाम पूजा आया है इसका अर्थ कितनेक द्रव्य पूजा ठहरा कर हिंसाकी स्थापना करतेहैं सोजिनाज्ञा विरुद्ध है. क्योंकि जो पूजाका अर्थ द्रव्य पूजा करें तो (४६)वा यज्ञ शब्द आयाहै वहां भीद्रव्य यज्ञका अर्थ कायम कर अन्यमति जो अश्व मेधादिकयज्ञ करतेहैं सोभी दयाही माना जाय? परन्तु ऐसा कदापि नहीं होनेका. दयाके स्थान हिंसक अर्थ करना सो अनर्थ है. यहांतो दोनों शब्द का अर्थ भावपूजा और भाव यज्ञ करना येही सच्चा अर्थ है की जिनने अपनी और परकी दोनों आत्माकी दयापले.

स्थावर के मांय । जीव असंख्यात रहाय ।
वनस्पती में अनंत । जीव वशे आनके ॥
संकोचित स्थान जिसमे जीव वशे बे प्रमान।
ताका दुःख काही भान । रखे जान ज्ञान के ॥
संघटा न करे तो वो प्राण कहो कैसे हरे ।
मुनिश्वर पालक सदा बावन ही प्रान के ॥१३॥
जीवदया पालन । सोदेख करेहलन चलन ।
पूंजे अप्रकाशिक जाग ।इर्या समिती धरते ॥ ॥
सावद्य दुःख कर वाणी । कभी नहीं वदे जाणी
हित मित पथ वाक्य । अवसरेउचरते ॥
गृहस्थने निजकाम । अहार वस्त्रकिये धाम ॥
मधुकरी वृती करी । उचित आचरते ॥
उपाधी अल्प पत्रे । यत्ना लेते रखे
मन संयम करी सदा मुनिजीविचारते ॥१४ ॥
गृहवांस रहनहार । जिनके केइ परीवार ।
उनसे मुनि आचार । पालना कठिन है

---

५२ प्रान-एकेंद्रिये ४, बेंद्रिके ६, तेंद्रिके ७, चौरिंद्रीके ८, असन्नी तिर्यंच पचेंद्रिके९ असन्नी मनुष्य के ८ और सन्नी पचेंन्द्री १० यो ५२ प्राण की रक्षा साधु जी करतेहैं और श्रावक से एकेंद्रीके ४ औरअसन्नी मनुष्य केयों १२ प्राण की रक्षा होनीमुशकल है इसलिये श्रावक ४० प्राण की रक्षा करसक्ते हैं.

तन स्वजन पालन । स्थावर के हने तन ।
तेही डरते चाहीये सो । ज्यादा तज दीन है॥
नित्य मर्याद करी । पुढवी पानी अग्नि हरी ।
पर्वादि दिवस सोही । तजत प्रवीन है ॥
त्रस घात के जो काम । अनर्थ का जान ठाम।
सदा पर हरे ऐसे श्रावक सु चीन है ॥१५॥
जमीन न खने । स्नान अर्थ जादा जलमने।
चूले दीवे कम करे । पंखान लगाय है ॥
आधिक पाप कारी हरी । और त्रस जीव भरी ।
ताही का त्यागन करी । वश रखे काय है॥
तम्बाखू आदि कु व्यक्ष ।लगावे न ते रक्ष ।
नाल खोले जूते तज । मर्यादा ते राय है ॥
प्रवही वस्तु दीवा । उघाडे नरखे किया
इत्यादिक दयाधर । श्रावक वृताय है॥१६॥
रातीको भोजन न्हावण धोवण लींपण
मोटे मारग चलन नहीं करत कदाइ है ॥
आटा दाल शाक । छानेक लकड़ी गल्ल ।
घंटी उखल वस्त्र भाजन देख के बगड़ है ॥
लेवे न अन छाना पानी । यतना करे जीवानी
दिशानहीं जायन करा । पायन्वा ने नाहीं है ॥
और भी त्रस जीवों के घात के कारन तजे ।

विवे की श्रावक जनाविरजत सदाही हैं ॥१७॥

दया की महिमा–मनहर छंद

दया सर्व व्रत मूल । दया सब को अनुकूल ।
दया को है नाम प्यारो । धारो दया प्राणीयां ॥
देव दयालू ही होवे । गुरु दया वंत सोहे ।
धर्म दया हेत करे । सोही जग जानीयां ॥
दया का एक शब्द सार । ग्रंथ हिंसाका निसार ।
तत्वार्थ सर्व मते । वखाणिया ज्ञानीयां ।
ज्ञानी ध्यानी महात्मा धर्मात्मा रु जपी तपी ।
अवतार अमोल सर्व । दया ते वखानियां ॥ १८॥
अहिंसा धर्म उत्कृष्ट ।जैनशास्त्र पंथ विषे
अहिंसा लक्षणो धर्मापुराण में लखीये ॥
अहिंसा परमो धर्म । यहका है मुख्य वाक्य ।
रहीमान रहेमी देव । कुरानी के पेखीये ॥
टूशाट नो किल । बाइबल पुकारत ।
जरथोस्ती रहेमी को । मानत विशेखीये ॥
यों सर्व मतान्तरों में : दया आगेवानी करे ।
अमोल धर्म रूडु सब याको हीये रेखीये ॥ १९॥
गर्भी को औषध । अरु भुखे को भोजन धार ।
प्यास को पानी दीजिये । हर्षत अपार है ॥
दरसर्व [illegible] मगन ह वनमाग मार्थ जन ।

चौपद को स्थान । भय भीत रक्षाकार हैं ॥
समुद्रमें जहाज । खर खडग मध्य पाज ।
अंध नेन अपून पूत । दालिद्री दीनार है॥
वियोग सुयोग मिलाअमोल आनंद पाय ।
तैसेजगजंतू हीको । दया का आधार है॥२१॥
अहिंसा समान दान पुण्य धर्म व्रत नाहीं ।
जप तप ज्ञान ध्यान अहिंसा ते सिद्ध हैं ॥
सुख संपत निरोग । संतती रु सुसंयोग ।
इच्छित मनोग्य भोग । अहिंसा ए ऋद्ध है ॥
साधु श्रावक मुनी । शाय राय वाय गुनी ।
महात्मा आदिक पूज्य । दया ने प्रसिद्ध है ॥
आनंद की दाता जग मात तात भ्राता ।
अमोल अहिंसा ही को जाणीये सुसिद्ध है ॥२१ ॥

दयाका महात्म—इन्द्र विजय छन्द.

पूर्ण पृथवी रत्नो से भर धरादान में देवे कभी नर कोई ॥
गो आदि पशु देवे सब दान मोक्ष भूपण जेता हैं लोई॥
अन्न पान सन्मान दे सर्व कोतोए खामी रखे नहीं जोई॥
और तो दानसबीके व्याख्यानहोदया समानदान नहीं होइ॥
महा पुण्यात्म महा ऋद्धिधरामहा बली महासुखी महाराव
तीर्थंकर चक्रवर्ती हल धर । मांडलिक सेना पति कहाय॥

विषे की श्रावक जनविराजत सदाही हैं ॥१७॥

दया की महिमा—मनहर छंद

दया सर्व व्रत मूल । दया सब को अनुकूल ।
दया को है नाम प्यारो । धारो दया प्राणीयां ॥
देव दयाळु ही होवे । गुरु दयावंत सोहे ।
धर्म दया हेत करे । सोही जग जानीयां ॥
दया का एक शब्द सार । ग्रंथ हिंसाका निसार ॥
सत्यार्थ सर्व मत । यथाणिया ज्ञानीदां
ज्ञानी [illegible] महात्मा धर्मात्मा [illegible] तपी ।
अवतार अर्हन्त सर्व । दया से यथानिशां ॥१८॥
अहिंसा धर्म उत्कृष्ट । जिनशास्त्र पंथ विषे
अहिंसा लक्षणो धर्म । पुराण में लखीये ॥
अहिंसा परमो धर्म । यहका है मुख्य वाक्य ।
वर्द्धमान वहमी देव । कुरानी के पेखीये ॥
टूसाट नो किल । बाइबल पुकारत ।
[illegible] रहमी को । मानव विशेषीये ॥
यों सर्व मतान्तरों में । दया आगवानी करे ।
अनंत धर्म [illegible] सब याको [illegible] ॥१९॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मेघरथ राय दया करी। हुवे श्री शांति जिनन्द।
गर्भ से जग के दुःख हरे। पाये परमानंन्द ॥ २ ॥

चौपाइ

जंबुद्वीप के मध्य में जान।क्षेत्र महाविदेह है शुभस्थान॥
ताकी पुंडरिक विजय मझार।नगरी अक्षय भूमी है सार॥३॥
मेघरथ राजा राज वहां करे। जैन धर्म लियोग अनुसरे॥
तत्वार्थ धर्म ग्रहा पहिचान।जल कमल वत् रहे जग म्यान॥४॥
श्रावक की करणी करे पवित्र।सब जीवों का सच्चा मित्र॥
स्ववश किसीको जरा न सताय।जोकभीप्राणआपकेजाय ॥
उसही वक्त उस समय मझार। प्रथम स्वर्ग सो धर्म मझार ॥
सौधर्मीशभालकसिंहासने।शक्रेन्द्रबैठेहर्षितघने ॥ ६ ॥
चौरासीसहश्रसमानिकदेव।चौगुनेआत्मरक्ष करे सेव ॥
तीनोंपरिषद देवोंसेहीभरी।बारह चउदह सोलह सहश्रकरी ॥
अष्टइन्द्रीराणीयोंसदासुखकार।सातसेनाऔरबहुतपरिवार ॥
बत्तीपुष्पकरअतिशोभाय।अवधीज्ञानेदेखे जगमांय ॥ ८ ॥
अती दयालुमेघरथनृपदेख।दिलमेंहर्षितहुवे विशेष ॥
हुलसितकहेसुनियोंसुरवृन्द ।धन्यरपृथ्वीपतीसनेन्द्र ॥ ९ ॥
मेघरथराजाजैसादयाल्लाऔरकोइ नहींदेखनाहाल ॥
सबदेवगुणानुवादकिशननाना।दोदेवकोआयाअभिमान॥१०॥
इंद्र भूले कही मुखमांय । देव छोडनरके गुनगाय ॥

सोभी एकदयाहीकेखातर।ऋद्धी सुख क्षिणमेंछिटकाया॥
भिक्षुक हो किया यत्न छेकायका।दया का यह ..
श्री नेमीनाथ पशु दया करण।तोरण जा तजी राजुल नार
श्री पार्श्वनाथ तापस धूणीसे।नाग युगलकिये सुर अवतार
श्री महावीर कु शिष्य गोशाले को।बलता तेजू लेशासे
जो जिनवर जीवदया करी तो।करो सबी जिनाज्ञा धारी
धर्म रुची मुनि कटु तुम्ब भोगी।पिपीलिका मरती को
मेतारज मुनि सोनी मार सही।कुर्कट का नाम नहीं
मेघ मुनी पूर्वे गज केभवमें।शुशल्या बचया देह गमाई
मेघरथराज पारेवा के काज मांसदियो निज तनवधाई॥२४
अनेक दाखले स्वमत अनमत।सर्वही श्रेष्ट दया को माने
जो नही माने तोपूछीयेवाने।तूंक्या तेरा चहावे कहेम्हाने॥
जो तु चावे सो सब चावे। निज से परको ज्ञानी पहचाने॥
अमोल दया भगवती सुखदाता धारले २ अहोबुद्धवाने॥२५

कथा—दूसरी

दयाके फल बताने वाली—मेघरथ राजा की

दोहा—दृष्टान्त बहूत दया के हैं। सूत्र ग्रन्थ मझार॥
एक कथा यहां पे कयूं।जानि दया भन्डार॥ १॥

मेघरथ राय दया करी।हुवे श्री शांति जिनन्द।
गर्भ से जग के दुःख हरे। पाये परमानंन्द ॥ २ ॥

चौपाइ

जंबुद्वीप के मध्य में जान।क्षेत्र महाविदेह है शुभस्थान॥
ताकी पुंडरिक विजय मझार।नगरी अक्षय भूमी है सार॥३॥
मेघरथ राजा राजा वहां करे। जैन धर्म क्रियोग अनुसरे॥
तत्वार्थ धर्म गृहा पहिचान।जल कमल वत् रहे जग म्यान॥४॥
श्रावक की करणी करे पवित्र।सब जीवों का सच्चा मित्र॥
स्ववश किसीको जरान सताय।जोकभीप्राणआपकेजाय ॥
उसही वक्त उस समय मझार। प्रथम स्वर्ग सो धर्म मझार ॥
साधर्मीशभासक्र्सिंहासने।शक्रेन्द्रबैठेहार्पितघने ॥ ६ ॥
चौरासीसहश्रसमानिकदेव।चौगुनेआत्मरक्ष करे सेव ॥
तीनोंपरिषद देवोंसेहीभरी।बारहचउदहसोलहसहश्रकरी ॥
अष्टइन्द्रीराणीयोंसदासुखकार।सातसेनाऔरबहुतपरिवार ॥
वज्रायुधकरअतिशोभाय।अवधीज्ञानेदेखे जगमांय ॥ ८ ॥
अती दयालुमेघरथनृपदेख।दिलमेंहार्पितहुवे विशेख ॥
हुलसितकहेसुनियोंसुरवृन्द ।धन्य२पृथवीएतेनरेन्द्र ॥ ९ ॥
मेघरथराजाजेसादयाळ।औरकोइ नहींदेखताहाल ॥
सबदेवगुणानुवादकियप्रनान।दोदेवकोआयाअभिमान॥१०॥
इंद्र भूले ऋद्धी सुखमांय । देव छोडनरके गुनगाय ॥

अभी कहुं तो नहीं माने वात ।करके बतावूंमसक्षात ॥ ११॥
आये दोनोंतरिक्षग भूमंड।अतिहीधरतेमनमेंघमंड ॥
एकने रूप कबुतर का किया।एकपारधीशिकरालेलिया॥१२॥
आगे कबूतर उडआआय । मेघरथराय केगोदबैठाय॥
थर २ कम्पे कोमल तन । देखी भूपकरुणाव्यापीमन॥१३॥
हाथ फेर कर कहे बुचकार।डरे मत तुझे कोई नहींमारनार॥
उस वक्त पारथी.श्रीघ्रातुरआय।कहेनृपसेछाडोपारवातांय॥१४
मेराशिकरा भूकसे मरा।शीघ्र दो पक्षी भक्ष यह करे ॥
कहे राजा सुनोपारधीवान।यह कबुतर है जीवनप्रान॥१५॥
यह तो मेरे से दियानहींजाय।मेवामिष्टान लेले जोचहाय ॥
निजात्मसम सब जानो प्राण।वेरबदलाहै दुःखकीखान॥१६॥
निजहितयहां मत अन्यकोसताय।तेरीआजीविकादूंमेंकराय॥
ग्रटकीपारधीकहेज्यादामतबोल।मेरेपारेवाहेअमृततोल॥१७॥
छोड २ शीघ्र इसके तांय । रखे प्यारा शिकरामरजाय ॥
नृप कहे शरण यह आयामेय।प्राणान्तनहीं देवूंमेंतोय ॥१८॥
और जोमांगे सोदेवूं देनेयोग्य।अनेकवस्तु जगमें मनोग्य॥
शिकारी कहे ऐसाण्य।रायहनुझ।नोतेरामांसदीप्रदेमुझ॥१९॥
नव कहे यहसुख सेलीजीये।क्षण भंगुर देहको क्याकीजीये॥
इन सेकुल उपकारहीहोय।तोलीखे यह लगे तनमोय ॥२
म१ मे छुरी निकाली तत्काल।बोलेमंत्री हाथतवझ...
म.िये यह कुकार्यमया करो।क्यापक्षीके लियेआपमरो

दो हुकुम देवे दुष्टको निकालो छोडो कबुतर उड जाता हाल॥
नृप कहे यहां न होय अन्याय। मेरा मांस देतां इस तांय॥२२॥
राणी पुत्र उमराव सुन आये सब। कर धरी कहे करो क्या गजब॥
दो पारेवा यह इसको आप। हमारे शिर लेने यह पाप ॥ २३ ॥
निज मांस देने का कोइ न कहे। राय परमार्थ यह तत्व लहे॥
राय कहे सब तुम दूर ही रहो। नहीं मानूं मैं किनको कहो॥२४॥
यों सुन चुप सब दूर ही रहो। नृपती निज परधान से कहे॥
किस स्थान का देवूं तुम मांस। अब भी पारधी करे प्रकाश ॥२५॥
हराम का माल जरा मैं नहीं लहूं। कबुतर बराबर मांस दो कहूं॥
त्राजु राय मंगाइ उसी वक्त। एक पलडे में कबूतर रक्त ॥२६॥
जंघा का मांस काट शीघ्र धरा। बराबर न हुवा फिर मारा छुरा॥
काट के मांस त्राजु में धरा। तो भी पारेवे बराबर नहीं हुवा ॥ २७ ॥
देव शक्ति से किया वजन अपार। किस भी हराबूं नृप इस वार॥
अवधि ज्ञान से देखे राय मन। नहीं बदला जरा न हुवा खिन्न ॥२८॥
चिन्ते राय सब मेरा तन जाय। तो मुझ को दुःख किंचित नांय॥
परन्तु मत जावो कबुतर प्राण। यों नृप पलडे में गये जवान ॥ २९ ॥
कपट रूप मांस काट काट धरे। देख देव आश्चर्य अति करे ॥
अपूर्व दया नृप घट रही छाय। नहीं तीर्थंकरगौ मिटपाय ॥ ३० ॥
सुरत यमन मैं गया नृप छाय। हुवा ज्ञान अधिक पस्तांय ॥
पारेवा पारधी अदृश्य भये। नृप तन के दुःख सब गये ॥ ३१ ॥
सर्व नमे या सभा में प्रकाश। देव नमस्कार कर आकाश ॥

अभी कहुं तो नहीं माने बात । करके बताबूं मैं सक्षात ॥ ११
आये दोनों तिरिक्षग भूमंड। अतिही धरते मन में घमंड ॥
एकने रूप कबुतर का किय। एक पारधी शिकरा लेलिया ॥ १२
आगे कबूतर उडता आय। मेघरथ राय के गोदी बैठाय ॥
थर २ कम्पे कोमल तन । देखी भूप करुणा व्यापी मन ॥ १३
हाथ फेर कर कहे बुचकार। डरे मन तुझे कोई नहीं मारनार
उस वक्त पारधी का चातुर आय। कहे नृपसे छोडो पारवा तांय ॥ १
मेरा शिकरा भूकसे मरा। शीघ्र दो पक्षी भक्ष यह करे ॥
कहे राजा सुनो पारधी वान। यह कबुतर है जीवन प्रान ॥ १५
यह तो मेरे से दिया नहीं जाय। मेरा मिष्टान लेले जो चहाय
निज आत्म सम सब जानो प्राण। वैर बदला है दुःख की खान ॥ १६
निजहित चहा मत अन्यको संताय। तेरी आजीविका दूं मैं कराय
झटकी पारधी कहे ज्या दाम तबोल। मेरे पारेवा है अमृत तोल ॥ १७
छोड २ शीघ्र इसके तांय । रखे प्यारा शिकरा मरजाय
नृप कहे शरण यह आया मोय। प्राणान्त नहीं देवूं मैं तोय ॥ १८
और जो मांगे सो देवूं देने योग्य। अनेक वस्तु जगमें मनोग्य,, ।
शिकारी कहे ऐसा ण्य। गयह तुझ। नो मेरा मांस शीघ्र देमुझ ॥ १९।
नृप कहे यह मुग्ध से ली जाये। क्षण भंगुर देह को क्या कीजाये।
जो इन से कुछ उपकार ही होय। तोलदे यह लगे तन मोय ॥ २०
कमर से छुरी निकाली तत्काल। बोले मंत्री हाय तब ततकाल ॥
महिप यह कृकार्य नया करो। क्या पक्षी के लिये आप मरो ॥ २१

दो हुकुम देवें दुष्टकोनिकालाछोडो कवुनर उड जाताहाला।
नृप कहे यहां न होय अन्यायामेमेरा मांसदेतांइसतांय॥२२॥
राणी पुत्रउमराव सुन आये सबाकरधरीकेहकेरांक्यागजब॥
दो पारवा यहइसकोआपाहमारेशिरलेनेयहपाप ॥ २३ ॥
निजमांस देने का कोइ नकहे। रायपरमार्थयह तब लहे॥
रायकहे सब तुम दूरही रहो। नहींमानूंमेंकिसकोकहो॥२४॥
यों सुन चुपसब देखही रहे। नृपतीतबपरधीसेकहे॥
किसस्थानका देवुंतुझमांस'अचंभीपारधी करेप्रकास ॥२५॥
हराम का मालजरा भेनहींलहूंकवुनर बरोवर मांसदोकहूं॥
त्राजु राय मंगाइ उसीवक्ताएकपलवेमें कबूतर रख ॥२६॥
जंधाका मांस काटशीघ्रधरा।बरोबर न हुवाफिरमारा छुरा॥
काट के मांसत्राजु मेंधरा।तोभीपरेवेबरोवरनहींचडा ॥ २७ ॥
देवशक्ति सेकियावजनअपार ।कैसेभीहरावूं नृप इसवार॥
अवधज्ञानसेदेखेरायमन।महावेदनाजरानहुवा खिन ॥२८॥
चिन्तेरायसबमेरातनजाय।तोमुझकोदुःखकिंचितनाय ॥
परन्तुमत जावोकवुतरप्राण।प्रभूपारपडोमेरीजवान ॥ २९ ॥
कपाकपमांसकाटकाटधरे।देखदेवआश्चर्यअतिकरे ॥
अपूर्वदया नृप घटरहीछाय।तहां तीर्थंकरगौत्रउपाय ॥ ३० ॥
सुरतबमनमेंगयासूरझाय।हाराजानअधिकशरमांय ॥
पारेवापारधीअदृश्यभये।नृपतनकेदुःख सबगये ॥ ३१ ॥
सुर्यसमभयाशुभ।मेंप्रकाश।देवनाप्रकटानव आकाश ॥

मुकुट कुंडल वर वस्त्र शोभाय। मेघरथ राय के सन्मुख आय ॥३२॥
करजोडी जोड किया प्रणाम। नम्र रहा करे सो गुनग्राम ॥
शक्रेन्द्र प्रशंसा आपकी करी। वो वचन में माना नहीं जरी ॥३३॥
धर गुमान आया आप हजूर। दुःख आपको दिया भरपूर ॥
स्वामि किंचित नहीं चल मन। वारम्वार आपको है धन ॥ ३४ ॥
मेरे पापक कुल की जिहू कम। सो ही मे धजा वृद्ध सदम ॥
गाय कहे मिथ्या मनि दो छोड। धारो जैन धर्म है यो प्रौढ ॥ ३५ ॥
पुन देव सम्यक्त्व धार। वारम्वार किया नमस्कार ॥
इविन अमर स्वर्ग में गया। नृप यशः जग में फेली रया ॥३६॥
दोहा–मेघरथ नृप देखीयो। मनल्यो यह संसार ॥
धना हाळ सूत्र में। लायो विराग्य अपार॥ ३७ ॥
राजा रुद्धी सज कुटुम्ब को। लीना संयम भार ॥
करणी करी अति निर्मळी। बहुत पुर्व लग सार ॥ ३८ ॥
संलेखणा आयु पुर्ण कर। गये सर्वार्थ सिद्ध ॥
तेतीस सागर का आयुषा। सर्व से उत्कृष्ट रिद्ध ॥३९॥
तेतीस सहस्र वर्षान्तर। क्षुधा वेदनी प्रगटाय ॥
अत्यन्त श्रेष्ठ पुद्गल का। मनसा आहार ग्रहाय ॥ ४० ॥
तेतीस पक्ष बीते पिछे। लेते श्वासोश्वास ॥
दोनो उत्तम मोतीका। चन्द्रवा शिर पास ॥ ४१ ॥
चौदह पूर्व के ज्ञानके। ध्यान में रहते मग्न ॥
एकावतारी शुद्ध सम्यक्त्वी। लगी मोक्ष मे लग्न ॥४२॥

केइ भूंखाहे केइ जल छिटकाय।केइन्हवायदर्पणदेखाय॥५१॥
इन्द्र जिनको मेरु शिखर लेजाय।जन्मोत्सव अति हर्ष कराय॥
फिरलाकर धरेमाताजीपास । रत्नसूवर्णकीकरी वर्षास ॥
प्रातसमय नरेश्वरपाय । पुरदेशमेंजन्ममोत्सवकराय ॥
अमारिपडहवजायसवस्थान।छोडदियेसवबंधीवान ।
दानशाला में दे इच्छित दान।सवकोकराया भोजनपान ॥
गुणनिष्पन्ननाम स्थापउसवार।शान्तीकरीसो शान्तीकुमार ॥
तीनोंज्ञानसहित भगवन्त।सर्वपारंगत्या विद्याअनंत॥
चालीस धनुष तनकंचन वर्ण।एकलक्ष वर्षआयु शुभकर्ण ॥
पचीसहजार वर्ष कुमरपणेरहे।मांडलिकराजवर्षइतने भये ॥
फिर चक्र रत्नप्रगट भया।षट्खन्डका राजजय लया॥
अश्वगजरथ चौरासी लाख । छिन्नूंक्रोड पायक सुखसाख॥
छिन्नूंसहस्र राणीयोंमिनोहार।बत्तीससहस्रनरेश्वरआज्ञाधार॥
चउदह रत्न नव नव निधान।आत्मरक्षक सुरदो सहस्र जान॥
क्रोडों देवता आज्ञा मांही। और बहुत ऋद्धि सुख थनाई ॥५८॥
पचीस सहस्र वर्ष भोगव्या राज।अनित्य जाने संसारके काज॥
सहस्र पुरुष संगसंयमलिया॥नागान्तरकेवलज्ञानीभया॥५९॥
दया धर्म फैलाय जगत् मझार।पचीस सहस्र वर्ष कियाउपकार
कर्म खय कर पहोंचे शिव पुर।अजरामर अक्षय अनंतसुख भर॥
दोहा—अहो भव्य अन्तर दृष्टी से । देखो दया के फल ॥
एक कबूतर रक्षा सेअद्भुत सुख पाये विमल॥६१॥

समे दृष्टी मंडलिक चक्रवर्त।साधु केवली जिन ॥
यह छः पद्वी अति श्रेष्टाएकही भव में लिन ॥६२॥
एसा जान हितर्थि यों । पालो दया सदाय ॥
तो ऐसेही सुख पावेगे । संशय इसमें नाय ॥६॥
स्वपरात्म सुख वरन । प्रणाति पात पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख रचा । यह प्रथम अधिकार॥ ६४ ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज
के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि
श्री अमोलक ऋषिजी महाराजरचित
प्राणातिपात पापोद्धार नामक
प्रथम मंजिल समाप्तम्

॥ १ ॥





मंजिल दुसरा—"मृपावाद पापोद्धार"

पूर्व विभाग—" झूठ "

मृपावाद का अर्थ

ोहा—मृपा कुछ रग्वा नहीं । पाप कार्य जग मांय ॥
मृपा वदि के आरम को । सर्व पाप लग जाय ॥१॥

प्रश्न व्याकरण सुत्रानुसार मृपावाद पापका वरणन्

ोहा—प्रश्न व्याकरण सूत्र के । द्वितीय आश्रव द्वार ॥
मृपावाद के गुण कथे । सो यहां करूं उचार ॥२॥
पाप कैसा ? रू नाम तस । कोन करे जग मांय ॥
तस फल अरू सद्बोध कुछ।इस मंजिलमें कथाय॥ ३ ॥

मृपावाद केदुर्गुण—चोपाइ छन्द

मेरुगिरि-सबसे लघु यह।लहु चंचल-तृण लघु करेह ॥

भयकरंदुःखकरंअपथंशकरावेरंअरतरिागद्वेषघर ॥ ४ ॥
क्लेशंमोयाअविस्वासंस्थानानीचेनरकेयहलक्षनजान ॥
सुर्गोरहित अप्रेतितकरतार । साधुंनिंद क्रूष्णलेशाधार ॥५ ॥
दुर्गतिदातो भेमावे संसार । ज्पूनंस्नेहीअनुगंतआवेलार ॥
कीर्तिअरुधन नशाय । झुठ बोलयहगुण प्रगटाय ॥ ६ ॥

मृषावाद के नाम अर्थयुक्त—चोपाइ छंद

अलियंअलिक, असंद्वधुतारा। अणंज्ञअनार्यमायामोसाठगरा
'असंतक'-अच्छत्रीवातयनाचे।'कुडकवड'विप्रितवदावे॥ १ ॥
निरथ्थयंनिर्थकमेवस्तुदुर्गुण । विदंसेगरणिज्जंनिंदकथुण ॥
अणुज्जवक्ककक्कणसयपापस्थान। वंचणायेवंचकमिथ्यकर्तजान
सोइपेंछाहलकासवसेयह उज्जतउंकल न्यायसेउलट छेह ॥
अहंआर्तध्यानअभ्यारव्यानं।किव्विसमलीनवलंयेलपटान ३॥
गहणंउडोमम्मेणगुतरखे।तूमेंगुढणियेइनितपखे॥ ॥
अंबपओनकहेनिजाविचारा।अमसेमज्जओअतिखोटाआचार॥
असंत्रसंधतणझूठहीसंधे।निविखासत्सन्नू अवंहीयनंदे ॥
उपाधीअशुद्धवस्तुगुंणढको।यहतीसनामझुठकेचके ॥ ५॥

झुठबोलने वाले के नाम—मनहर छंद

क्रोधी मानी मायी लोभी।रागी द्वेषीभयी हाँसी।
लज्जाकीडा हेषीं शोकी।चतुंरवहुंत वोलीया ॥

पापी असंयती ।अद्भूति दुर्मतिअति ।
चैपलखुशामंदीया।खोटेमापतोलीया॥
जुगारी व्याज व्यापारी । कपट के भेष धारी ।
मुगल फांसी वलात्कारी । जार चोर धन लिया ॥
खोटे मंत स्थापी । औधिक गैधिक व्यापी।
एते जन झूठ बोले । सूत्र ग्रंथ खोलीया ॥६॥
नास्तिक मति नहीं मानत हैं पुण्यपाप ।
जीव स्वर्ग नर्क करणीफळ न बतावे हैं ॥
कितनेक अछत्ति रु अनमिलती वाणी वदे ।
जगत और वस्तु सर्व इश्वरही बनावे हैं॥
जगत् व्यापी इश्वर कहते हैं केइ जन ।
अक्रियक आत्मा को केइक ठरावे हैं ॥
इत्यादिक मतन्तर के जो स्थापी जन ।
मृषा वादी अज्ञानी है जिनजी फरमावे हैं ॥७॥

सत्य वचन भी असत्य जैसे–मनहर छंद.

श्रोतादिक इन्द्रि कर । विषय जो लियेवर।
प्रणमें मन माहीं तासु । उलट उचार है॥
अंध काणा कुष्टीजार । चोर ठग्या गुन्हेगार ।
सत्य तोभी झूटे वेण । पर को दुःख कार है ॥
जासेकुल भंग होय । कुपंथ में लगे कोय ।

दुर्गुण उत्पन्न करे । ऐसा बोलन हार है ॥
सर्व ये हैं मिथ्यावादी । सत्यही असत्या सादी ।
ज्ञानी के अबोल बड़ो । वचन संभार है ॥८॥

स्थूल झूठ—मनहर छंद

स्थूल मृषावादी के प्रकार पांच कहे जिन ।
कन्या गौ भूमी थांपण शाक्षी के काज है ॥
कन्या शब्द माहें जीव दोपद ही लीजे तब ।
गो में चउपद भू में अपद समाज है ॥
थापण दबाय खोटी साक्षी जो भरे जाय ।
इन पांच काम करे झूठ जो अवाज है ॥
स्थूल मृषा बोल आगे भेद याके देवूं खोल ।
देखीये जग में चला निपजन यहां ज है ॥९॥

दोपद अलिक—मनहर छंद

पंचम और बली मोट । नाम मान हो कपाड़।
पुत्र पुत्री देखने का । धंधाट चलाया है ॥
अंगोपांग पुष्ट हीन । कुलहीनी गुनहीन ।
तही भी प्रशंसा कर । धन को कमाया है ॥
गुनी ज्ञान ले मो जाय । दुर्गुनी दिव पन्नाय ।
जन्म जाव हुआ मांय । कुल धर्म लजाया है ॥

निरपही देवे सराप । पावत बहुत संताप ।
छुठा-परा धन गमा के । कू गति सिधाया है॥१०
होय के विचमें दलाल।करे हैं कर्म चंडाल।
दुगम का चाहे माल । शाने धन आवे हैं ॥
हजारों का करे ढग। छुचे परपंची ठग ।
दुष्ट मात तात धन देख लल चावे हैं ॥
नेन बेन श्रवन हीन । अशक्त शिरवालविन ।
मशाणिया बुद्धको वो योवनियां बनावे है॥
रूप वल बुद्धिवन्त । जोडी का जो चावे कन्त
बलात्कार पापी पंच । बुद्ध कों परणावे है ॥ ११
बन्दे बाल काले करे। पत्थर की बसीसी घेर ।
अकडाय कमर बान्ध । बसमें चढ़ा बाके है ।
जामा पहेर जाडा बने । गरदन तो नाना मने ।
निर्लज्ज गधेडे चढे । दो नर पकड राखे है ॥
बजाते धाडेनी जाय । निर्दयी सज्जन हर्षाय ।
विचारी अवला बाल । रोवे अश्रु आंखे है ॥
धर्म वृद्धि जाति पर । धन तन जन घर ।
बोड़े धाड़े देखलो धोला में धूल नहाखे है ॥१२
नाम चलानेकी रहाँ । अजब भली जग मांहीं।
मोल्ले पुत्र लाड नोली । नाम न रहाही है ॥
उदर मुखमें लल भाड । दुर्गुन मद्गुन डेगाड ।

लेजाय गुण नहीं पाय । अति मन में पस्ताय ।
थोडे नफे काज अज्ञानी। कर्म यों बांधे हैं ॥१९

अपद-या भोमालिक मनहर छंद

अपद खेत अरु घर । बाग कूवा सरोवर ।
वस्त्र अनाज भूषणादि बहु प्रकार है ॥
गिलट चढ़ावे । सचे सादृश बनावे ।
भोले लोकों कों वह कावे कहे येही जग सार है
देखी भभक लेजावे।सस्ता जान हर्षावे ।
पीछे बहुत पस्तावे । जब निकले निसार है ॥
ऐसी रही कलीमांही।स्थानो स्थान ही देखाइ
हाथे पस्तीत गमाइ।चोर बने साहूकार है ॥ २१

थापणमोसा—मनहर छंद

विस्वास से मित्र आया।स्वजनो से धन छिपाय
साहूजान थापन धरे। मेरे आगे काम आवेगा ॥
विश्वास घाती महा पापी।दुष्ट लालच में व्यापी
पीछे आके मांगे जबाना कही नापवेगा ॥
सुन सो निराम होयाकेइ धक्को प्राण खोय ।
दुःखन गमावे केइ । पीछे पस्तावेगा ॥
ऐसे अनर्थी जन ।जिंदही पाय मरण ॥

धन छोड़ पाप बान्धानरक सिधावेगा ॥ १७ ॥

कूडीसाक्षी—मनहर छंद

वकोली रु वालिष्टरी । पुण्य जोग पढ़ी बरी ।
झूठे प्रपंच रचि करी । दाम को कमावे हे ॥
केइ बीच लांच खाय । लेही शरम में आय ।
खोटी शाक्षी भरने को राज शभा मांहि जावे हे ॥
झूठे को सच्चा बनाय । सच्चे शिर कलङ्कठाय ।
सत्य वन्त शरमाय । अति पस्तावे हे ॥
कर्ता ने कराने हार । दोनों ही हैं गुन्हेगार ।
आखिर सत्य होवे जहार। पापी दुःख पावे हे॥१८॥

सहसा भाषण—मनहर छंद

केइक मत्सरी जन । मेला रखे सदा मन ।
गुणी गुण त्याग कर । दुर्गुण ही लेवे हे ॥
ज्ञानी ध्यानी जपी तपी । आचारी शीतल खपी।
इत्यादि की कीर्ती सुन । मन दुःख सेवे हे ॥
करने को यशः हान । रखने अपना मान ।
छत्ते रु अच्छते कलंक । तास सिर देवे हे ॥
संत सती को सताय । महा पातक उपाय ।
निंदक छिद्री दोनो भव दुःख लेवे हे ॥१९॥

रहस्य भाषण–मनोहर छंद

सद्गुण दुर्गुण भाइ । सर्व वस्तु मांहि पाइ ।
गुनी गुन ग्रह दुष्ट । दुर्गनहीं लेवे है ॥
विरोद्ध का वक्त पडे । रहस्य प्रकाश करे ।
पीढीयों की बीती केइ खोटी बात केवे हैं ॥
गरिब रहे शरमाय । जबर क्लेश बडाय ।
कितनेक मृत्यु पाय । प्रत्यक्ष दिखेवे हैं हे ॥
अपने न अवगुन देखे । अन्यका फले जा सेखे ।
गमावे जन्म अलेखे । निगोद में रेवे हें॥ २० ॥

मिथ्या उपदेश–मनहर छंद

केइ जग मिथ्या मानि । नाम रखे साधु यती ।
सत्या सत्य जाने नाहीं । झूठी टेक पकडी ॥
दया धर्म को उत्थापे । हिंसा माहे धर्म स्थापे ।
सच्चे को झूटा बनावे । एसीलिये छकडी ॥
पेट भरने के काज । जग का कर अकाज ।
स्वाद के झूंठे समाज । फंद मारे जकडी ॥
एसे मिथ्याचारी विचारी गुरु अचारी ।
संगती का साथ ले । जाय नर्क नकडी ॥२१॥

खोटा लेख–मनहर छंद

व्यापारी आपार तृष्णा वश करे व्यभिचार ।
रुक्के वही मांहि सही ये सही बनावे है ॥
पीछे दे अंक चडाय। आगे को दे विन्दु ठाय। ॥
जब्बर हो फरियाद करे । ताहे लूट खावे है ॥
स्टांप नकली बनाय । देत अक्षर ही मिलाय ।
लांच दे सायदी कर । कोरट चठावे है ॥
जान के धरके लाचार।विन मोत डाले मार ।
ऐसे जाय यमद्वार खुद मार खावे है ॥ २२ ॥

सत्य वचनभीझूठजैसे—इन्द्र विजय.

जोवचन श्रवण कर धर्मी।धर्म तजी कू मार्ग जावे ॥
जोवचने भांगे लिये वृत को।जो वचने कोइ घात जो थावे ॥
जितवचनेगुणी गुणढके । अरुजो जिनाज्ञा विरुद्धक हावे ।
सो सवजानोअसत्यवचन है।सत्य सोजानभोलेभरमावे॥२३॥
निर्दयी पुरुषोंने शास्त्ररचे जोकोकादिआसन भेदबतावे ॥
मूठ ऊँचाटन आदिमंतरु। तंत्र औषधी जेह दर्शावे ॥
होम वशीकारविधी रुअस्तरेकर पर प्राण सतावे ॥
सोसवजानोअसत्य वचनोसत्य सोजाने भोलेभरमावे॥२४॥

झूठ के दुर्गुण—इन्द्र विजय

अप्रतीत लहेजनअसत्य से जमाहुइ पैठ कोतुर्ते गमावे ॥
अपकीर्ति अपयश होवे अरु । सत्य कहे सो भी झूठेगिनावे
लबाड लुचा ठग धूतारा । गपोडी शंखधों नाम स्थापवे ।
असत्य कोपाप अमापसंतापदे।ऐसेभावप्रत्यक्षदेखावे॥२५।
झूठेकी विद्या मंत्र जंत्र रु बहुत कष्ट रहे सिद्धी न थावे।
देवदानव नरेश्वर रूठत । शभापंचों में बोल न पावे ॥
वंदनीय केई निन्दनीय हुवे।जग बोल गमाइ पीछे पस्तावे ।
असत्यकोपापअमाप संतापदे।ऐसे भावप्रत्यक्षदेखावे ॥२६।
झूठाकहेजग पैठ बाडेको।भलाजनताकीसूगलावे ।
भंगी कूकर काग भखे तस।धूल पडे उकरडे पठावे ॥
तैसेही झूठा अपमान लहे सबनीच कहे मर दुर्गति जावे ॥
असत्यका पाप अमाप संताप दे ऐसेभावप्रत्यक्षदेखावे॥२७।
तोतला बोबडा लेत वागासी।मूंगेगुंगे जहं दिखावे ॥
मुख पाक हीन दाँत दाढ मुख थुक उडे दुर्गंध महकावे॥
एकेंद्री बेन्द्री तेन्द्री चोरेंद्री सन्नीअसन्नी तिर्यंचजोथावे।
यह सब प्रताप असत्यकेपापकेफल भोगे आँखआँश्रुवावे।
बहुत असत्य से जाय नरक में।यम देव तापे अ.न दवावे ।
छुरी कटारी काँटे त्रिशूलादी।शास्त्र से तस मुख भरावे ॥
प्रहार दशन विदारत।थाप अमापही मुह पे लगावे ॥
[illegible]सत्य का पाप अमाप संतापदे।दोनोंहीभवमें देख यहभावे ॥

अन्य को आपदेतेहोज्ञान।अपनेपुत्र को रखोअंज्ञान ॥ ८ ॥
यह युक्तो नहीं आपको नाथ। आचार्य कहे सुन मुझबात ।
अपनो पुत्र है मूर्ख शिरदार। सीधी शिखाये उलटी लेधार।
याको हृदय वडो कठोर। और भी है पुण्य का काम जोर ॥
तीनोंकीपरिक्षा वतानेकाज। दमडी २ कीकोडीदी त्याज ।
कहेतीनों से वजार में जाया' पेटभरभोजन कर आवो ॥
खुशहो तीनोबाजारमें आय ।पर्वत 'फुटाणे लेकेखाय॥११॥
वसू नारदभेले कर दाम।वस्तुखरीदी कोइ निकाम ॥
वेंचीगरज वन्त धरजाय। दाम बहूत मिले हर्षाय॥ १२ ॥
इच्छित भोजन किया पेट भरामूल पुंजी ले आयेघर ॥
तीनो आये गुरुजी के पास। दोनों खुसी 'पर्वत'उदास॥१३॥
पूछा तीनों सें वीता कहा ।दम्पति पुण्य का परिचयलहा ॥
तो भी पूत्र के मोह वशहोय।कुछेक विद्या पडावे सोय ॥१४ ॥
एकदा वसु भूले निज पाठ।गुरू रुष्ट हो मारन लगे काठ ॥
रक्षा करी विप्राणी आय । मार बचाइ वसु हर्षाय ॥१५ ॥
कहे वसु मातुश्री मांगो वचन।विप्राणी कहे वक्ते दीजो धन॥
वचन भंडारे रख सुखे रहाय । तीनोंही पढे चित्त लगाय॥

दोहा—एकदा जाय आकाशमें । दो मुनि विद्या धार ॥
पढाते देख आचार्य को।करें आपस में उचार॥ १७॥
तनों विद्यार्थि यों विषे । दोतों नरक में जाय ।
एकही जावेगा स्वर्गमें।सुनआचार्य विस्माय ॥ १८ ॥

चौपाई

एकदा गुरु भ्रात मिलने काम। फिरत नारद आये पर्वत धाम॥
तब पर्वत वेद उच्चराया। "अजैर्यष्टव्य मिति" श्रुति आय ॥२९॥
बकरा होमने को पर्वत कियो अर्थ। नारद कहे मत करो अनर्थ ॥
निर्बीज शाल्य गुरुजी अर्थ कहा। विवाद तब दोनों के रहा॥३०
अज्ञानी पर्वत नहीं छोड़े हठ । वचन पण किये दोनों ही शठ ॥
सत्य वादी है वसु भूपाल । न्याय करावे ना डिग चाल ॥३१।
जिसका झूठा निकले सवाल। उसकी जिव्हा छेदना तत्काल ॥
पर्वत की माता जाना भेद । मन मांहि अति पाई खेद॥३२॥
मागुन आई वसु नृप पास । वचन मांगा करी अरदास ॥
मेरे पुत्र के बचाये प्राण। तिहाल सब किये बयान ॥ ३३ ॥
पर्वत झूठा नारद सत्य कहे । यह किये मुझ पर प्रलय ॥
न्याय लेने आवें नृप पास। बचावो शीघ्र कोइ कर प्रयास॥३४॥
वसु वचन कस मानी बात । ना समय दोनों लड़ते आत ॥
और लोक बहुत ही सराय। वसु नृप पर भगमा लाय॥३५॥
नृप न्याय सिंह सभा हो सवार। मिथ्य वचन यों करें उचार॥
अजा शाली दोनों अर्थ है या। इसश्रुतिका गुरु कहा सोय ॥३६॥
यों बोलत धरणी धंसे तत्काल। नरक में पहोंचे करके काल ॥
देख झूठका फल प्रत्यक्ष। सब लोक कहे नारद की पक्ष॥३७॥
नारद का हुवा बहु सत्कार पर्वत को किया देश के बार ॥

पर्वत अति अभिमान भराय॥ हिंसक यज्ञ स्थापा अन्य जाय॥
उलट अर्थ वेदों के कर। वोभी गया नरक में मर
नारद हिंसा यज्ञ किनेवंध॥ जिसका आगे बहुत सम्बन्ध॥१३॥
दोहा-इस दृष्टांत से देखीये। हिंसक झूठ उचार॥
वसु पर्वत गये नरक में॥ अपयश जग मझार॥ ४१॥
जो असत्य सदा उचरे॥ ताकी कोन गति होय॥
आत्म हितेच्छु सुज्ञ हो। झूठ म बोलो कोय॥ ४२॥





मंजिल दूसरा—"मृषवाद पापोद्धार."

उत्तर विभाग—"सत्य"

दोहा—सर्व व्रतों में मुख्यव्रत।सत्य एकही जान ॥
इसे आराधे विशुद्धजो।उस के सुख निधान ॥१॥
धर्मोत्पत्ती सत्य से।करे आत्म कल्यान ॥
विघन हरे मङ्गल करे।गृहो सत्य मतिमान ॥२॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के।द्वितीये संवर द्वार॥
महिमा सत्य वचन की।करी जनेश्वर उचार ॥३॥
गुण निष्पन्न नाम अर्थयुक्त।सत्य उचार न त्रिध ॥
महिमा सत्य वचन की। सद्बोध वरणु रिध॥ ४ ॥

सत्य वचन के नाम—चोपाइ छन्द

'सुद्धे'-निर्दोष,'सुईयं'-पवित्र।'सिवें'-कल्याण,'सुजायं'-सुजातिव।
'सुभांपियं'-यहअच्छावचन।'सुदिठं'-सुद्रष्ट,'सुपइट'-सूथपन१।
,'सूपइठयसं'सुयशःजगकरे।'सुसंयमी।वुइ'-सुनीवरउचरे ॥

मुनितनरपैंतवैंठीसुविधैंजान।सत्यकोसवहीदेतहैमान ॥२ ॥
गमैसाधु धर्मआचरणकरे।तैंपनियमसत्यवन्तसमाचरे ॥
सुगतीपंथैंसत्यहीवनाय। लोकोमैंउत्तमसत्यगिनाय ॥ ३ ॥
गगन गामिनीविद्यासिधसत्यकरे।स्वर्गमार्गनांक्षैंमार्गसंचरे॥
अवितह-यथातथ्यहैसत्य।उज्जुंय-शरल.अकुटिलपथ्य ॥४॥
सुपत्थं सत्यअर्थदर्शाय।अत्थनो-परमार्थविशुद्धकराय॥
उज्जोयंकरं-उज्वलसत्यकरे।प्रकाशहोयत्रि-लोकलोभरे॥५ ॥
अविसंवादी-सत्यवन्तहोय।पंथार्थकहेसत्यवन्तनोय॥
मधुर-तत्थैंप्रत्यक्षदेवजिसा।यहनीसत्न ससत्यकेगुणऐसा॥६ ॥

सत्य भाषा के लियेसंक्षेप में व्याकरण—इन्द्रविजयछंद

'नाम'सोनाम,'अख्यात'क्रिया.पद्निपातअव्ययएकरूपरहोव

'उपसर्ग शब्दकेआदअक्षरधरेमूलशब्दमेंभेदपड़ावे ॥
'तद्धित'दोशब्दएककरेजो,'समास'केभेदसातकहावे ।
सन्धी'मिलापकरेदोशब्देंपदसेपूर्णशब्दकरावे ॥ ७ ॥

जैसे निरा×मल सु+योध- इत्यादि को उपसर्ग कहते हैं.

(९).दो या बहुत शब्द मिलने से एक शब्द बने जैसे-राज महल,-मावाप, इत्यादिको तद्धित कहते हैं.

६ समास के ७ भेदः- (१) अव्यय भावसो-अर्थ प्रकाश मेमें काम आवे जैसे-प्रति-वर्ष. ये-शक इत्यादि. [२] तत्पुरुष सो समास के अंत के शब्द पेही लक्ष रक्खाजावे.जैसे राजाजी का हाथीपागलहोगया. इस शब्द का हाथि पे आधार है परन्तु राजाजी पर नहीं. इस तत्पुरुष समास का विग्रह करती वक्त विभक्ती लगाइ जाती है,

(३) द्वंदसमास सो दो तथा ज्यादा शब्दको एक ही विभक्तिलगे जैसे अम्ब के फळ (४)बहुव्रही एक दो आदि शब्द में मुख्य वस्तु का नाम नहीं लेते फक्त विशेषण ही होवे जैसे मृगानेणी इस में मृगपशु का बोध नहीं होते स्त्री के आँखो का बोध होता है इत्यादि (५) कमधर पहिलाशब्द विसेमनका बोध करे जैसे देवरूप इत्यादि.

(६) द्विगुण सो जिस के दो अर्थ होते है जैसे दृ पदा त्रिभुवन इत्यादि [७] एक शेष एक ही शब्द में सब मतलब समावेश हो जाय जैसे हिंसक. निन्हव.इत्यादि यह समास के सात भेद जानना.

- दो शब्दों के मिलाप से तीसरा रूप होवे जैसे शब्दार्थ भावार्थ इत्यादिको संधि कहते हैं.

(८)-जो शब्द के अंत में होवे जैसे घर में, मनुष्य का.

*अक्षर ले व्यंजन यतीमे भाषा, बारह 'वचन' सोलह जतत्रि ॥८॥

ओ, औ, अं, अः यह १६ स्वर हैं, इन के सहाय से व्यंजन का उच्चार होता है.

१५ क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, यह ३४ व्यंजन हैं.

१७ १ संस्कृत, २ प्राकृत, ३ सुरसेनी, ४ मागधी, ५ पैशाची और ६ अपभ्रंशी इन ६ के गद्य और ६ के पद्य यों १२ भाषा.

१८ घट पट मनुष्य इत्यादि एक वचन, २ घटौ पटौ मनुष्यौ यह द्विवचन ३ घटाः पटाः मनुष्याः यह बहुवचन ४ देव नर मनुष्य यह पुल्लिंगी ५ नदी नगरी यह स्त्रीलिंगी ६ कमल पुष्प यह नपुंसकलिंगी

७ यह मनुष्य करते आये हैं, यह भूत (गया) काल. ८ करेगा करेंगे, यह भविष्य (आगामी) काल. ९ यह करता है, यह वर्तमान काल. १० श्रमण देवजी में धर्म संबंधित हुआ, यह परोक्षवचन ११ अमीचिन्तामणि बहुत बढ़िया है, यह प्रत्यक्ष वचन. १२ पहिले तारीफ करना फिर दूषण बताना जैसे शक्कर मीठी है परन्तु रोग बढ़ाती है सो उपनीत अपनीत वचन. १३ पहिले दूषण कहे फिर सद्गुण कहे जैसे औषध कडुवी परन्तु रोग हटाती है सो अपनीत उपनीत वचन १४ पहिले और पीछे गुण ही कहे जैसे दूध स्वादी है और पुष्टि करता है सो उपनीत उपनीत वचन,

१५ पहिले और पीछे दूषण ही कहे जैसे यह चोर जबर पापी है, सो अपनीत अपनीत वचन और १६ मन में छिपाके रखी हुई बात सो गड़बड़ में कहदी जाय जैसे कि व्यापारी ने पानी मांगते कह दिया; यह १६ वचन. यह १८ बोल श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र संवरद्वार के दूसरे अध्याय में है.

योग्य वचन के ८ बोल—मनहर छन्द

पहिले बोले थोडो बोल। थोडे बोले रहे तोल।
थोडा बोल पार मीठा बोल। तज दुःख दाइरे ॥
मीठा बोल अवसरं देखाअवसरे शोभे विशेख ।
अवसर रखी चतुराइ।हित पर गमाइ रे ॥
चतुराइ निर्भिमानं । निज बडाइ से गुण हान।
निर्भिमान पर मरम म प्रकाश कदाइ रे॥
मर्म न प्रकाशे पर शास्त्र की शाक्षी युत।
शास्त्री वचन सोभी जिससे सुर्ख थाइ रे॥ ९ ॥

वचन के यत्न—मनोहर छंद.

जौहरी ज्यों रतन के । यतन करत दृढ ।
तैसे नर वचन के यतन कर जानरे ॥
मुख है करंडाकार दंत बने पहरा दार ।
होट के लगे कुंवाड । ताम जीव्हा ठानरे॥
चले जो मर्याद वर । तो काटे दशन धर ।
पीछे पस्ताय ताते पहिले मौन आनरे ॥
योगा योग देख नर। प्रकाश व मौन कर ।
अमोलक अवसर नर होत है दखानरे ॥ १० ॥
बिन बोलाये न बोले, बोले पहिले विचे तोल ।

द्रव्य क्षेत्र काल भाव । होये से विचारि ये ॥
अवसर जो होवे तोइ । बोलना अवसर जोई ।
विन अवसर लखे तहां मौन धारीये ॥
उपकार होता देखाय। तो बोलो विन बोलाय।
निर्थक परिश्रम कर । वचण मत हारिये ॥
अहो मेरे मित्र अमोल। जोहरी आगे करहु खोल॥
तोइ इच्छित पावे मोल । कहूं वार म्वारीये॥११॥

सत्य का प्रभवा—इन्द्र विजय छन्द

मनुष्य जन्म का रूप सोभाग्यही सत्यवचनकोसत्यपहिचानो
सत्य सेआदर सब जग पावत । होवे सो पंचो कोही रानो॥
पिशुन्य भी मान्य करे ता जावानहोवेहैरान जहां सत्या ठानो॥
सत्य सदा सुख दाइ हैभाइजी धारीयेसत्यअमोलकोमानो॥१॥
समुद्र होना हे स्थल क जैसा रू महा अग्नि पाणी परे थावे ॥
विष धर हो वन फुल की माल रु विष अमृत जैसा प्रगमावे ॥
महा गिर से पडे तोही नामरे । शस्त्र अंग न घाव लगावे ॥
इत्यादि महा संकट क्षणमें सत्य प्रभावअमोलविरलावे॥१२॥
अमृत से अति मिठही सत्य है सुर्य से अधिक प्रकाश नहारा॥
चन्द्र से शीतल सत्य अधिक है ।सर्वार्थ सिद्ध से सुख कारा ॥
निर्मळ नभ से सत्य विशेष हे । गंध सागंध से सुगंध गारा ॥
सत्य अनोपम है सुखदायक । सुमरलु अमोलक सत्यघारा॥

कथा—चौथी

सत्य का फल बताने वाली'–'सुनंद की"

दोहा–सत्य प्रभाव से विश्वमें । अनन्त तिरे संसार ॥
मैतार्य कोशिक मुनि । हरिश्चन्द्रादि अपार॥ १ ॥
तोभी सद्बोध करन को । कथा बोध अनुसार ॥
सुनन्द शेठ के पुत्र की । करू कथा में उचार ॥२॥

❀ चौपाइ ❀

कौशल्या पुर नगर अभिराम।अरिजय राजा गुण धाम ॥
वैश्य भ्रात दो रहे ता ठाम।नन्द भद्र सु शोभित नाम॥ ३ ॥
नन्दा भद्रा दोनो की नार।पतिवृता रूप गुण आगार ॥
क्रोडी द्रव्य जगमें विख्यात।दान भोग करते सुखे रहात॥४ ॥
जाने जैन धर्म की रहस्य । यथा शक्ति धर्म करे हमेश ॥
एक वडा दुःख उनके मन । पुत्र के नहीं होवे दर्शन ॥ ५ ॥
शुन्य लगेतिपाइ संपदा । भोगोप भोग में धरे आपदा ॥
ज्ञान से समजावे निज मन । अंत्तराय तूटेगा को दिन ॥ ६ ॥
उत्साहे दान धर्म वृद्धि करे । पुण्य प्रगट भये उस अवसरे ॥
नन्द पति नन्दा उसवार ।सगर्भा हुइ हुवा हर्ष अपार ॥ ७ ॥

डोहला ऊपने पुण्य संयोग । वृद्धि करो दान धर्म सुजोग ॥
नव महिने पुत्र का जन्म भया।सुनन्दगुण निप्पन्ननामठया ॥
प्राणसें प्यारा अधिक कुँवार । शुक्लेन्दू वढे तन गुन सार ॥
उस वक्त आयु अंत योग।नन्द शेठ तन प्रगटा रोग ॥ ९ ॥
असाध्य जान के चिन्ता करे । घर स्वजन की आर्त धरे ॥
लघु भ्रात कहे समाधी धरो।ममत्व तज धर्म ध्यानजकरो॥१०
नन्द कहे सुनो भद्र भ्रात।तनुजकी आर्त अति मुझ आत ॥
सुनन्द की वय अभी नादान।कोन संभाले देवे को ज्ञान॥११
नरमी भद्र कहे फिकर पर हरो।निज पुत्र सम सो मुझ खरो॥
अन्तर नहीं धरूंगा लगार।आपके जैसा देवूंगा सुधार॥ १२ ॥
यों वचन सुन शेठ पाये पत । समाधी मरण पहूंचे सुगत ॥
ग्रहस्थाचार साधा सव मिली।अपने २ घर करे रंगरली॥१३॥
दोहा—भद्र शेठ भूली गये । जे दीया भ्रात वचन ॥
फसे प्रपंच तृष्णा विषय । संचय करते घन॥ १४ ॥

चोपाइ

माता पाले पुत्र धर प्रेम।लाड कोड करे दे क्षेम ॥
न रखे कांणनदे हितशीख।सुनन्दनिजेच्छा वरते अतीख॥१५
कर्म जोग कुसंगत पडा।सतों व्यश्न सेवन चित चडा ॥
जूवा सव व्यश्नो का सिरदार।हारे धन करे मांसे काअहार॥१६
मदिरा पीवे वेश्या संग फरे।शीकार चोरी जारी अनुसरे ॥

गमाया धनहुवा कंगाल। मात दुःखधरेअतराल ॥ १७ ॥
धन विन व्यस्न पूरा नहींहोयाचोरी अधिक करन लगासोय।
प्रत्यक्ष में सेवेअनाचार।शरम न किसकी धरेलगार ॥१८॥
एकदा कोइ उपनाकाम।'भद्र शेठ आये सुनन्द धाम ॥
नंदादेवर को देख उसवार।कहनेलगी रुदन कर अपार॥१९
उपालंभ अति दिये हैं तब।भूले वचन तुम हुवा गजब ॥
हमारी न पूछी आजलग थित।सुनन्द गमादिया सर्ववित॥
दुर्व्यसन निर्लज्ज वना यह।मेरा नहीं माने न रहे गेह ॥
धन आश्रय विन मुझ दुःख पूर।रखेहम होवें परकेमजूर२१
दोनों घर में एक यह वाल।नाम डूबोने की चले चाल ॥
तुम अतिपडे लालच के मांय।पुत्रविना धन क्या काम आय
भाभी के सुन भद्र वचन।शरमाया मन हुवा अतिखिन ॥
सुनन्द को तव पास बोलाय। मिष्ट वचन वहुविधसमजाय
भाइ अपना है कुल पवित्र।तुं करताहै कर्म विचित्र ॥
छोडे कु-कर्म चलो अपनी दुकान।करोव्यापार वढावोवान॥
सुनन्द कहेमुझसेयहनहींहोयामैं एकवक्त द्रव्य लावूंवहुतोय
वहुत दिन खावूं मनावुं चैन।नहीं छूटे व्यस्नकहुं एक वेन॥
ओर कहा सो करूं अंगीकार।वचन मेरा नहीं पलटे लगार॥
सुन वचनभद्रअतीहं मुरझाय। अरर अनर्थक्याकरूंउपाय॥
मूल से मैंने नहीं करी संभार।पके हंडु लगे कैसे गार ॥
सोचत वुद्धि उपजी तत्काल।पकडा सुनन्द का बोला सवाल२

आधीरात उठा वे हाल।व्यग्र पोपन की ऊठी झाल॥ ४८ ॥
चोरी कर के लावू धन । फिर सब इच्छा करू पूरन ॥
शघ्र ले घर से चला तत्काल।आगे होवे सो सुनो हाल॥४९
दोहा=देस जागरना जागता । पुरपति करे विचार॥
गुप्त जाय चौकस करूं । क्या पुरमे आचार॥५०॥
भट्ट भेष धारन करी । फिरतो पुर के मांय ॥
सुनतो गुप्त जे धारता । द्वारे कान लगाय॥ ५१ ॥

❀ चोपाइ ❀

सुनन्द सामे मिला तब आय। कौन तुम हो राजा बतलाय॥
बोलंता सुनन्द अचकाय ।पुन राय ललकारी बोलाय ॥५२॥
निर्भय हो सो सत्य बोलंत । चोर हूं चोरी करन जावंत॥
सुन नेरन्द्रआश्चर्य अनिपाय । मस्करा भट सदा जणाय ||
नृप पुछे चोरी कहां करोजाय।सुन्दकहेराजभांन्डारके मांय॥
हँसके रायचुप चलते भये।सुनन्दनृप भन्डार ढिगगये॥५४॥
पेहरेदार पूछेललकार ।कौनहेरे यह आवन हार ॥
सुन्द कहेमें तो हूं चोर।चोरी करन आयो इस ठोर ॥ ५५॥
मस्करा जान वोभी चुप रहे।सुन्दप्रवेशभन्डार में भये ॥
तोडताला देखे द्रष्टिपसार । वहां पर द्रव्य पड़ा हैअपार॥
रत्न अमोलक पांच देखाय।दीवेकी जोती ज्यों दीपाय ॥
सो उठाय बांधे निज रुमाल।खीसे में धर चले तत्काल॥५६

निकलन पुछे चोकहेचोर । रोकायानही कोइभी ठोर ॥
पुनःकिले नृपतामेआवापुछत नाम सो चोर वताय ॥५८ ॥
पहिले गया सोही तूं होवाते हां कहे नृप पूछत सोय॥
चोरी कर लाया क्याभ्रात । सुनन्द रत्न पांचोंही वतात ॥
अरत्ने भन्डारके रत्न कों देख ।आश्चय चकित हुवेविशेख ॥
सुनन्द आगे चलता भयानृप द्वार लग पीछे गया ॥६० ॥
सुनन्द पेठा निजगेह मझारानाय पान पकि डालातसद्वार ॥
आके सुते महेल केमांयादिन चडा पन जागे नाय॥६१॥
दोहा—प्राते भन्डारी आयके । संभाले भंडार ॥
रत्न पांच देखे नहीं । देखेखुले द्वार ॥ ६२ ॥
गुप्तद्रव्य वहुतो लहीरखानिजघरमांय ॥
फिर पुकार आकर करीलोक दोड कर आय॥६३॥
प्रधान तालारादिकतवाजो जो लागाहाय ॥
सो तो ले घरमें धराकोश खाली यों थात ॥६४ ॥

चौपाइ

हड्डा नृप कान पर गया । जाप्रनहोवो पूछत भया ॥
क्या वस्तु भन्डारसे गइ । भन्डारी कहे कछु नहींरही६५॥
कोश खाली देख आश्चर्यपायाभेद समझे सब मनकेमांय ॥
पहरे दारको पूछे बेलाय : वो मस्करा का नाम बताय ॥
और कोइ नहीं आया था ।वोतो कुछ नहीं लेगयामाल ॥

। गुप्त एक भट्ट बोलाय।पानबीक सेनाणबताय ॥ ६७॥
.न्मानी,तस लावो बोलाय।सुभट सुनन्द के घरतबजाय॥
ट्ट देख नन्दा रोने लगी।पापदिशा आज यह जगी ६८॥
व भट्ट सुनन्द समजे भेद।रत्न ले संग हुवा नकरीखेद।,
ाये दरबार नमे नृपाल।नृप पूछे कौन तुम?कहो सबहाल
ाशंक सत्य सो करे उचार।रातकाचोरदिनकासाहूकार ॥
फर पूछे नृप चोरीकरी कहां!सो कहेआपके भंडार में,यांह॥
या माल तुम लेगयेनिकाल?।पांचरत्नबतायेतत्काल ॥
चोर होकर कैसे बोले सत्य।उसने कही अपनी हकीगत ॥
काकाजी दिलाये हैं सोगन। कभी नहींबोलू झूठ वचन ॥
प्रत्यक्ष परिचय देख भूपाल।जाने उसकेसचेसवाल ॥७२॥
ऐसा सत्य वादीप्रधान।मुझे न मिले ढूंढे कोइ स्थान ॥
सचीव पद की करीबकृशिश।मोर ले सूनन्द नमायेशीश॥
नृप कहे बुद्धि से भरोभन्डार।तुमनिमित से गया सहुसार।
सत्य प्रभाव सुबुद्धि तस आय।भंडारी रु सचीव केतांय॥
कहने लगा आँखों कर लाल।तुमनेहीलियासबही माल ॥
जरे बंद दस पांच लगाय।सब धूजे रखे इज्जत जाय॥७५॥
प्रधान की परवा इन्हे नहींकरी।रखें अपनी जावे चाकरी ॥
चुप चाप गुप्त धरा ला माल।भन्डार भरा गया तत्काल ।,
सूनन्द भी समजासो बात ।नृप संगले भन्डार में आत ॥
खाली भन्डार भरा नृप देख।आश्चर्य पाया बुद्धिलखीविशेख

लक्खी पोशाख वोरत्नवस्सायागजहोदे तस घरपहोंचाय ॥
जनवृन्दे वाजिन्त्र झणकारासुनन्द चाले मध्य वजार ॥
आइ जव काकाकी दूकानासुनन्द उतरे विनय मनआन ॥
भद्रजी को लुल किया नमस्काराभद्र देखआश्चर्यपायेअपार
जरी पट देख जानेप्रधानापूछे वच्छे कैसे वनेधीवान ॥
अहो एकहीरातमिझाराकैसे निपजा यह विचित्र प्रकार॥
सुनन्द कहे सव आप प्रसादावीता सत्य कहा सवसंवाद॥
एकही सत्य से टलीमुझघातप्रधानपदसत्यहीसेपात ॥८१॥
काकाजीसंगले निज घरआयानन्दा रुदन करतीदेखाय ॥
भद्र कहेदेखोद्रष्टीपसारासुनन्द ऋद्धि पाये अपार ॥ ८२ ॥
माता देख अतिआश्चर्य पायानमी सुनन्द मतांत सुनाय ॥
एकही सत्य से गया सवदुःखाक्षण मेंपायेअत्यन्त सुख॥

दोहा—एकदा सुनन्द चिंतवोएकसत्य प्रसाद ॥
प्रधान वन सुख भोगवूंकाकाजी के संवाद ॥ ८४॥
ऐसा मंत्र काका कनेऔर भी कितेनक होय ॥
सो भी लेइ साधन करूंदुःख रहे नहींकोय॥८५॥

चोपाइ

शुभ दिन काकाढिग आयालुली २ प्रणमी कहे नरमांय ॥
एक सत्य मन्त्रमुझदिया। और भी दीजीये तुम कने राय॥
भद्र शेठ कहे गुरु उपकार। वेही मूनि हैं मंत्र आगार ॥

मुझेही उनोने बताया मंत्र।तुझेही वोही करेस्वतंत्र।। ८७।।
दोनों आये मुनिवर पास।नमन कर वीतक कियाप्रकास ।।
मुमुक्षु जान सुनाया धर्म बोध।द्विविध धर्म हृदय सोध।।८८।।
साधु होवन अशक्त जो होय।बारह वृत्त धारे सूनन्द सोय।
ज्ञानाभ्यास कर करणी करे।दान दया दम प्रीति धरे ।।
सत्य कार्य धर्मोन्नती करी।आयुअंत स्वर्गे अवतरी ।।
थोडे भव कर पावेंगे निर्वाण।देखो सत्य कैसा गुनखान।।९०

दोहा—ऐसा जान श्रोत सबी।तर्जाये दुसरा पाप ।।
सुनन्द परे आदरो।पालो बिन विखवाद ।। ९१ ।।
तो सुखीये निश्चय होवो।दोनोभव मझार।।
श्रवन पठन का सारयह।सूखेच्छू लो धार ।। ९२ ।।
स्वपरात्म सुख वरन । मृषावाद पापोद्धार ।।
ऋषि अमोलक ने रचा । यह द्वीतीया अधिकार ।।९३ ।।

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलक ऋषीजी महाराज रचित
मृषावाद पापोद्धार नामक
द्वीतिय मंजल समाप्तम्





मंजिल तीसरा-'अदत्तादान' पापोद्वार

पूर्व विभाग-"चोरी"



"अदत्ता दानका अर्थ"

दोहा-अदत्त वस्तु बिन दइ । अदान जो कोइ लेय ॥
सोही पाप है तीसरा । चोरी जगमे केय ॥ १ ॥

"प्रश्न व्याकरण सूत्रानुसार-अदत्ता दान पापका वरणन"

दोहा-प्रश्न व्याकरण सूत्रके । तृतीय आश्रव द्वार ॥
अदत्ता दान पाप को। भाख्या बहूत विस्तार॥२॥

अदत्ता दान के दुर्गुर्ण-चोपाइ

चोरीका नामही देहा उपजाय।कितनेक तो मरण ही पाय॥
मलीनें महा त्रासे दाताग।रद्रतो लोभ का यह आगार॥३॥

अकाल कृत्य दे विसम स्थान।ं.का स्थान अधो गति पठान
तृष्णो वडे पश्चातापें होय। अँकीर्ती करे अँना चीर्ण सोय॥४॥
छिद्रँ गवेषी आतुरता करे : राँज दंडे मूँछित कोभी हरे ॥
विग्रँह करे मारत नहीं डरे। मौंन हरे,दैंया परही करे॥५ ॥
राज पुँरुप गृह निन्दे संर्ते।प्रिय मिल से विरोधँ करंत ॥
विंर्सि डाले राग द्वेर्षे बढाय।महा संग्रँामक्लेंर्षे भी थाय॥६॥
दुर्गति दैंता जन्म मॅरण विस्तरे। फिरि२गॅर्भे में अवतरे ॥
मरे पर भी पाप साथ ही आय। चोरी इतने दुर्गुण उपाय॥७॥

अदत्ता दान के नाम—चोपाइ

चेरीक्कं-चोरी,परहूंडं'-धनहरे।अंदत्तं'-विन दिया सो वरे ॥
कुरिकँडं'-करूर चित्त रहे। परँके लाभ को आप चहे ॥ ८ ॥
असंयमो'-असंजम का काम।परँ धनंमि गेही'-वांछे हराम ॥
लोलिका'-लोलुसा,तक्करे'-तस्कर।अवहाँरो'-परका आपहर॥९॥
;हत्थलहुताणें'-हाथलघुहोय।पात्र कम्मेँ करण'-पाप करे सोय॥
'तेणिकँ'कर्ताकोयह तणाय।हरणें विप्पणासी'नाश कराय॥१०
'आदि यँण'नहीं आदर ने योग।लुप्पणाधणा'छिपावे धन भोग
'अप्पचँ ओ'-अविश्वास थान।'उँवलो'-पर पीडक जान ॥११॥
अंखेवों'अक्षेप दुर्गुण।करे। खेवँओ-'कुकर्मे हिम्मत धरे ॥
'विर्खावा-'विखवाद वढाय।कूँडया'कूड कपट से थाय॥१२॥
कुलँमसीयं-कुल काला करे। कंखाँ'खोटी वांछा धरे ॥

'लालप्पणो'[25] दीनकर्ताकोवनाया 'पत्थाणाय'[26] प्राधनाकराय॥१३
'आसासंणाय'[27] करे आसा नास।इच्छे[28] मूर्छा का स्थान खास॥
'नियणंडिकम्मं'[29]-निकाचितअरथ।अवरत्थं[30]-अप्रार्थप्रारथ॥१४॥
दोहो—गुण निष्पन्न तीस नाम ए।थ्री जिनेन्द्र फरमाय॥
अर्थ विस्तारत इनका।अन्य सबही समाय॥१५॥

सूक्ष्म चोरी अरल छंद

शब्द रूप रु गंध रस रु स्पर्श से
विनाज्ञा गुप्त रही मनसें आकर्प से
सूक्ष्म चोरी सोही प्रभू फरमा वही
इसको त्यागे सोही शीघ्र शिव पावकही॥१६॥

बडी चोरी—मनहर छंद

खात देकर भीत फोडे। कमाड छत्त ताले तोडे।
ऊपडवाडा डाक के। उठाइ माल लावे हैं॥
गांठ नोली डब्बा छोडे। संदूक पिटारा खोले।
अच्छी वस्तु निकाल के। खोटी तामे ठावे है॥
जथा नच्यत्यो बनाइ। देने मालक को संभलाइ।
साहु कारी यों जमाइ। विश्वासी को ननावे हैं॥
रस्ते जाते केइ लूंटे। उजाड में केइ कूटे॥
एसे चोरी के करनार।दोनों भव दुःख पावे है॥१७॥

अकाल कृत्य दे विसम स्थान।शंका स्थान अधो गति पठान
तृष्णाँ बडे पश्चातापें होय। अकीर्ती करे अँना चीर्ण सोय॥४॥
छिद्रं गवेषी आतुरता करे । राज दंडे मूर्छित कोभी हरे ॥
विग्रह करे मारत नहीं डरे। मौन हरे,दया परहीं करे॥५॥
राज पुरुष ग्रह निन्दे संत।प्रिय मित्र से विरोध करंत ॥
कीर्ति डाले राग द्वेषं चढाय।महा संग्रामक्लेषं भी थाय॥६॥
दुर्गति दाता जन्म मरण विस्तरे। फिरि२गर्भ में अवतरे ॥
मरे पर भी पाप साथ हीं आय। चोरी इतने दुर्गुण उपाय॥७॥

अदत्त दान के नाम—चोपाइ

चोरीक्कं-चोरी,परहडं'-धनहरे ।अदत्तं'-विन दिया सो वरे ॥
कुरिकडं'-करूर चित्त रहे । परके लाभ को आप चहे ॥ ८ ॥
असंयमो'-असंजम का काम।परं धनंमि गेही'-वांछे हराम ॥
लोलिका'-लोलुता,तक्करं'-तस्कर।अवहारो'-परका आपहर॥९॥
,हत्थलहुताणं'-हाथलघुहोय।पाव कम्मं करण'-पाप करे सोय॥
'तेणिकं'कर्ताकोयह तणाय।हरणं विप्पणासी'नाश कराय॥१०
'आदि यणं'नहीं आदर ने योग।लुप्पणाधणा'छिपावे धन भोग
'अप्पचं ओ'-अविश्वास थान।'उवलो'-पर पीडक जान ॥११॥
अखेवो'अक्षेप दुर्गुणा करे । खेवओ-'कुकर्मे हिम्मत धरे ॥
'विखेवा-'विखवाद वढाय।कुडया'कूड कपट से थाय॥१२॥
कुलमसीयं-कुल काला करे । कंखा'खोटी वांछा धरे ॥

'लालप्पणां'[25] दीनकर्ता को बनाय। 'पंथाणाय'[26] प्रार्थना कराय॥१३
'आतासैणाय'[27] करे आत्मा नास। इच्छै[28] मूर्छा का स्थान खास॥
'नियणंडिकम्मं'[29]-निकाचितअरथ। अवरत्थ[30]-अप्रार्थप्रारथ॥१४॥
दोहो—गुण निष्पन्न तीस नाम ए, श्री जिनेन्द्र फरमाय॥
अर्थ विस्तारत इनका। अन्य सबही सनाय॥१५॥

सूक्ष्म चोरी अरल छंद

शब्द रूप रु गंध रस रु स्पर्श से
विनाज्ञा ग्रुत रही मनसें आकर्ष से
सूक्ष्म चोरी सोही प्रभू फरमा वही
इसको त्यागे सोही शीघ्र शिव पावकही॥१६॥

बडी चोरी—मनहर छंद

खात देकर भीत फोडे। कमाड छत्त ताले तोडे।
ऊपडवाडा डाक के। उठाइ माल लावे हैं॥
गांठ नोली डब्बा छेडे। संदूक पिटारा झोडे।
अच्छी वस्तु निकाल के। खोटी तामे ठावें है॥
जथा तथ्यत्यों बनाइ। देते मालक को संभलाइ।
साहु कारी यों जमाइ। विश्वासी को सतावे है॥
रस्ते जाते केइ लूंटे। उजाड में केइ कूटे॥
एसे चोरी के करनार। दोनों भव दुःख पावे है॥१७॥

धाडा पाडे लूटे गांम । खेत बाग बाले धाम ।
ताले परकुंजी लगा । निघा भी चोरावे है ॥
नारी पुत्र शिष्य भरमाय । लेके जावे है उडाय ॥
मंत्रादिसे मुरछाय । केफी वस्तु भी खवावे है ॥
माल उमदाही बताय । देते खोटाही मिलाय ।
तोले मापे खोटे राखे । केइ धडीयों उडावे है ॥
केइ गिनते हीउडाय । व्याज तिथी भी बढाय ॥
ऐसी चालाकी चलाय । तामें भोले भरमावे है ॥
केइ कसव की चोरी । यहां तो कही में थोडी ॥
एसी चोरी के करतार । दोनो भव दुःख पावे है॥ १७

चोरकी अठारहप्रसुती –इन्द्रविजयछंद

अभये बचन देवे को चोरको डरोमति मै सहायक तेरा ॥
पूछे सुखें शान्तिरुस्थान बैतावत पाहिले आप जाके लगावेहेरा
छिपने को जागा बतायन चोरको पूछक को स्थान बतायअनेरा
निज घर आये को आसँन देवतावाहणे वेठाय पहोंचावत घेरा
गुप्त रखे अपने घरमें माल लेकेर भाग जो बाँट के लेवे ॥
ऊंच बेठायें जो हेरू आय नो यहां नहीं हैं यों मिथ्या केवे ॥
खान पान का सहाय देवे सेयं स्थान मर्दन करे औषधी देवे॥
साहित्य दे चित्त शांत करे आप माल रखे प्रसुति अष्ट दशवे ॥

सात चोर—इन्द्र विजय.

चोरी करे रहे चोर के पास जो वार्ता लेप करे चोर साथे ॥
चोर का भेद लहे जो जायके।करे विक्रय करे चोर हाथे ॥
खान पान आदि दे चोर कोमकान देवे संभाले जो हाथे ॥
सात ही चोर वजे चोर संगसेभंडे लोक दंडे नर नाथे॥२१

चोरी से दुःख-मनहर छंद

रख के सुख की हास। करत कर्म निकास ।
चोर चोरी कर पर धन हर लावे है ॥
खावे न खिलावे, प्रगटही नहीं थावे ।
ऊंडे खड्डे मांहें जा के रण में छिपावे है ॥
गुप्त सदा रहे भेद कोइ को न देहे ॥
निशी दिन हीयोडरे खे जान जावे है ॥
भेला किया धन नहीं सुखी मन जन ।
चोरी के करने वाले सदा दुःख पावे है ॥ २२ ॥
वक्त रु कुवक्त मांहें । शीत ताप गिने नाय ।
बन झाडी ही माहीं फिर तन को तपावे है॥
भूख प्यास खमें भार उठा तन दमे ।
पर्वतों खाइ मे कांटे कंकर लगे पावे है ॥

मनविश्वास यही कोइ करेनहीं॥शिरपर कलंकचोरीकाआय ॥
दिये संताप लोभ्योभ रोभ॥जानअमोल चोरी छिटकाये३०

कथा—पांचवीं.

चोरीके फल बखान वाली—अभग्ग सेन चोरकी
कथा—अनंत पापी चोरी करपायेदुख अनंत ॥
सो प्रगट दरशावतेंकहूं अभग्ग सेन विरतंत ॥१॥
मूल विपाक प्रथम कहें।अर्थीन तीसरे मांग ॥
अनुक्रमित चोरहिं चो।कहीं सो यहां दरशाय॥२॥

चौपाई.

पूर्व देशमाहीं नगरपुरमाल । [illegible] दर्शनाम प्रधान॥
[illegible] राजा राज करे । [illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] दर्शनाम [illegible] ॥
[illegible] ॥ ४ ।
[illegible] । [illegible] विषम [illegible] ॥

विद्युद नाम चोर धीरस्मृ।आज्ञानें तस्करपनेसों
अति अधर्मी करे बहुत पापाद्रत संचयण नाम विख्या
देश सब्र डलानें होरियग।अनेक निपाके ना जानका
चोरी करानें अति मर्वकानाविघा आकार में अंगिने डी
राजा की मान देकर नर्किया।अन्यलोक नव हान्हीन
लेवक श्री नानें चोरपतिनाकला कैरालना रूपसन्डार
प्रेत हृत्य सोंपने हुवनेनापुण्य पनाय निला सुधेरा।
एकना लेवक श्री हूंन सांघारी अविकोइडपनेआव ॥
होहला इच्छा तीसे मांसन्डापूनप नेप दनुष्यवाल्प्रही॥
नन नह्र स्कन्ध पे धारानाय डुंयलको इगकार ॥
न्यातनों सब नारीयोंपरिवान।लेच्छाफिहे अर्वो महार ॥
वन्य नारी जो करेइन प्रकार शरनें सुरझे तो मन महार ॥
आनि धरे कुमलाधो तन।विजय देव पूछे मधुर वचन॥११ ॥
हर्ष समय क्या उदासी कम।लेवक श्री कहे करी प्रनाम॥
सुण कर अति हर्षी तस्करोंकी आज्ञा पुन इच्छा सो कर॥
वार अहार मच मांस निपाया।तस्कर पहि सबसज आया॥१
वर्ष पर लेवक श्री सज महानीर्व मंघ नो अहार भोगवह॥
होन्मन हो फिर पहीं महान।डोहला पूरा हर्ष अपार॥१२
वे २ गर्भ मोटा भया।नव मासे कुमार जन्म लिया ॥
सोल्लव किया।नजनाजिमाया।अमंगा नेननन्मनान विनय ।

पंच धाय पाले विज्ञानी भया।चोर कला सबसील होगया॥
यौवन युकती आठ परणाया।पंच इन्द्रीय के सुखविलसाया॥
एकदा विजय अपुण्य अंतराया।अभग्ग सेण मालक तब भया।
विश्व समान सो पापी अति।कला कौशल्यता निपुण मति॥
करे पाप नहीं डरे लगार । लूंटे देश सतावे नर नार ॥
उजड़ किये बहुत ही गाम।घबराये देश लोक तमाम॥१८॥
महाबल नृप से करे पुकार ।शरणागत अहो रक्षन हार ॥
अभग्ग सेन चोर अति पापीया।घर धन रहित हमको किया।
नृपति सुन क्रोधातुर होय ।दंड सेन्या पति से कहे सोय॥
जावो सेना लेकर लार।साला पल्लि का करो संहार॥२०॥
विजय चोरको लावो मुझ पास।शीघ्र करोयह काम तुम खास
सेनापति करहुक्मप्रमाण।लेसेनासंग शीघ्र किया प्रयाण॥२१
अभग्ग सेन के गुप्त चर बार।आये दोड़ जानी समाचार।
धीनकमय तस्कर पति से [illegible]या ।सुन पल्लिपति असुरतेभया ॥
असक्ष सर्वी सबहुंबसनथाल।शस्त्रअस्त्रसज चलेतत्काल ॥
सन्ध्यासमय सबविषमस्थान।छिपउठभेकरेशत्रूअवसान॥२३॥
नृप सेनापति निश्चिंत तहांआय।तस्करदुष्ट पडेएकदमजाय॥
मार कूट कर दिये भगाय । तस्कर हर्षि निजस्थाने आय ॥
दंड सेन्यापति हो निर्बल । 'महाबल' नृप ढिग आया चल॥
कैसी बात सब करी प्रकाश।बल से चोरनहीं आवे पास ॥
छल करो तस दे विश्वास।राजाजी मानी अकल खास ॥

वहुतो द्रव्य नृप खरच कराय।कुडागार एक शाल बनाय ॥
संपूर्ण शीघ्र करी तैयार ।दश दिन ओछव मांडा उसवार ॥
नगर के मांहे पडह बजाय । दाण हाँतल सब माफ कराय॥
गुप्त बुद्धिवंत सामंत बोलाय।होंशयारि से काम करोजाय ॥
भेटणा बहुत मोलका लइ । अभग्गसेणको देवो जइ २८॥
चतुराइ से तससमजाय । इस उत्सव पर लावो बोलाय ॥
सामंत किया वचन प्रमाण।सर्व साहित्य ले हुवे प्रयाण ॥
धीरपे वास वसंता जाय । सर्व जनको विश्वास उपजाय ॥
आया चोर पल्ली के मांय । चोराधीप को जय विजय वधाय
बहु मुल्य भेटणा अर्पण करी । नृपती प्रेमके वचन ऊचरी॥
मोहोत्सव पर आग्रह कर बुलाय।पधारो सर्व सज्जन संगाय।
भोले भाव चोर मानी वात।वचनलेकर सामंत फिर आत ॥
'अभग्ग सेण भी हुवा तैयार। साथ लिया सवहीपरिवार ॥
आये महाबल राजाजीपास।जयविजयवधाय नमनकियातास
रायजी उनका किया सत्कार।कुडागार शाल में दिये उतार।
मदिरा युक्त कराया अहार। सर्व तस्कर मुरछे उसवार ॥
नृपति भट को आज्ञाकरी ।कुडागार शाल द्वार सबजडी ॥
'अभग्ग को लावो मेरे पास पकड।सब चोरोंको बांधोजकड॥
भट तैसेही किया तत्काल । महीपती कोप्याजैसा काल ॥
सब संहारण विधी बताय।कोटवाल तस पुर में ले जाय ॥
सुभट वृन्द घेरे चौ फेरा।ढोल बजाय करेपापकी टेर ॥ ३६ ॥

पहिले चोहटे चोरको बेठाय।आठ काकानत सामें लाय
अरडाटकरतेआठों ही कोमार।उनका मांनकाकरावेउसअ
दूसरे चोहटे चोर बेठाय। आठ काकी को मार खवाय
तीसरे चोहटेआठवडे बापमार। चोथे चोहटे बडीकाकी
पांच में चोहटे आठ पुत्रको हने।छट्टे चोहटे पुत्री बहु त
सात में चोहटे आठ जमाइमारे। आठ में आठ पुत्रीयों
नव में पुत्री पुत्र आठ हने।दशमें पुत्री पूत्री प्राण घने ॥
इग्यारमें चक ले दोहित्रीमारी।बारमें दोही त्रा नास तन
तेर में भुवा चउदमें फूवाघात।पन्दरमेंमासी सोलमें मास
सतर मेंमांमाआठर में मामियांमित्र सज्जन योंसब हत
खडोखन्ड कर सब ही की काय।बलात्कार कर तास खिल
कुल में वीज रखा न लगार। जो आगे होवे दुःख कार ॥ ४
यह देखो प्रत्यक्ष चोरी फल। भोगवे कटु दुःख दे सबल
धान के पीछे कीडा पीसाय। त्यों एक पीछे घनेदुःख पाय

दोहा—ते काले ते अवसरे।श्वामी श्री वर्द्धमान।।
पुर मिताल पुरबाहिरे। समोसरे उद्यान ॥ ४३
गोतम स्वामी उस अवसरे।प्रभूकी आज्ञालेय ॥
गोचरी आये गाम में। देखा अनर्थ तेय ॥४४॥
करुणा व्यापी चित्त में।वीर जिणंद ढिग आय ॥
वंदी पूछे कीजीये। किस पापे यह सताय ॥ ४६

चोपाइ

ागवंत कहे पूर्व भवकथा।गत काल इसही पूर में यह था ॥
उदाइ' राजा तव करताराज।अंड वाणीया यह वलताज ॥
नेम्नव नामे पापी घना। व्योपार करता अन्डे तना ॥
चडी कमेडी पारेवे काग। घूघूटीटाडी मयूर बग ॥४८ ॥
लचर स्थलचर खेचर आद। मंगाता बहुत नोकर को साद
लके भूंजके बेचता पुर मांय।ऐसे महापापसे द्रव्य कमाय॥
जार वर्ष का आयुष्य पूरा कर। तीसरी नरकमें सातसागर॥
हां से मर साल अटवी मांय।अभग्नसेण यह उपना आय ॥
हांभी कमायेबहुतहीपाप।सो प्रभु कहके बतादिसाप ॥
ाजतीसरेपहरशूली चडायासतराईन वर्षआयु पूर्णकर ॥
थम नरक में उपजेगा सही।नूगा लोटा ज्यों [illegible]
फिरते २ घनारंभाचार।सुवर होगा सीकारी [illegible]
नारसी में हो शेठके घर।पूत्रहोसंयम ले [illegible]
[illegible] तपा कर मुक्ति जावेगा।वीरो सर्वथा [illegible]
दोहा—देखे भव्य इष्टान्तमें चोरीदुःख [illegible]
छोडो पाप यह [illegible] ज्यों मिले [illegible]

—

मंजिलतीसरा–अदत्तादानपापोद्धार
उतर विभाग-'अचोरी,

दोहा—निज परात्म सुख करणाअदत्तव्रत श्रेयकार ॥
जो आराधे विशुद्ध यसाताका खेवा पार ॥१ ॥
प्रश्न व्याकरण सुत्रकोतृतिय आश्रवद्धार ॥
महिमा अदत्त व्रतकीश्री जिन करी उचार ॥२ ॥
गुण निष्पन्न नाम अर्थयुतचोरी तजन की रीत ॥
सद्बोध कथा यहां वरणवूंपडो सुनो दत्त चित्त ॥

चोरीके नाम—चोपाइछन्द

सुव्वयं'-सुव्रत,'महाव्वयं'महाव्रत।'गुणव्वयं'-गुणकरहरेकुमत
परद्रव्यहरणकीव्रत्तीकहं।'करणयुत्त'-युक्तकरेसोसही ॥ ४ ॥
अपरिमिय'-करे परिमाण । अनंत तृष्ण का रुंधन स्थान॥
मन वच काय की इच्छा रोके।पाप अने के कारण झोंके॥५॥
सुसंयमी',करपर्गनिश्चलहोयकरे।'निग्रंथ'-गांठरहित यहखरे।
'निद्दिक-उत्कृष्ट यही है।'निरुत्तं'-सब जन अच्छा कहे ॥६॥
'निरांसव'-यहरोकेहां आश्रव।'निब्भयं'-भय रहित होवे सर्व॥
'विमुत्त'-लोभ को यह तजाय।'उत्तम'-कर्तवो नर कहाय॥७॥
नरवंसभ'-नरमेंवृषभसमंतह।'पवरं'-प्रधान,'वलवेग'-वलेलह॥

सुविहीय-सुविधि सोही करोजणणं साम-जनको माल की धरे
परम साहूं-नो उत्कृष्ट साधु।धन्न चैरणं-ले धर्म आराधु ॥
अदत्त व्रत के पच्चिस नाम कहेप्रश्न व्याकरण सूत्र से लहे॥ ९

चोरी तजे नो प्रकार—मनहर छंद

वस्तु के हैं छःप्रकारान्-चित्त अचित्त धार ॥
छोटी बड़ी थोड़ी बहुत इनकी चोरी छोड़िये ॥
दो वस्तु के भंग चारा छःके होते हैं बार ।
विद्वानो युक्ति सेतीआगे कहे सो जोड़िये ॥
द्रव्य थोड़ा भावे बहुत ।सो तो रत्न आदि [illegible]
द्रव्ये बहुत भावे थोड़ी । कंकर पत्थर [illegible]
द्रव्ये भावे अल्प सोय धूल राख तृण [illegible]
द्रव्ये भावे बहुत सो।[illegible] [illegible]
सर्वथा चोरी के त्यागाकरते मुनि [illegible]
तृण कंकरादि बिन आज्ञा नहीं [illegible]
तो कहां कहुं और बात । [illegible]
शिष्य के सज्जन रजा सेहीं [illegible]
जिसके स्थान माहे रहे । [illegible]
आहार वस्त्र निर्वद्य [illegible]
अप्राने वन्ध सो विहा[illegible]

वंदत अमोल जाको । जग मांहे जेते हैं ॥ ११ ॥
जो धर्मी वसते आगार । सर्व न करे परिहार ।
तोभी लोक विरुद्ध जेह चोरी ही कों त्यागे हैं॥
न लेते चोरीका माल । खोटा तोला मापा टाल ॥
प्रमाणिक पणा धर । द्रव्य को उपार्जे हैं ॥
राजाने जो मना करी । उसे को न गेहमें धरी ।
गुप्त ता चालाकी से तो दूरही सो भागे हैं ॥
व्याज न अधिक लेय । वस्तु पलट नहीं देय ।
संतोष कर निर्वाह । सोही श्रावक सागे हैं ॥१२॥

चोरी त्याग के गुण—विजय छँद.

चोरी त्यागी सोहै बड भागी अनुरागी बहूनो के विश्वासजमावे
राज भंडाररु शेठ कोठारमें प्रवेश करे तस वेम न आवे ॥
प्राण प्यारी प्रसस्त वस्तु जन संग्रह करी ताके ढिग ठावे ॥
नीती से कमाइ लक्ष्मी सदाइ ता पास रही नहीं छेह दिखावे॥
सोही साहू कार सच्चो व्यवहार हीसाव में कोडी कसरन आवे
एकहो वेण करे लेन देन तोल माप छाप ठगे न ठगावे ॥
जग नाम रमे ग्राहक जमें वह नाहीं छोड न अन्य पे जावे॥
अल्प प्रयास मले धन रास जीते आस फास सोही सुख पावे,

कथा—छट्ठी.

चोरी त्याग के फल बताने वाली "चोखा शाह की".

दोहा—चोरी त्याग से विश्वमें । बहूते पाये सुख ॥
तोभी जन मन बोधने । कथा कथु सुनी मुख॥१ ॥

॥ चोपाइ ॥

वसंतपुर एक ग्राम मझार।वित संचय शेठ चोर सिरदार ॥
तृष्णा शेठाणी सुख कार ।धनपाल नामे तास कुँवार॥ २॥
किरियाणा का वेपार सो करे । चोरी कर्म में कुशल ता धरे ॥
लेन देन में चालाकी अति।धूर्त न जानी सके तसे मति ॥३॥
कमती देवे अधिका लेय । एँडा धडी उडावे तेय ॥
घोल तोल में दशका उडाय।खोटी वस्तु दे चोखी बताय॥४
भाव भी सस्ता बहुत बताय।झुकती त्राजु माल दिखाय ॥
खुशी हो बहुते जन लेजाय । घर में जाय सर्व पस्ताय॥५॥
विस्तर्यो तस दुर्गुणपरिणाम। 'खोटा शाहा' पड्यो तस नाम॥
लेन देन लेख धान के मांय । खोटा शाह सर्व बन लाय ॥६॥
तोभी बोले बहुत हर्षाय । लडने नाम का अर्थ दर्शाय ॥
नाम प्रमाणे काम में करूं।अब किसी के बाप से नहीं डरूं॥७॥
कमाइ तो उसकी बहुत दिखाय।पाप प्रभाव ऊंचा नहीं आ‑

दीपवाली दिन पस्तावो सो करे।उपाज्यों द्रव्य कहां जावे३
दोहा–जब पुण्य प्रगट हुवे । तब मिले सु संयोग ॥
अशुभ नाम भी शुभ हुवे।सों सुनियों सब लोग॥

चोपाइ

वसंतपुर से थोडीसी दूर । क्षिती मंडण नगर धन पूर॥
धर्मधवल तहां रहे साहूकार।यशोज्वला उसकी नार॥१०
सत्य प्रिया तस कन्या गुण वंता।रूप विवेक कला सोहंत
नीनो सदा करे संत सति संग।धर्म ज्ञान सुणे शीख मन रंग
सत्य प्रिया घनी हुइ प्रवीन । मिजी भेदी परमार्थ चीन
योवन वय जब प्राप्त भइ।पाणी ग्रहण की चिंता थइ॥१
युक्ति जोडी मिले गुण धार।तो सुझ पुत्री सुधरे जमार
गवेषणा वर की करे तात माता।देव प्रमाणे योग बन आता
दोहा–खोटा शाह के कुमारजी । खरीदन आये माल ॥
उपाश्रय में मुनि लखी। वंदे कुलकी चाल ॥ १४
ज्ञानी जन बहु देख कर।आप भी बेठा तहांय ॥
धर्म कथा सुने सुस्न चित्त।जाणूं बजार खुल्याय

चोपाइ

धर्म धवल वहा थे साहूकार।उसने देखा धन पाल कुमार
ध्यान एकाग्र चित्त से सुने।धर्मानुरागी जाणाइस गुने।

ोजन काज घर लजाय । उत्तम रसवती पुरसाय ॥
ानातुर तं शीघ्र न्वेन्नाय।निरागी इस गुनल खाय॥ १८ ॥
त्य प्रिरा जे ग जाना वर।जान पूछे से मिली भलीपर ॥
गाइ करदी उनहो वार।लग्न मूहूर्त होकर करार ॥ १८ ॥
ेटा शाह को लिये बोलाय।सत्य प्रिया को दी परणाय
ानी गुनी रुगा मिला जोय।तीनों ते अति हर्षित होय॥१९॥
े वहूको अपने घर आय । धर्म रहित सो घर देखाय ॥
सत्य प्रिया दुःख पाइ मन।कर्म गति लख रही सुस्त तन॥२०
ोहा—एकदा शेठ कहे तनुज को ।लेवू बेटा किस ठाय ।।
देवूरी दिखती नहीं । सो कोटेमें बताय ॥ २१ ॥

ॐ चोपाइ ॐ

लेवूं देवू यह नाम सुन करी।सत्य प्रीया आश्चर्य चित्त भरी
कोठे में शीघ्र उठ देखे जाय।लेवू देवूं नही नारी देखाय॥
पति से पूछे कहो जी सच्च बात । लेवू देवू कोनघरमें रहात॥
भोले भाव ना करे उचार।दो पच मेरी से करे व्यापार॥२३
छःमेरीका देवू रखा नाम।चार मेरी देने में आवे काम ॥
और कोई दिन देम सथार।इन से ही अपना होवे गुजार॥२४
सुन वचन सत्य प्रिया मुरझाय।अरर दुःखी में पापमें आय॥
ए घ में री न अहार।जहांतक इनका नहीं होवे सुधार
आम गृह कर बैठी मोन धार।काम काज नहीं करे लगार ॥

पूछे सासु सुसरा हित धरी।आज वहुजी रीस क्यों करी ॥२
ते तो उत्तर नहीं देवे लगार।सबही आश्चर्य पाये अपार ॥
'धन पाल'से पूछे सवही।पसेरी की हकीगत सो कही ॥ २७
शेठ कहे सुणो शाणी वहूं।मैं गरीब गामडे में रहूं ॥
जों त्यों कर चाले गुजरान।थोडे बहुत करुं धर्म दान ॥ २८
'सत्यप्रिया'सो चे मन मांय।समजा कर देवुं अधर्म छोडाय
कर जोडी कहे सुसराजीसुणोजि।आपको हित शिक्षाक्यादी
साहुकार को यह कर्म न छाजे।दगा करेसो चोरही बाजे ॥
नाम आपका सुन विस्मयपाइ।जिसका भेद आज जानाइ
कमावो पन लाभनहींदे खावे । पापके फल प्रत्यक्ष जनावे
बालक की विनंती अब धारो।चोरी तजो करो रोज गारो
बारह मांस में जो लाभ उपावो।तो प्रतिज्ञा आगे निभावो
मेरा बचन देखो अजमाइ।तोहूंआहार लेवूं तुम घर मांहीं
खोटा कहे भोली तुं बाई।सत्य से संसार निभेही नाहीं ॥
बहुत वक्त में देखा अजमाइ।तबही एसी पेठ जमाइ ॥३३।
पेट काज जो कीजे काम।उस में पाप लागेही नहीं नाम ।
जोकदाही लागेगा पाप।तोभी फल भोगेंगे हम आप॥३४।
यह फिकर तूं पारहे निवार।उठ जल्दी करले अब अहार ॥
इत्तर तन बहुत समजाइ।'सत्यप्रिय 'माने ते नाइ ॥३५ ।
लोभी बनिया नहीं छोडे हट।तीन दिवस यों चली खटपट।
तीनोंको हुइ चिंता अपार । मरसी यह बिना किये अहार ॥

अपमान होवे वदले सज्जन । क्याकरेंयों समझाया मन ॥
चौथे दिन 'खोटशाह' कहेनरमांय।वहुतुंकहे सोमानुंमेंवाय ॥
वारेमांस करुं सत्रोट व्यापार । जो नफो मुझवचे लगार ॥
तो प्रातिज्ञा निभावुं जाव जीव।नहीं तो तूं मतभोगावेरीव ॥
सुनवचन 'सत्यप्रिया हर्षाय।खोटाशाह' कोपच्चखाणकराय ॥
अष्टम भक्त पारणा किया । सवसज्जनका हर्षाहिया ॥
खोटाशाह'हुवेद्रढवृत्तमझार।खोटेतुला तोलेदिये दूरडार ॥
नवे तुला तोला वरोवरकरी।करेव्यापार एकसत्य उच्चरी ॥
एकही भाव और एकहीजवान।मानेनही कोइपहीलीवान ॥
छःमास व्यपार वहु हीन भया।पोताकाद्रव्य खरचभीगया ॥
फिकर वहुततीनों मन होय। पणप्रतिज्ञा नहीं भंगेसोय ॥
अव जो जो लेजातेहैंमाल । परखी तोली वरावर भाल ॥
आश्चर्य करते लोकअपार।'खोटाशाह' नामभूले उसवार ॥
तव जमनेलगी पेठ परतीत । सुधरीजाणीसव जननीत ॥
जमनेलगीरहाकोकीभीडादोडके दुकाने आवेज्योंतीड ॥
सत्यसेलक्ष्मीआइ आकर्षाय टोटापुराया अधिकजोथाय ॥
वारह मांसमें हिसाव सो करे।पांचसोमोरअधिक नीसरे ॥
ताततनुजमनहर्षायघना । मानाउपकार वहूजीनना ॥४५ ॥
सत्यप्रिया'कोसोनफा वताय।'सत्यप्रिया कहे मेंमानुंनाय ॥
पंचसेरी इसकी लेवाघडाय।डालो जंगलमें एकान्तजाय ।
जो पांछीआपसेआवे इसघर नोपच्चखाण पालेभलीपर ॥

शाह कहे पंचसेरीचल के। आयावहु कहे लेवांअजमाय
परतीत तास वचनकी करी। पंचसेरी घना उसअवसरी
वोरां झाड़ों जंगलमें जायातामिन्हाख शेठजीं घरआय।
घर्पाद अचिंत्य तस ऊपर पडी।धूल कांजीगइ उपरचडी
रवारी ऊंटचरतातहां आय। पंचसेरी पडीउसेपाय ॥
चिलम तम्बाखु की इच्छायालायो खोटा शाह के तांय
पंचसेरी देख शाहजी हर्षाय। तम्बाखु देतस पोंचाय ॥
कहे वहुसे पंसेरी आइ चलाइावहुकहे देखोखरी कमाइ
तलाव अपने गांमकेवार। अबउसमें इसेदेवोडार ॥
खरी कमाइ कहां नहींजाय आयगा पीछाँघरकोंचलाय
शेठकहे पाणीअंदरपडी। कौनलावेगा यहांयहघडी ॥
वहुकहे यहभी देखो अजमायाडालीशेठ तलाव में जाय
फेकत मछोदर में जा पडी।शेठ फिर आये घरउस घडी
सोमच्छ फसा धीवरकीजाल निकालाउलटालियाखदेडाल
पंसेरी पेटसेनिकलकर पडी। मच्छ पाणीमेंगया तडफडी
पंसेरी देख धीवर संतोष लाय।'खोटा शाह'देंगे कुछसहाय
आकरदूकान पंसेरीदिनी। इच्छित स्वल्पवस्तु उनलिनी
कहेवहुसे पंसेरी आइचलाइ। वहुदेखो खरीकमाइ ॥
अवन्हाखो बजार में चौवाटे।खरी कमाइ कीआवेगाहटे
शेठकहे देखस(लेजावे। वहुकहे खरी कमाइनजावे ॥
इशम को डाली चोहटे जायाऊपर दीनीधूलकेराय ॥

प्रातै में हतर झाडन आया । पंसेरी देख आनन्दपाया ॥
खोटाशाह हाटेदीनी सा डालालेगया थोडासामाल ॥
कहे बहुसे पंसेरी आइचलाइ।बहुकहे देखोखरी कमाइ ॥
प्रत्यक्ष चमत्कार देखहर्षाया।अचोरीव्रत द्रडउन सहाये ॥
साफ तजा छलरु दगाबाजी।सबजनहोगये अतिही राजी ॥
"चोखाशाह" तस नमथपाणा।थोडेदिन में धन बहुतकमाणा
बहुविनंतीकर साधुसती लाइ।धर्मात्म सबको दियेवनाइ ॥
एक व्रत ऐसाहुवासुखदाता ।यहां यशःसुख शुभ गतीदाता

दोहा—भव्यों दीर्ध द्रष्टी करी । ग्रहो द्रष्टांत का सार ॥
खोटाफिट चोखा बनो । कलुका तोड करार ॥६१
तो थोडे दिन में मिले । सुख संपति सुयोग ॥
चोखाशाह तणी परे । सुधरे दोनु लोग ॥ ६३ ॥
स्व परात्म सुख वरन । अदत्त पापोद्धार ॥
ऋषी अमोलक नेरचा । यह तीसरा अधिकार ॥ ६४

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज
कीसंप्रदाय के बाल ॥ ब्रम्हचारी मुनीश्री
अमोलक ऋषीजी महाराज विरचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथ का
अदत्तादान पापोद्धार
नामकः तीसरा
मंगल समाप्तम्



"मंजिल चौथा"-मैथुन पापोद्धार"

पूर्व विभाग-"कुशील"

मैथुन का अर्थ-दोहा छंन्द

दोहा—मथन असंख्यपचेन्द्रि का।महा-घमसाण जहांहोय
चोथा पाप मैथुन सो ।जगमें व्याप्या सोय ॥ १ ।
प्रश्न व्याकरण सूत्र के ।चोथे आश्रव द्वार ॥
वरणन इसका जिन किया।सो यहां करूं उचार
दुर्गुण पाप से नाम तस । मैथुन के प्रकार ॥
सद्बोध कथा युत यहां कथुं।बाचीतजो तजो विका

मैथुन से दुर्गुण—चोपाइ छंद

मनुष्य असुर आदि करे चहाये।'पंके'कादव सें आरम भराय
पणफूलण सारपटाओ पटके।पासें जालें ज्यो बांधे अटके
तीन वेद चिन्ह से पटतिक। तप संयम ब्रह्मचर्य भेदित ॥

बहुत प्रमाद कौ मूल यह स्थान।कायर माने प्याराजो प्रान॥
सूत्र जाहै नके स्वाँग ने योग।सेवक भमा› सदा त्रि लोगें ॥
अरा मेरण रोगें सोग का धरा।वध बधन विति घीतये कर ॥
दंशणं चरित्रं मोहका साधक।बहुत काल से यह बाधकें ॥
मरे आगे पापें साथ हो आवा।मेथून ऐसे दुर्गुण पाय ॥ ७ ॥

मैथुन के नाम—चौपाई छंद.

अबंभे-अनाचीर्णं मेहूण-मयन।चरतें 'व्यपित'संसार्गि मिलन
सवण हीं कार्।-अकार्य कराय।संकप्पो।संकल्प विकल्पउपजाय
बंधणौ पयाण-बाधाका उपाय।दप्पो-डर भ।हो अज्ञानवडाय।
मण संखो भी क्षोभमन करे।अणिगें हो आत्म नहींठरे ॥९
विग्ग हो-विघ्न विग्यओ करेघात।विफागो-किया धर्म नाशपात
विभमों-कैफ सा भरम उपजाय।'अचम्मो'महा अधर्मकराय।
असालैया दुशील इसे जान।गाम धम्मतत्ती अतृसिमान ॥
रक्को-रक्त होवेमतवाल रोंय चिता-महा चिंता की माल ॥
काम भोग करा मेरण हार।वेरंवेर वृद्धि करतार ॥
'रहस्सै गुप्त' यह चोरी कानाम।गुँझ छिपावे न लेवे नाम ॥
बहुमाणें-बहुनही मान इने । बंभेचेर विग्घो ब्रम्हचर्य खसे ॥
वोवत्ति धर्म का वमन कराय।'विराहणा' इन से इराधकथाय
'प्रसंगो पस्संग अनिवड़ाय । 'कामे गुणानि-कंदर्प उपजाय ॥
ये हैन तिमथुनक नाम कहे। प्रश्न व्याकरण सूत्र से लहे ॥

मैथुन से पाप और दुःख—मनहर छन्द

मैथुन तीन प्रकार । देव नर तीर्यंच धार ॥
नर नारीका संयोग । मोहोदय भावे है ॥
योनी उत्पति का स्थान ।असंख्य असन्नी मान
सन्नी लक्ष नव जीव । भोग से नसावे हैं ॥
तामें दीर्घ आयु योग । निवार्ते होने भोग ॥
एक दोय तीन जीव । बचकर रहावे है ॥
म्हूर्त चार तांई । योनी सजीवन रही ॥
ज्ञानी महा पाप जान । ब्रह्मचारी रहावे है ॥
विषय की आसा; सदा प्यासा न,निरासा होय ।
ज्यों ज्यों बढावे तासा । त्यों त्यों वृद्धि पावे है
अग्नि ज्यों इंधन नाखे ।मशानि सो नहीं थाके ।
तेसे विषय अग्नि लाखे । तृप्ति न आवे है ॥
अंग रंग भंग थाय । शक्ति रक्त हरे काय ॥
तोऊ इच्छा पाप मन तन को समावे है ॥
येही आश्चर्य भारी । कामकी करारी वारी ॥
भोग रोग जोग पापी जीवोंको सतावे है ॥
काम अग्नि का ताप ज्ञानाजी कहा अमाप ॥..
उपजत मन तन । अतिही तपावे है ॥
होन में वायद्रु अग्न । समुद्र में जो गोता खाय

तोही न शीतल थाय संताप समावे है ॥
प्रज्वलन आठो जाम ।वुद्धि वल जाले काम ॥
सत्व रूप हीन कर । कालास वढावे है ॥
जले हैं अनंत । जलरहे हैं अनंत जीव ॥
विटंवना काम एसी । कामी को देखावे है ॥ १७॥
सर्प ताल पुट थकी । विप है विपम नक्की ॥
अन्य जह स्पर्शी तन फिर प्रागमावे है ॥
तस उतारन उपाय अनेक मिले जग मांय ॥
नहीं उतरे तो एक भवमेंही मरावे है ॥
विषय को विष समरण होत व्यापे अंग ॥
मंत्र जंत्र औषधि न कोइ उप समावे है ॥
महा विपत्ति देखाड अनन्तानन्त वार मार ॥
विपय के विष तुल्य विप नहीं पावे है ॥ १८ ॥
वैरी मारे वैर कर गुप्त दगा डाव धर ॥ १
ताही से छुटाने केइ साहाय मिल जावे हैं ॥
काम मारे हँस खेल । वनाइ छवीली छेल ॥९
नाम के सजन ताही जन के फसावे है ॥
कुन्दी पूरी करे अरु सर्व संपति को हरा।
विन मोत मरे आगे कुगति रुलावे है ॥
ऐसे वैरी संग मुढ जान कर गुप्त गुड ॥
काम के समान अन्य वैरी नहीं पावे है॥

क्या मोह रहा चरकी जो छवी नर दूर चमडा करक्यो नविचारे
कामी कामीनी को चित्त पेखत आश्चर्य निकामी को बहु आवे
कहे तूंही है प्राण से प्यारो ताही को ते हलाहल खिलावे ॥
एक को ध्यावे एक समजावे एक बुलाय एकको सार मोवे॥
केते भोगे भोगगी केतही यह विचिलतापार को पावे॥२३॥
क्षणमें राजी क्षणमे नाराजी क्षण हांसी उदासीही क्षणमें॥
क्षणमें राग विरागहो क्षणमें क्षणमें शुचि अशुचि छनमें॥
क्षण २ रंग अनेक बने यों वाकीन कोइ राखे इनमें ॥
असंख्य वेग देखेंहैं ऐसेही कामी कामीनी के एक दिनमें ॥

मैथुन से खुवारी—खडका छंद.

अनंग प्रसंगमतिभंगजन की हुवाशौच अशौचमेनाहीं जोवे॥
अस्थी मांस रक्त रुधीर स्थान मेंरुची मानी तन मन मोवे॥
अशक्ति हो भोग से रोगपेदा होवेसुजाकप्रमेह पथरी सोवे
धन उदास निनाम यों यहु करे उभय भव मांहीकामी होवे
जाय नर के मरी यम कोपे भरी पोलाद कीपुतलीगरम करना
शूलोंकी सेज सोवावे धर हेज वेग प्रहार ऊपर धरना ॥
तन दजाय अरडाय चिल्लाय पन दया न लाय प्राणोंको हरना
दुःख अब मोजयों कुहेथा चोज नव भर मा[illegible] घर करना
अग्नि ज्वाला की मांहि उसे दे धरी अ[illegible]
कहां जानाहे भाग कर भोग अनुराग पे [illegible] इनके [illegible]

मनुष्य भव मझारी सब निज इष्ट
काम वश नर नारी दासी दास
अहो निश धावे धन कमावे निठावे
एक एक की गुलामी करे हर्षत अपारी है
नोकरी की यारी देवे मूत्र पास
यह जान प्राण प्यारी । एसी गई मति हारी
आश्चर्य आवे है भारी । देख के यह
किते अकल गई मारी निज स्वभाव विसारी है

मैथुन का प्रभाव—न्हद विजय छंद

ज्ञानी नर अज्ञानी बने अरु चातुर नर सो मूर्ख होवे
शूरवीर का यरयनर अरु उद्यमी आलसी कायं
शूद्रा धारी भृष्टेन अरु क्षमावन्त क्रोधे व्रत जावे ॥
यों मद्दन नाश दुर्गुण प्रगटे काम वशी पतको जन
हिता हित को विचार रहे नहीं नीती अनीती को
योग्य योग्य देखे नगरा भरा कामी कुठाम जाइ तन
मात सास पुत्री अरी अरु पुत्र वधु तरुणी को विगारे ॥
कहा कहूं काम उदाम की गत धूर्ते जो इसे हिये विच धा
कामी को कामनी वाक्य अमृत लगे पण है जहर प्राण
कामी कामनी तन शृंगारत सोहे पन विष्टा भंडारे ॥
कामी कामनी मन सुख लागत पण सदी आत दुःख पारे

क्या मोह रहा वरकी जो छवी नर दूर चमडा करक्यो नविचारे
कामी कामीनी को चित्त पेखत आश्चर्य निकामी को बहु आवे
कहे तूंही है प्राण से प्यारो ताही को ते हलाहल खिलावे ॥
एक को ध्यावे एक समजावे एक बुलाय एकको सार मोवे॥
केते भोगे भोगेगी केतेही यह विच्छिततापार को पावे॥२३॥
क्षणमें राजी क्षणमे नाराजी क्षण हांसी उदासीही क्षणमे॥
क्षणमें राज विरागही क्षणमें क्षणमें शुचि अशुचि छनमें॥
क्षण २ रंग अनेक बने यों बाकीन कोइ राखे इनमें ॥
असंख्य वेग वेवहें ऐसेही कामी कामीनी के एक दिनमें ॥

मैथुन से खुवारी—खडका छंद.

अनंग प्रसंगमतिभंगजन की हुवेशौच अशौचसोनाहीं जोवे॥
अस्थी मांस रक्त रुधीर स्थान में रुची मानी तस मन मोवे॥
अशक्ति हो भोग से रोगपेदा होवे।सुजाकप्रमेह पथरी सोवे
काम उदाम निनाम यों बहु करे।उभय भव मांहीकामी हीरोवे
जाय नर के मरी यम कोपे भरी पोलाद कीपुतलीगरम करता
शूलोंकी सेज सोवावे धर हेज तेग प्रहार ऊपर धरता ॥
तन दजाय अरडाय चिल्लाय पण दया न लाय प्राणोंकों हरता
दिखअब मोजयों कहेधर चोज तब भर भर रोजयों पाप भरता
अग्नि ज्वाला करी मांहे उमे दे धगी अरि२कर भगने जो चहावे
कहां जाताहै भाग करभोगअनुराग योंकही२यम उनको दबावे

काष्ट ज्यों अंगजले मीन ज्योंतडफडेप्रासकर्म सेकहोकोछुड़
पल्य सागर केइविर्तायों बहू लइ कामीकामीनी दोनोंदुःखप
महा मैथुनी आगे नपुंसक होवे
एकेन्द्री विकलेन्द्रि असन्नी थाइ ॥
हींजडाखोजा रु वन्ध्या मृतवन्धा योंव्यभीचारनिंच गतिप
भगेन्द्र कुस्मांडआदि गुप्त रोग केयोगसे भवो भव पीडा:
काम कोजानदुःख खान मतिमानजोछिट काइ सोसुखीरह

कथा—सातवी.

मैथुन पाप के फल बतानेवाली—"काम कुमरकी"

दोहा—विषया शक्त बहूत जीवही । पाये बहूतही त्रास ॥
रावण पद्मोत्तर कीचकामणीरथ आदि विनास ॥१
ब्रह्मा शिव गुरू चन्द्र इन्द्रापाये विषय वश दुःख
अन्य मते बहूते कथनाकहा २ कहूं मुख ॥ २ ॥
तो भी सद्बोध करन कोाकाम कुमार चरित्र ॥
सुनि कथा सो वरणवूं । कामकी गति विचित्र॥३

❀ चोपाई ❀

मही मंडन मनोहर गाम । तहां अरिजय राजा गुण धाम
सोवन शाह रहे तहां शेठाधनी गुनीं जमी जाकी पेठ॥४

द्रव्य वहुत हे घरके मांय।पुत्र विनासो शुन्य लखाय ॥
किये वहुत ही उसने उपाय।पुण्य विना नहीं लागादाव ॥
ढलती वय यों आये जदा । धर्म कर्म में लागे तदा॥
धर्म से कर्म की टूटी अंत्तराय।शेठाणी के गर्भ रहाय ॥६॥
हर्षित हूवे दम्पती अपार । परन्तु घटा धर्म से प्यार ॥
यह पापी जीव के लक्षण जान।पालेगर्भ उत्सवमंडान ॥७॥
नव मास भये जन्मा वाल । काम देव सा रूप निहाल ॥
काम कुमारतस नामज दिया।प्राण से अधिका पालन किया
किंचित नहीं दुःखा ते मन । इच्छा सव करते पूरन ॥
लाड में सो शीखा कुचाल।मात तात को देता गाल॥९॥
अंगो पांग कु चेष्टा करे । लंम्पटी योंके संग अनुसरे ॥
जाने हम पुत्र पाता सुख।देखे नहीं आगे के दुःख॥१०॥
विद्या जोग वय वाकी भई ।पाठण शाळा में जाता नहीं ॥
मात तात जरा नहीं दयाय।दूसरे की कहीमानेही नाय॥ ११॥
लग्न किया ठाठारंभ करी । थोटे दिन नारीपे प्रितिधरी ॥
कुसंगत सेवन लगे व्यभिचार। मनमें वनेपार केनिर ॥ १२ ॥
पण घटाने दणदट नित्य जाय । केन्चाला रंडी नारीआय॥
कुटवंनी नो मन नआय ।कुरंडनीमें देनीहुआय॥ १३ ॥
दोहा-नाही ग्राम मांह रहे । रंडून जोधा नाम ॥
सुशीला नव भास [illegible] मनें परिणाम ॥ १४॥
[illegible] कुल से उन परे । [illegible] सुख शाम॥

सर्व दिन नहीं एकसे ।जीव वन्ध कर्म पास॥१४॥

चोपाइ

जोधाजी चूके किसी काम मांय।राजा जागीरी जप्त कराय॥
धन गये सुख गया उस संग।सुशीला पति भक्ति में रंग॥१६॥
पडदे की लज्जा परि हरी ।पण घट चली शिरपे घट धरी॥
रूप अनोपम गज गति चाल।काम कुमर मोहे तत्काल॥१९
कंकरी मारी उसको उसवार।वो अतिही शरमी मन मझार॥
बिन बोले जललेघर आइ।बिती वात पतिको जताइ ॥१८॥
सुन जोधा क्रोधातुर होय । खड्ग ले मारन चले तब सोय ॥
स्त्रिया कर धर कहेसमझाय।भूलन कीजे एसा अन्याय॥१९॥
धनवंत को वो पुत्र देखाय ।झगडा बढे मेरी इज्जत जाय॥
सुन के ठाकुर सुरजा गया।क्रोध हृदय में उछलरया ॥२०॥
ठकराणी कहे धैर्य धरो । एसी युक्ति कोइ भी करो ॥
इस रस्तेवो कभीनहीं जाय।अपनेघर में दोलत आय ॥२१॥
ठाकर कहे सो तूं बनाई । इज्जत रहे और धन मिलाई ॥
ठकराणीकहे मेरीपरतीत।आप को हो तो करूं मैं येरीत॥२२॥
उसको लावूं में यहा बुलाय।वोभी आवेगा भूपण सजाय ॥
धन सब लेके गये घर मांय।कम वक्ती कर कहाडे उस तांय॥
हर्षि ठाकर कहे शीघ्र यह करो।मेरा डर जरा मन मतधरो
ठकराणी सब युक्ति सिखाय।के घडा पणघटपरजाय॥२४॥

केल! कुमर को बैठ देख । कहे ठकराणी हर्ष विशेख ॥
तोरी क्या मारो कंकर मार।मजाह चहो तो आवो मुझ द्वार॥
सुन कुमर हर्षित अति भया । रोम २ तब फूली गया ॥
कहे ठाकर होवेंगे तुम घर ।सो कहें गये नोकरी पर॥ २६ ॥
एक महीना सो घर नहीं आय । आप पधारो कृपा लाय ॥
आज शाम को देखूंगा राय।इतनी कहे ठकराणी जाय॥२८॥
काम कुमर मन अति उमंग।सजा श्रृंगार अनोखे ढंग ॥
घडी एक वर्ष समी तस जाय।सन्ध्या होवन की देखे राय॥२८
श्याम होते चले हुवे नोकर संग।ललकार कहे होके बेरंग॥
कोइ मत आवो हमारे लार।कोप देख बैठे चुप धार ॥२९ ॥
ठाकर गये जब घर के बार । काम कुमर आ ठोके द्वार ॥
सत्कार ठकराणी ले घर मांय। तत्क्षण दीये द्वार लगाय ॥
कुमरजी बैठे पलंगपर जाय । ठाकर उभे घर बार आय॥
हाक मार कहे खोलकमाड।कुवरजी के कम्पन लगे हाड॥३१
पूछे कुवर कोन आये यह । ठकराणी कहे ठाकर छह ॥
अचिंत कैसे [illegible]न । अब हरेंगेदोनो के प्राण॥ ६२ ॥
सुन कुमर [illegible] उन्माद । अतिही पाये मन विपमाद ॥
इज्जत और मरणकाडर।पसीने से अंग गया सबभर।३३॥
कर जोडी कहे मुझ छिपाय।मानु उपकार मरणसे बचाय ॥
मेरेनानके मे एकही पुत।मेरमेर डूबे घर सूत ॥ ३४ ॥
छिपने की यहां जागा नहीं । मिजाजीठाकर मोरगान्नही॥

ठाकरकरे उतावल घणी।'कामके' अंग छूटी ध्रुजणी॥३५॥
पाव में पड कहे मुझे बचाय।सा कहे शीघ्र कर एक उपाय॥
दासीके वस्त्र यहले पेर । पीसो धान घट्टी को फेर ॥ ३६॥
चेटी जान नहीं मारेंगे मार।नींद आये भगजाना बाहार॥
'कामकुमर' तत्क्षण उसवार।वस्त्र भूपण सब दिये उतार॥
फटी घाघरी ओडणी ओड । चक्की फेरण लगे डर छोड ॥
खोले पट ठाकर अन्दर।आय।ठकराणी को बहुतधमकाय॥
सन्ध्या से चक्की फेरन काज।क्यों बैठाइ इसको आज ॥
नमी कहे आप आगमजान। रसवती करण निपावे धान ॥
दंपती बैठे सेजपे जाय । कामको चक्की फेरत नहीं आय ६
क्षण २ में विश्रान्ति लहे।ठाकर कोप कर गालतस दहे॥३
दंड को शिर में कियो प्रहार।मुंडित शिर जाना उसवार।
पूछे भद्र क्यों तेने किया।कोनसा तेरा पति मर गया॥४०।
हंसी २ में दे दंडे की मार।शिर पीठ उर कर स्थान मझा
जब अटके तब दंडा लगाय।निशी के तीन पहर ऐसे बीताय
मारसे काम पडे मुर्च्छाय । तब ठकराणी यों चेताय ॥
घर में मरने से होय फर्जाती।इस लिये करो ऐसी रीती॥४२
पोट बांध रख आवो बझार मांय।प्राते ले जायंगे सज्जन आ
ठाकर ने तैसाही तब किया।पोटबांध चोहटे रख दिया॥४
प्रात लोक बहुत भेले होय ।गठडी छोड कर देखे सोय ॥
काम कुमर देख आश्चर्य भया।सोवन साह से जाकर कया॥४४

तोवन शाह शरमाय घबरायालाये कुंवर को घरउठाय ॥
तीव्र मिलापकुंवर तनमांदाअग्नी का रोग प्रगटथाय ॥२५॥
औपधोपचार सब व्यर्थगये । शरीर नष्टआयुष्यअंतलाये ॥
मर कर उपजे नरक मझारा । रत्न चिंतामणीगमेसो हार ॥२६॥

दोहा–इस इस दृष्टान्त से देखियो मैथुन दुःख कार ॥
विति दे दोनों भवे । तजो सुख इच्छनार ॥ २७ ॥





मंजल चौथा–"मैथुन पापोद्धार"

उत्तर विभाग–"ब्रह्मचर्य"

दोहा—सर्वव्रत शिर सेहरो।ब्रह्म चर्य व्रत जान
ब्रह्म रूप ब्रह्म चारि है।कहा श्री भगवान। १ ॥
प्रश्नव्याकरण सूत्र के।चतुर्थ आश्रव द्वार ॥
ब्रह्म चर्य के गुण कथे।सो यहां करूं उचार॥ २ ॥

ब्रह्म चर्य के नाम—चौपइछंद

'बंभचेर' ब्रह्म पद आचरण करे।'उत्तम' सर्व व्रतों में सिर ॥
नियम ज्ञान दर्शन चारित्र।समकित रूप 'विनय' का मूल हित॥३॥
नियमादि गुणों में प्रधान। हिमवंत पर्वत से ऊँचा मान ॥
'विनय' प्रसन्न अरु गंभीर।थिमित 'निश्चल' धार धीर ॥४॥
मन-अंतःकरण,अर्जव-सरल।साधुजन आचरित विमल ॥
संवर सेवा – देही मोक्षकारण।विशुद्ध-गुणी आदर निर्भय
सिद्ध गति निलय-मोक्ष का स्थान।पौरुष संयम अधिक मान

३ पूर्ण भव-पुनर भव नहीं करे। दैत्य सदा भला जे आदरे ॥
सोमै-शीतल सुहै सुखकौन। निवै उपद्रव का नाशक जान॥
अचलै-अचल अक्षयै ही करे। जिइवैर-सार की यतिही आदरे॥
सुचरियं-यह उत्तम आचरण। तुलाहिये-सुबोधिक जन ॥
मुनिवर महापुरुष सूरवीरे धनवंते। धैर्यवंते एना आचरंत॥
यो विशुद्ध-सदा निर्मल। भद्र कल्याणकर, सेवते सबल ॥
ने संकिये-नही शरम स्थान। निभ्भय-निर्भय कारक मान ॥
निर्तुल-कचरा सें है रहित। निरासयं-खेद रहित करे चित्त ॥
निरुवलेव-पाप लेप नलगे। निवुइ-परम शांती जगे ॥ १० ॥
नियमे निकंप दृढता रहे। तप संयम का मूल जिन कहे ॥
पंचमहाव्रत की रक्षा करे। समिति गुप्ती ध्याने कपाट परे ॥
सुरक्ष, रक्खण सुकृत रक्षक। आश्राव को है यह भक्षक॥
सनाह बंधे जो लज्जा सुधरे। दुर्गति पंथ तज सुगती रखे ॥
लोगुत्तम सर्व लोक में श्रेष्ट। पद्मसरोवर प लजो जेष्ट॥
महारथ के आरा समान। महावृक्ष की शाखा स्कन्द मान॥
महा नगर के द्वार भोगल सम। महा इन्द्र ध्वजा धरे डोरी सम।
ए आदि सु बहुचर्य नाम। श्री जिन स्वयं मुख किये गुणग्राम॥

शीलकी ओपमा—इन्द्र विजय छंद

"दंबंभे भगवंत" कहे जिन ब्रह्मचारी भगवंत समाना ॥
ज्यों जोती पी यों गण में इन्द्र वेदा, आगम्मे उवमागं माने ॥

अंगोपांग निरखे न लगार।जिससे जागे काम विकार ॥
जोनिरखे तोशील नाशहीपाय।ज्यों कच्ची आँखसूर्यदेखाय ॥
बैठेनहीं स्त्री केआसनपर । जो मन विषय युक्त दे कर ॥
जो बैठे तो शील नाशहीपाय।ज्यों कणिक कोला रहेएकठाय॥
भींतादि अंतर भोग सेवाय।न रहे करण शब्द जहांआय ॥
जो रहे तोशीलनाशहीपाय। घन गरजे ज्यों मोर हर्षाय ॥
पूर्व कृत क्रीडा न करेयाद । जिससे मन पावे विषवाद ॥
जो करे तो शील नाशही पाय।ज्यों शनी 'पाती'सक्करखाय ॥
दाव चांप के अहार नहीं करे।प्रमाद विषय अंग संचरे ॥
जो करेतो शील नाशहीपाय।ज्यादाखीचडसिहंडीफटजाय ॥
न्हानाधोना न करे शिणगार । देखें उपजे मोह विकार ॥
जो करे तोशील नाश हीपाय।गिंवारके पास रत्न नरहाय ॥
शब्द रुप गंध रस स्पर्श पांच।उसपर न जावे मन से राच ॥
दशमा कोट ब्रह्मव्रत तना।ऐसे रहता वश में मना॥२९॥

रमता शील सुधा मेंसदा मन।विष किंचित नहीं व्यापे वदन
सोही ब्रह्म चारी धन धन।आप समा भाखे भगवन् ॥ ३० ॥

ब्रह्मचर्य की महीमा–मनहर छंद

जिनने ब्रह्म व्रत धारा,उनने सर्व व्रत धारा ॥
आत्म काज सारा,रु सुधारा नर पन को ॥
पाप पंज वारा । मोह ममत्व कों टारा॥

काम शत्रु जासे हारा क निवारा सो अधन को
भर मन जारा जिने मन को हकारा ।
पुरु नाम ही निवार, क विहारा काम रन को
लिन रस को उतारा। आत्म गुनकों संभारा ।
अमान नमस्कारा कहत साहिके वचन यों ॥३१
[illegible] है अग ब्रह्मचारिणी हि शुद्ध है आचारी ।
ज्ञान ध्यान मन धारिणी ममता आं मारी है
[illegible] आन को सेनारी नारी जानी विष क्यारी
[illegible] अवनि आ दारि न विचारि न निहारी है
[illegible] ब्रह्म न धारी । आंवह एक नारी ।
[illegible] पुष्ट अशविनदी मन कां हिरनारी है
[illegible] के विहारि । एक पूरण की इच्छारि
[illegible] साकी याही या होरी है ॥ ३२
[illegible] या [illegible] । मन जिनमें मानव धारन
[illegible] है नहर । नहीं छिनमुल करे है ॥
[illegible] आए है अवार ।
[illegible] है [illegible] करे है ॥
[illegible] सुख यह [illegible] ।
[illegible] है ॥
[illegible] सुख न [illegible] ।
[illegible] है ॥३३

ब्रह्मचर्य का प्रभाव–इन्द्र विजय छन्द

...लि प्रभाव टके सो कुभाव महा विष फिटी सुधाप्रणम वे
...ारी सो कुरंग बने ह मातंग अजां विष धर रज्जु थावे॥
... सो पुष्प माल बने । अग्नि ज्वाला बने वारी निधी तावे
...ंजन सज्जन रंजन शील को है अमोल प्रभावे ॥ २४॥
...वे रनमें जनमें धनमें अनमें मनमें जो सदा सुखदाइ
...ठगनें अगनें लगमें रगमें भगमें नहीं पीडा कराइ ॥
...जे लाजे साजे ताजे पाजे जो सहायक थाइ ॥
...लील अपील अडील है धार अमोल सो सिद्धसिधा
...्र नरेन्द्र नमें दानव मानव जस सेव करे है ॥
...ुनेंद्र सदा गुण गावे पिशूनकिमून हुजासे डरे है
...ते रोग हरे । केइ वार्णी सुज्ञानी चित्त धरे है॥
...हीमा अपार सूसार हो धार अमोल मनोंथ तरे है

कथा—आठवीं

... फल बताने वाली—"सुदर्शन शेठकी"

...हीमा शील की । कहां लो बरणी जाय ॥
...िव मुक्ति गयोनो सब शील पसाय॥ १ ॥

...र्शन ४ हाथी ५ चक्री सर्प ७ डोरी

मल्ली नेमी नाथजी ।वाल ब्रह्म चर्य धार ॥
और अनंत ही संत सती।कहाँ लों करुं उचार॥२॥
तोभी शील ठसावने।योग शास्त्र अनुसार ॥
शेठ सुदर्शन की कथूं।कथा रसिक मनोहार ॥ ३॥

चोपाइ

अंग देश चम्पा पुरी जान।दधी वाहन राजा गुण खान ॥
अभया राणी रूप अपार।कला कौशल्यता में हौंशीयार ॥
तहा वसे वृषभदास साहू कार।अर्हदासी नारी गुणधार ॥
दम्पति जैन धर्म में लीन।सूत्रार्थ जाने प्रवीन ॥ ५ ॥
सुभग नामें तस गोवाल एक।गौ भैंसी को चरावे हमेश ॥
शाम को पशु ले घरकों आया।वनमें ध्यानी देखे मुनिराय
प्राते गयो पशु लेकर तहा।मुनिवर देखे ऊभे ही वहां ॥
चिन्ते अत्यन्त शीत के मांय।सर्व निशी खडेरहे मुनिराय॥
तब मुनि नमो अरिहंताणं उचार।उडगयेशी।घ्रगगनमझार॥
गोर गगन गामि नी विद्या जाण।नमोअरि हंताणंनितकरेगान
सुनकर पूछे शेठ वृषभदास।कहां तेने यह किया अभ्यास॥
गोपदीनी सब बात प्रकाश।जाणी भव्य शेठ पाये हुलास॥
कहे गगन गामिनी एकही गुण।इसमें तूं मतजाणनिपुण॥
इसमें हे सर्व गुण का संच।उसको शिखाये तब पद पं
हरवक्त करे सो उसका जाप।एकदा नदी में जल अमाप

सेठ उल्लंघन कूदा जप नवकारा कीला एक पैठा उदरमझार
नर कर अरहदासी उर माया पुत्र पने गोप ऊपना आय॥
धर्म पुण्य वृद्धि डोहला लिया हर्षि सेठ तब पूर्ण किया१२।
तवा नव मास जन्मा कुंवारा पुण्यात्म अंग रूप अपार ॥
उत्सवे सुदर्शन नाम धरायायोग्य वय पढे कला सर्व॥१३॥
धर्म ज्ञान में निपुण ही मनोरमनारमा विदुषी से लग्न किये
धर्म अर्थ काम तीनो साधंत हुवे २ यों काल वितंता॥१४

दोहा—इसही पुर मांही रहे । कपिल राज पुरोहित ॥
सेठ सुदर्शन का भया विमल धर्मि मित्र॥ १५ ॥
धर्म करणी नित्य करे । जाके सुदर्शन ध्यान ॥
एकदा पूछे नारी तस्यास्या क्यों तुम ध्यान ॥ १६ ॥
उसने सब वरणन् किये । सेठ सुदर्शन के गुन ॥
पुरोहिताणी मोहित हुइ । जानी सेठ निपुण ॥ १७ ॥

चोपाइ.

एकदा पुरोहित परगाम जाया इच्छा लाभन नारी अवसर पाय।
एकांत आइ सुदर्शन पासा नम्री नमूंगी करे अरदास ॥१८।
आप मित्र पुरोहित हुवे बीमारा आपको बोलावे सुन नवकार
सुदर्शन माज देने के काजा तत्क्षण आये कपिल के धाम॥१९॥
सुनके नारी ने पोलही ले आया वीच घर के दिये द्वार लगाय ॥
मुख अंग दिखा के अज्ञान लेके पूरे मेरी आश॥२०॥

शील रक्षण सुदर्शन कही।मैं नपूंसककुकछकामका नहीं॥
कपिलाशरमी.दियेबाहिरनिकाल।'सुदर्शन'घरआये तत्काल ॥
अभिग्रह लिया आजपीछेकिस घर।अकेला नहींजानाअन्दर॥
कपिल आया न करी कुछवात।धर्मध्यान करेसुखसे रहात ॥

दोहा—कोइक मोत्सव देखने।कपिला अभया दोय ॥
गोखे बैठी एकदा । शेठपुत्र षट जोय ॥ २३ ॥
माता संग रथ बैठके । जाते उत्सव मझार ॥
विप्राणीपूछे राणीसे।यह है किसकी नार ॥
राणी कहे 'सुदर्शन की ।तब हंस कर कहे सोय ॥
नपूंशक नर नारीके।षट पुत्र कैसे होय ॥ २५ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपूंसक कैसे जाने।कपिला बीता कहा बयाने ।
ठगी तेरे को तब राणी कहे ।धर्मी पर नारपे नपुंशक रहे ॥
चिडाइ कपिला कहे तुम कलावंत।एकवक्तकरोसुदर्शनकंत ॥
राणीकहे कुछ बडी नहीं वात।जो करुं तो सच्ची मुझ जात ॥
वक्त हुये दोनोंनिजस्थानेगइ।र.णीधाय को बीती कही ।
धाय कहे कियातुमखोटाविचार।धर्मीकभी नकरेतुम से प्यार।
राणी कहे एक वक्त मूझ पास।लावे तो सब पूरुं आस ॥
धाय कला एक करी विचार।शिवका में एक मूर्ति बेसार ॥
ले चाली राणी मेहलमांय।द्वार पाल तस दी अटकाय ॥

फोडी मूर्ती धाय तव कहे।राणीजी मौन वृत,एक गहे॥३०
मौने लाइ मूर्ती पुजा करे । तो ते अहारपाणी आचरे ॥
तेने किया राणीका वृतभंग।नृप से कहे मारावुंकुढंग॥३१॥
सुनके पोलिया अतिडर पाया।कहे अवएसा न करुं मांय ॥
यों सातो द्वार पाल डराय।इतने में पक्षी पर्व आय॥३२॥
शेठ सुदर्शन पोसाकिया।निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
धाय आय पोषधशालमांय।शेठ को उठा पालखी में ठाय॥
ढंकी पालखी लाइ राणीपास।कहे अव पुरोतुमारी आस॥
अभया देख अतिही हर्षाय.कामातुर मिष्ट वचन वोलाय॥
गुप्त अंग शेठ अंग को लगाय।गाढालिंगन दे ललचाय॥
शेठका मन नहीं चला लगार।कर कला अभया गइहार॥
कोपातुर कहे अरे गॉवार ।सुखइच्छेतोकरमुझअंगीकार ॥
नहीं तो अभी न्हखावूंमार।तोभी शेठ चले नहीं लगार॥
एक अभिग्रह धारा मन।ध्यान पारुं जब टल विघन ॥
अभया लबूरा हाथे शरीर।फाडा कंचुक लेंगाचीर ॥३१ ॥
दोहो २ रायजी करी पूकार।पकेडा दुष्ट करे अनाचार ॥
सुनी नरेश्वर दोडके आय।देख'सुदर्शन'आश्चर्यपाय॥ ३८॥
रोती राणी कहे करे शीलभंग।फटे वस्त्र रु वताया अंग ॥
कोपातुर नृप कहे रे धर्म ठग।जात धर्म गुरु लजाये जग।
कहे भट सेठो शुलीचडाय । ले जावोनगर में फिराय ॥
भट उठ लाये शेठ को वार।शाम मुख किया 'खर'स्वार॥

शील रक्षण सुदर्शन कही।मैं नपुंसककुछकामका नहीं॥
कपिलाशरमी।द्विपेत्र।हिरनिकाला।'सुदर्शन'घरआये तत्काल ।
अभिग्रह लिया आजपीछेकिस घर।अकेला नहींजाना।अन्दर।
कपिल आया न करी कुछवात।धर्मध्यान करेसुखसे रहात ।

दोहा—कोइक मोरमव देखने।कपिला अभया दोय ॥
गोखे बैठीएकदा । शेठपुत्र पंट जोय ॥ २३ ॥
माता संग रथ बैठके । जाते उत्सव मझार ॥
विप्राणीपूछे राणीसे।यह है किसकी नार ॥
राणी कहे 'सुदर्शन की।तब हंस कर कहे सोय ॥
नपुंशक नर नारीके।पंट पुत्र कैसे होय ॥ २५ ॥

चोपाइ.

राणी कहे नपुंशक कैसे जाने।कपिला बीता कहा बयाने ।
ठगी तेरे को तब राणी कहे।धर्मी पर नारपे नपुंशक रहे ॥
चिडाइ कपिला कहे तुम कहावे।एकवक्त करोसुदर्शनकंत ॥
राणीकहे कुछ बड़ी नहीं बात।जो करुं तो सखी मुझ जात ॥
वक्त हुये दोनोंनिजस्थानिगइ।राणीधाय को बीती कही ।
धाय कहे कियातुमखोटाविचार।धर्मीकभी नकरेतुम मे प्यार।
राणी कहे एक वक्त मुझ पास।लावे तो मय पुरे आस ॥
धाय कहा एक करी विचार।शिवका में एक मूर्ति येमार ॥
ले चाली राणी मेहलमां।द्वार पाल नम दी अटकाय ॥

फोड़ी मूर्ती धाय तब कहे।राणीजी मोने वृत एक गहे॥२०
मोने लाइ मूर्ती पुजा करे। तो ते अहारपाणी आचरे॥
तेने किया राणीका वृतभंगानृप ते कहे मारावुंकुढंग॥२१॥
सुनके पोलिया अतिडर पावाकहे अवऐसा न करुं सांय॥
यों सातो द्वार पाल डराय।इतने में पक्षी पर्व आय॥२२॥
शेठ सुदर्शन पोसाकिया।निशी चार प्रहर ध्यान धररिया॥
धाय जाय पोषधशालमांय।शेठ को उठा पालकी में ठाय॥
ढंकी पालखी लाइ राणीपास।कहे अब पुरोतुमारी आस॥
अभया देख अतिही हर्षाय.कामातुर मिष्ट वचन बोलाय॥
गुप्त अंग शेठ अंग को लगाया।गाढालिंगन दे ललचाय॥
शेठका मन नहीं चला लगार।कर कला अभया गइहार॥
कोपातुर कहे अरे गॉवार।सुखइच्छेतोकरमुझअंगीकार॥
नहीं तो अभी म्हलावूंमार।तोभी शेठ चले नहीं लगार॥
एक अभिग्रह धारा मनाध्यान पारे जब टले विघन॥
अभया लबुरा हाथे शरीर।फाडा कंचुक लेगाचीर॥२१॥
दोड़ो २ रायजी करी पुकार।नकेडा दुष्ट करे अनाचार॥
सुनी नरेश्वर दोडके आया।देख सुदर्शन आश्चर्यपाया॥ २८॥
रोती राणी कहे करे शीलभंग।देखे वस्त्र न बतायाअंग॥
कोपातुर नृप कहे रे धर्म ठगा।जान धर्म गुरु लजाये जग॥
कहे भट मेरी शूलीचढाय। ले जावोनगर में फिराय॥
भट उठ लाये शेठ को ताम।नगर मुख किया [illegible]

आगे बजाते फूटा ढोल।हाहाकार पुरमें हुवा बे तोल ॥
सेठ घर सन्मुख आये सहु।मनोरमा देख दुःख पाइ बहु ॥
अभिग्रह धारा मन मझार । संकट टले तो लेना आहार ॥
एकांत बैठी ध्यान लगाय ।पंचप्रमेष्ठी मनमें ध्याय ॥ ४२॥

दोहा–सब आये शूली कने।सेठ शूली चडाय ॥
'सुदर्शन'।चित चिंतवे। धर्महीलणा थाय ॥ ४३ ॥
जीवन में इच्छा नहीं।धर्म उजालण काम ॥
सहाय करो शासण पति।जंप परमेष्ठी नाम ॥४४॥

चोपाइ

शासण इष्ट देव सहायता करी।शूली स्थान सिंहासन धरी
सेठ पे छत्तर चामर ढुलाय।जय २ कार गगन में थाय४५
सबजन अति पाये चमत्कार।राजा दौड आ घरे नमस्कार ॥
अभया महल से पडके मरी।शील प्रभाव विस्मय टरी ॥
पंडिता के पाले पछतान।।परन्तु न किया कुछ बयान ॥
दूती उनको सजा शिणगार । सज होवे करके अणगार४७
विराट पुरमें दिवेसर पहोचाय।मनोरमा ध्यानसे सुख थाय।
दम्पती ज्ञान धर्म उद्धार।नरभव कीना संयम भार ॥४८॥

दोहा—पाप भरी जीव लेय के।पाटली पुर मांजाय ॥
देवदत्ता गणिका घरे । रह तोरबी रहाय ॥४९॥
पंडिता करी देव की।गणी का गइ मोहाय॥

जो ऐसा नर भोगवुं।तोही सफल मुझकाय ॥५० ॥

चोपाइ

मुनिवर आये करन विहार।दासी ओलख दी उसवार ॥
अहार मिस घरमें लेजाय । कद्दार्थ ना कर मुनिको सताय ॥
मुनिवर नहीं चले लगार।धक्का देकर कहाडे वार ॥
मुनिवर समतारस में लीन।गाम वाहिर आ ध्यान धरदीन ॥
दोहा—अभया मर हूइ व्यंतरी।सा आइ मुनि पास॥
अनुकुल प्रतिकुल अति । दीनी मुनि कों त्रास ॥
शीत ताप छेद भेदके । परिसह अतिउपजाय ॥
अचल मुनिश्वर ध्यान से।मेरुगिरीज्योंरहाय॥५४॥

चोपाइ

मुनिवर चिंते मन मझार । अजरामर आत्म निर्विकार ॥
विनाशिक तनका होवे नाश।इस से मुझे कुछ नही त्रास ॥
ऐसा ध्याया शुक्ल ध्यान।कर्म खपा पाये केवल ज्ञान ॥
उपसर्ग सर्वहूवा निवार। जन पद देशमें किया विहार ॥
धर्म उपगार वहुतही करी ।अन्ते अजरामर पद वरी ॥
ब्रह्मव्रतसे ब्रह्म ही भये। ब्रह्मव्रत के गुन ये कहे ॥ ५७ ॥
दोहा—धन २ मुनि-सुदर्शन।यथा नाम तथा गुन ॥

अग्निझाल न पीगले । राखा शील निपुन ॥ ५८ ॥
धर्म कुल उज्वलके । पाये सुख अपार ॥
अहो सुविच्छु सज्जनों।यों पालो ब्रह्मचार ॥ ५९ ॥
शेठ सुदर्शन की तरह।थोडे ही काल मझार ॥
सर्व दुःख से मुक्त हो ।पावो गे सुख सार ॥
स्व परात्म सुख करन।मैथुन पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलक ने रचा।यह चौथा अधिकार ॥ ६१ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के संप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषीजी रचित अघोद्धार कथागार का मैथुन पापोद्धार नाम चौथा मंजल समाप्तम् ॥

दोहा—अहो रहा सुदर्शन जहाँ, निर्विकार शिव धाम ॥
कोरो गांगे कुमर है. मर्मी उनकों भाम ॥ १ ॥
मुनिश्री नागचन्द्रजी.





मंजिल पांचवा—"परिग्रह पापोद्धार"

पूर्व विभाग "परिग्रह"

परिग्रहका का अर्थ—दोहा छन्द

निज गुन ज्ञानादि तजीनर परिणती करे ग्रहेण ॥
सोही परिग्रह जिन कह्योनाम पंचम अगसेन ॥
प्रश्न व्याकरण सूत्र के । पंचम आश्रव द्वार ॥
नाम अर्थ युत जो कथेसो यहां करूं उच्चार ॥

परिग्रह के नाम—चौपाईछंद

परिग्गहो नर करे ग्रहण क्रिया । चियोचये संचयो, संचिया ॥
उवचयो निद्दीय वृद्धिवाद । निहाननिधान युत जो गोहाय ॥
संभारो भार कारक यह । संकरो [illegible] सो तेह ॥
आयरो बहुन [illegible] लिहे । पिंडो पीडा कारक लिहे ॥
दव्वसारो द्रव्य के सार मिले । महिच्छा [illegible] बंधे इने ॥
पडिबंधो प्रतिबंध [illegible] । लोहप्पा लोभ आत्म [illegible]

'मेंहंदि'-महा विति दातार। 'उवकरण'-उपकरण उपाधि धार॥
'संरक्षंणया'- रक्षा करनी पडो।'भारा-भार वाहक जन खरे ॥ ६
संपाग्रूपुर्व्यायरका-करे उपाय । 'कलिकं' करंडो'क्लेशकराय ॥
'पवित्थरे'-करेदु:ख विस्तार।'अणत्थों संतवा'-अनर्थ परिचार
अगुंत्ति-तनों अगुप्तिस्थान।आयांसो खेद करे असमान ॥
'अविउंगो'-मुशकलमेंत्यागाय।'अमूंत्ता'-मूक्तिजाते अटकाय
तहो-तृष्णा, अणत्थको-अनर्थ । 'अर्थो' धनर्थकरे सैमर्थ॥
असंतेःपा-संतोष नशाय।यह तीसनाम परिग्रहकेकहाय ॥१॥

परिग्रह के प्रकार—चोपाइ छंद-

बाह्य परिग्रह नव प्रकार । खेत घर रुपो सुवर्ण दीनार ॥
धान मनुष्यं पशु धातू सर्व।इसकी ममत से आवत गर्व॥
अभ्यन्तरपरिग्रह चउदे प्रकार।मिथ्यत्व विंवेद हांस षट धार
चार कषाय मिल चउदह भेद।भवोभव देताजीव कों खेद॥
मूर्च्छा परिग्रह कहा विलराग मिरा २ कर धरे अनुराग ॥
यह मेरो घर हवेली हाट।बाग माला वाडी खेत बाट ॥१२॥
कडा तोडा वींटी वेडी हार।पैसा रूपा महोर गहूं जवार॥

मिथ्यत्व २ स्त्री ३ पुरुष ४ नपुंसक ५ हांस ६ रति ७ अराति भय ९ शोक १० दुगंछा ११ क्रोध १२ मान १३ माया लोभ. यह १४अभ्यन्तर परिग्रह.

मेरे मा बाप भाइ बेन नार। काका बाबा मामा मोसार॥
गाय भैंस गज वाजी रथ। तोता मेना गाडी सथ॥
थाल कचोला कुंभ कळश। भान नगर देश मेरे वश॥१४॥
मेरे सब मैं सबका मुख्त्यार। मेंही रक्षक रहे मेरे आधार॥
मेरी वक्त पे आवेंगे काम। संचु पोषू पालूं देहुं आराम॥
इस विध रहा जीव मुर्छाय। निज शुद्ध भूला मोह वसाय
सब जगमें हाय धन की लगी। भाग्य प्रमाणे पावे जगी॥

परिग्रहका फंद—मनहर छंद

धनकी अजब माया। सारे जगमें फैलाया।
कोउ बाकी नहीं रहाय। सबही फसाया है॥
चक्री हरी हल धर। राय मंत्री दलवर॥
शेठ सेनाधी चाकर। विप्र शुद्र धाया है॥
ठकुराणी राणी सेठणी। ब्राह्मणी रु मेतराणी।
तुरकणी गणिकाणी। आदिक लुभाया है॥
बाबा जोगी रु फकीर। सब हैं धनके हकीर।
देख रे अमोल धन कौन छिट काया है॥ १७॥
इन्द्रन को नहीं छोडे। देवन के संग दोडे।
भूतादि हुलके दौडे। धनही की आमने।
नरेन्द्र बोलावे आवे। आनंद मल्हार गावे।
आनंद हुकम उठावे। धनही की आमने॥

शेठजी तनका वढावे । मुनीम हाजररहावे ।
गुमस्ते करे दे काम । देख धन रासते ॥
वडों की है एसी दशा । गरीबों का कहूं कैसा ॥
कहो अमोलकौन छूटे धनही की फासते ॥ १८ ॥
वाजत हैं महाराया । यती महात्मा कहलाया ।
द्रव्य देखकेललचाया । मांग मान को गमायाहै ॥
वाजे बाबाजी वैरागी । सन्याशी रु फकीर त्यागी ।
लव धन ही की लागी ।लोक मुढ चीरा ठेराया है॥
भाग्य जोग घने पूज्य । कर्म जोग रहे धूज ।
दोनो पंथसे अळग । बीचमें डुबाया है ॥
माया की माया अवलोय । अमोल अचंभ होय ॥
शाबासरे धन तोस्यू । त्यागीही ठगाया है॥ १९ ॥
मात तात नारी छोड । बंधू मित्र प्रेम तोड ।
ग्राम पहाड वन दोड । धन को कमावने ॥
कम लूखा सुखा खाय । तुच्छ वस्त्र तन ठाय ।
कोडी का हीसाव करे । खरच को घटावने ॥
संची कोडी २ जोडे । मरते न नाणा तोडे ।
दाटे ऊंडा धरती में । चोर से बचावने ॥
तन सज्जन सतावे । पुण्य में सो क्या लगावे।
कृपण कहावे जाने । धन संग लेजाव ने ॥ २० ॥

महाजन बाजे महा यम जैसे करे काजे।
गुरू जात से न लाजे। निवाजे वेपारी है॥
बने कूंजडे कलाल। रेबारी अरु चंडाल।
कंद मूल बेचे ठेका ले दारू निहारी है॥
सोवन खत को संचाय। बकरांकी वागण मंगाय॥
ऐसे पाप से कमाय। धन बने साहूकारी है॥
टाहा धनरे बलाय। लगाइ धर्मी घर लाय।
तो अन्यका कहा कहाय। सब मति गइ हारी है॥

परिग्रहसे दुःख—इन्द्रविजय छंद.

धन से दुःख अपार संसार में।तोभी बेविचार सुख कर माने
आवत दुःख स जावत ज्यादे।रक्षण दुःख प्रत्यक्ष प्रमाने॥
राजा पंचको दंड धनी को।जानहीं भोजन वस्त्र को नाने ॥
अपमान हान ही होत धनी को।सब दुःख धनसे आन आने॥
सेवा करने को वृद्ध हूए अरु।भोगके कारण [illegible] ॥
कोमल देह धरे सुख कारन। ताहि क्षुधा तृषा सन करने ॥
शीत ताप सहे भमें उजाड पहाडमें।कुत्सा करे धन आसरे
गाल ताल सहे हम्माल बने।यों दुःख से कमावत [illegible]
पेटी तिजोरी कोठार भंडार।दे पट कपाट मजबूत लगावे॥
ताला नाला साकल डाला। पहरा वाला [illegible] ॥
धनपर सोवे दीपक जोवे।[illegible] ॥
खडके भडके उठके [illegible]॥

लेवे तोदुःख देने का है। देवेतो लेने काही लागे ॥
तेजी मंदी दोनों दुःख दायक। समाचार जाने दुःख जागे॥
भारवहे कुवाक्य सहे नरमी कहे।जाने धनमिले आगे ॥
येंरक्षण करते वहू धन के प्राणसे धनपे अधिक अनुरागे ॥
आकर जो कभीं जाय विरलाय तो अभागीदुनियांसबकेवे ॥
खान पान सयन गमें नहीं। मिल सज्जन आदर नहीं देवे ॥
मरने से दुःख ज्यादा मानत तन क्षिणहोयचिन्ताअहमेवे ॥
तो भी मानत है सुख धन से पेख अमोलख आश्चर्य लेवे॥

कथा—नववी

परिग्रह पाप के फल बताने वाली—"सागरशेठकी"

दोहा—परिग्रह से संसार में।पाये दुःख अपार ॥
सागर शेठ की कथा। कहुं ग्रंथ अनुसार ॥ १ ॥

चोपाइ

'मगधदेश'राजग्रही नगर।'प्रसेन्नीजीत नामें नरवर॥
तहां रहे 'सागर' नामे साहूकार।क्रोड निंनोवेण धनरखवार॥
उस के चलता बडा व्यापार।कोईकीनहीं करे उदार ॥
मुलायजा किसीका नहीं करे। दान नाम सूण भृकुटी चडे ॥

देता देखे दूसरे तांय। मनमें प्रज्वालित भस्म होजाय॥
जाडे औछे वस्त्र अंग धरे। तुच्छ रूख भोजन सो करे॥४॥
प्रहररात को उठ जंगल जाय। छाने लकडे लावे उठाय॥
वडीशुभेही फिरे वजारके मांय। पडा अनाजभाजी चुगलाय॥
उससे शेठाणी भोजन वनाय।ऐसी।विधि से काल खुवाय॥
चिन्दी यें सांध गादी तकीये किये। सयन मैलदा सोहीलिये
दीपकका नहीं घर में काम। सोवे वैठे धनके धाम॥
खडका सुन चोर का वैम आय। तो दीपक से घर सोधाय॥
हवेली का जो कंकर खसे। सब गिरनेका दिल डरवसे॥
ऐसे संचिया द्रव्य क्रोड चार। प्राण से ज्यादा उस पर प्यार।
पुत्र सुरुप हुवे तस चार। उनका भी वैसेही करे गुजार॥
कोटी पत 'सागर' को जान। दे निज धूया पुत्रों को [illegible]
देव जोग 'शेठाणी' मरी। शेठ मालकी घरकी [illegible]
जूने फटे वस्त्र वहूवों को दिये।जो शेठाणी के [illegible]
पीयर से वो लाइ जो माल। गुप्त रखक [illegible]
वार तेहवारे काम यह आय।वहुओं को [illegible]
अवला वेचारी कहे सो करे। पीयर [illegible]
चारों पुत्र को संग लेजाय। इंधन [illegible]
अन्धारे में दे वहुवों तांय। उनके [illegible]
भोजन से निवृत्ती वहुने कहे। [illegible]
इंधन वीण लावो आवे [illegible]

बेचारी शरमाइ तैसेही करे। बेटे बहू बुढ्ढसे डरे ॥ १४ ॥
महा कृपण तस नाम प्रकटाय।परन्तुवो जरा नही शरमाय॥
सी खामण दे उसी से ही लंड।सज्जन मित्रकी परवानहींकरे

दोहा—एकदा चारों बहू। ईंधन को गइवन ॥
इंधन संग्रही चिंतवे। अभी बहुतहे दिन ॥ १६ ॥
जावे तो काम बनायेंगे। शामको जावेघर॥
विश्रांती ली तरुतले। पुण्य जोगते अवसर ॥१७॥

चोपाइ

विद्याधर जावे गगन मझार।विमान स्थंभा करे विचार ॥
नीचे सातियों देख दुःख मझार। ढिग आ वंदी करे उचार ॥
बहिनों दुःख मेरे से कहो। चाहिये सो मेरे से तुमलहो ॥
चारों सुन के विचारे यों। घरका भरम गमावें क्यों॥ १९ ॥
चारोंही कहें भाइ हमे सुखी। क्या कारण तुम कहते दुःखी ॥
सुसरा पतिधन सब हम घेर।फिरनेआइ यह काम हेर ॥ २०॥
संतोष वन्ती चारों को जान। खेचरकहे हर्ष अतिआन ॥
गगन गमिनी विद्या लहो। उडके जावो जहा चित्तचहो॥२१॥
हर्ष के सीखा मंत्र तत्काल। विधी बता खग गया तबचाल
चारों मंत्र साधा उसवार। घरको आकर ऐसाविचार॥ २२॥
रत्नद्वीपामहिमाव्याख्यानमेंसूनी।तब से इच्छा देखन घनी॥
पहर रात गये सबजन सोजाय।तब आन चले मंत्रपसाय ॥

।पिछली रात को यहांही आय।अपना भेद कोइ नही पाय ॥
चारों के सला जाची यहध्यान।उठ आइ संकेत प्रमान ॥
लक्कड वडा पडा घर बार।चारों उसपर हुइ स्वार ॥
मंत्र स्मरा उड चली उसवार।रत्नद्वीप आइ हर्पअपार ॥
फिर आइ घर पिछली रात।निजस्थान सूती हुवा प्रभात॥
धान पिसाने सुसराउठाय।चारों उठ कामें लगी आय ॥२६॥
घर वाहिर लक्कड उखडा देख।शेठ विस्मय पाये विशेख ॥
वहुतकालका जमा उखाडाकष्ठ।यहकोनकभीकरेमुझघरनष्ट॥
इसकी चोकस करना जरुर। दिन पुरा किया चिंतापूर ॥
रात कों छिप ऊभे अंधारे मांय।चारों वहूवों तव चल आय ॥
लक्कड परबैठ उड गइ तत्काल।पिछली रात आइ घर चाल ॥
शेठ चिंते डाकणी मुझ घरमांय।कल देखूंगा कहांयहजाय ॥
प्रातेगुप्त सूनार बोलाय ।यह काष्ट कोरो जैसे मनुष्यसमाय ॥
कंजुस गरजी जान धन वहूलेय ।काष्टसुतारसो कोरीदेय ॥
शामको सुताउसमें आय ।चारों सतीसो खवर न पाय ॥
नित्य प्रमाणे चली हो स्वार।रत्नद्वीप में उतरीगइपगचाल॥
वाहिर निकल शेठ रत्न धन जोय।अतिहीहर्पितमनेंमेंहोय॥
चिंते मूर्खणीचारों है वहू।यह लक्ष्मीकचेर ज्यों पडी यहांवहु
थोडा २ उठा जो लाउं घर मांय।तो मुझदारिद्रती नसाय
आजतां यहा प्रगट नहीं होना।थोडा धन ले चलुं भगवान॥
कालमनजा दर [illegible] ले आवूं।नव यह धन समेट लेजावुं ॥

यहां मुझे देख वहूओं दुःख पावे । रखेमुझे यहांछोडके जावे॥
योंकेइ विचार करता मन में।रत्न भरे व्रहूते खोलन मे ॥
और ढग किया काष्ट मुख आगे । काष्ट में आंप पेठे होनागे॥
तनअंनरजहां जगाह रही खाली।वहां२ लिये रत्न सो घाली ॥
कान नाक मुख अंदरभरीये । लटका लिये वंधेपोटलिये३६।।
इतनेचारों आ कर बैठी पाटे।मंत्र पडा उड चली नभ वाटे॥
द्वीप वहिर धन जान न पावे।अटका काष्टसीम जहां आवे ॥
चहुंचिंनेआजक्या हुवाकारन।मंत्र भूली पुनःकरेउचारन ॥
थोडा चल काष्ट फिर अटका।चारोंका दिल दुःख से खटका ॥
देर हूइतो सुसराजी रीसावे।लोकों में इज्जत अपनी गमावे ॥
सुने शेठ पनबोला नहींजावे।मुख के रत्न कैसे वोल गमावे॥
चोवडाता वोले धीरे २ चालो । सुनी शब्दइरी वहू वा लो ॥
वाइ लकड में भूस भराया।छोडो इसे चल चदरविछाया ४०॥
ओडणे पेयैठी मंत्र पढचाली।काष्ट पडा समूद्र में ते काली॥
'सागर'शेठ सागर में गये।धन नहीं छोडा मरण ही लये ॥
मरके उपने नरक मझार । सागरोंतक सहेंगे दुःखभार ॥
परिग्रह ऐसा है दुःख काल । देखो कथा यह हीये विचार ॥

दोहा—आगे जा एक वहूवदे, सेंदी वोली लगीतेह॥
रखे सुसराजी गुप्तरह । आये अपने पीछेह ॥४१ ॥
लोभ कर रत्न संचिये । काष्ट अटका इसकाम ॥
दोनो हाथ आवेनहीं । चलो शीघ्र देखें धाम॥

चोपाइ

होन हार सो होवेइ थाइ । यों चिंता करती घर आइ ॥
सुतराजी नहीं सदन देखाइ । वीनी वात पती को चेताइ ॥
तात मरण फिकर नोलायोद्रव्य मालक हो मनहर्षाये ।
वात नहीं किस आगे प्रकाती।जाने नहीं कहां गयेला नाती
देख पिता गत सो ततजे मन । लोभ तजी सुकृत करेधन ॥
कोन कमावे कोन विलसावे। धन के मालक कोन न थावे ॥
दोहा—अहो सुखार्थीप्राणियों । परिग्रह जान दुखःकार
ममता तज समता वरोतो पावो सुख सार॥ २९॥





मंजिल पांचवा—"परिग्रह पापोद्धार"

उत्तरविभाग—"अकिञ्चन".

दोहा—सर्व सुखका स्थानहै।अकिञ्चन यह व्रत ॥
ममता तज समता भजे।जो है मुनि सामर्थ ॥ १ ॥
प्रश्न व्याकरण सुत्र के।पंचम आश्रवद्वार ॥
आकिंचन गुन को कथे।सो यहां करुं उचार ॥

चोपाइ .

अपरिग्गहजो करेपरिग्रह त्याग।सवुडेसोआश्रवतजेमहाभाग॥
समणे-सोही साधू कहाय । आरंभ परिग्रह से निवृताय ॥१ ॥
क्रोधादितजे चारकषाय।तेंतीसबोल आरंध सकाय॥
और अनेक होवे गुनका धारा।तीर्थंकर यश ?करे उचार २॥
पसत्थेसु-प्रशस्त तस अर्थ।'अंवितहेसु'- जाने यथातथ ॥
सासॅय भावे सु-शाश्वतेभाव।अॅवठियेपु अवस्थित स्वभाव ॥
संकें कॅखे निर करिता सोए।शंका कांक्षा रखे नहीं कोए ॥
'सदॅइ' श्रद्धे श्री जिन वेण।ससेन- भगवंन का चले तेन ॥
अणियाणे निदान रहित । अगॅारवे- गर्वनजे विनीत ॥

खाने को तो अन्न। तन ढकन वसन ।
रहवने मकान एताही ज जन चावे है ॥
दैव के प्रमान मिले सर्व ही तो स्थान आन ।
किये खेंचा तान नहीं आवे नहीं जावे है ॥
काय को विपति करे पुण्यका खजाना हरे ।
अमोल विचार धरे सोही सुख पावे है ॥१३ ॥
निष्परि ग्रही निश्चिन्ता रहे अहो निश चित्त ।
चोर रु ठाकर विरादरी न सतावे है ॥
लघुता किसीके पासा कभी न करे अरदास ।
आस पास काटे सोही, पूर्ज्यनिय थावे है ॥
सब जग सन्मान लये।चहावे सो आग्रह से दये।
सिद्धि रिद्धि विन साधे । ता ढिग चल आवे है ॥
अकिंचन मत भाइ। सब से उत्तम कहाइ ।
अमोल अकिंचन कोइ पुण्यात्मा पावे है॥ १५ ॥

निष्परि ग्रही के सुख–इन्द्र विजय छंद

जो मुनिराज गरीब निवाज ममत्त्व तजा जो जगत पूजावे।
निर्दोष स्थान सदासु अमान विना दिये दाम रहने को पावे
नित्य सरस अहार इच्छित प्रकार देइ सत्कारसहुकार बहरावे
उज्वल वस्त्र मांगे मिले तव परिग्रह त्यागी सदा सुखी रहावे
संचे नहीं कन कोडी नहीं धन हुकमे लक्खन सु कृत्य लगावे

अँलुंद्दे' सो लंपट नहीं होए।अँमूँढ सुज्ञ कहावे सोय॥६१
मन वच काय की गुप्ति धार।जो सो वीरे-शूर वीर जुजार
यों परिग्रह त्यागी की महिमा कही।प्रश्न व्याकरण सूत्र महीं
दोहा—पूर्व विभागे जो कहे । परिग्रह दो प्रकार ॥
वाह्या भ्यन्तर जो तजे।सो अकिञ्चन अणगार ॥७॥
आसा दुःख सव से वडा । निरासा सर्व सुख ॥
व्रति वर्ते मर्यादमें । तो नहीं पावे दुःख ॥ ८ ॥

चोपाइ-

जो करे सर्व परि ग्रह त्याग।सो अणगार होवे महा भाग्य
वस्त्र उपकरण रखे जो पास । फक्त धर्म लज्जा रखे खास॥
ममत्व उसपर जरा नहीं करे ।खप उपरांत जरा न संग्रहे॥
निष्परि ग्रही उनको जिन कहे।जो जिनवर की आज्ञा में रहे॥
ग्रहस्थ से परिग्रह नहीं तजाय।ममत्व मोचन मर्याद कराय
नव प्रकार वाह्य परि ग्रह कहे।जितना जिस मालकी में रहे
आवक जावक स्थित अवलोक । और सव इच्छा दे रोक॥
तो अव्रत बहुत घट जाय।संपति घटे विसि कम रहाय ॥१

परिग्रह त्याग सद्बोध—मनहर छंद

आतम हित धनी सो घटाते ममत्व मनतनी ॥
जितनी मिले उतनी में संतोष मन लावे है ॥

खाने को तो अन्न। तन ढकन वसन।
रहवने मकान एताही ज जन चावे है ॥
दैव के प्रमान मिले सर्व ही तो स्थान आन।
किये खेंचा तान नहीं आवे नहीं जावे है ॥
काय को विपति करे पुण्यका खजाना हरे।
अमोल विचार धरे सोही सुख पावे है ॥१३॥
निष्परि ग्रही निश्चिन्त। रहे अहो निश चित्त।
चोर रु ठाकर बिरादरी न सतावे है ॥
लघुता किसीके पास। कभी न करे अरदास।
आस पास काटे सोही, पुज्यनिय थावे है ॥
सब जग सन्मान लये।चहावे सो आग्रह से दये।
।सिद्धि रिद्धि विन साधे। ता ढिग चल आवे है ॥
अकिंचन व्रत भाइ। सब से उत्तम कहाइ।
अमोल अकिंचन कोइ पुण्यात्मा पावे है॥ १५॥

निष्परि ग्रही के सुख–इन्द्र विजय छंद

जो मुनिराज गरीब निवाज ममत्त्व तजा जो जगत पूजावे।
निर्दोष स्थान सदासु अमान विना दिये दाम रहने को पावे
नित्य सरस अहार इच्छित प्रकार देइ सत्कारसहुकार बहरावे
उज्वल वस्त्र मांगे मिले तब परिग्रह त्यागी सदा सुखी रहावे
संचे नहीं कन कोडी नहीं धन हुकमे लक्खन सु कृत्यलगावे

श्री मती कूँवराणी तब। पूछे क्या है काम ॥
खबर दार आज पीछे यहां। दुःखका मतलेनाम ॥

चौपाइ.

वसुपति जब मुत्यु पाये। गुनास्ते बहु समाचार पठाये॥
कोइ कहे नहीं कुँवर पे जाइ।दहन क्रिया करीतबघबराइ॥
मालक विन कौन काम चलावे।सबन गुमास्ते सबघबरावे॥
बंधपडी पंच लाख दुकानों।होय नूकशान औरशोरफेलानों॥
कोणिक राजा सुन घबराये।शालिशेठ के घर चल आये ॥
सर्वजन उठ आदर देइ । उंचस्थान राजाजी वैठेइ ॥१८॥
कर जोडी सब अर्जी करते।कुँवर साहेब नीचे नहीं उतरते॥
मालक विन काम कैसे चलावे। राजाजी तब हुकम फरमावे॥
कोइ जाकरलावोकुँवरकेतांइ।सबकेहसुरी शक्ती से नजवांइ॥
दासियों हाथ खबर जो पठाइ।पीछा उत्तर कोइ नहीं लाइ ॥
एक.दासी को नृपती पाठावे। वोभीखबर नहीं लेकर आवे॥
दो तीन दासी भेजी धमकाइ । शाम हुइ कुछ खबर न पाइ ॥
आसुरत राजा हो घर को जाये।शक्तउपाय शोचशुभेआये॥
उसवकसबेनवडीदासीआइ।सुनिमर्जीउसकोओलखबताइ॥
जरवंधसे नृप उसे मगाइ । शम्भ हुकुम तब यों फरमाइ ॥
जोखम कुशाल तुमसबचावो।एकघंटे में कुंवरले आवो॥
नहीं तो तोपने महल उडावूं। मुलायजाकिसका नहीं लावूं ॥

सुणकर चेटी अति घबराइ।तत्क्षणभाग कूमर कने आइ ।
कहनेकी हिम्मत नहीं चाले।रुदन करे नयनेनीर डाले ॥
कुमरदेखकर आश्चर्य पाये।यह क्या गायननचे सुनाये॥
जिससे आँख में पानी आये। सुनते देखते अति उमगाये ॥
श्रीमति उसे दिलासा देती।रोनेका कारण पूछे उस सेती॥
उसने वीती सब सुनाइ।अतिही कोपे कोणिक राइ ॥
मुझे यह मरी सोभी बताइ.नही जावे तो मेहलदेतेगिराइ
सुन लक्ष्मी पती हर्षी कहता।देखें राजा कैसा कहां रहता ॥
शीघ्रपोशाख सजके चाले।आयेदशामें सब ने निहाले ॥
गुलाबी मेहताब जोंपडाउजाला।राजानजीकलियेतत्काला॥
सब ऊभे होकिया सत्कारा।देख पुण्याइ विसमय अपारा॥
कहेनृप नगरशेठ पद्वी संभालो।नामयशावोसबकोंपालो ॥
आगे कैसे सब काम चलाना।सोहुकम इनको फरमाना ॥
कुमर कहे पुछो पिताजीनाइ।मैं इसमेंकुछ समजुंनाइ ॥
राजाकहेशेठपरभव सिधाये।कुमर कहे पुछना उन आवे ॥
सुनी सभा जन हंसने लागे।रायकहे कुमर बड भागे ॥
मरण दुःख की बात नजाने।जन्म से सुखकीये हैं पुण्यवाले
कुंवरसे नृप कहे मरेनहीं आवे। कैसे अब यहकामचलावे ॥
कुंवर कहे कहु गये पिताजी ।तैसा सब करो मेंहूं राजी॥२१
मरनी मे दिल मग घबरावे।यों कही रुद हवेली में आवे
नृप कहे अब इन मन मनावो।पहिले माफिक काम चलावो

दोहा–कुमर आ बैठे सेजपर । किये अंग वस्त्र दूर ॥
कुमलाये धूप पुष्पजों।उतरा मुख का नूर ॥ ३५ ॥
शिखा पडी मुख सन्मुखे । श्वेत वाल तव देख ॥
यह क्या कहां से आगया । करते सोच विसेख ॥
एकाग्र शुद्ध उपयोगसे । जाति स्मरण पाय ॥
देख भवान्तर श्रेणिको ।धर्म ध्यान मन ध्याय॥३८॥

चोपाइ

संयम से अनुत्तर विमानसिधाय।वहां से चवकर यहां सुख पाय
एसा अवसर पा करणी न कीनी।चिंता मणी साठकोडी लिनी
धर्म कर्म का भेद न पाया । विपया नन्दमें जन्म गमाया ॥
निश्चय मर पर भव को जाना।खाली खजाना फिर पस्ताना
ऐसे ऊंडे पडे फिकर के मांही।श्रीमती देख जाणी चिन्ताइ
कर जोडी कहे फिकर तजोजी।चाहीये सो धन मुझसे लोजी
आठ कोटी में पीयर से लाइ ।आठ कोटी मुझ वेनो काही
इस से सव टोटा पूरा कीजे।निश्चिन्त होकर भोग भोगीजे
कुमर कहे अहो सुनीयेशाणी।धनकी चिन्ता मननहींआणी
मरने का फिकर पडा अति भारी।धर्म विन मेरी होगी खुवारी
जरा गरमी से इत्ना दुःख पाया।नरका दिका दुःख कैसे सहाय।
एक दिन काल जरूर ले जावे।धन सज्जन नहीं उससे बचावे
श्रीमती कहे न दुःखावो जीया।यह उपाय मैंने पहिले कीया॥

चिन्तामणी रत्न रखा द्वारे।निजराणा करें आवे जम जारे॥
सुख होगा कहेंगी कृपाकीजे।सपरिवार शेठ अमर कर दीजे
नहीं मरोग नहीपरभव जावो।नहीं किंचित् मात्र दुःख पावो
सुन लक्ष्मी पती को हांसीआइ।कहे भोली ऐसा होताकहांइ
जग जंतु सब जीवना चहावे।कर निजरान अमर होजावे ॥
मेरे तात का किया संहारो।प्रत्यक्ष वैसो होवेहमारो ॥
कृत्य कर्म फल निश्चय पावे।येही चिन्ता से मन घबरावे ॥
शेठ हसें शेठाणी खिशाणी।अचंभी कैसे बने ऐसे ज्ञानी ॥
चिडकर कहे कीजे उपाव साचा।जोंनहीं जावें कालके डाचा
शेठ कहे उपाव में लिया विचारी।सो करनानिजरइच्छा।
कठण ताइ तो उसमें पडेगा।परन्तु यमजोरजरा न चलेग
श्रीमती कहे शीघ्रही फरमावो।वोही करें हममनमेंउमावो
शेठ कहे संयम आदरना।निश्चय मिटेगा जिससे मरना॥५
आठों कहे सच्ची आपकी शिक्षा।आपके संगहमलेवेंगीदीक्ष
लक्ष्मीपती नव लोच कियाइ।बेन गृहस्थ का दूर पराइ ।
सांसणपती सुर वहां नव आय॥संयमवेशसबकोदवहांठाय ।
लक्ष्मी आपिजीलिया वेशधारी।आठोंभामनी कोदीदीक्षारै
आगे अपिरीतिअजिस्मचाली।क्षपक श्रेणी अपिवरसाली
मेहल उतार ने कर्म खपाया।केवल ज्ञान दर्शन दोही पाये
धर्मानुरागी सुरदर्शाय । गंधर्वाने गगन बजाये ॥
सुन राजा शब्द विस्मयपाइ।इतने में उन लक्ष्मी अपिभा

अत्यन्त आश्चर्य सवही तवपाये।अबीही केवल कैसेउपाये ॥
नरसूर वन्दे अति आन्दे।दे उपदेश जिनजी भव्य वृन्दे ॥
अनित्य सम्पतिसंसार असारो।कुटुम्वस्वार्थीअशूचिदेहधारो
आयु अनिश्चित जन्म न हारो।बनी वक्त कुछ करो सुधारो
एकही धर्म सदासुखदाइ । अनगार सागार दो परथाइ ॥
शक्तिसम ग्रहो पालो उमाइ।जोअव्यावाध सुख चहाइ ॥
इत्यादि बोध सुनि उमंगाया।वैराग्य बहुतोंके मन आया॥
एकसो आठ नर सोलेसोनारी।तज परिग्रह हुवेसंयमधारी॥
श्रावक श्राविका हूवे वहुताइ।ग्राममें धर्म महिना फेलाइ॥
विहारकर भव्य जनउद्धारे । लक्ष्मीरूपीजी मोक्षपधारे ॥
और सभी ऊंची गती पाये।जिनने परिग्रह ममत्व छिटकाये ॥
दिगंबर मते यह सुनीकथा । जोडकरी यथाबुद्धियहांयथा ॥

॥दोहा—भावार्थ दृष्टांतका । सोचो सूज्ञ मन मांय ॥
पाप परिग्रह पर हरो । जोंआत्म सुख पाय ॥ ६२॥
अपार सुख संपतिकों । एकही क्षण के मांय ॥
त्यागी लक्ष्मी पतीजी ।मोक्ष विरांजे जाय ॥ ६३
स्वस्थिती सम यों सभी । करो परिग्रह त्याग ॥
तो तुम भी यों पावोगे। अक्षय सुख मोभाग ॥६४॥

स्व परात्म सुख वरन।परिग्रह पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा।यह पंचम अधिकार ॥ ६५ ॥
परमपुज्य श्री कहानजी ऋषीजीमहाराजकी संप्रदायके
बालब्रह्मचारी मुनिश्रीअमोलकऋषीजी रचित
अघोद्धार कथागार का परिग्रहपापोद्धार
नामक पन्चम मंजल समाप्तम्





मंजिल छट्ठा-"क्रोध पापोद्धार"

पूर्व विभाग-"क्रोध"

दोहा—जो करे क्रूर स्वभाव कों।सोही क्रोध कहाय ॥
निज पर आदि अंतमें। क्रोध महा दुःख दाय॥१॥
भगवति शतक पंचवे । पंचम उदेशे मांय ॥
क्रोध नाम गुण निष्पन्ने। कथे सो यहां कथाय॥२॥

क्रोधके नाम—चोपाइ छंद

'कोहे'-क्रोध,-'कोवे' कोप जान।'रोसे'-'रोश'-'दोसे'द्वेषवखान
'अखंमा'-करे क्षमा का नाश।'संजले'प्रजले ज्यों अग्नि घांस॥३
'कलह'-क्लेश का हे करतार । 'चंडिके'-चंडाली होवे जहार ॥
'भंडणे' भंड जगत में होय। 'विवेदि'-विवाद करे हेसोय ॥४॥
दोहा—यह दश नाम क्रोधके । कहे सुत्र अनुसार ॥
आगे भी सुत्र से कहूं । क्रोध के जे प्रकार॥ ५ ॥

क्रोधके प्रकार—चोपाइ छन्द

क्रोध का कहा हे चार प्रकार।चारों ही जीवको हे दुःख कार॥

चारोंही करे सद्गुन का नाश।चारों ही से होंवे चउ गति वास॥
जो अमरोप जाव जीव धरे॥ अनन्तानु बन्धी तास उच्चरे
सम्यक्त्व उस जीवों को नहीं आय।नरक गति में मर कर जाय
बारह मास लग रीस जो रहे।अप्रत्याख्यानी उसको कहे॥
श्रावक पणा सोतो नहीं पाय। तिर्यंच गति में मर कर जाय
चार मास लग धरे जो विरोध।प्रत्याख्यानी है सो क्रोध॥
साधु व्रत सो धर नहीं सके। मनुष्य गति में उपजेमरके॥९॥
दो मास लग रहे अमरोप।संज्वल क्रोध का सोहि दोष॥
केवल ज्ञान उपजे नहीं तास।होवे देव गति में वास॥१०॥
इसतरह क्रोध के जानो भेद।चारों गति में देवे खेद॥
ज्यादा सो ज्यादः दुःख देखाय।ओछो कियाओछा दुःख पाय

क्रोधमे दुःख–मनहर छन्द

क्रोध हेसी महा आग। जगे जिस घट लाग॥
जावे सब गुन भाग।बन्ही गुन ज्यों भडकावे है॥
सत्य रु संयम। तप जप सम दम॥
करे सद्गुन भसम। कु गुण प्रगमावे है॥
करी सम्यक्त्व नाश। बने मिथ्या गाव रास॥
करे कृष्ण आत्म भास। जले दूजे को जलावे है॥
विस्तार यह अपार। होवे बहुतही संहार।
प्रबल क्रोध अगार। कपि अमाल दर्शावे है॥१२

क्रोधाग्नि–इन्द्र विजय .

क्रोधा नल अनल से अधकी पाणी से सो बुजी न बुजावे
अग्नि अभ क्षे बंध पडोवह वडे विन भक्ष अपारही जावे ॥
अग्नि प्रजले ते स्थान जलोयह दृष्टि मात्र से अन्य तपावे
महा ज्वाल प्रबला क्रोधाग्निकोई अमोलक संत समावे ॥

क्रोधके दुर्गुण–मनहरछंद

जैसे कोई अन्ध नर । देखे नहीं निज पर ।
जावे इत उत चर ॥ शुद्ध न लगारी है ॥
तैसे क्रोध अंध भये । ज्ञान चक्षु जाल गये ।
भली बुरी देखे नये । करे अविचारी है ॥
अपवित्र अंध स्थान । पडे लोटे जाइ जान ।
भक्षा भक्ष खान पान । करे निर धारी है ॥
केई अंध ज्ञान वान । गुन वान पुण्य खान ।
पण क्रोधी पुण्य हीन । एक पापा चारी है।१६॥
महा चंडाल क्रोधी वजोकु कृत्य करतो न लजे ॥
कौडी को कटक सजे । दया को नलावे है ॥
तात तात भगि भ्रात । स्त्री पति पुत्र जात ॥
स्वजन सेवक स्वामी । घात तन चावे है ॥
अधिक संसार मांग । आगे पीछे न विचारे ।

अन्य पे न वश पुगे । आत्म घात ठावे है ॥
जेहर शस्त्र अग्नि जोग । देवे निज तन भोग ॥
क्रोधी जन महा चंडाल । इन गुने भंडावेहै॥१५॥

इन्द्र विजय छन्द

जेसे राक्षस पैसत अंगमे। रंगमें भंग सब संग में करता ॥
तन कँपतहांपत उर चांपत। अरूण नेत्र जग नहीं डरता ॥
कोइको मारत ताडत काइको। उच्छृंखलपाफिक वाक्य उचारता
वेशुद्ध होय हंसे कभी रोय इज्जतखोय यों क्रोधीके उचरता
जो म्यावन जेहर चढे तस लेर ।मरे एक वेर उपावे उतारे।
चडे क्रोध विष तवे अहो निस।बुरी हो जगोस मरे अरु मारे ॥
भव अनंत मझार करे संहार। मरे रु मार हावत अपारे ॥
क्रोध महा जेहर महा बुरी लेहर।प्रभु करे खेरत और हो तारे

मनहर–छन्द

क्रोध कृतघ्नी होय । सत्कार न देवे कोय ।
मित्रता न निभे । शत्रुता सबी से करता ॥
जर्मी यान तोड । क्रोधी विगाडे है क्षिण माहीं ।
स्थिर तन मन नाहीं । दुर्गुण उर भरता ॥
बुद्धि बल नष्ट होय । सत्व रूप भ्रष्ट सोय ।
जमी पेट देवे खोय । सब अपयश उचरता ॥

क्रोधके दुर्गुण अनेक।कहां लग कथुं छेक ।
अमोल विवेकी जन।क्रोध पर हरता ॥ १८ ॥

कथा—इग्यारवी

क्रोधके फल वताने वाली "वन्धुमति वन्धुदत्तकी"

दोहा—क्रोधके वश अनंतही।डूवे जीव संसार॥
प्रत्यक्ष दुःख दायक यह।क्या कथे कथनार ॥ १ ॥
तोभी जन मन रंजने ।ग्रंथानुसार कथन ॥
वंन्धुमति वंधुदत्त का । सुणो श्रोता एक मन॥२॥

चोपाइ

'भृगुकच्छ'पुर, है सुख दाय।'विमल शेठ,धनवंता रहाय ॥
'वंधूदत्त, तस पुत्रप्रवीन । विद्याकलारुप गुण लीन ॥ २ ॥
'ताम्र लिसी नगरी के मझार।'रतीसार, शेठ धनधार ॥
'वंधुलीनारी, गुणवंत । वंधूमती, तस धूया सो हंत ॥ ४ ॥
सो परणाइवन्धू दत्त साथ।वाना लघू वय पीयर रहात ॥
'वन्धुदत्त, धन कमाने काम।प्रदेशचला लेकर वहु दाम ॥
समुद्र रस्ते वो जवजावंत। पापोदय तस झहाज फुटंत ॥
काष्ट लगा हाथे उस सहाय।'ताम्रालिसि,नगरी डिग आय॥
जाना निज सुसराका गाम।वाहिररहा शरम दिल पाम ॥

सूता एक देवालयमझार।मित्र हाथ भेजे समाचार ॥
उस वक्त 'वंधुमति,सज सिनगार।खेलन कों गइ घरकेव
कंकन तस करमें बहु मोल।देख तस्कर कियालेने तोल।
देलालच लेगया एकंत।जहांकोइ नर नहीं देख
निकाले कंकननिकलेनांय।हाथ काट ले भगवो
'वंधुमती, तव करी पूकार।राज पुरुष दोडे उसल
भागता आयाग्रामेकवहार।तस्कर चिंतन छुटूंइस
वचन उपायदेखंताजाय।'वंधूदत, निद्रामें देखाय
छूरी कंकनरख दिये उस पास।छुपा गुप्त जगेसोन
राज भट पीछेसे वहां आय।माल साहित 'वंधुदतप
मकर चोरजाणा धर उठाय।पूछीतलास नकोइक
मारते लाये नृपती पास।मालयूक्त वतामका'प्रका
हूकमदिया शूलीदों चडाय।चटभट धारा।शुलीपर

दोहा—वंधूदत्त का मित्र नव।आया शेठ के पास ॥
जमाइ आय आप के। सव वीतक प्रकाश ॥ १४
हर्षी शेठ उठ लाने कों।सुने पूत्री समाचार ॥
चोर पेखन आये शूली ढिग। ले सो मिलको ला

चोपाइ.

मित्र शूली पे 'वंधुदत,जांय। हलाकर मूर्छित पडासोय।
शेठजीनिजजामात पहचान।अनगाल ... मांडाउमस्थ

लार अचंभी पूछे तास। शेठ कहे यह जमाइ मुझ खास ॥
से इसकुं जाना तुम चोर।तलार वीतक कहा देखा ठोर ॥
रव कहे धक के सूताकुमार।कपटी चोरकोइ किया अत्याचार
ाजाजी सुन शीघ्रतहांआय।शेठमित्र संतोषे समजाय॥१८॥
दोहा–वन पाल तव आय के। वधाइ हर्षी सुनाय ॥
बाग में आज पधारियां।ज्ञानी गुनी मुनिराय ॥
राजेश्वर कहे शेठ से। चलोमुनि श्व पास ॥
यह ज़ुलम कैसे हुवा।पूछके करें तलास ॥ २०

चोपाइ

रब जन मिल मुनिवर ढिगआय।लूली २ नमनि [illegible]।
ार जोडी पूछे नरपाल।इस जुलम का मूल [illegible]
ुनिवर कहे नृपादिक सुनो।मोपके ऐसे [illegible]
ंधा भोगवे दोनोंही जीव।जिनकी कथा [illegible]
शालीग्राम वसे सुख स्थान।एक दुर्गा [illegible]
कही पुत्र है चिद्रा नइ।[illegible]
।बच्छ चराने जावे बाल। दुर्गा [illegible]
कदा शेठ घर [illegible]
कि पे स्व दुर्गा जाय। [illegible]
में नहीं देखो नि [illegible]

क्रोधातुर हो भु लोटंत । तीजी जाम जनीता आवंत ।
काम करी अति थाकी तेय । कोप बचन तनुज तस केय
क्या तुझे दीथी शुली चडाय।तीन पहर गये आइ चलाय॥
भूखी प्यासी थकी तव मात।क्रोधातुर कटू वचन सुणात ।
अरे तेरे क्या कटे थे हाथ । छीके से लेभोजन क्योंनिखात।
अति संतापेहुवे करुर भाव ।वयण भी खोटे खोटा वरताव।
तीनों जोग यों एकत्र कु भये।बन्ध निकाचित दोनोंके थये।
संताप चडा शिर कियाप्रहार। आयू पुर्ण हूवा उस वार
कुछेक दान पुण्य प्रभाव । दोनों मनुष्य भव पाये ५०॥
वंधुदत्त' वंधुमती, यह । माता पुत्र स्त्री पती बने तेह ॥२
'कर्मकी विचित्र गति ये देख । क्रोध वस वचन फल लेख॥
पुत्रकहाथाक्याचंडाशुलीजाय।वंधुदत्तकोदियाशूलीचडाय।
माताने कहाथाक्याकटेतेरेहाथ।वंधूमतीकेकटे ह।.
यों क्रोध वसे वचन फल लये।आगे भी विसी भवांत दये
नृप शेठ सुन वैराग्य घटलाय।साधू हुवे ऋद्धि छिटकाय
करणी करके पावेंगे सुख।गौतम पुछा ग्रंथमें ...

दोहा—क्रोधवश एक वचन से ।अनर्थ ऐसा होय ॥
जो जो वदे कुगालीयां।उसकी गती क्या जोय॥३४
यों जाणीतजो क्रोध कों।करो क्षमा अंगीकार ॥
तो आत्म सुख पायगी । सुनो आगे अधि कार



मंजिल छट्ठा—"क्रोध पापोद्धार"



उत्तर विभाग—"क्षमा"



दोहा– धर्म मूल क्षमा कही । सुख मूलभी येह ॥
धारो धर्मी शूरहो । निजात्मिक धरनेह॥ १॥

ॐ चोपाइ ॐ

पुर्व कहे क्रोध शत्रु के काम ।उससे उलट क्षमावंत परिणाम॥
श्री जिनवर बताया उपचार।उपशन से होवे क्रोध संहार॥२॥
उत्तराध्यान में कहा जिनराय।क्षमा से ही परिसह जीताय॥
क्षमावंत पर पडे दुःख आय।सम भाव धर सर्व सहाय॥३॥
दुःख का दुःख वेद न लगार।दुःख को जाने सुख दातार ॥
जेसे बांधे कर्म इम जीव।निर्मोही पावन यहां यह गिव ॥४॥
विना भुक्त नो छूटेहो नही। संताप किये दुगुण बंधनेही॥

मेरे वन्धे भोगूंगा मेंही । कटु वाक्य क्यों अन्य कों केही ॥
दुःख दाता उपकारी घना ।वंधन मुक्त करता हम तणा ॥
जोसागरोपम से कर्म छुटाय।उन से क्षण में छुटका थाय॥
इस से हर्ष ज्यादा क्या होय।अज्ञानी कर्म वन्धे अरू रोय॥
मेरा ज्ञान पाये का सार। चुकावुं समर्थ हो करी उदार ॥
यों सम भाव धर परिसह सहे।मन परिणाम जरा नहीं दहे
उनेही क्षमवंत जनो सही।कर्म संचित पुंज क्षण मेंदही ॥

क्षमावंतो की भावना—मनहर छंन्द.

जो को कटु वाक्य कहे ।ज्ञानी न कटुक गहे ।
शब्दार्थ निघा दये।क्या इसने उचरीया ॥
चोर जार रु धुतार।चुगल चंडाल ठगार ।
इत्यादि कहे सो कर्म । वहुधा मैने करीया ॥
यह कहे सो साच कहे । साच को न आंच दहे॥
जो यह लगे वुरा तो ते कर्म कर परीया ॥
कु कर्म पे कोप कर । इसका उपकार वर ।
वेर विरोध जावे हर । आतमर्थ सुधरीया ॥ ९ ॥
वेद को वतावे नाडी।पहिले देता द्रव्य कहाडी ।
फिर वो कहे तन रोग। येह ये दुःख कार है ॥
अरि विन नाडी देखे । द्रव्य भी न ग्रह पेखे ।
दुर्गुण प्रकट करे । जालम दुःख दातार है ॥

औषध लेइ रोग हरे। त्यों दुर्गुण दूर करे।
ज्ञानादिक पथ्य किया। हो आत्म सुधार है॥
येही क्षमावंत आचार। आप पर सुख कार।
धार अमोल हित धार। होत यों उद्धार है॥२०॥
जो आत्म है तेरी शुद्ध। बुरा कहे को अशुद्ध।
चोर जार नीच ठग। तो बुरा न मानीये।
सोना पीतल कहे कोय। तोते न पीतल [illegible]
कहने से गुन नहीं जावे। निश्चय मन आनंद।
खोटे कों जो खोटा कहे। तो उसकी [illegible]
में हूं चोखा कहे खोटा। तो इसमे क्या [illegible]
यह है अज्ञानी अजान। में बनाहू [illegible]
इतनाही जो रखू भान। तोंही सुख [illegible]
जैसे कोई केवल ज्ञानी। भव्यन पर [illegible]
कहे भावांतर कहानी। जैसा कर्म [illegible]
तैसे वैरी वेण जान। सम भाव [illegible]
बुरा मत जरा मान। अर्थ सोचें [illegible]
जार चोर नीच ठग। कुत्ता गद्दा [illegible]
चंडालादि योनी माहीं। जन्म [illegible]
सोही यह चेतावे ऐसा जान [illegible]
वो एसा न जन्म पावे। एसा [illegible]
क्षमावंतकोलिये हित वाक्य—[illegible]

सीधी ले सिधले यात को चेतन्य।सीधीलियां सेसीधी हीधा
सीधी अस्सी मह अरि विजयहोयउलटीअस्सीमहहाथकटा
तैसे सीधे तीन अक्षर"समाता"है।जो आदरेतो महासुखपा
तीनों सो उलटे "तामस"होवे। सो आदरे दुर्गति ले जावे१
जो कोइ तोय बुरा कहे चेतन्य। ताका बुरा तुं रंचन मानो।
बूरा सक्कर का मीठा होवेहे। तासे अनेक बने पकानो ॥
तुं न कहे बूरा का हुं को क्य हूं। अपने औगुण आप पिछाने
जिम दुर्गुणको बुरा तुं कहता है।ता दुर्गुण का तूंही हैस्थाने
जो कोइ देनहे गाली तुझको।जोतुझको बुरीसो सव लागे।
तो काहेको महे बुरी चीजको।विना गृहे से कोध न आगे।
जैसीजिसपास तैसीतोही देनहे।कहांसे लावे भलीजोतूंमांगे।
मलीन संग मलीन न होयपेरातो तुम चिंता होवे न आगे१५।
सबही गाली दुर्मित जानाहो।पहिलही उसका अर्थ विचारो
साला कहे नम नारीसहोदर। उत्तम रखे सब से वेहन वारो।
अहर्नीश कर्म हीनकहेहे।सो गुन सिद्ध में नाको शानारो
खोज जावे नर मुक्ति पावे। योमीधीठे गाली होवे सुखकारो

क्षमामें फायदा—छप्पय छंद

गाली कहे कठन दाग। क्रोधी हम कीजे ॥
पानी शाम सुख मो लेय। कारणी पूर्ण दीजे
दया ना मिटे का नहुर। थाहे में फाल्की देय
कं सरराइ करे दाग।तो ज्ञान सहित सो लेय

ऐसेही करजा कर्म का।क्षमा धरी जो चुकावेसही॥
अनंत काल दुःख क्षण में खपा अजरामरपद सोलही

क्षमा का फल—इंद्र विजय छंद.

होकर समर्थ क्षमा जो करते। धन्य २ सबउन्ही कों उचारे ॥
छीसठक्रोडउपवास सेज्यादाही फल होवेएक गालीसहे ज्यारे
शस्त्र सहन। सहज हे शूरको।क्षमा करना होता अति भारे ॥
महा लाभ अचिन्त्यहोतहै।लेले रे चेतन्य अव मत हारे॥१८॥

कथा—बारवी

क्षमाका फल वताने वाली—"खन्धकमुनीकी"

दोहा—अनंत वली महावीरजी।सही ग्वालीयोंकी मार॥
महावीरके अनुयायीयों । करो उसी प्रकार ॥ १ ॥
गज सुकुमाल मेतारजमुनि । प्रदेसी रु काम देव ॥
आदि वहु क्षमा आदरी । पाये सूख अछेव ॥ २ ॥
क्षमा गुन दर्शान को। वरणू खंधक चरित्र ॥
सुनी गुनी श्रोता वने। करे सो आत्म पवित्र ॥ ६ ॥

चोपाइ

सावत्थी नगरी सुख दाय। 'कन्क केतु, वहां दीपता राय ॥

मलीया राणी, शील गुन खान।तस नंदन 'खंधक, गुन वान
सुनन्दा, तस कन्या गुन वंत । भाइ बेहन के प्रेम अत्यन्त ॥
दोनों सर्व कला में हुआ इयार।धर्मज्ञान भी पढे विस्तार ॥५॥
'सुनन्दा, उप वय में आय। कुंती नगरी, पति को परणाय ॥
बंधव विरह साले तस मन।निरन्त्र मन वीर का चिंतन ॥ ६ ॥
बचपन से 'खंदक,जी वैरागी । ग्रहवासे रहे ज्यों त्यागी ॥
नहीं रूचे पंचिंद्री के भोग । लेनेकी इच्छा लगी जोग॥७॥

दोहा—पुण्योदय उसअवसरे । 'धर्मघोष' ऋषिराय ॥
अनेकमुनी संग परिवरे।उतरे बाग में आय ॥ ८ ॥
राजा रु खंधक कुमर । और सब सुन हर्षाय ॥
सब आये वंदन भनी । प्रणमी बैठे उमाय॥ ९ ॥

चोपाइ

धर्म देशना 'धर्मघोषजी'फरमाय। श्रोतावृन्द सुने चितलाय॥
अहो भव्यों!यह जीव अनादि।जन्म मरण जग किये अगाध ॥
घबराया चाया छूटन उपाव।मोही अवके मिले यह दाव॥
नर जन्मादि सामग्री करी।छूटो दुःख से जो वरो शिवपुरी॥
जो चूके तो फिर गोताखाय।बहुत परनाय फिर दुर्लभ पाय
इस लियेअनिहाँ चेतोसही।आपका हित आप करो उमंगही
इत्यादि सुन बोध भविक । चेते जो थे मोक्ष नजीक ॥
यथा शक्ति व्रत कर अंगिकार।वंदन कर गये निजआगार॥

'खंदक' कुनर कहे कर नमस्कारा।में इच्छु लेवा संयम भार ॥
मुनि कहे करो शीघ्र यह कामा।वंदना कर आये कुनरजी धाम॥
तात मात से करे अरदास । संयम लेवूं मुनिश्वर पास ॥
सुणी वचन मावित्र मुरछाय। सावध हो कहे सुन वछराय
संयम मार्ग अति दुक्कर कारा।तुं सुकमाल कैसे निभेगा भार
कुंवर कहे यों कायर से कहो । क्षत्रीपुत्र को शिखो नाईहो
जो दुःख देखे चतुर गति मांय।दिसे दुःख संयम में नाय ॥
ऐसे प्रश्नोतर बहुतही भये। दीआज्ञा मात पिता थक गये॥
दीक्षा उत्सव बहुत कराय।शिनगार कुनर शिवका में बैठाय
गायन वाजित्र गगन गर्जाया।नव्य बजार हो बाग में आया॥
तब संतो को वंदना करी।इशान कुण में रहे हर्ष भरी ॥
तज शिणगार शिरलोचन किया।साधूवेष सज गुरु मुख रिया॥
सज्जन आज्ञा ले गुरु दीक्षा देया।नवे मुनि तबही अभिग्रह लेय
मास २ तपश्चर्या निरंतर करां।एकल विहार ममत्व परहरूं ॥
विराजे मुनि पंखिये जाय।विनय कर अंगे कंट कीदाय ॥
सज्जन वंदी निजस्थाने आया।मुनि तप संयमे अहस मांय ॥

दोहा—मातापिता खंधक के । चिंते मन मझार ॥
मुनिजी विचरसी एकला। कर तप दुक्कर कार ॥
रखे अनार्य तरफ नो उपजे परिसह कोय ॥
रखवाला रखुं साथमें । ज्यों मन शाता होय ॥ २३ ॥

सुभट पांच सो से कहे। सदा रहो मुनि संगात ॥
भेदन जाने मुनिवरा। त्यों सुख सहू उपजात॥ २६॥

चौपाइ

एकला मुनि किया उग्रविहार। ज्ञान ध्यान तप संयमें प्यार
वन पद फिरतक्रुती ग्राम आय। मास खमण तप पूरण थाय॥
पांच सो सुभट करे विचार। यहां मूनि के वेन्योंइराजकरता।
उपसर्ग करने वाला नहीं कोय। आज अपन को फुरसत होय॥
क्षौर मुंडण और करे स्नान। चित्त चहाना बनावे खान पान
यों सब लगे काम मझार। टले नहीं ज्यों होवन हार ॥२७॥
पहिले पहर मुनिकर स्वाध्याय। धर्मध्यान दुसरे पेहर ध्याय ॥
तीसरेपहर अहारकेकाज। पासादि प्रति लेखे त्यांज ॥२८॥
कुंती नगरी में किया प्रवेश। इर्या सुमती पंथ चलें मुनेश॥
तप से दूर्बल हुवा अतिही शरीर। पड़रहाही चले स्वेद झरेनीर।
कोमल पग तपे भूमी दिणंद। आये नीचे जहां महेल नरिंद
उसी वक्त राणी अरु राजान। चौपट खेलें बैठे गोखस्थान।
सुनन्दाने देखे तब मुनिराय। ध्यान महोदर चितमें आय॥
ऐसा कष्ट सहता होगा मुज वीर। आंखोंमें वहन लगातब नीर
आंसू देख राजा आश्चर्य पाय। हर्षमय रंगा कैसे आय॥
देख मार्ग जाते मुनिराय एक दम नृप का कोप चढाय ॥

इस मोडेका राणी पर प्रेम। इस वक्त भंग किया मुझ क्षेम॥
तत्क्षण उतर मेहल नीचे आय।शक्त हुकम नफर सेफरमाय
इस मोड्या को धक्के लगाय।पकड ले जावो मशाण के मांय॥
सव तन की उतारो खाल।शरम दयानहीं करना हाल ॥
नफर सो आज्ञा शीस चडाय।पकड मुनिवर को धक्का लगाय
क्षमासागर पूछे मुनिराज ।क्यों भाइ यह करो तुम काज ॥
राय आज्ञा मुनि को सुनाय।मुनि सुनी जरा नहीं घवराय ॥
धैर्यधर कहे में चलुं तुमलार । तुम कहो उसस्थान मझार
नफर संग मुनि मशानमें आय।आलोइ निन्दी शुद्धात्मकराय
पादोपगमन संथारा ठाय । उभे मेरू ज्यों ध्यान लगाय ॥
नफर पासणे किये तैयार । झगनगते तीक्ष्ण तस धार ॥
जैसे पटीया छोले सुतार । तैसे मुनिका चर्म रहे उतार॥
चरड २ टूटे नशा जाल । तरड २ रक्त वहे प्रनाल ॥
अत्यन्त प्रज्वल वेदना प्रगटाय।मुनि जरा नहीसाट कराय
चिन्ते ऋषिरे जीव परवश्य । नरकमें दुःख देखे वे कस्य॥
इससे अनन्त गुनी अनन्तवार।सकाम निर्जरा नहुइ लगार
वन्ध भोगे विन छूटका नाय।वंधे उदय भये संशयमलाय॥
अलभ्य लाभ प्राप्तभया यह । हर्षके क्षणदे फाग्कनी लेह
अखंड अविनाशी. आत्म मुझ । छेद भेद न सके कोइ तुझ
विनाशीक का विनाशही होय । लाभ निर्जरा नृ क्योंखोय
किंचित् दुःखमे सुख अनन्त । ले उलसी यह मोका संत

ऐसे धर्म शुक्ल ध्यान ध्याय।सब तन चरम रहित जबथा
द्रव्य आभरण टला तन चर्म।भाव आभरण टले तब कर्म
केवल ज्ञानले छोडा शरीर । तात्क्षिण पहोंचे जग पेले तं
महा संकट करी क्षमा अपार । धन्य२ मुनि तुमे वारम्व
परमोत्कृष्ट क्षमा परमोत्कृष्ट सुख।पाये क्षमा फल सबसेमू

दोहा—सुभट पांचसो ता समे । करे मनमें यों विचार
मुनिश्वरजी गये गोचरी । आज लगी बहू वार
ढुंढण चाले पूर विषे । नृप दासी मिली तास
ओलखी हर्षी पूछे तस । क्यों आये क्या तला
उनेन कही मुनि की कथा । आये गाम मझार
मिलते नहीं हम ढुंढते । जाने तो कहो समाच

चोपाई

दासी दोड गइ राणीजी पास।भाइ मुनि आये करीआरदा
गोचरी आये गये किस जाय।ढूंढे सुभट मिले नहीं उनतां
राणी तब राजाको चेताय । सुन राजा मन अति मुरझा
आंखोंसे छूटी आंश्रुधार । राणी पूछकर अग्रह अपार ।
दीनक बात राजा तब कही । सुन राणी मुरछी पड गइ
फिट २ कन्ता कियो अनर्थ । मुजबीर मुनि हने अकर्प
राणी रोदन करे अमराल । पांच सो सुभट जाने हाल
क्षेत्रानुरहो कहे निकल राजान।बिन गुन्हे हने मुनिके प्रा

तुझे हमभी मरजायँ । यों रहे पांच सोही गजांय ॥
छिपगया मेहल मझार।लोक मिल तस समजायअपार
सुने सो खेदाश्चर्य पाय । धिक्कारे सब नृप के तांय ॥
गहार नहीं टाली टलंत।एसा जान सब समता धरंत॥५९

दोहा—पुण्योदये पधारीये । तहां केवली भगवान ॥
पुरीससेण नृपादिके । वंदे मुनि ढिग आन ॥ ६०॥
नृप पूछे प्रकासीये । विन गुन्हे किम जगाद्वेष ॥
अनर्थ मेने बडा किया । हने शाले मुनियेश॥६१॥

चोपाइ

मुनिवर कहेसुनो नृपादिसर्व।कर्म महा वली मत करो गर्व ॥
वसंत पूर प्राजापाल भूपाल।तस नंदन सर्व कलामें कुशाल॥
एकदा वैठा सभा मझार। माली काचरा लादिया उसवार॥
कौशलता ए तस कोरा कुंवार।गिर निकाला छाल के वहार ॥
जमा तस छाल लोकों को वताय।कहो गिरहे के नहीं इसमांय
लोक कहे यह अखंड कुमार।कुमर खोल खाली किया जहार॥
व शभा देख अति आश्चर्य पाय।कौशल्यता कुमर कीसरसाय
।।न में फुले कुमर उसवार कर्म । निकाजिन बंधन डार ॥
रा क्रोड भव भ्रमण करी । शाला वेनोइ यहां अवतरी ॥
कचराका वैंर प्रगट भया।विन गुन्हेद्वेष तुम मने गह्या ॥६६॥

लिया वैर त समतासे चुकाय । जाके विराजे मोक्षके मांय ॥
सहजे कर्म यों बंधे जीव । भोगवते दुःख पाय अतीव ॥६७ ॥
सुन कथा भव्य प्रतिबोधपाय।कर्म बंधन तोडन उपाय ॥
पूरीपसेण नृप सूनन्दा संग।पांचसोसुभटभींजेवैराग्यरंग ॥
लिया संयम खूब करणी करी।मुक्ति गये क्षमा धर्मआचरी॥
और भी अनेक ली क्षमाधार । यह कथा कहीग्रंथानुसार ॥

दोहा—धन्य २ खंधक ऋषिश्वरा । अखंड क्षमाधार॥
आप तिर बहु तारीये । वार २ नमस्कार ॥ ७० ॥
अहो सब आरम सुखेच्छु ओ।धारोक्षमा इस पर ॥
तो खंद ऋषीकी परे।होवोगे अजर अमर ॥७१ ॥
निज पर आरम सुखवरन । क्रोध पापोद्धार ॥
ऋषि अमोलख ने रचा।यह छट्टा अधिकार॥७२॥

परम पुज्य श्री कहान जी ऋषीजी महाराज के संप्रदायके
बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी रचित
अघोद्धार कथागार का क्रोध पाप उद्धार नामे
छट्टा मंजिल समाप्तम्





मंजिल सातवा –"मान पापोद्धार"

पूर्वविभाग –"अभिमान"

दोहा– जोकरे कठिण स्वभावको । सोही मान कहाय ॥
मान वसे मानही विषे । मानही ज्ञान नशाय ॥ १ ॥
ज्ञानविना तत्त्व न लखे । तत्त्वविन जतन होय ॥
जतनविना शिवपद नहीं । यों मानही सर्व वीगोय ॥ २ ॥
सूत्र भगवती पंचवे । शतक उदेशे मांय ॥
गुणनिष्पन्न नाम मानके । कथे सोयहां कषाय ॥ ३ ॥

मानके नाम – चोपाइ छंद

'मोंगे 'मान, 'मद-मदरूप उक्त 'दर्प-दर्प. 'थंभ-मनमेंपके ॥
'गर्वे-गर्व, 'अनुक्रोश-उत्कर्ष । 'परपरिवाद-मानिसानिहर्ष ॥
'उत्कोश-उत्कृष्ट आपको माने । 'उन्नत-उन्नमाने' 'उन्नतताहने
'दुर्नाम-नेह दुष्ट परिनाम । यह दश कहे मानके नाम ॥५॥

मानके ८ प्रकार-चोपाइछंद

मान आठ प्रकार सें आया।शास्त्र में हें सो देता बताय ॥
जाँति कुलका करे अभिमान । मात पिता मेरे पुण्यवान ॥६॥
मेंहूं क्षत्री विप्र शेठ पटेल । यों अकड कर चलता गेल ॥
कोन हे बलवंत मेरे समान । रूप तेज का मेंहूं निधान॥७॥
जहां जावूं तहां लाभ कमांवुं।खाली फिर कहां से नहीं आवूं
विद्यावंत में ज्ञान भंडारी । सबही खुशामद करे हमारी ॥
तपेश्चर्या हमने करी घनेरी । कौन बरोबरी करता मेरी ॥
मेरे बहुत हे दासी परिवार । ऋद्धि सिद्धि मेरे हुकम मेंसार॥
मेरे बिन न होवे किसका काज।में ही रखता सबकी लाज॥
मेराही है सबी कों आधार।और विचारे सब लाचार ॥१०॥
यों मगरुरी के बचन उचारे।हित शिक्षा किसकी नहींधारे॥
देव गुरू को नमन नहीं करे। यह लक्षण अभिमानअनुसरे॥
दोहा—चार प्रकार अभिमान के।मुनियों चतुरसुजान ॥
घटे उतनाही घटाईये।उतनाही सुख स्थान ॥१२ ॥

चोपाइ

अनन्ता बन्धी पत्थरस्थंभ । जाव जीव लग सो धरे दंभ
अप्रत्याख्यान हाड स्थंभ जान। बारह मास रहे अभिमान॥
पच्चख्यान थंभ स्थंभ साय । चौमासी अंतर नम जाय ॥

सम्यक्त गुण को स्थंभ बखान। नहीं ने पीछे नमे गुन ज्ञान॥
यह चारों चारी गति दाता। चारों उत्तम गुन घात करतार
सम्यक्त्व देशव्रत साधु आचार। मोक्ष का चोथारो के द्वार॥५॥
एता चारों का जान स्वभाव। घटे इतना घटावे कु भाव॥
इत ना ही आत्म अधिक सुख पाय। येही मुलक्ष सवाउपाय

मान के दूर्गुण मनहर छंद.

मानी मान माहे छके। अयुक्त वयण वके।
हुइ अनहुइ केइ। वातों को बनावे है॥
नगारा के जैसा पोला। गुन गन करडोला॥
मानका तो स्थान न्यारी। वहुत कर पावे है॥
पोल प्रगट होय। अपमान करे लोय॥
पेट को गमावे। वहुत मन शरमावे है॥
एता अभिमान। स्वल्प सुख वहुत दुःख स्थान।
तोही अज्ञानी नहीं। मान को घटावे है॥ १७॥
मद कहा मान को। सो लागे हेवी मद तन॥
छक रहे मान की जो। शुद्धि बुद्धि नाशे है॥
धन धन नारी पुत्र। रूप जोबन सुत।
तुच्छ ज्ञान तृण तुल। मनावे कु आमे है
[illegible]
[illegible]

मरे मारे केइ तांइ । अनर्थ अधिक निपाइ ।
आगे को कुगति मांही । पडे यम फासे है ॥ १
मानी मछराल । भूपाल छकी मद व्याल ।
विकराल सेना सज । अरी को न शावे है ॥
आवे नहीं डाव तो । ते घाव सन्मूख खाय ।
प्राण तजे रण में नफिरी घर आवे है ॥
शेठ चड मान कों ।सजावे खूब जान कों ।
नहीं देखन खजानकों । ओसर में खरचावे है ॥
भोंनडा गीनडा रेय । कहनी ऐसी जन केय ।
मान के मडोड मर । कुटुंब रोवावे है ॥ १९

मानका पराक्रम–इन्द्रविजय छंद.

कहा पराक्रम वरणुं में मानको, ज्ञान को जोर इसीने न शाय
बडे २ तपी जपी खपी नर, मान में छक के धर्म गमायो ॥
ज्ञानी ध्यानी मानी प्राणी वन । कहे सद्बोध ही पक्ष थपाय
गुनि पडे मान के फंद में, छोड संयम अमीरी चित च
, के भोगी योगी बने । तज मान शिर पग नंगे फिरे
पालखी चले वरदावली संग, चामर झापट डस लिये
पायक जिनोंके, लाखों के लेखे होय रिये हैं ॥
मान के छंद में [illegible]
मानकी आन [illegible]

चढाय २ गिराय यह मानाफुलाय २ निचोय लिये हैं ॥
रोनाय २ लगायसर्वस्वयागनाय २ के डुरे हिये हैं ॥
मान की तान अरनानलमान॥दौड २ अजान न पार गिये है॥
मानीही जान अरनान लहे अरु। मानीजन अपदोष करे हो॥
मानी को पानी उतेर अरुमानी के सब सुख बिछरे हे ॥
मानी सब को खारा लगे अरु मानी चड के नीचे पडे हैं।
जान सुजान विचित्र रोमान को तोही चिचेल नाहीं हरेहे॥
मान वस लडे भरत बाहुबल।ध्यान धरा सर्वज्ञान न पावे॥
महा ऋद्धि विद्या धर रावण।नरा कौरव कुल नाश करावे
श्रेणिक मान से नरक गतिलइ।कोणिकमृत्यु अकाले पावे॥
अन्य कथा क्या क्युं अनेलक। मान ने एसे के मानगमावे

कथा—तेरवी

मान के फल बतानेवाली—"शंभूचक्रवर्तीकी"

दोहा—शंभु चक्री मान से। डुबे समुद्र मझार ॥
पहोंचे सातमी नरक में। वरणु सो अधिकार ॥१॥

चौपाइ

ी [illegible] स्वर्ग मझार । [illegible] इस प्रकार ॥

दोनों कहे करो धर्म गुरु परिक्षा।जो द्रढ धर्मी नि ...
यो धर्म सत्य करें अंगी कार।ऐसा कर चाले निरधार॥१
जैनी कहे मेरे गौतम गूरु । तेरे ज्यूंन की परिक्षा करुं।
आये मध्य लोक रुप बनाय।पहिले तो जैनी कों चलाय
मिथुला नगरी 'पद्मरथ'राय।तुर्त के दिक्षित मार्गे जाय
वैक्रेय रुप शिवमति करी।तीनों दिशा दी जीवों से भरी
चौथी दिशी ऊभी करी शूल।मुनि अचंभे देख ए मूल
प्राणांत नहीं प्राण हणाय।यों सोची मुनिशुल पें जाय
भेदत कंटक छूटे रक्त धारा।तोहुं न कम्पे जीव उगार ॥
उभय अमर हर्षानंद पाय।दुःख हर वंदी मुनिवर जाय

दोहा–शिवमती कहे मम गुरु।चउवेद पाठी महंत ॥
ताकी परिक्षा कीजीये । ते कदापि न चलंत ॥८

चोपाइ

'मृगकोष्टपूर, बाहिर आय । तपोवने बहु तपस्वी देखाय
'जमदग्नी, तापन सिरदार । ज्ञान तप जप में श्रेयकार
जटों दाढी मूंछ भूंलगीआय । ध्यानारूढ बैठे कृश काय
चिडा चिडी रुपदेवोंनेकिया।आ घुसे जटामेचिडाकहे प्रिय
हिमाचल में जाकर आना।चिडी कहे क्यों यान बनाता
मुझे छोडकर दूसरी नार । नहीं जाने दूं तुझ कोइ वार
चिडा कहे गो ब्रह्म हत्यी पाप ।नआवूं तो लगो ए पा

ब्रह्मचरु भक्ष रेणुका किया। क्षत्री चरु वेनकाज रखलिया
हस्थिनापुर 'अनंतवीर्य, रायाचहा दिया दुसरा चरु जाय ॥
दोनों के दोपूत्र तब भये। तापस पुत्र 'राम' नाम ठये ॥
अनंत वीर्य दिया कृत वीर्य नाम। दोनों सुखेवधेनिजधाम।
कलापढे दोनों हुवे पर वीन। सूखे रमे पुण्य फल चीन॥२४॥

दोहा—एकदा एक विद्या धरु। पडा विती में आय ॥
राम सहायता तस करी। ते तव संतुष्ट थाय॥२५॥
फरसी मंत्र पढाय के। खेचर गया निज घर ॥
राम मंत्र साधनकरी। फरसू राम वजे नर ॥२६॥

चोपाइ

एकदा रेणुका वेन घर गइ। वेन्योइ संग लुब्ध सो भइ॥
पुत्र प्रसव्या तापस जान।सखेद पुत्र त्रिया घर आन॥२७॥
फरसुराम देख क्रोधे भराय। अनन्त वीर्य नृप माराजाय॥
कर्त वीर्य तब राजा भया। यमदग्नि तापस मारी वेर लया॥
फरसुराम कृत वीर्य को मार।हस्तिनापुर का राज आपधार।
कृत वीर्य की राणी डर पाय। गुप्त तापस आश्र में आय॥
दया कर तापस भोंयरें में छिपाय।पुत्र प्रसुती वहां उसेथाय।
ग्रह जन्मासंभूमनामदिया।वेरी से डर गुप्तदोनोंरिया॥

दोहा—फरसुराम कोपा अति। करुं क्षत्री संहार ॥
क्षत्री स्थाने फरसी तस।भल के दिव्याकार ॥३१॥

जानी क्षत्री तत्त हने । वने बहु क्षत्री विप्र ॥ *
सूत गले में देख कर। उसको छोडे क्षित्र ॥ ३२ ॥

चोपाइ

एकदा तापस आश्रमआय । फरसुराम फरसी भल काय ॥
पूछे तापस से क्षत्री यहां कोइ।कहे तापस ग्रहस्थे हम होइ
संतोष धर निज राज मेंआय।मारे क्षत्रियों की दाढग्रहाय॥
थाल भरी छींके पर धरी।निरखत हर्ष हीयो जाय भरी ॥
एकदा तहां निमितिक आया । फरसुराम पूछे मान भराय ॥
जाग में कोइ मूझे मारन हार । होवे तो यहां करो उचार ॥
कहे निमितिक सूनराजान । इतना मत कर मन में गुमान।
जो नर बैठेगा सिंहासन आय । दाढोंकी तब खीर बनजाय ॥
उसे खावे वो तुझ को मारे । फरसु राम वचन अवधार ॥
वहां पर दीने पहरे तव ठाइ । आतेही मूझको देना चेताइ ॥

दोहा—गिरि वैताढ कूशलपुरे । मेघानंद नृपाल ॥
निमितिक से पूछीया । पद्म श्री कंत हाल ॥३८॥
संभुन चक्रवर्तीकी । यह होगी पट नार
कहां संभूम प्रकाशिय । उन कही बात विस्तार ॥

संभूम पूछे माता से बात । पृथवी सब इतनी ही है मात ॥
माता कहे पृथवी बहुतेरी । निकलना नहीं सतावेंगेवेरी ॥

* अर्थात्भी वह्रन से भर्त्रायों जनोइ के धारक देख जाते हैं

नहीं मानी देखन बाहिर धाया।मेघानंद भी उसवक्तआया॥
हर्षी उभय मिले आपसमांही।रानीसें सब बात जताइ ॥
संभूत कहे मुझे अरी बतावो । मार के पूरुं मेरो उमावो ॥
खेचर हस्तिना पूर ले आये । देख सिंहासन आरुढ थाये ॥
क्षुधित थाल में खीर निहाली। सो भोगवे पहेरायत भाली
फरसुराम से कहे समाचार।वो दोडा मारन उसीवार ॥४३॥
खेचर ने तब अरीबताया । संभूम थाल का चक्र बनाया ॥
फरसुराम को नरक पठाया । अपने पिता का राज सोपाया
मेघानन्द कन्या परनाइ । षट खंड ऋद्धि संभुम पाइ ॥
अभिमान अति मन में छाया।सब विप्रोंको मार गिराया ॥
कहे छःखन्ड सब चक्री साधे । में चक्र वर्त्ति करुं कुछ जादे॥
चले सातमा साधन खंड । सब कहे भलानहीं अति घमंड॥
धातकी खंड साधनकरी तैयारी।चरम रत्न नाव समुद्र मेंडारी
सब कहे यह न हुइ न होवे । देव मानव खडे २ जोवे ॥
चली नाव तब संभूम कहे ।देखो मेरे पुण्य देव दुरही रहे॥
देव कहे नवकार मंत्र प्रभाव । तिररहीहै समुद्र में नांव ॥
अभीमानी नवकार घिस मिटाया।पुण्य खुटे सुरमनपलटाया
हजार सुर चरम रत्न के सहाइ।एक में न उठावुं तोक्याथाइ
यों हजार ही देव छिटकाइ।नांव तत्क्षण पाताल सिधाइ ॥
द्रव्ये भावे पातलसो पाया।संभूम सातमी नरकसिधाया॥
दोहा—चक्री जेस पूण्यात्मकी। अभिमाने गति येह॥
तो क्या कहु में अन्यकी। तजो मान सुख गेह ॥



मंजिल सातवां —"मान पापोद्धार"

उत्तरविभाग—"नम्रता"

दोहा—मर्दन करे जो मानका । धरे नम्रता अंग ॥
ज्ञानादि गुण संपत्ति । तजे न वाको संग ॥ १ ॥
क्रिया वृद्धि रोहणी । नम्रता है महा मंत्र ॥
धार नाग गे आल नु । जो देवे स्वतंत्र ॥ २ ॥

चोपाइ

अष्ट प्रकार मान जय आय । ज्ञानी नीचे मर्दन उपाय ॥
ऊंचता लही ऊंचता कर । रमा नीचने मन गुन हर ॥३॥
ज्ञानी मद न्य व्यापे मन । नय गेना कीजे चिंतन ॥
[illegible] ज्ञानिके [illegible] नु आव॥
[illegible] मन हो [illegible]॥

ब्राह्मण शेठ पवित्र कहलाय । होइ चंडालादि विष्टापठा
चूकशादि नीच कुल पायो । अनेक तात को तूं कहलाये
कुलका मद जो कभी मनआवे। केतो बल कहे तुज में पावे
देशलक्ष अष्टापद बैल जे ताइ । बल देव एक में बल पाइ
दुना वासुदेव चक्रवर्ती दुना । तीर्थंकर में बल है अनंगुना।
ऐसे २ महावली सिधाये । तुझ बल कौन गिनतीमें आवे।
रूप मद कहा करेरे प्राणी । दुर्गंधी देह अशुचि की खानी।
पांच क्रोड झाजेरा रोग।तन में भरे होवे क्षिणमें वियोग।
लाभें वंत हो आवे गर्व । तो क्या तुझ को मिला है सर्व ॥
नरपति सुरपती होगये जगमांइ।तेरा लाभ कौन गिनतीमें आ
एश्वर्य ता वहुत कुटूंब की पायो ।वहुत नर रहे हूकम के मांय
याको गर्व जो मनकभी आइ । तो रावण गति देखले भाइ।
सूत्र पाठी कवीपद पाया । वादी विजय हो गर्व जो आया।
तोदेखोगणधर आदि ज्ञानी।चउदह पूर्व त्रिपदे चित्तठानी।
तपन्तराय टूटेतप होइ । तपस्वी वज मद जो करेकोइ।
तोदेखो श्रीमहवीर स्वामी।साडावारा वर्ष एक पक्ष जामी।
फक्त मासग्यारे उन्नीसदिने । अहारकिया अभिग्रहकीने।
कहे तुझसें किना तपस्या होवे।करी गर्वकरों तपफल खोवे।
योंविचार आटों मदत्यागे । करे करणी नम्रता धारो।
प्राप्त वस्तु लेखे लगाडो । थोडेमें होवे खेवा पारो ॥ १५।

नम्रताकेलिये बोध— मनहरछंद

अहोमेरे मन । तोंये मिल्यो ऊंचपनघन ।
तासुं होय म पतन। यहकथन मेरो मानीये ॥
जाते कुल बेल रूप । लाभ विद्या तप अनूप ॥
ऐश्वर्य ता पाइ । यहतापुण्य के प्रमानीये ॥
जो याको गर्व करे । ऊंचा चड नीचा पडे ॥
बनी वक्त को बिगाडे । ऐसा कैसा है अज्ञानीये ॥
तजे अभी मान सो तो । पावे है उंचज स्थान ॥
अमोल ऐसे ज्ञान वान । मन माहें आनीयें ॥ १६
जो जो ऋद्धि पाइ भाइ । तुन्या धिक नहींथाइ॥
छिपी लुपी नहींरहाइ । देखत प्रत्यक्षेर ॥
आप नहीं माने चडे । आप मान से उतरे ॥
जान बूज बुरा करे । भ्रष्ट भये लक्षरे ॥
अरे मोल प्राणी जाणी । मत कर हाये हाणी
ले ले लाभ बने जितो । लगा के सु भक्षरे ।
यही प्राप्ती का सार । अमोल हित [illegible]
पाइ सामग्री सुधार । होजा अब दक्षर
मान तजे ज्ञान होय । ज्ञान वान [illegible]
जान हिना हिन जाय । हिन नहीं [illegible]
साधे पर हित सोय । सुज्ञों का [illegible]

पाखंड विगोय । मिला संत पर चाय है ॥
विनय धर्म मूल । विनय सर्व अनुकूल ॥
उंचता का लक्षण सो । विनय से चोयरे ॥
ऐसे भले गुन जान । करो विनय तजो मान ॥
हो अमोल गुन खान । वर शिक्षा मोयरे॥१८॥

नम्रता के गुण—इंद्र विजय छंद.

मान चाहीयेतो मान मती करो।मान तजेतो मान...
कठिण धातूकी कीमत कमती हे।नरमसो मूंगे मा...
कठिण पत्थरसो ठोकरमें गुड़ा।नम्र धूल उड ऊंची जावे
नीचापन उंच पदका दाताहै।सुज्ञ अमोल नमी ...
मोटापना जन चावतहे पन, मोटेपनमें दुःख हे भारी ॥
चंद्र सूर्यको ग्रहण लगतहै । ताराही न्यारा रहेहे सदा...
पूर नदीमें झाड वहीजाय,तृण नमें सो रहे स्वस्थारी ॥
कीडोको सक्कर हाथीको अंकुश,अमोल लघुपनहै सुखकारी

कथा—चउदवी

विनयके फल बताने वाली—"नंदीपेणजीकी"

दोहा मान तजी विनयकरी । तिरिये जीव अनंत ।
तोपन नंदीपेण का । कहूं रशिक विरतंत ॥ १ ॥

चोपाइ

मगध देशमें नन्दीग्राम । प्रिय राष्ट्र ठाकुर अभिराम ॥
तहां सोमल विप्र विद्यावन्त । तस सोमीलानारी प्रिदकंत
नन्दीषेण पुत्र तस थया । गुणवन्तो कुरुपे दुभया ॥
लघुवय मावित्र मरण ओपाय । मामा के घर जा कर रहाय।३।
प्रकृति गरीव कार्य में दक्ष । वयण मधुर सव काम में लक्ष ॥
मामा को प्यारो सो घणो । काम प्यारो मत चाम को गणो।।४
ज्यों ज्यों वयमें मोटा होय । त्यों त्यों रुप विद्रूप भयो सोय ॥
श्याम वदन मुख मोटे दाँत । चपटी नाक चीभडी आंख।५
तुरल वाल चाल भीवंक । उर उन्नत कर पग कृपन्त ॥
इस लिये इच्छे नहीं कोइ नार । सो मन में दुःख धरे अपार ।६
मामा कहेरे फीकर मत कर । मुझ सात पुत्री एक तूं वर ॥
सातों सुणी कोपी कहे ताता । नंदी को दोतो करें हन घात ७
सुनी नन्दी षेण आर्त अति धरे । विश्वास दे मामा कहेइलतरे
भोगांत राय भाइ तुझ अति । यहां हमारी नही चाले माति ।८
नन्दी निज आत्मा को देधिक्कार।गयो पहाड पर मरणो धार ॥
झंपा पात करतो थो तहां । ध्यानस्त मुनिवर देखे तहां ॥ ९ ॥
नमन कर बेठो आनस पास । पूछें कर्म गति की प्रकाश ॥
मुनि कहे भोला यों क्यों करे । नर भव चिन्तामणी व्यर्थ हरे॥
सुर भोग विलसवार अनंत । तो यहां क्या वसी आवंत ॥

पुद्गल भोग तज कर निज भोग। जिससे मिटे अनादि रोग १
इत्यादि सुन मुनि उपदेश। हृदय ठसो धर्म की रेश ॥
तजी ममत्व लिया संजम धार। विनय से ज्ञान गुण स्वी कार
अभि ग्र० दुक्कर किया धारन। करूं भक्ति मुनि की एक मन
लघुजेष्ट का भेदन धरूं। वृद्ध रोगीकी सेवा तमाचरूं ॥ १३॥
गिल्याणी मुनि सुणतहां जाय। औपधोपचार करूं हितलाय ॥
यों सब को साता उप जाय। विनय से कीर्ती विश्व फेलाय ॥

दोहा—एकदा प्रथम स्वर्ग में। शकरेन्द्र सपरि वार ॥
सुधर्मी शभा विराजीये। इस तरे करे उचार ॥ १५ ॥
अहो भाग्य मध्य लोक के। नन्दी षेण सम साध ॥
महा विनीत नम्रा त्मा। अहंता ममता तजवाध ॥१६॥

चोपाइ

दो मिथ्यात्वी देव उस वार। श्रद्धा नहीं इन्द्र वचन लगार॥
गुरू शिष्य दो साधु रूप धारारत्नपुरी के उतरे बाहार ॥१७
अति वृद्ध गुरू रोग अती सार। जिने ग्राम के वाहिर वैसार
शिष्य आया नन्दी षेण पास। कोपातुर यों करे प्रकाश ॥
रे विनीत ! सुखे अहार तूं करे।मुझ गुरू रोग से अति तडफडे॥
उनकी भक्ति तूंतो करे नाय। फोकट नाम विनीत धराय ॥१९
अहार तज तत्क्षिण उठ नंदी षेण। करवंदना कहे नमीमधुवेण
खमो अपराध में जाणानाय। कृपा कर देवो गुरु जी वताय २०

पानी यावने घरो घर फिरे। देव असूजतो जहां तहां करे ॥
तो भी मुनि वर लब्धि प्रभाव। लेपाणी गुरूजीढिग आय ॥
गुरू कोपे दे ओगे की मार। आप झुल २ करे नमस्कार ॥
अपराध खमाइ करे अंग शुद्ध। वार २ वो करदे अशुद्ध २२।
दुर्गंध अति तामे प्रगटाय। पण मुनि नाके न शल्य चडाय ॥
नम्रहो कह पधारो उपाश्रे। औपधोप चार करूं सुखथये
गुरू कहे दुष्ट मुझ से नचलाय। उठाइ आप खंधे पे वैठाय॥
मार्ग क्रमतां तन पर विष्टा करे। ओगो मारीकहे वॉकाक्योंचले
नंदीषेण लावेकरूणा मन। महा मुनिवर के महा वेदन ॥
ने पापी सुख दे सकूं नाय। व्यर्थ विनीत मुझ नाम कहाय।
लेजा स्थानक करुं उपचार। होय शांति तोमुझ सफलजमार
ऐसी भावना भावते जाय। वार वार अपराध खमाय ॥२६
सुख सेजा पर उन्हे पोडाया। वस्त्र अंग सव शुद्ध कराया ॥
औषधादी करे कर मन स्थिर। सहे परि सह नहीं खन्डे धीर,
देखी देव खेदा श्चर्य पाय। नाहक सताये महा मुनि राय ॥
गुरु शिष्य रूप अदश्य करी। दीव्य देव रूप दोनों धरी।२८
झुली २ करे वार २नमस्कार। खमो आपराध अहो गुनआगार
इन्द्र आपके किये गुन ग्राम। हम नहीं मान परिक्षा काम॥
ईर्षा पापे सह किया अपराध। सो सब खमें अहोगुनअगाध
धन्य आपका सफल अवतार। नहीं देव गये स्वर्ग मझार ॥
इत्यादि रचना नयन निहार। मुनि नहीं लाये जग अहंकार

संयम पाला वर्ष बारहेंजार । ज्ञान ध्यान दुक्कर तप धा
अंत अवसर अनसन आदरी । रहे समाधी चित में धरी
दर्शनार्थ चक्रवर्ति आये । श्री देवी को साथे सो लाये ।
मोह वश हो मुनिकियानियान।स्त्री वलभ होवूं जगम्य
महा शुक्र स्वर्ग मे उपने मुनि।अनोपम सुख भोग वी
यादव कुल में हुवे वसुदेव । कृष्ण जनक जाने सव हे
बहोत्तर हजार परणी वहां नार।अनोपम सुख भोगे सं
आगे मोक्ष जावेंगेयह सही।।अधीकार ढाल सागर के म
विनय गुन दर्शाने काम । कथा कथी संक्षेप इस ठाम ।

दोहा–धन्य २ नंदिषेणजी । निर्भीमानी विनीत
सुख संपतीपाये सहु । चतुर वरो यह रीत ॥
निज पर आत्म सुख वरन।मान पाप उद्धार ।
ऋषि अमोलक ने रचा।यह सप्तम् अधिकार ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराजके संप्रदा
बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री अमोलख ऋषिजी रचित
अघोद्धार कथागार का मान पाप उद्धार नाम

सप्तम्मंजिल समाप्तम्





मंजिल आठवां—"माया पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"कपट"

दोहा—मांय नहीं अनर्थ करे। माया ठगारी जान ॥
यह शल्य महा विकट [illegible] सब दुःख खान ॥
पंचम अंग पंचम शतक। पंचम उद्देशे मांय ॥
माया नाम बखाणियें। सुन निम्नस्थ अर्थ सहाय ॥

चौपाई

[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥
तीन शल्य कहे जिनराय। माया प्रथम शल्य गिनाय ॥ ५ ॥
[illegible] को जिन कहे चोर [illegible] सुख और ॥
[illegible] कहाय ॥

तन वृद्ध वयवृद्ध गुणवृद्ध नांय। वय चोर जो वृद्ध वजाय।
नीच जाती उत्तम रूप संठाण। ऊंचवजेसोरूप चोरजाण।
अथवा रुपे साधु साहुकार। चोर वो जो सेवे अनाचार
अचार लोकोंमें उत्तम धताय।गुप्तकु-कर्मोंआचारचोरथाय।
वगला भक्ति करे जो भक्त।भाव चोर गुन महिमा फक्त।
यह पांच चोरी महा दुःख कार।मर उपजे . . .
नीच देव मिथ्यात्वीकुरूप।एलक तिर्यंच होय आगे स्वरूप।
नरकादि दुर्गति मझार।भ्रमणकरे सो अनंत संसार ॥१०।

दोहा–एसे मायाचारी के।फल हे बहु विकट ॥
चार प्रकार याकेकहे।घटे ज्यों घटा कुपट ॥ ११।

चोपाइ

अनन्तानु बन्धी ज्योंवांशकीगांठ।उम्मर भर नहींछोडेआठ
अप्रत्या ख्यानी मींढे का श्रंग।बारह मांस रहे कपटकाढंग।
प्रत्याख्यानी चलते वेलनीत।चार मांस लग रहेविपरीत।
संज्वल माया पतंग रंगजान।रखे कपट एक पक्ष
चारों चारो गतिमें लेजाय।चारों चार गुन घात कराय
ज्यों घटावे ज्योंहे सुखकार। सारांश येही हीये धार॥१५।

कपट के फल—मनहर छंद

नर करेमाया तो। मरी के सोनारीथाय।

नारी करी माया मरी नपुंसक थावे है ॥
नपुंसक दगाकार पशु में उप जे मर ।
पशु करे कपट सो विक्लेन्द्री कहलावे है ।
विक्लेन्द्रीकपट करी । एकेंद्री में जावे मरी ॥
एकेन्द्री कपट वश निगोदे उपजावे है
ऐसी नीच मायाचारी। नीचासे नीचो उतारी
नीच नीचा होनाचहावे सो माया पोसावेहैं ॥१६॥
माया वन्तो का तो मनासदाकरे हैं भ्रमण
रखे जाने कोइ जान । मान म्हारों जावसी ॥
मुख को छीपावे झूटी बातों को बनावे ।
केइ परपंच रचावे । जाने म्हारो दाव फावसी ॥
तोभी कोइ दिन । प्रगटे पाप होवे खिन्न ॥
वर्षो को जमाइ पेठ । क्षीण में गमावसी ॥
पीछे क्रोडोंही उपाव । आवे नही गये भाव ॥
दगावाज लाज गमा । आखीर पस्तावसी ॥ १५॥
बने साहुकार करे मोटे २ व्यापार ।
मन में सो दगा धार । चोरीही करत हें ॥
खोटे तोले माप । खोटे खत में जवाप ॥
बनी पोशाख जो साप । कहा पाप से डरत है ॥
दगा से गमाइ फरतीत करी छपनाइ ॥
न्यायाधीश आगे सोतो कांपे थर थरत हें ॥

[illegible], जात पनी लाज कों [illegible] ।
[illegible] कुमति [illegible] हैं ॥ १८ ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] हैं ।
[illegible]
[illegible] हैं ॥

[illegible]

[illegible] नाहीं [illegible] । [illegible] माता है । [illegible]

ोले भरमावत देख ये भूत को जोहरीयों पाससोमूल्यनपावे॥
हारी वहा माया जग मांचा।मायाही होय के गलो कटावे॥

कथा-पंदरवी

माया का फल वातने वाली "पाताल सुंदरी की"

दोहा-इस माया प्रभाव से। दुःखी हुवे हैं अनन्त ॥
पाताल सुंदरी कपट का। कथूं यहां विरतन्त ॥ १ ॥

चोपाइ

विशालापुर नगरी में जान। जयवंत तेन नृप गुन खान ॥
एकदा बैठे शभा मझार। गर्व धरी यों करै उचार ॥ २ ॥
मेरे से कोइ कला अजान। रही होवे तो करो बयान ॥
सब कहे आप होजी सब जान।एक कहे त्रिया चरित्रअसमान
तेतो पूर्ण जाने नहीं कोय। नृपति सुन कर आश्चर्य होय ॥
देखे त्रिया के चरित अनेक। सती तास मिली नहीं एक
उतरा सब नारी से मन। एक उपाव कीया चिंतन ॥
पाताल घर एक ऊंडा बनाय। एकही द्वार उसके सो रखाय
जन्म ती सुरूप कंन्या मंगाय। तागेह में तस पालन कराय॥
धाय मात्त एक पोषण रखी। विन बोले पोषे शणगारे तखी॥
सुंदर नन अवलोकी काय। पाताल सुंदरी नाम तस ठाय॥
यौवन वंतीहुइसपरण्यांनाय। इच्छितसुखविळसेतसंगनराय

दोहा-मणी द्वीप का शेठ नव। अनंग देव अनंग सार ॥

निराणा भउ चित लइ । करन आया व्यापार ॥८
पर्ने निरखुरा राग का । करे इच्छित रोजगार ॥
द्रव्य उपार्जन बहु किय । नित्य जाय नृप द्वार ॥ ९ ॥

चोपाइ

कान पना का गणिक वहां रहे । छत्र चमर राजातस दए ॥
अनंत देश नग द्रव्य बहु देय । निज वशमें कर सुख लेय ॥
एक दिन सेठ गणिका से पूछे । नृप का चित भ्रमित क्यों रहे
किसी क दिन राजा में आय । क्षणिक ठहर पीछे चले जाय
पाताल सुंदरी चरित वेश्या कही । नृप मन हरा सदा उसहि रहे
सुनि सेठ का मन मोहाय । पाताल सुंदरी देखन चहाय ॥१०
निज देश के कारीगर बोलाय । निज घर में सुरंग खोदाय
पातालमें आयो पाताल सुंदरी धाम । जब गये नृप राजामें काम
तब आया सेठ सुंदरी धाम । देखि रूप भा अति कुलाम ॥
[illegible] नरनारी मन मार । यह बोली पुरुष कम कैसे आय ॥
सुंदरी उनके देख हरषि अति । [illegible] प्रीति ॥
सुरंग में घर लागी द्वार लगाय । यहां नग दोनों लटकाय ॥
[illegible] राजा ने [illegible] । सुंदरी अनग [illegible] बोलाय ॥
[illegible] इच्छित [illegible] । [illegible] मनुष्य ॥११
[illegible] । [illegible] सुख मन मेंह ॥
[illegible] नृप [illegible]

में पुरस्पु जीमावूं राजा भणी।देखो कला तुम नारी तणी॥
जो न करो मुझ वचन प्रमाण । तो मैं तुमारे हरूंगी प्राण ॥
सुनी वचन ये शेठ थरराय । सर्प छिछुंदर न्याय मिलाय ॥
वंदर गारुडी हुकम आदरे । त्यों शेठ सुंदरी कहनी करे॥१९॥
शेठ राय से करी अरदास । जीमावा लायो निजघर तास ॥
पाताल सुंदरी सूरंगसे आय । राजाकुं पास वैठ जीमाय ॥
राजा देख अति विस्मय पाय । ये यहां कैसे आईचलाय ॥
के ऐसीही है शेठकी नार।साक्षात् पाताल सुदरीअनुहार ॥
यों चकडोले चडा नरेश। भोजन की रूची नहींलवलेश ॥
तव सा सुंदरी कहे कर जोड।क्या रही हैं इस अहार में खोड
राज भोजन आप नित्य भोक्ताय। वणिक घर का कैसे भाय॥
सुणी वचन नृप अति विस्माय।अन रुचता कुछ भोजनखाय॥
घृत छांट्या गुप्त डाला तस परी।सुंदरी लखी हसी मनमेंजरी।
जीमीराय शीघ्र गये मेहल माय। सुंदरीभी अंगसाफ कराय ॥
शीघ्र आ सुनी गइ नींद घेगाय।देखी नृप मन वेन विरलाय॥
पाताल सुंदरी हर्षी अतिचित।कला नेगी सब सिद्ध खचित॥

दोहा—एकदा सुंदरी चिंतवे। विन गुन्हे पडीमें कैद ॥
शिक्षा करूं राजा भणी । पूरे मेरी उम्मेद॥ २६ ॥

चोपाइ

अनंग ने कहे चालो निज देश।मे तुम साथही रहूंगी हमेश॥

पहोंचाने राय समुद्र लग आया।ऐसा करो तुम पुक्त उपाय।
वायुवेग वाहण सज करो । काम फते करें जरा न डरो।
डरतो वाणीयें कहे सो करे । राजा पास जाकर उचरे।
मेरे पिताश्रीमुझ बोलाय । आप दर्शन की पडे अंतराय।
जैसो माम मेरोवढायो आपतेसी एक कृपा करोअहोबाप।
समुद्र लग मुझ दो पहोंचाय। यह उपकार न कभी भुलाय।
महीपतीमानी शेठ की वात।शेठ सब अपनी सजाइ सजात।
राजासेठ और पातालसुंदरी । चाल एकही वाहन चडी।
देखी सुंदर राय अतिविस्माय।अरे यहक्या [illegible] प्रेमला
जीमनके दीन की वात याद करी।पीछामानको लियासंवरी।
सुंदरी नमन करी तब कहे । आप पसाय हमसुख सबलहे।
उपकार आपका हमपर अगाध।खमना हमारा सब अपराध।
सेवक की याद कभी कीजीये। ऐसे वचन सुंदरी वहांकिये।
राजासेठ दोनों मुग्ध हो रहे।नारी कपट काअंत कोलहे।
सबजन समुद्र कंठलग आया।वायुवेग शीघ्रवाहन सजाय।
शेठ सुंदरी नृप को नमीकरी।तत्क्षनगये वाहनमें चडी।
आगे जानें सुंदरी चेताय।उवट चलो ज्यों घतानहीं थाय।
डरके मारे उलटही चले । सुंदरी मन हर्ष अति फले।
नारी चरित्र हैअपरम्पार। देखो इसका आगे व्यभिचार।

दोहा—मुकंट नामे एक था । अनंग देव लघु भ्रात॥
गायन सुनके सुंदरी । ने साथ लुब्धात ॥ ३९ ॥

अनंग देवको न्हाखीयो । कपट करीजल मांय ॥
देखी सुकंठ डर्यो अति । तास हुकम में रहाय ॥

चोपाइ

अनंगदेव कर काष्टज आया।सिंहलद्वीप उतरा मुनिपाया ॥
लीनी दीक्षा ध्यान लगाया।दैव जोग वाहणभी तहांआया
सुकंठ पाताल सुंदरी संग लेइ । वनक्रीडा को तहां [illegible]
देख मुनि सुकंठ शरमाया । करी वंदना अपराध [illegible]
लीना संयम करणी कीनी । दोनों गये स्वर्ग मुक्ति [illegible]
पाताल सुंदरी भगी वन मझार । तस्कर ग्रही [illegible]
दगावाज जाणी व्यभिचारीणी।वेचन भणी [illegible]
वेश्या लेगइ रुप निहाली । मार मार [illegible]
अभक्षभख्यो कियो मदिरापान।कुष्ट रोग [illegible]
धक्का देइ तस घरसे निकाली।हुइ [illegible]

दोहा—जयवंत सेणजी नरपति । [illegible]
तत्क्षण आये मेहल में।मृंदर्ग [illegible]
चौकस चउदिश में कर्ग।[illegible]
देखी स्त्री चरित्र को।वैराग [illegible]
दिक्षा ली करणीकरी । [illegible]
सात में दिन केवल [illegible]

चोपाइ

भो भो भव्यो!सुणो मुझवीती । कपट कलासे कैसी फजी
पाताल सुंदरी पाली भूमी मांहि।कूड कपट तस कोन पडा
मूझ देखत अनंगदेवसाथे गइ। सुकंठ की फिर नारी भइ
दोनों संयम ले गति सुधारी । तस्कर पत्नी हुइ मुझ प्यां
आगे वैश्याका कर्म कमाया । पाप वांदगी फल प्रगटाया
कुष्ट रोग से तन सडी याइ । होभिकारणी दुःख सु॰ ..
संतापे मरी नरक सिधाइ । यमदेव तस गाडी सहाइ ॥
पोलाद पूतला उष्ण बनाइ । ता संग ताको भोग क॰
भोगी नरक का दुःख अपारो । दुःख भुक्तेगी अनंत .
माया कपट ऐसादुःख कारो। प्रत्यक्ष देखे सो किये ८
सुनकरभव्य माया छिटकाइ । सो दोनों भव सुख पाप
जयवंतसेनर्जी मुक्तिपाया । कथा अनुसारे

दोहा—पाताल सुंदरी माया करी।पाइ अनंत भव दु॰
योंजाणी माया तजो । ज्यों।मिले इच्छित सुख॥५





मंजिल आठवा—"मायापापो द्वार"

उत्तर विभाग—"शरलता"

दोहा—बाह्य अभ्यन्तर एकता। शुद्धवृत्ति के धार ॥
सोही सरल माया तजी। तस खुले शिवद्वार ॥१॥

चोपाइ

सरल पनेमें सम्यक्त्व रही। सरल शिव मार्ग शुद्ध पाले सही॥
निशल्योव्रती" सूत्रही कहे। सरल ही व्रत धारक सदेह ॥
सरल ही हैं जिनाज्ञा धार। सरल ही होते भव सिंधु पार ॥
सरल पना ही सुख दे सार। धार धार जीव सरलता धार ॥

सरलता के गुन—मनहर छंद.

कपट निवारी, जिन शरलता धारी।
होवो साधुया संसारी। सुखी जगके मझारिहे ॥
सरल डेर न लगावी। छिपे नहीं कहां जवामारी ॥
होय जो उचारी, सभा माहे साहुकारीहे ॥
जसे पर्तीत भारी। माने सब गुण कारी।
न तो करन लचारि अन्य करन लाचारीहे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] — [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विमल जिनका पुत्र गुनवंत। रुप कला गुन से सोहंत॥३॥
पढीया धर्मशास्त्र सुचंग। धर्मकरण मन अति उमंग ॥
संपती पायो दान पसाय। यों चिंती दान अधिक कराय॥
समल नाम एक वाणिक पुत। कपटी लोभी निर्लज दूत ॥
दैव जोग विमल के संग। प्रीति जमी उनकी अंतरंग ॥५॥
विमल को दान करतो देख। समल मन दुःख धरे विशेख॥
कहे अधिक नहीं कीजे दान। धन के साथ गमावोगे मान॥
विमल कहे दान से मान वढे। धन के साथ सुखभीचडे ॥
समल चुगली धन्नादिग करी। पुत्र तुमारो धन को अरी ॥
विमल से धन्नो शेठ यों कहे। अति कष्टे हम धन संग्रहे ॥
तूं तो सहज वावा कों लुंटाय। करो कमाइ खवरज थाय ॥
विमल सुणियों तात वचन। प्रणमी तात चला तत्क्षण ॥
समल भी उस के साथे भया। ग्रान छोड बहुत दूर गया ॥
समल कहे देख मित्र मुझवात।नहीं मानी तो दुःख तूं पात॥
चलो पीछा समजावुं शेठ। छोड दान सुखे घर में बैठ ॥
विमल कहे विदेशे धन कमाय।घर आ करुंगा दानसवाय ॥
पुण्य जोगे धनीका पुत्र भयो। घर छोडा पन पुण्य न गयो
समल कहे धर्म सेथैंदुःख लियो। तोभीधर्महट तुझ नहींगयो
विमल कहे धर्मसदा सुखदाय।इस में संशय किंचित्नाय ॥
समल कहे जो तुं मेरा माने नाय।तो पुछे आगे गाम में जाय।
जो कहे लोके पाप से सुख। तो क्या देगा बोल झट मुख॥

तेरे पास का द्रव्य सब लहूं । विमल कहे भले देवुंगा सहु ॥
आगे एक कुग्राम में आय । मूढ बहुत बैठे एक ठाय ॥१४॥
समल पूछे सब जन सत्य कहो।धर्मसेसुख के पाप से लहो॥
सब कहे पाप किये पावेहेंसुख । धर्मीभीकारी पावे हैं दुःख।
समल हर्षी कहे दे सब धन ।विमल निकाल दियावस्त्रभूषण
आगे वली समल कहे भाइ । प्रत्यक्ष धर्म से तूं दुःख पाइ ॥
अब भी छोड धर्म का पक्ष । चालो घर होवो जरा दक्ष ॥
विमल कहे धर्म सदा सुखकार।पूर्व पाप यह दुःख दातार ॥
सलम कहे तेरे कहे क्या होय ।अन्य कहे तो बतावो मोय॥
चलो वली पूछें आगे गाम।जो कहे पाप से सुख तमाम॥
तो क्या देवेगा मुझे इनाम । विमल कहे मुझ ढिग क्यादाम
समल कहे झूठ जिसकी साख।उसकी तुरत फोडना आँख
सरल विमल यह मानी वात।आगे और एक.कुग्राम आत
पूछे सब पापसे सुख बताय। धर्म से दुःख प्रत्यक्ष जनाय॥
दान दिये से धन होवे नाश।शील पाले कुलका हे:विनाश॥
तपसे तन दुर्बल हो जाय । भाव से संसार चलता नाय॥
विमल कहे यह मिथ्या वचन ।दान दिया तो पाये धन ॥
शील से कुल तपसे तन सुख। सुभाव धरेसे जावे दुःख ॥
पण माने नहीं मूढ लगार । समल हर्षा मन में अपार ॥
वन में आये कहे फोडुं आँख।विमल कहे तूझमन जिमराख

पापीये फोडीया विमलका नेत्र।कुवामें धक्कादिया तत्र ॥
विमल वृक्ष धरलटका तहां।कर्म फल प्राप्त ये दुःख लहा ॥

दोहा—समल विमल संताप के।हृदय आनंद पाय ॥
कपट से चपट मिले तुरत।पाप फल प्रगटाय ॥
चोरमिली जरलूटीयो । मारीअतीहीमार ॥
अंग भंग आइ पड्यो । एक गाम मझार ॥ २५ ॥
मांगी खावे टूकडा । करा कुछ उपचार ॥
अवसरल विमलका । कहूं आगे अधीकार ॥ २६

चोपाइ

विमलमन समरे नवकार । अहोजिनराज थारों आधार ॥
निशासमय दोयक्षतहां आय । वृक्षारुढ हो वार्तोंवनाय ॥
वात २ में कुरापात भइ । एक एक को अवगन कइ ॥
तुझ सम दुष्ट और कोइ नाय।विचारी राजकन्याकोसताय
अंधी करी पडीरहे मुरछाय । यह पाप भोग कहांजाय ॥
में जानू हुं तेरा उपाय । कोइ कूप पींपल पत्र लाय ॥
आँखमें आंजे तो खुले पट ।धूनी दिये तूं भागे चट ॥
दूसरा कहे तूं पापी अति।तेरे कुटुंब को तूं घाती ॥३० ॥
क्रोड निन्याणवे द्रव्य दवाय।एकला रहे हवेली माय ॥
उष्ण सरसव तेल छांटे उसजाग।तो।तु वहांसे जावे भाग॥
लडते दोनों यक्ष भगे उस वार।विमल दोनोंवात लीधार।

पत्र तोड रस अमी में मिलाय।आँखो आंजे सुधरे नैन ताय
औषधी संग्रही वाहिर आय।यक्ष कहा उस गाम में जाय॥
ढंढेरा पिटता सुणया जहांय।राज पुत्री का दूःख जो गमाय॥
उसको राजा अर्ध राज देय । कन्याभी परणावे तेय ॥
सुनी कुमर पढहे ते ग्रह्यो ।झट चट ले राज ढिग गयो ॥
राजा उसे कुमरी ढग लाय । विमल यक्ष को तव चेताय॥
चुप चाप शीघ्र जावो अब भाइ।नहींतो वहुत विंटवनाथाइ
मस्ती कर ते माने नहीं वात।तव पती ग्रही विमलहाथ ॥
अमी मिला कुमरीके नेत्रलगाय।यक्ष चिलाइ तवभगजाय
नेत्र खुले कुमरी हुइ होंशार । राजादि तव हर्षे अपार ॥
कुंवरी परणाइ दिया आधाराज।इछित सुख विलसे ते साज
हवेली में उक्ष तेलछिडकाय।उसी यक्ष को दियाभगाय ॥
नि-याणु क्रोड धन कर निज हान उसी जगइ में सुखेरहात॥
करामती सब विमल को जान । राजा प्रजा देवे अतीमान ॥
सरलतासे सब पाये अराम।अब समल का सुनिये काम ॥

दोहा—समल सवल्न शरीर हो ।इसही पुर में आय ॥
भिकारी के वेश में।मांगी तन निभाय ॥ ३८ ॥

चौपाइ

विमल फिरत निकले पुरमांय। समलको देख के आश्चर्यलाय
आदर दे।निज संग लेजाय।वस्त्रभूषण नस अंगसजाय ॥

मल एकान्त में पूछेवात।कहो विमल ऋद्धि किम पात ॥
विमल वीतक सब बात सुनाय।ऋद्धी मिली भाइ तुझ पसाय॥

दोहा—कुटिल न तजे कुटिलता।करतें क्रोड उपकार ॥
जिनके पडे स्वभाव जो। मरे भीजावे लार ॥४३॥

चोपाइ

विमल किसकाम को वो।हिरजायासमलजीमनभार्भाढिगआय :
पुरसा थाल नहीं ग्रास जो लहे।राजपुत्रि तब नामीकहे ॥
क्या भोजनमें दोष जनाय।देवर क्यों नहींग्वावो इसतांय ॥
कपटी कहे कहेतां दुःखलहूं।सच्चीबात में कैसकहूं ॥४५॥
कुंवरी कहे डरोमतजरा। समाचार कहदो सबखरा ॥
समलकहे यह ढेडका।पुत्र।किस विध अहार करुं में अन्न ॥
जातछिपावण मुझ आदरकरे। कहो में डूबूंकैसी तरे ॥
राजपुत्री मुरझाइ सुनीअति। अरे भ्रष्टकरीमुझे दुर्मति ॥
नृपति को जा किया समाचार।नृपति भी कोपा अपार ॥
मारने को गुप्त सुभटबैठाय। भाट हने जमाइ बोलाय ॥
विमल लगेथे जरुरी काम। समलसे कहे जावो नृपधाम ॥
सुभटविमल को आयाजाण। दी तरवार की हननेप्राण॥
समल भागा चुकाकेधन। विमलके आगे कही सबवान ॥
विमल कोपित हो शून्यमनजाय।श्वसुर को दूत हाथ चेताय ॥

दोहा— विनागुन्हे मुझ मारने। रचा गुप्त परपंच ॥

क्षत्रीहोतो रनमे लडो । डरनवीआणोरंच ॥५१॥

चोपाइ

सचीव पूछे नृपसेकर जोड । यह क्याजुलमअहो महीमोड ।
नृप कही पुत्रीकही बात । मंत्री कहे में निर्णयकरुं नाथ ॥
गुप्त प्रधान विमल कने आय । रायपुत्री को सायहलाय ॥
समल कही सो वात जनाय। सुनी समल डरके भागजाय

दोहा—समल धुर्त चितचिंतवे । निशीरही कुपकेमांय ॥
करामात कोइ करलगे।तोविमल ने देवुंभगाय ॥
विमल डाला उस कूपमें । पडाआपभी आय ॥
राते आये देवता । कहे आपसे नरमाय ॥ ५५ ॥
फूट भली नहीं भाइयों । दोनों पाये दुःख ॥
अरी रहे इस कुपमें । पूरो इस का मुख ॥ ५६ ।
कूप पूराजव देवता । दबे समलजी माय ॥
दगा किसीका नही सगा। सोचोदृष्टी लगाय ॥

चोपाइ

समल भगा जानी सबवात।सबी के मनका वैमविरलात ।
संतोषे चुपवेठे निजठाम । सरलता जोगसे हुवेसुकाम ।
विमल समल की चौकसकराय।किसी स्थान नहीं पत्ता पाय।
तव बुद्धिसे करा विचार । कुप से लिया सोसव निकार ।

सब से कहा सच्चाविरतंत । दगाबाज यों दुःख पावंत ॥
अपने सज्जन को लिये बोलाय।सबको परतीतहूइ सवाय ॥
दान धर्म विमल अधिको करे।बाह्यअभ्यन्तर एकसो संचरे॥
आयुष्य अन्त पायो स्वर्ग । ऐसे क्योनी वरे अपवर्ग ॥

दोहा– श्रोताइस दृष्टान्तसे । समजो सरलता फल ॥
तजी कपट निर्मलबनो । सुखपावो ज्योंविमल ॥६२ ॥
निज पर आत्म सुखवरन । माया पापउद्धार ॥
ऋषिअमोलख ने रचा । यहअष्टम अधिकार ॥६३ ॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराजकी
सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनीश्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
माया पाप उद्धारनामे
अष्टम मंजिल
समाप्तम्





मंजिल नवमा—"लोभ पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"लोभ"

दोहा–धोभन आवे लोभका । सोही लोभ है पाप
वडे विद्वरों यों कहे । लोभ पाप का बाप
लोभ तृष्णा वस पडे। वो नहीं पावे सुख
लोभ समा इस जगत् में। और नहीं है दुःख ॥
'क्रोध'कपाल' मानज' गले' । 'माया 'पेटमे'रेय
लोभ वसे सब अंगमें। सबसे बडा है एय ॥ २
चिवहा पन्नंनी सूलके। शनक उद्देशे पंच ॥
लोभ के नाम जेवरणवे। सो यहा कथुंमरंच ॥

चोपाइ

'लोहे;लोभ, 'इच्छो; 'मूर्छाजान । 'कंखा, वांछा, 'गेहीं;म'
'तण्हा;तृष्ण।भिज्जाद्रव्य ध्यान।अंभिज्जअभीलापा करे पुन
,आसा सेणया'आसा करे । 'पत्थणया:प्रार्थन अनुसरे ॥

ालप्पैणया'लालसा अति।'कामासैं'भोगैासा'जीवैंसारति।
रणैासा'मरणसे नहीं डरे। 'नाहरैंगे:अनुराग अतिकरे ॥
३ सोल हनाम लोभ के कहे। भगवती सूत्र से सं गृहे ।९ ॥
ाणांग सूत्रके मझार । लोभके कहे हैं चार प्रकार ॥
ंतानु वन्धी किरमजी रंग । प्राणांते न करे द्रव्य भंग
ाप्रैत्या ख्यान खंजर का लेप। वार मांस रहे लोभ का चेप
त्या ख्यानी कीचड मेल। चार मांस में लोभ दे टेल ।९
ंल लोभ पतंगरंगजान । क्षण में ममत्व घटे भगवान॥
चारों चउगति में ले जाय । जोकमी करे सोही सुखपाय

लोभसे दुःख–मनहर छंद.

तृष्णा की लाय वडी । लगी है जगत् मांय
कभीन वुजाय जो । खिलाय जग सारो है ।
करे सव भूमीस्वामी। कोश भरे रत्न नामी।
तोहू नहीं मिटे खामी। आगेही विचारो है ॥
धन सव लगे हाथ । होवे सव पशु नाथ
तोहू मन चावे आथ । मिले परिवारो है
लाभ जैसे वधे लोभ । अवे नहीं कभी थोभ ।
अहो अमोल लोभ अति सदा दुःख कारो है
एक वालो दश चावे । दश धणी शैंत भावे ।
सहश्र लख क्रोड अरव । वडे विस्तारो है

भट तलार होने लपे । तलार दीवानी जपे॥
दीवान इच्छे राजपद । केसे होवे म्हारो है
राजा लूंटे अन्य राज । तोही नहीं सीजे
यों खपी के जन्म रतन हारत गीवारो है ॥
लाभ जैसें वधे लोभ । आवे नहीं कभी
अहो ! अमोल लोभ। अति दुःख कारो है ॥
लोभ के प्रेरेही जीव । भोगत हैं अतिरीव ।
भूख प्यास शीत ताप सही तन सुखावे है ॥
उन्नत गिरी पे चडे ऊंडी खाइ में उतरे
घसे रन वन मांय। द्रव्यही वधावे है ॥
करे नीचन की सेव । पूजे पत्थर के देव
एक धनही की हेव । लछी घर आवे है
उदधी उलंघ जाय । गांठडीयों वांधलाय ।
तोही न धपाय यों तृष्णाही सतावे है ॥ ११

इन्द्र विजय छंद

राज महाराज लडे तृष्णा वस । अनेक नरोंका नाश क
शाहा शाहाके विरोधही होवत। आसामी एककीएक फ
पटेल पटेल के जुद्ध मचे । जाने मेरेही खेत में ज्यादा पा
जहां पेखो तहां झगडे हैं लोभके लोभी नर कैसे सुख
लोभ करी राजा राज गमा कर । दास पना भोगव रहे

ोभ उल्लंघी कुल मर्याद को । महाजन नीच के काम यहैं॥
ोभ के वश भये हे साधु यती । मान गमाइ विपती सहे हैं
च को नीच किये इस लोभने। तोहुं लोभ न तज दहे हैं॥
ुस्थल से आये मालव दक्खन लक्खन पत कंगाल भयेहैं ।
ाव्याधिप होवन नित्य खपे ;फिरे गामडे शिरपे पोट लयेहैं॥
को खावन पेरन जीरन । नीचन को आश्रय गये हैं
ाजन कर्म करे महायमसे । देखो लोभ अकृत्य किये हैं ॥
ागी को लागी तृष्णा की आगी।भांगी त्यागन आनउलंघे
गे चेला चेली सुख पावेंगे । नहींसूधारे ते निज ढंगे ॥
त्र के थान धरे पोट वांधके । पातर के गट लेइ के टंगे ॥
ा यह रीत हटे दातारही वारंवार साधू तव मंगे १७॥
ा कहूं लोभकी गति गहनहै । वडे २ मुनि कों लोभ डिगावे
ी महा कष्ट परिणाम अपूर्व । चढी गुणस्थान इग्यारमें जावे
ां भी गुप्त रहे यह शत्रुखेंच । के पहिले लाय गिरावे ॥
े महंतों की ऐसीदशा करे । तोअन्य की गति कहा कथावे

कथा—सतरवी

लोभकेदुर्गुन वताने वाली—कोणीक राजाकी

राज महाराजा मुनि गुनि । लोभ से पाये कष्ट
वरणन् किंवहूता करुं । दिखता यह स्पष्ट ॥ १ ॥

पण जनमन समजाववा । कोणिक राय चरित्र
वरणु सूत्र अनुसार से । लोभ का दर्शन चित्र।

चोपाइ

मगधदेश राजग्रहीजान । श्रेणिक महमांडलिक राजान
राणीचेलना सद्गुन खान । महाबुद्धिवंत अभय प्रधान
एकतापस रहे पुरकेवार । मास २ अंतरकरे आहार
राय आमंत्रण पारणाका किया । घर आकर वो भूलीगया
दूसरी महीना तापसकीया । स्मरण हूवेराय दुःखलिया
दूसरीवार फिर नोतादिया । राजकाज लग विसर भया
तीजा मांस तप तपसीकिया।राजापर आसुरत्त सोभया
पापी मुझे मारना चहाय । मुझकरणीफले मारुं उसताय
नियाणाकर पुत्रपनेऊपना । चेलणालिया सिंहकास्वपना
तीसरे महीने दोहला आया।पतिकालिज मांसखाना चाहाय
अभयबुद्धिसे डोहलापुरीया । नवमास गयेसेपुत्रभया
दुष्टजानदिया उकरडडाल । कूर्कट अंगुली चावीउसकाल
जानी श्रेणिक लायाउठाय । अंगुलि चुंसी जेहर गमाय
राणीसे कहेकीजे संभाल । कोणिक नामरायकर प्रतिपाल
दूसराकुमर चेलनाकेभया । विहल कुंवर नाम उसकाठय
राजाराणीका उसपरप्रेम । आठ कंन्यापरणाइ देखेम
वंकचूल अठारे सरहार । विहल कूं दियाराणीधर प्यार
सीचानक गंधहाथी दियाराजान।विहलरहे उसमेसुखमां

दोहा—पूर्व वैरोदय भया । चिंते कोणिक कुमार
कब नृप मरे कब राज लूं । है तरुण इस वार
मारी सकुं नहीं एकला । वश किये दश भ्रात
राज हिस्सा देना किया । लोभी मानी वात १३

चोपाइ

कदा कोणिक अवसर पाय।श्रेणिक को काष्ट पींजरे फसाय
ाप बैठा गादीपर आय । दुवाइ मुलक में दीनी फिराय ।।
श भाइ को देस भाग दिया । भाग इग्यरवा आप रखलिया
ीन सहश्र गज गाजी रथ आय।तीन२कोटी पायक पाय ॥
ग वंदन मात के जाय । चेलना बैठी मुख फेराय ॥
हे कोणिक पुत्र पाया राज।माता क्यों तुम हुइ नाराज ॥
लणा कहे तूं मुर्ख सही । अरी पूज सज्जनदुःख दही ॥
न्म का विरतंत दिया सुनाय।वैर खपागया नरभांय॥१७॥
हे मासे अभी छोडुं तात । लेकर फरसी शीघ्र सोजात ॥
णिक देख जाना मारण आय।जेहर मुद्रा खा मरण सोपाय
ाप भरा देख दुःखी अतिभये।मृत्यु कार्य नीती सम किये॥
लणा दिक्षा लीनी जाम । कोणिक का जग हुवा बदनाम
ोड राजग्रही चंपापुरी रहाय।विहलकुमर भाइ साथहीआय
हते दोनो सुख के मांय।लोभ कामनी दुःख उपजाय।।२०॥
दोहा—विमल कुमर हाथी चडी।ले अंते उरी लार ॥

निरय आइ गंगा सर। रमे सो इच्छा चार ॥२१।
कोणिक राणी पद्मावती। निसुनी यह वीर तंत॥
लोभ जग्यो सो लेन को।पतिसे अर्ज करंत ॥२२॥

चोपाइ

पाटवी हाथी राजा ढिग रहे। वंक चूल हार राणीही गहे।
सो तो विलसे विहल कुमार।बदनाम जिससे होत अपार॥
कहे कोणिक तात मात दिया।राज भाग नहीं उसका किया
वोभी है राजा का कुमार। सुणी राणी प्रजली उसवार॥
हार हाथी तो लेवो सोइ। जो पुरुषा तन तुम में होइ॥
कोणिक कहे अभी लेवुं मंगाय।भट भेजा विहल को बोलाय
हार हाथी मांगे उस पास। वो तब नरमी करे अरदास॥
मात तात मुझ हाथ से दिया।राज भाग आपेन नहीं किया॥
राज का हिस्सा दे यह लहो। नहीं तो चुप चाप सुखे रहो॥
हट कर कोणिक मांगे दोय। विहल घर आवे चूप होय॥
यहां रहने मं नही जाना सार।गये विशालाना नाकेद्वार॥
बात चेताइ सुख से रहे॥ कोणिक यह खबर जब लहे॥
क्रोधातुर हो दूत पठाय। मेरे भाइ कों देना भेजाय॥
दुत चेडाराज कों कहे समाचार।विचार के उत्तर दे उसवार
दोनों भाइ मुझ एक समान। परन्तु न्याय से चले राजान॥
राज देकर हार हाथी लहो। विना काम भ्रान मत दहो ॥३०

सुण कोणिक क्रोधातुर होय। दश भाइ साथे ले सोय ॥
सज सैन्या रणांगण आय । चेडा पे समाचार पठाय ॥

दोहा–चेडा राय सुनी चिंतवे। फोज बहुत उसपास ॥
धर्मी मित्रकी सहाय से। करूं अन्याय का नाश ॥
राय अठारे बोलाइया। सो सत्य सहायक थाय ॥
दोनों फोजों सजहुइ । महा भारत मचाय ॥ ३३ ॥

चोपाइ

चेडाराय की सैन्या माय। सात वन सहश्र गज रथ हय थाय
पायक हुवे सतावन क्रोड। शकठ वाह संग्राम जमा प्रोड।३४
कोणिक राय की सेना माय। तेंतीस सहश्र गज रथ हय थाय
तेंतीस कोटी पायक सही।गरुड वाह संग्रामज भइ ॥ ३५॥
कोणिक तरफ से काली कुमार । चेडा सामे हुवा उसवार ॥
चेडा राय श्रावक व्रत धार। विन गुन्हे नहीं करे प्रहार ॥
एक से ज्यादा मारे नहीं वाण।वो तो रहे चुप की वहो ठाण
काली कुमर तव वाण चलाय।चेडा नृप काटा उस तांय॥३७
एक वाणे मारे काली कुमार।यों दश दिन में दस भाइमार॥
देखी कोणिक करे विचार।एक ही वाने मेरा संहार ॥३८ ॥

दोहा–कर अष्टम आराधिये। पूर्व मित्र दोइंद्र॥
वचन वंधे वों ऊचरे। किया जुलम तें नरेंद्र ॥
चेडा धर्मि क मारे नहीं। करेंगे तेरी जीत ॥
असुरेंद्र शकरेंद्र तव। कोणिक सहाइ भयेप्रीत ॥ ४० ॥

चोपाइ

कोणिक सज संग्राम में आय । सामे चेडा नृप भी थाय ॥
वज्र कवच कोणिक तनकिया।चेडाका बाण खाली गया ॥
शकरेंद्र के कर डारे वैक्रेय करा।महा सिला हो पडी नर पर
इस शीला कंटक संग्राम मझारा।चोरांसीलक्षे मनूष्य संहार
सुरेंद्र तृण डाले वैक्रय।महारथ मूशल होते प्रगमय ॥
छिनुलाख नर उससे मरे।एकक्रोडअेंसीलाख संहरे॥४३
दो दिन में जूलम यह भया,। अठारे नृपती निज घर
चेडाछिपे विशाला में आय।द्वार बंध सब दिये कराय ॥४४॥

दोहा—सामंत चेडा रायका । श्रावक नतुवा नाग
निरंत्र छट के पारणे करे । वो आया इस
अष्टम तप उस दिन किया। लगा आ तिक्षण
समाधी मरणा करी । उपने देव विमाण ॥ ४६
नाग नतुवे का मंत्रीसर । था एक सरल स्वभाव
उस को भी लगा बाण। आ वो आया उस ठाव
कहे अन्य जाणु नहीं। मित्र किया सो मुझ होय ॥
यों धर्म भाव नहा से चवी। मनुष्य हुवा पुनः सोय
यह मं जो न नू ी ठ ाा ि न द निर्धन ॥
जा उपज नव नर मर्ग। देखो लोभ परपंच ४९

चौपाइ

विहल कुमर अति रोस भराय । सींचानक गज आरूढ थाय ।
रात के कोणिक सैना में आय । अनेक गम नर मार के जाय ॥
कोणिक जाण करे मारण उपाय । रस्ते में गुप्त खाइ खोदाय ॥
खैर अंगार से पूर्ण ना भरी । किया सम मार्ग जाणे नहीं जरी ॥
आये रात को वहां विहल कुमार । गज ज्ञान से देखी अंगार
आगे पग जरा नहीं भरे । विहल कोपे गाली ऊचरे ॥
होण हार हाथी तब जाण । विहल कुमर को भूमी ठाण
आप जल मरा खाइ मांय । देख विहल अतिही पस्ताय ।५३।
वंक चूल हार देव लेजाय । विहल अनि वैरागी थाय ॥
लीदीक्षा आत्मा काज किया । कोणिक परिश्रम निष्फल भय
क्रोध मान में कोणिक भराय । विशाला लूटण ने चाहाय ॥
परन्तु कोट नहीं टूटे लगार । सोच सो उसका उपचार ।५८।
आकाश वाणी इसपर भई । भ्रष्ट साधू इसे तोडे सही ।
कोणिक तबही बीडा फेराय । माधव गणिका लिया उठाय
गुरु द्रोही कुल वालुक साध । वन में तप करताथा अगाध
गणिका उन्हे पारणा नाय । विरोच औषधी दीनी खिलाय ॥
हुवा अतिसार कहे कर जोड । मैं श्राविका तुम गुरु सिर मोड ॥

भक्ति कर वस कर वहां लाय। कोणिक अपना काम ५
निमितो रूप कर पुर में आय। लोक पूछे यह विघन
सो कहे पाडो थुभिका अभी यह।अभी उपसर्ग टले

दोहा—श्रीमुनि सुव्रत श्वामीका। नाला गडा उसस्थान
उस थुभ की महिमाकरी। कोट न ढींगा को मान

चोपाइ

भोले लोक खोदी थुभ उसवार।पडा कोट सेना आइ
चेड।नृप करन लगे आतम घात। भुवन वासी सूर उठा
वहां संथारा कर स्वर्ग गये। कर संतोप सो सुखीये भये॥
कोणिक किया विशाला नाश।तो भी न फलीउसकी
फिरा दूहाइ चंपामें आय। राज तृष्णा वृद्धिअति पाय॥
कल्पित चउदह रत्न बनाय। आप बने चक्रवर्ती राय॥
ले सेना साधन चले छे खंड।वस किया मध्य खंड घमंड॥
आये जब वैताढ गिरीपास। तिमस गुफा खोलन क
द्वार ऊपर करे दंड प्रहार। रक्षक देव तब कहे नाकार
नहीं मानी ज्वाला प्रगटाय। सेना युत्त राजा भस्म
कोणिक संची पाप अपार। उपने छट्टी नरक मझार॥
बावीस सागर सहेगा संताप। देखो जबर कैसा

दोहा—ऐसा जानी भव्य जन तजो लोभ दु...
द्रढ़ संतोप धारण करो जोसदा सुख दातार १



मंजिल नववां-"लोभ पापोद्वार"

उत्तरविभाग—"संतोष"

दोहा—सम से तोषे आत्म को। सो संतोष गुन खान ॥
तज तृष्णा द्रढ सहाही है। अहो सुखे छुप्रान। १

चोपाइ

पहिले लोभ के दुःख दर्शाये। उनसे छुटन को जो चहाये ॥
सो सन्तोष धरे मन मांय। निश्चय विचार करे द्रढ ताय ॥ २
जो जीव पुण्य कमा के आया। अनु भाग बांध कर लाया ॥
मुद्दत पूरे उसही प्रमाने। मिले सामग्री नहीं संदेह जाने ॥
नाहक जीव तूं इन उन धावे। नाहक जीव तूं पाप कमावे ॥
नाहक जीव तूं करे अनीति। नाहक जीव धरे विप्रीति ॥ ४
हिंसा किये जो कदाधन होवे। तो कषाइ क्यों टोकरे ढोवे॥
झुठ बोले जो लक्ष्मी आवे। तो लवाड क्यों जग में भंडावे॥

चोरा किये जो मिलता पैसा।तो चोर देख सुखो है कैसा।
पापो पाप समाप्ति कहते । तोभी भोले भेद न लेते
जो आत्म तूं हुवा है ज्ञानी।तृष्णा-को जानी दुःख खाणी
तो ले यों संतोष चित ठानी। जो तुझ होयसदा सुखदानी

संतोषीकी भावना—मनहर छंद

रेमन विचार यार।सुखी दुःखी को संसार॥
संतोषी के तृष्णा।वार । तूं ही निरधार रे॥
तृष्णा वंत गोता खावे। संतोषी सो स्थिर रहावे॥
पाना सो तो दोनो पावे । जब पुरे करार रे॥
विन अंतराय टूट । लोभी कहां से धन लुंटे॥
मिलत संयोग तब । आडा को आनार रे॥
निश्चय नय योंहि धार ।ग्रह ले संतोष सार॥
अमोल विचार मेरेआत्म । सुख कार रे ॥ ८ ॥
नखराली नारी जैसा लक्ष्मी का स्वभाव धारी
मनाये रीसाय त्यागे आय ताके लार है॥
भये तृष्णासे दीवाने। मांगे मिलतनहींदाने ॥
छोडी माया भये साधु । ताको जय कार है ॥
संग्रह न कोडी ताके । हुकमे ममत छोडी ॥
दान ज्ञान दया मांहीं । खरचत अपार है ॥

लना २ बजत नलजत । महाराजा आगे ।
लोभके त्यागी कों तुलां अमोल निहार है । ९
मांइ पेट मांही भाइ, निल्यो तुझ लाय आइ ।
बाहिर पढत स्थन । छूटी दूध धार है ॥
जठर बन्ही से बचो । पोषा अंग तन मचो ॥
बोलत न जान्यो तो लो पाल्यो परि वार है ॥
अब कहा सोचे नर । भरे पेट हर तर ॥
बोलत चालत कमावत शक्ति सार है ॥
येही मन विचार । लेउउ संतोष धार ॥
अमोल जग मझार । कमी न लगार है ॥ १० ॥
पशु बन चारी, पक्षी खग तल विहारी ॥
जल चारी बंध डारी । शीत संताप के धारी है ॥
नहीं जागारी निहारी । नाल की नहीं लगारी ॥
संग्रह नहीं कोइ धारी आवे नित्य करण अहारीहै
ताहे चक्र धारी, मिल पोषत है परीवारी ॥
यह प्रत्यक्ष निहारी । तजो लोभ इच्छा चारी है।
तूतो नर है करारी । घर धन जन धारी ।
काय सोचत लाचारी । होय कर मग नारी है॥

इन्द्र विजय

जो अधिको भयो संपति धारक । तामें कहो केसी
वो नहीं। चांदी की रोटी खावत । सुवर्ण शाख मोती कामिलाई
खावत अन्न सो माल मशाले से । तोड गरी चीसी नहीं
यों विचार ले धार संतोष को। ते दोनों भव है सुख दाइ
संतोषको नंदन वन भाख्यो । आनंद मांहे सदा मन रहावे
संतोषं परमं सुखं कहते । चिन्ता दुःख तस पास न आवे
संतोषं श्रेष्टं धन कहा वली त्रिजग राज को ते नहीं चहावे
संतोष को शास्त्र प्रशंसत । महा पुण्ये संतोषही आवे ।।११

कथा—अठारवी

संतोष के फल बताने वाली—"सोमचंदकी".

दोहा—अनंत जीव संतोष धर । पाये सुख अनंत ॥
तो भी जन मन बोध ने । सुणी हुइ कथा
सोमचंद दरिद्री हो । धन पाइ त्याग्यो लोभ
तो थोडेही काल में । हुवा श्रीमंत वधी शोभ॥

चोपाइ

भूमी भाग एक ग्राम मझार। सोमचंद वणिक रहे नार ॥
पुफा नामे गुण वन्तो नार। मोती चंद पुत्र सुखकार ॥ ३
द्रव्य हीन पूर्व भव के पाप। छोटी झोपडी में रहे आप ॥
उस के किये हैं तीन विभाग। एक भाग में व्यापार जाग
एक विभागे भोजन निपाय। एक भाग आया आदर पाय॥
क्रियाणाका करे व्यापार। प्राप्त ऊपरर संतोष धार ॥५॥
एकदा लाभरुचि मुनिराय। चातुर्य मास करन कों जाय ॥
मारग वृष्टि अचिन्ती थाय। भूमी भाग सो ग्राम देखाय ॥ ६।
शीघ्र आया वणिक घर जाय। ले आज्ञा तहां ऊभा होय ॥
तीन दिन वृष्टि एक सी रहइ। चोमासी प्रति क्रमण वक्त थइ
सोनचंद से मुनिवर कहे। कहो तो चौमासो इहां हम रहें ॥
तीजा भाग की आज्ञा दीनी। मुनि चोमासी तपस्या कीनी
तीनों मुनिराज की भक्ति करे। धर्म कथा वक्ते श्रवण धरे॥
सील्या ज्ञान गयो हृदय भीज। जाण्यों धर्म एकतत्त्व बीज
यथा शक्ति तिहूं तपस्या करे। तप के दिन व्यापार परि हरे।
और भी बहुत क्रिया पच्चखाण। लतू गुरु नेटेही प्रमाण ॥
यों सुखे चोमासा पूर्ण भया।विहारकरण मुनिश्वर जब थया॥
करे विनंती तीनों ने बागकृपा कर लीजीये शुद्ध आहार॥
चोमासी पारणा मुनि नहीं किया। तीनों हृदय हर्ष अतिभयो
पहोंचावन तीनों मुनि को जाय।अठन तर दिया नोंतटाय॥
मात पुत्र छटन तप धार।दोनों आये निज घर निरद्धार ॥

निश्चय मुझको मारन काज । यहउपाव रचाइनआज ॥
परन्तु मारूँमें उसकोजाय।वोकिया जाने मुझे मननांय ॥
यों चिन्ती वोचलउठाय । घबराता निजघरपरजाय ॥
सोमचंद घरकीछतफाड । उंडादिया चलुवर्णलाड ॥
लापीविच्छु कारे जानेजाय । अर्धातव रोतेवाहिरआय ॥
यहरस्ता देखताथा सोनार । परन्तु जरा नहीं सुनीपुकार॥

दोहा– छतफाडके लक्ष्मी । पुण्यारूघर आय ॥
यहकहेवतऐसे मिली । संतोषी धनपाय ॥

चोपाइ

मोतीकहे क्यापडेगीछत ! फटीदिखे पडेनहीरत ॥
सोमकहे निर्भयरहोभाइ । रखेजागे कोइदुःखपाइ ॥
सुनतीनो संतोषमनधार।दिखतप्रकाश हुवा उसवार ॥
प्रतिक्रमणकर निवृतथाय । पोपापार देखे वहांआय ॥
सोनैया ढग देखविसमाय । आइलक्ष्मी कैलेफेंकीजाय ॥
चेलपिछान सोमचंदकहे । यहवोहीदिखआयामए ॥ ३० ॥
छोडआया तोपडाघरमेंआय । लक्षपुत्रा प्राप्तवस्तुनहींजाय॥
यत्नकर रक्खाघरमझार । अबंभीचुपक रहासोनार ॥ १३॥

दोहा– एकदिनचलने उन प्रानमें।मोटीहवेलीबंधाय॥
नीचीबनाइ देखके । सोमचंद कहेजाय ३२ ॥
यहजागा है मुझनजी । ज्यानें लेनेधवा ।

सोसमजो हांतीकरे । देवनेगतेमन॥ ३४।
स्वल्पमोल उसनेकिया । दियानवहीलाव ॥
विस्मित होयजगादीवी । वडेवचन न[illegible]

चोपाइ

सोमचंद ले धन परिवार । सुख से रहे हवेली मझार
वहूत जन को धन आश्रय देय । जैन धर्मी उनको [illegible]
सिखाया वहूतों को ज्ञान। दिलाया वहूविद्या दान॥
तोपे वहुत दुःखियों के तांय। दान पुण्य रु धर्म फैलाय
कीर्ती गइ सहु गामे पतर।सव करे सोमजी का आदर
द्रव्य वहां सर्व सुख प्रगटाय।सवसे वडा है धर्म [illegible]
दोहा—केते काल के आंतरे । लाभ रूची मुनिरा
फिरते आये उस मार्ग में श्रावक यादज आय॥
पूछे आकर ग्राम में ।सोमचंद कहां रेय ॥
वताइ हवीली मुनिदेखी हर्षेय ॥ ३९ ॥

चोपाइ

सोमचंद देखी गुरू राय । रोम २ नस गये विकसाय
तत्क्षण आया सन्मुख धाय । ढुली २ नमस्कार कराय
पुष्पामोर्ति भी दोडे आय। वंदे मुनि अति उमंगाय ।
और भी वहुत मिले नरनार ।सविधी सव करे नमस्कार।

ख मुनिश्वर अतिहर्षाय ।इतने जैनी कैसे हुवे इसठाय॥
ोमसाती कहे आप कृपालाम ।धर्म मे समजा गामतमाम ॥
ुखस्थान उतारे मुनिराय । चउदह प्रकारने दान वहराय ॥
नव भक्ति करे अन्यपेकराय । धर्मका प्रत्यक्षफल जनाय ॥
ाद्बोध सत्गुरु सुनाय ।सत्य धर्म जन मन ठसाय ॥
ुवा बहुत सा वहां उपगार । हुवा बहुत सा धर्म प्रसार
साधु सती आवे अब घने । तोपे सब को आदर पने ॥
भेद भाव किंचित नहीं धरे ।यथाशक्ति सब की सेवा करे॥
यों धर्म उन्नति बहुतही करा। स्वर्ग गये आयू पूर्णअवसर ।
आगे पावेंगे मोक्षका द्वार । कथा कथी है सुने अनुसार॥

दोहा– सोमचंद तृष्णतजी । तजीभजीतससरिद्ध ॥
धर्मवृद्धिसे वृद्धहो । पायासुखसमृद्ध ॥
जानो ज्ञानी इसतरह। धारो थिर संतोप
धर्म उन्नति वृद्धी करी । होवो सुखी सब तोप ॥
निज पर आत्म सुख वरन लोभ पाप उद्धार॥
ऋषि अमोलख ने रचा। यह नववां अधिकार ॥ ९ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
संप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलख ऋषी जी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
लोभ पापोद्धार नामे
नववांमंजिल

समाप्त

राग के भेद-भेद- मनहर छंद.

राग के हैं दो प्रकार । प्रसस्त अप्रसस्त धार ॥
पुण्य पाप बन्धन का । कारण दोनों जानीये ॥
धर्म गुरू धर्मात्म ज्ञानी गुणी तपी नरन ॥
धर्मोन्नति का जो राग प्रसस्त बखानी ये ॥
कुटंब स्वजन धन । गेह भूषण वसन ॥
इत्यादि पुद्गली राग । अप्रसस्त मानीये ॥
वीतराग दोनों तजे । धर्मी तो प्रसस्त भजे ॥
धर्म वृद्धि होवे तोही आगे सुख दानी है ॥ ३

रागके लक्षण-मनहर छंद.

राग अपनात तोही । येही वस्तु मेरे होइ ॥
रखे यह विनाश पावे । तो मैं कैसा करूंगा ॥
यथा शक्ति वेदो वस्त । करे तन देवे कष्ट ॥
चोरादि से रक्षण तीजोरीदी में धरूंगा ॥
ताला पहरा आदि । कर धरत तनादि नर ।
वक्त पडे काम आवे । जाने नहीं मरूंगा ॥
ऐसे रागी वस्तु काज । अरना करे अकाज ॥
देखत भूलत म्हल । देही में उछलूंगा ॥ ५ ॥

रागसे दुःख-मनहर छंद

राग है दुःख का धाम । राग है चिन्ता ..
रागी तोहो ते गुलाम । निज आपा खोवे है
रागी करे हाय हाय । रागी चहू बाजू धाय ॥
रागी जग को मनाय । सर्व सुख जोवे हैं ॥
रागी के है काम काज । रागी के नरहे लाज
रागी ही करे अकाज । नर भव विगोवे है ॥
राग की शक्ति अगाध । बन्ध संसारीक साधु
रागसे भोगे असमाध । भवो भव रोवे हैं ॥
केइ मरे जग मांय । ता का सोग नहीं आय
अपने का शिर दुःखे । नींद नहीं लेते हैं ॥
केइ वस्तु नाश होय । उसकी चिन्ता करे .
अपना वस्त्र जो छिदे । तोही बुरा केते हैं ॥
केइ दुःखे टल चले । ताकी तोन तास करे ॥
अपना प्यासा जो होवे । तहां पून देते हैं ॥
अब जहां है आपदा । येही जानो जन सदा
राग अनेक रूप धर । जग दुःख देते हैं ॥ ९

रागमें प्रत्यक्ष दृष्टान्त-द्रुमविजय छंद

त डुब की जल के अंदर तन पर नीर अथग फिर आवे॥
नी उसका वजन नहीं लागत। कारण आपा नहीं जनावे
भरी यो धरी शिर ऊपर। सोही जल भार भूत हो जावे ॥
अपना तहुवा दुःख दायक। अमोल रागयों दुःख देखावे॥

कथा-उन्नीसवी

रागके फल बताने वाली—"पुष्प नन्दी राजा की"

दोहा—राग वसे दुःख जगत् में। पारहे जीव अनंत ॥
विपाक सुख आधार से। कहू पुष्प नंदी विर तंत॥

चोपाइ

इड नगर वैश्रमण राजान। पुष्प नन्दी कुमर गुन वान ॥
पधारे महा वीर भगवान। गौतम गोचरी आये नगरस्थान
में एक आश्चर्य देख। मनुष्य एकल जमे विशेख ॥
नारी मध्य महा रुपवंत। कान नाकादि उस के छेदंत
म आये महावीरजी पास।करआलोचन करे अरदास ॥
कर्म से वो नारी दुःख पाय।दोनों भव दीजीये फरमाय

पुष्पनन्दी कुमर जोग जान । सेठपास भेजा प्रधान ॥१२ ॥
शेठ सुनीआनंद अतिशय । देवदत्ता शिवकार्ने बैठाय ॥
स परिवार आये राय पास । भेट करी कुमर जी की तास
शुभ मुहुर्त पाणिग्रहण कर । दंपति सुख भोग में रहेविचर
वे श्रमण राजा मृत्यु पाय । पुष्प नन्दी जब गादी बैठाय
श्री देवी पुष्प नंदी की मात । ताकी भक्ती करे दिन रात
घडी फजर आकेर नमस्कार । स्नान कराइ कराय सिणगार
भोजन कराइ दाबे पाय । जाय शभा में जब निद्रा आय॥
यह अहोनिशि राजा का कर्म विनीत पुत्र का यही हैधर्म
मात भक्ति में पुत्र मग्न भया । देव दत्ता मन में दुःखलया
भोगी न सकुयइइच्छित भोग। किसीविध कहं माताकावियोग
एकदा श्री देवी निद्रित जोयाउसके पास अन्य नहीं कोय॥
शीघ्र लोह दंड उष्ण कर लायाश्री देवी की योनी में फसाय
कर आक्रन्द मरीवो उसवार । दासी राजा से किये समाचार
मात वियोगअति दुःखी भया। मृत्यु कार्य कर आतुरतथया
भट पास देव दत्ता पकडाय । कान नाक ताकी छेदाय ॥
आजही देखेंगे शूली चडाय । पूर्व संचित फल यह पाय ॥
यहां से नर प्रथम नर के जायातीर्यंच वनस्पती तेउवायु भाय
मृगा लोटिया परे बहु भ्रमी । पाप फल भोगेंगा रमी ॥२३॥
इम पुर शेठ धग पुत्रयह थान ।नंदन ले प्रथम स्वर्ग जाय॥
महा विदेह में नर हो जावेंगामोक्ष देवा भव्यो गान केदाय।

भगवंत कहे इस भरत मझार।सुप्रतिष्ट नगरसूख कार ॥
महासेन नामें तदां राजान।सहस्त्र राणी रुप गुणवान ॥५।
सिंहसेन कुमर गुनवंत । युवराज पट्ट तस थापंत ,
पांचसो राणी उसे परणाय । पंचइंद्रि के सुख विलसाय ॥
स्यामा राणी रुपवंत गुणवंत।सिंहसेण उसीसे मोह धरंत।
चार सें नवाणुव दुःख पाय । स्यामा को मारण चिंते उपाय
यह वात श्यामाराणी जान। सिंहसेन आगे किया वयान ।
सिंहसेन सब को मारनकाम।गाम बाहिर एक बनाया धाम
क्रिडा करण सब राणी बुलाय । नशायुक्त तस आहार कराय
रात कोसव पडी मुरछाय।भूवन चोफेर दी आग लगाय॥९।
चारसो निन्यणव सपरिवार । वलमरी उसभुवन मझार।
अहोरागवशकिया जुलम । ऐसाहै यहरागविषम ॥१०।
दोहा– सिंहसेण ऐसेपापकर । छट्ठिनिरक उपजाजाय ।
वावीस सागर महादुःख सहे।रागफल भुक्ताय॥११।

चोपाइ

ईसीही राहीड नगरमझार । दत्तसेठ कन्हाश्रीनार ॥
सिंहसेण नरकसें नीसरी । पुत्रीपने यहांआय अवतरी ॥
दवदत्ता रखा उसका नाम । रुपकला बहूगुणकीधाम ॥
हुइनव युवतीसज सिणगार । क्रिडाकरती गोंखमझार ॥
तहांनिकले वेश्रमण राजान । कन्यादेखी अमरीसमान ॥

पुष्पनन्दी कुमर जोग जान । सेठपास भेजाप्रधान ॥१९ ॥
शेठ सुनीआनंद अतिशय । देवदत्ता शिवकामें वैठाय ॥
स परिवार आये राय पास । भेट करी कुमर जी की तास
शुभ मुहुर्त पाणिग्रहण कर । दंपति सुख भोग में रहेविचर
वे श्रमण राजा मृत्यु पाय । पुष्प नन्दी जब गादी वैठाय
श्री देवी पुष्प नंदी की मात । ताकी भक्ती करे दिन रात
वडी फजर आकर नमस्कार । स्नान कराइ कराय सिणगार
भोजन कराइ दाबे पाय । जाय शभा में जब निद्रा आय॥
यह अहोनिशि राजा का कर्म विनीत पुत्र का यही हैधर्म
मात भक्ति में पूत्र मग्न भया । देव दत्ता मन में दुःखलया
भोगी न सकूयह इच्छित भोग॥किसीविध करे माताकावियोग
एकदा श्री देवी निद्रित सोयाउसके पास अन्य नहीं कोय॥
शीघ्र लोह दंड उष्ण कर लायाश्री देवी की योनी में फसाय
कर आक्रन्द मरीवो उसवार । दासी राजा से किये समाचार
मात वियोगेअति दुःखी भया॥ मृत्यु कार्य कर आतुरसथया
भट पास देव दत्ता पकडाय । कान नाक ताकी छेदाय ॥
आजही देवेंगे शूली चडाय । पुर्व संचित फल यह पाय ॥
यहां से मर प्रथम नरक जाया। तीर्यंच वनस्पती तेउवायु थाय
मृगा लोढिया परे बहू भ्रमी । पाप फल भोगेगा रमी ॥२३॥
इन पुर शेठ घर पुत्रयह थाय ।संयम ले प्रथम स्वर्ग जाय॥
महा विदेह में नर हो जावेगामोक्ष।देवा भव्यो राग केदोष।

दोहा—राग रसिक जो जीवडा। ऐसा करे अकाज ॥
विंटवणा बहू भम लहे। सिंह सेण ज्यों राजा२५॥
ऐसा जान सुखार्थी यों। तजो राग महाभाग ॥
सदा सुख दायक भजो। ऊक श्री वैराग ॥ २६ ॥





मंजिल दशवां—"राग पापोदार

उत्तर विभाग-"वैराग्य"

दोहा—जो निवृते राग से। द्वेष मन नहीं लाय ॥
सोही भाव वैराग्य है। छुटु कर्मो को आव ॥१॥

चोपाइ

वैरागी जग रचना निहार। अनित्य असरण जाने संसार ॥
जो जो वस्तु देख मोह आय। अंतर गुन सांन लय लाय॥२॥
जिस वस्तु का स्वभाव पलटाय। उसपर राग कैसे स्थिर रहाय
जो करेतो निभे नहीं राग। आपही हो वैराग्य दुःख दाग ॥३
यों ज्ञान पहिले वैरागी वनो। जिससे सुख सदा रहे मन वनो
एकही भाव सदा सुख दाय। न पलटाय न कोय दुभाय ॥ ४

वैरागी की भावना—मनहर छंद

असुची शरीर । भरा मांसरु रुधीर ॥
नशा जाल हाड पिंड । मल मूल का भंडार है ।
अच्छे भोजन खवाय । तेतो विष्टा होय जाय ॥
पावे शरवत नीर । सो तो वहे मूल धार है ॥
अच्छे वस्त्र भूषण । तन लगे होय खीन ।
जग मांहे सर्व वस्तु । करे तनहीं विगारहे ॥
ऐसे ओगन की खानी । ज्ञानी शरीर को जानी
नहीं राग भाव आनी । सो अमोल सुखि सार हैं
मात पिता भाइ वेन । काका मामा भूवा सेन ॥
मासी मासा भाभी व्यान । सुत सुता कन्तना
स्वजन सगे स्नेही । मित्र आदि मिले केइ ॥
मतलवे आदर देइ । जाने तुझ को आधार हे ॥
खाँड गले भग आवे । गाँड गले भग जावे ॥
ऐसे प्रत्यक्ष देखावे । केसो कुटूंब को प्यार है ॥
ऐसे जग जन जाणी । निसंगी रहे त ज्ञानि ।
नहीं राग भाव आणी । सो अमोल सुखी सारहे।
वाग वाडी गुलजार । घर हाट रंगदार ।
पइसा रुपाइ दीनार । भरा अनाज भंडार हे ॥
धरे भुषण बहु मूल्य । भरे वस्त्र भी अतुल्य ।
गज गाजी रथ आदि । वसे ऋद्धी अपार हे ॥
पन हीयमे विचार । यह तो प्रत्यक्ष हे भार



मंजिल दशवां—"राग पापोदार

उत्तर विभाग-"वैराग्य"

दोहा—जो निवृते राग से। द्वेष मन नहीं लाय ॥
सोही भाव वैराग्य है। हलु कर्मी को आय ॥१॥

चोपाइ

वैरागी जग रचना निहार। अनित्य अशरण जाने संसार ॥
जो जो वस्तु देख मोह आय। अंतर गुन तामें लय लाय॥२॥
जिस वस्तु का स्वभाव पलटाय। उसपर राग कैसे स्थिर रहाय
जो करेतो तिने नहीं राग। आपही हो वैराग्य दुःख दाग ॥३
योंजान पहिले वैरागी बनो। जिससे सुख सदा रहे मन तनो
एकही भाव सदा सुख दाय। न पलटाय न कोय दुभाय ॥ ४

वैरागी की भावना—मनहर छंद

चौपाई

अति सुंदर अयोध्या नगर । हरीसिंह राजा सुख कर ॥
शीलवती राणी पद्मावती । पृथ्वी चंद्र कुमर शुद्ध मति ॥२॥
सर्व कलामें निपुन कुमार ॥ एकदा बैठा गोख मझार ॥
रस्ते जाते देखे मुनिराज । रुप सदा कुमर को लगाज ॥ ३ ।
इहापो देतां कर्म खपाय । जाति स्मरण ज्ञान जब पाय ॥
संयम पाला स्मरण भया । विषायानु राग तत्क्षण गया ।४ ।
श्रृंगारिक तजे उप चार विचार । संवगी शुद्ध पाले आचार ॥
राज काज से मन फेरीया । ज्ञान पठन मनन चित दिया ॥'
मुनि दर्शन अवसरे अनुसरे । माता पिता की भक्ति करे ॥
यों देखी राजा करे विचार । शून्य मति क्यों भया कुमार
राज पुत्र के लक्षण नहीं । मुनि पुत्र पर यहतो रही ॥
कैसे निभावेगा राज का भार । खे राज जावे यह हार ।७
संसारनु राग जगावे काम । पर णावुं नारी गुन धाम ॥
जाति कुल रुप कला श्रेष्ट जोयाआठ नारी जाची तब सो
देख प्रथवी चंद्र करे विचार । धिक २ राग जबर संसार ॥
मुझ रागे मुझ विना दुःख होय । मुझेह फांस फसावे सोय।
ना कहुं नहीं मानेगा लगार । इस लिये लग्न करुं एक वार।
जो हो वेगी दृढ धर्मी नार । तो तजेगी मुझ संग संसार ॥

वैराग्य भाव आठ नारी वरी । शयन सदन बैठे ध्यान धरी॥
आठों देख अति आश्चर्य भइ । नम्रहो ललित वचन से कही
दोष हमारा प्रकाशो नाथ । क्यों नहीं करते हम रंग बात
म्होंख कटाक्ष हाव भाव देखावे । कोकिला करी राग जगावे
त्यों त्यों कुवर का बढे वैराग्य । नारियों बोधन कहे महा भाग्य
यह तन क्यारी आफुकी जान । वर शोभे अन्दर भरा धान ॥
किंपाक फल जैसे हैं भोग । परिणामे दुःख भोगवते मन्योग।
तृप्ती न होवे भोग कोइ वार । सागरों वंध वीतेस्वर्ग मझार ॥
मोक्ष मार्ग कोविथन कर तार । मैंतो कभी नहीं करूं अंगीकार
तुमभी इच्छो आत्मिक सुख । यों कही मून रही तव मुख॥
वैरागीणी आठों करे अरदास। हम भी नहीं फसें मोह फांस
चारित्र लेंगी रजा दीजीये । हर्षी कुंवर कहे जरा सुख रीजीये
नवही दम्पती नित्य धर्म करे । राजादि देख अति आश्चर्य धरे
यों किये तो नहीं सुधरा कुंवार । राज देकर रचावुं संसार ।१७
राजो स्तव नृपति जब करे । कुंवर तबै दाश्चर्य चित्तधरे ॥
ममजाया नहीं समेज राजान । अवत्तर देख नाती तात वान ॥
जल कमल वत् राज जो करे । धर्मोन्नति प्रसारण अनुसरे ॥
वंदी खाने सब खाली किये । देशमे अमारी पडहवाजा दिये।
यथा राजा तथा प्रजा थाय । धर्म फैला सर्व देश के मांय ॥
धर्म धन जन्म पाया प्रमान । ऐसे ममार में रह भले मान।
दोहा—द्वार पाल आ वीनवे । विदेशी व्यापरी आय ॥

आप भेटण उमंग धरे । नृप लावो फरमाय २
ते आकर लुली २ नम्यो । पूछे पृथ्वी चंद ॥
कहां से आये किस कारणे । कहो तुम सर्व सम

 चोपाइ 

शेठ कहे स्वामी सुनो विरतंत।गजपुर नगर से में आवंत
वहां देखी एक आश्चर्य काम।सोही यहां भी देखुंगा स्वाम
रत्न संचय शेठ गजपुरे रेह । गुण सागर तस पुत्र गुण गेह
मुनिदर्शने जाति स्मरण पाय । दीक्षा ग्रहण तात रजामंगा
तात कहे तेरी स्यादी जो करी।।आठों नारी लावो पहिलेव
फिर तुझ इच्छा सो कीजीये।इतना कहा मेरा मानीजीये
अवसर देख कुमर माना वचन।कहाया कन्या तात सेतक्ष
कन्या पिताने कन्यासे किया । हर्षी उनने येउत्तर दिया
सतीयों के होवे एकही भरतार।हमने लिये गुनसायर धार
वो सशक्त तो हमें लेजाय । हम सशक्त तो रखें घर मांय
सुन सब हर्षे उत्सव मंडाय । वर राय वैठे मंडप में आय
आठों पास वैठ कला करे । गुन सागर धर्म ध्यान चितधे
वैठे नाशाग्र दृष्टि लगाय।लय लीन बने अध्यात्म मांय ॥
चिंते जो मे लेता संयम भार । तो करता तप जप इसवार।
कर्म खपाता ब्रह्मानन्द चीन।लेखे लगते मुझ निशीदिन ॥
पूर्व भव में जो पढा था ज्ञान। उसका प्रगट आत्मभान ॥

अपूर्व उपयोग शुक्लहुवा ध्यान।घातिक कर्मका करेघमशान
अ.ठों नारी पति ध्यानरत्त जोय।तानन्दाश्चर्य वैरागीणि होय॥
अहो अप ने तो हैं अहो भाग्य।पनि मिले भव तारण की लाग
साथही लेवेंगी संयम धार। साथही जावेंगी मोक्ष मझार॥
ऐसीउत्कृष्ठ लगी एकही लगन।घन घाती कर्मलागे भगन।
नवही पाये जब केवल ज्ञान। देव दुंदर्भी बाजी नभ म्यान॥
देव वृंद वहां प्रगट थाय। नवही साधु सति भेष सजाय॥
सुर रचित सिंहासन बैठ भगवन्।सतीयों सन्मुख बैठाहर्षधन
दिग् मुढ विस्मितबने सब लाग।एकाग्र रहे रचना छोग ॥
रत्न संचय सुमंगल दोड आय।देख रचना सो संवेग पाय॥
पूरपति श्री शेखर सपरिवार। आकर वंदे संत सती चरणार॥
मैंभी जान गया वहां चाल। आश्चर्य कारक देखा सब हाल॥

दोहा—केवली मुझ उद्देशी वदे। सुधन तूं अयोध्या जाय॥
यहां से आश्चर्य अधिक तूं। वहां देखेगा शभामांय॥
शीघ्र आयाहूं इहशभा। देखें क्या आश्चर्य होय॥
इम कही सो चुप रहा। उत्सुकता घर सोय॥

चोपाइ

यों सुनी पृथ्वी चंद्र नराधीश। मन माहे जागी अधिक जगीश
धन्य२ गुण सागर सह कुटुंब।ज्ञगमाग्र नें टाला सर्व विटंब॥
धिक्कार २ होना मुझ मांय। जान कर फसा राग फास मांय॥

अब मैं त्यागूं सर्व संयोग । सुपंथ वरू आदरू योग ॥ ४० ॥
ज्ञान का ध्यान करूं लूं तत्व चीन । ऐसे बने ध्यान में लीन ।
पूर्ण घट में भग वैराग्य । भाव बाह्य अभ्यन्तर त्याग॥४१॥
अपूर्व करण निर्वेदी अकषाय । होतेही घातिक कर्म खपाय
केवल ज्ञानी पृथ्वीचंद्र भये । सुर आइ साधु लिंग दये ॥
देव दुंदभी गगने गरणाय । नर सुर बहुतही भेलेथाय ॥
आठों स्त्रीयों तहां दोडी आय । देख केवली केवल सो पाय ॥
हरीसिंह पद्मावती आयंत।केवलीदेख आनंद पावंत ॥
सुधन सार्थ वाह आदि सब ।सानदाश्चर्य हुवे अब थब ॥४४

दोहा—पुछे हरीसिंह रायजी । कहो श्री भगवान ॥
हम मोह आप में अति जगे । क्या कारण पेछान

चोपाइ

केवली कहे सुनो राजेश्वर । तुम हम प्रीती पुर्व भव सर ।
चंपानगरी जय नाम राजान । तुम ये राणी प्रियमती मान
में थापुत्र कुसुमायुध नामा तीनों लिया संयम वैराग्य पा
करणी कर तीनों गये विजय विमान में ऊपना सर्वार्थसिद्धम्या
वहांसे मर यहां अनुक्रमे अवतरे । पुर्व भव स्नेह यह वृद्धिक
पोंचुराजाराणी।जातिस्मरण पाया।भाव चडनाकेवली सोपाय
साधु सती लिंग देवता दिया । इग्यारेजन केवली भया
अतिही आश्चर्य रहा फेलाय।भव्य जीवोंके हृदय उमंगाय
दोहा—सुधन सार्थ वहांनमी । पुछे कहो भगवंत ॥

गुणसागर जिन आपका । एकसा क्यों चिरतंत ॥

चोपाइ

पृथवीचंद केवली करे उचार । अहो सुनो सुधन साहूकार ॥
गुण सागर पूर्व भव मझार । काम युद्ध था मेरे कुमार ॥५१
यह आठोंहीथी मेरी नार । वो आगे उसकी नार धार ॥
सब जन लीना था संयम भार।सबउपने अनुत्तर विमान मझार
यहां आ मिला एसाही संयोग । तोतो सब लिया तुम छोग ।
इस भवमें सब हुवे एक सार । आगेही है सुख अपार ॥५५
यों सुन सर्व शभा हर्षाय । त्याग वैराग्य बहूतेही थाय ॥
साधु सती सब किया विहार। जन पदमें किया बहू उपकार॥
कर्म क्षय कर अजरामर भये। राग त्याग के चरित्र कहे ॥
धन्य पृथवीचंद गुणसागर। सपरिवारे वंदू सिर कर ॥ ५५

दोहा—देखो राग के त्याग से । कैसे हुवे महा भाग्य ॥
ऐसा जान शिव अर्थी यों । सदा रमो वैराग्य॥ ५६
निज परात्म सुख वरन । राग पाप उद्धार ॥
ऋषि अमोलक ने रचा । यह दशवां अधिकार।९६

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित अपोद्धार कथागार का रागपापोद्धार नाम दशवां मंजल

समाप्तम्



मंजिल इग्यारवा—"द्वेष पापोद्धार"

पूर्वविभाग—"द्वेष"

दोहा—दूसरा बंधन द्वेषका । कहा श्री जिनराय ॥
राग में नीमा द्वेष की । द्वेषे राग भजनाय ॥
रागी से द्वेषी अधिक । संचय अशुभ कर्म ॥
रागी धर्म समाचरे । द्वेषी न जाने मर्म ॥ २ ॥
इस लिये अहो भव्य जनो । द्वेष महा दुःख दाय।
द्वेष तजे नहीं जहां लगे । तहां लगे सुख नहीपाय।
द्वेर विरोध कलुषता । मत्सर घृणा आद ॥
अनेक नाम कहे द्वेषके । उप जावे असमाद ॥ ४

चोपाइ

द्वेष बंधन से बंधे जो जीव। बहु नहीं पाते जगत् में रीव ॥
संकल्प विकल्प मन सदा रहे। द्वेषाग्नि गुण गण को दहे ॥
द्वेषी को जो जो वस्तु देखाय। गुण को तज दुर्गुण सो सहाय
सर्वस्थान अनिष्ट सो जोय। ना चित्त शांति कैसे होय ॥
किसी स्थान न रहे तासु मिलाप। गुण करते मिले अपयश छाप
यों होवे द्वेष से दुःख अनेक। सुखार्थी द्वेष तजो धरि विवेक॥

द्वेष के प्रकार—मनहरछन्द.

द्वेष कहे दो प्रकार। देखाने जगत् मझार ॥
प्रशस्त अप्रशस्त। परिणामों से जाणा है ॥
पुत्र शिष्य आदि भणी। हितशिक्षा देवे घणी ॥
न माने कटु वचन। प्रहार भी ठाणा है॥
सो कहा प्रशस्त द्वेष। परिणामे हितरेष ॥
शत्रु अन्यायी पर अप्रशस्त द्वेष माना है ॥
दोनों दोनों भव अयोग्य। इसलिये तजने जोग।
नहीं सुख द्वेष से है। हृदय पेछाणा है ॥ ८ ॥
भोलनार पुत्रनार। जाने में देता सुधार।
परन्तु अधिक बिगार। करत अनाणा है ॥
जो ला नमझ निधा मांही। नोलो सुधा गही थाइ ॥
रत्न मोर मुझ नाइ। भय ऐसा आणा है ॥
मारने इतर जाय। मारने में मुझ नाय।

कथा- इक्कीसवीं

द्वेषके फल बतानेवाली-"दुर्योधनकी"

दोहा- द्वेषप्रभावे जगत्में । पाते दुखअपार॥
दुर्योधन कोटवालज्यों । विपाकसूत्र अनुसार॥१॥

चोपाइ

मथुरा नगरी श्रीदामर राजान । राणी बंधुमती रूप गुण खान॥
नंदी वर्द्धन कुमर गुणवंत।यौवनमद छकीलो चितवंत ॥२॥
पिता तरुण मुझ कब मिले राज।कोइ उपाय सें हननाज
राजा का विश्वासु नाविक । चित्र नाम भरोसे बंध ठीक ॥
अंत उरादि फिर सर्वस्थान।आजीविका बहुत दी राजान॥
उसे कुमर निजमंत्री बनाय।विश्वासी मनकी बात जनाय
राजा मार दिला राज मुझ । आधा राज मैं देवुंगा तुझ ॥
नाविक मानी बात उसवार।फिर उस के मन हुवा विचार
राजेश्वर कभी जाने यह बात।तो सह कुटुंब को मेरी घात॥
इसलिये राजा को पहिले कहूं।तो अखंडित प्रेमी राजाका रहूं॥
एकान्त में नृप को कही निरवान।सुनो भूपती आसुरत्व घात ॥
तत्काल कुमर को कैद कराय।कहे यमराज देवुं मुझताय ॥
लोह सिंहासन लोहका भूषण । अग्नि में कराये अतिउष्ण ॥

सिंहासन नंदी वर्धन बेठाय।भूषण सब तस अंग सजाय ॥
सीसा तरुवा रस रूप उकाल।अभिषेक उससे करा उसकाल·
और विटंबना बहुतही करी।देखने लोक बहुत गया भरी॥
दोहा—ते काल तहां पधारीये । श्रीमहावीर जिनराय ॥
गौतम लेप्रभू आज्ञा । गौचरी ग्राम में जाय ॥
देख अभिषेक कुमरका । आश्चर्य अतिपाय ॥
वंदी पूछे भगवंत कों।किसकर्मे दुःख सहाय ॥११॥

चौपाइ

श्रीवीरजी कहे गौतमजी सुणीये।द्वेषके फल रहाहे लुणीये
इसी जंबुद्वीप भरत मझार।सिंहपुरके सिंहरथ सिरदार॥१२
दुर्योधन नामें कोटवाल ' महाद्वेषी पापी निर्दयीकाल ॥
कुकर्म कर हर्दिन होवेक्रूर । अल्प गुन्हे दंड करे भरपूर ॥
दंड के साहित्य रखने सजाय।निरंत्र जीवोंको संताप उपजाय
अनेक लोहकी कुंडीमांय।उकलता धातु का रस भराय ॥
कितनेक कुंडी में भराहे क्षार।अश्व गज उंटका मूत्र उकाल
खोडा बेडी श्रृंखल रु डोर । वांश वेंत छडी लता कठोर॥
पाषाण-गोला शिला मुद्गर।अनेक मंत्रही हैं यंत्र कल ॥
ताक बंदूक नली खड्ग तरवार।छुरी भाला बरछीरु कटार॥
गुप्ती फरसी कुहाडी खुरपलं।अनेक शस्त्र के किये दगले ॥
सदाही सोचे अन्य दुःख उपाव।निरंत्र प्रवर्ते मन द्वेषभाव

मारे परिवार दुःखे धन लूटे धनार्थी रौद्र ध्यान करे सदा चिंतन
चोर जार धनिक धूर्त ठगार। अन्याई अल्प बहुत गुन्हेगार
देखे सुने जाने नेमें आय। आप धरे सुभट से पकड़ाय ॥
धातु का रस उकलता पाय।नारी फांसी कर क्षार छंटाय ॥
बहुतों के छेदावे अंगोपांग। खोडा बेड़ी में दे ऊंधे टांग ॥
बहुतों के पांव बहुत कनउड़ाय।नीच कर्म कई पालकराय ॥
कितनेके अंग में खीले ठोकाय।कितनेको मुद्गल से चगदाय ॥
कितने को सूली में गडाय।कितने का तन शस्त्र से उडाय॥
दुःखातुर यों अकार्य करी। ऐकतीस सो वर्ष आयुपूर्ण मरी ॥
छठीनरक आयु बावीस सागर।भोगी विती बहुत दुःखभर
वहांसे मर यह हुवा राजकुमार।पापोदय हुवा लोटा विचार
साठ वर्षआयू आज पूर्ण करी।रत्नप्रभा नरकमें अवतरी ॥
मृगा लोढा परसनेगा संसार।मच्छ हो हस्तनापुरमझार ॥
मच्छी धर के हाथ से मरी।तहांही सेठ घर कुमर होकरी॥
धर्म सुन दीक्षा कर अंगीकार।सुधर्म स्वर्ग में ले अवतार ॥
महा विदेह में नर हो संयम लेय।मुक्ति पावेगा कर्म करक्षय

दोहा—दुर्योधन द्वेष करी।पाया दुःख अपार॥
एसा जानी सुज्ञ हो।द्वेष न करो लगार ॥ २६ ॥





द्वेष करने से कर्म बंधाय। उस का फल आत्मा भुक्ताय ॥
यों समजी सम धारो रे जीव। जिस से नहीं पावे कदा गीव।
एकही सन सर्व सुख दातार। विन महेनत इच्छित करतार

समभावी की भावना–इन्द्र विजयछंद.

वस्तु स्वभाव सो परिणमें चेतन्द।उस से बुरा तेरा क्याथावे
जो तुझ को सो खराब लगेतो।क्यो प्रणती तूं उनमें रमावे
जानी फसे विलसे तूं विभावको।स्वभाव में दुःख कौंप्रगनमावे
यह अज्ञान तजी भजी ज्ञान। तोही अमोल तुंहीं सुख पावे॥
वस्तु बिगडे बिगडे कहा तेरारे। वस्तु सुधरे सुधरे तुझ कांइ॥
ते तो परा धीन से पलटे पन। तूंतो स्वा धीन करे सो पाइ ॥
तूं बीगडे बिगडे सब बात हीं। तूं सुधरे सब होत भलाइ ॥
तेरेही हातमें बात चिदानन्द। वस्तु स्वभाव न तेरे बुराइ॥८
तूं चैतन्य ते जड रे चेतन्य। ता सगेसो तूंतो मत होवे ॥
तेरो स्वभाव नहीं पलटन को। आपणे हाथ आपो मत खोवे
जो तूं अनादी बुरो है ताही सो कर्म परिणती तोय बिगोवे
ताय फिरा रे गिरा निज भान में।अमोल सुख ता क्षण में जोवे

समभाव करने का विचार–मनहर छंद

ज्ञा ज्ञ जग नर नारी। पशु आदि कार्य कारी ॥
बुद्धि अनुसार सो सुधारो किया चावे है ॥

ता में जो बिगाड़ होय । ताका यश नहीं सोय ॥
कहाँ होण हार भाइ को मति चुकावे है ॥
जग बुद्धिवान ताका पेर्श के करे गुमान ॥
अनेक उपदेश देइ ताहीं को नसावे है ॥
काम को बिगाड़ कियो । नेनो भेद नहीं कियो ॥
इस यों अज्ञानी बना जग को फसावे है ॥ १० ॥
अरे अहमक बात तर काम में तूं लगा मान ॥
तेरे हाथ नुकसान काई जके चाहे है ॥
काहु नुस का देवा । नये तेरे मान कैसी आवे ॥
ताहि समझावे नहीं । अब भूल जावे है ॥
होके ऐसा बुद्धिवान । फक पे तू ही भूला ॥
कन बुद्धि भूल जाय । आउवे कहा जावे है ॥
अपना न पूछा जाइ । अनुभ अन्य के अखोई
इस यों अज्ञानी बना । जग को फसावे है ॥११॥
जो तू भया देह । तूं न को नहीं देह ॥
देहों पुण्य का फल था । फल हाँ ते पावे है ॥
[illegible] पुण्य [illegible] ॥
पुण्य [illegible] है ॥
पुण्य [illegible] है ॥
[illegible] है ॥
[illegible] ॥

द्वेष यों अज्ञानी वश जग कों फसावे है ॥ १२ ॥
गुरु गुराणी जो होइ, शिष्य शिष्यणी अवनीत जोइ
द्वेष भाव लाइ, निन्दे दुःख उप जावे है ॥
तैसे शिष्य शिष्यणी ही । हित शिक्षा जेष्ट तणी ।
सुणी अपमानी कटु वचन सुणावे है ॥
होइ दुःख दाइ दोनों भणी दोनों भव मांइ ॥
यश को गमाइ धर्म लोपाइ सिदावे है ॥
धर्मी को ढंग खाली नहीं रखी जगे ॥
द्वेष यों अज्ञानी वना जगत् कों फसावे है ॥ ३ ॥
द्वेष दुःख दाइ जानी । सम भाव धरे ज्ञानी ॥
मैत्री सब साथ । रखत सदाइ है ॥
अवगुण न अवलोय । गुण ग्राही नित्य होय ॥
गुण का खजाना भर जगत् में पुजाइ है ॥
कोइ नहीं तास वेरी । सर्व स्थान यशः लेरी ॥
सहायक अनेक तस सहज हीं में पाइ है ॥
सम सदा सुख कर । अमोल ताहे आचर ॥
दोनों भव सुख भोग । मुक्ति में सिधाइ है ॥१४॥

कथा-बावीसवीं

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ॥ ३ ।
[illegible] ।

शियालसन्मुख सिंहनहोविकदा । इसविचारसे जावुंमेंयदा ॥
जीतीदमदंत आयेनिजठाम । चरिसुनराजा डरेतमाम ॥
अखंडआण दमदंतकीफिरे । अन्यकीक्याकथा पांडवडरे ॥

दोहा– उसअवसार पधारीये । धर्मघोषमुनिराय ॥
दमदंत नृपआदिसब । सजहोवंदनजाय ॥ ११ ॥
परिषद बैठीउमंगधर । भव्यतारण ऋषिराय ॥
फरमावेधर्मदेशना । सुणेसबमनलगाय ॥ १२ ॥

चोपाइ

अहोभव्यो आयेभवसिन्धुकंठ । अवनत होवोतुमउपरंट ॥
शिवगति साधननरभवलही । पारहोवोउद्यम करसही ॥
ऋद्धिसुख पायेवार अनन्त । गरजनसरी नहिं निकलातंत ॥
धोपबीजसंपत दुर्लभ । सोअवमिला गमावोनअब ॥
अगजीतकी वारअनंत । नानुभवदुःख नाहींटलंत ।
परजीतिन सुलभ कहाजिन । मुश्किल आतमा जीतेबिन ॥
आतमजीतासो सबजीतीया । सबशुभगनो करीजीतिया ॥
आतमजीनेकर्म हारजवाय । अजरामर अक्षयसुखपाय ॥
इत्यादिमुनिबोध धरजरी । नृपनगया संवेगनेसरी ॥
[illegible] । [illegible] अणगार ॥
[illegible] । [illegible] ॥
[illegible]

दमंदत मुनि देख आश्चर्य पाय। स्तुती बंदन कर आगे जाय।
पीछे दुर्योधन दुर्मति आय। देख मुनि को कोपे भराय ॥
अरे दुष्ट किया हमरा अपमान। ते कर्म भिक्षुक हो मांगे धान।
निन्दा कर पत्थर मारीया। ठट्ठा करत आगे सो गया ॥ २०।
यथा राजा तथा परजा होय। पीछे नर आये सब सोय ॥
एकेक पत्थर मुनि पर न्हाखीया। ऊभे मुनि को सब ढांकीय
मुनिवर नहीं किया किंचितद्वेष। समभाव रखे अति विशेप
आत्मा युद्ध महा निर्जरा स्थान।जाननहीं चला जराहीध्यान
फिर पंडव पीछे तहां आय। मुनि स्थान पत्थर ढग देखाय।
पूछे सें जाना सब हाल। पत्थर दूर किये तत्काल ॥ २३ ॥
करी वंदना खमापराध । आश्चर्य लाये देख मुनि समाध॥
क्षपक श्रेणि चढे ऋषि वरा। सकल कर्म का नाशज करा ॥
केवल ज्ञानहो गये निर्वाण। सुर महा त्सव किया उसस्थान
पांडव हर्षि निज घर आय। मुनि गुण गाया अति हर्षाय॥
दूसरे दिन राय शभा मझार। दुर्यो धन आये धर अहंकार।
पांडवा दिक सब दे धिक्कार। महा मुनिन्हाखे विन गुन्हेमार
नगर घेराया तब कहां गया बल।अब करे गरूरी होवे अकल
क्षमा सागर मुनि राजर्स ताप।कहा भोगोगे यह प्रबलपाप
यों निभृच्छा करी शभा सहू। वोभी शरमाया मन में बहू॥
...प प्रभाव नरक में गया। द्वेष और समभाव फल कया ॥
दोहा—दमदंत मुनिवर पर। समभाव दो द्वेष त्याग ॥

वरो सुख तैसे सवी । इस अवसर मे लाग ॥ २९

निज पर आत्म सुख वरन । द्वेष पाप उद्धार ॥

ऋषि अमोलख ने रचा । यहग्यारवा अधीकार ॥

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज के
स्मप्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनिश्री
अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रंथका
द्वेष पापोद्धार नामक
इग्यारवी मंजिल

समाप्तम्





मंजिल बारवा—"कलह पापोद्धार

पूर्वविभाग—"क्लेश"

चोपाइ

हा—जगत् दहन यह क्लेशहे । दे दुःख सागर शोक ॥
फसी भारत इस जाल में।बन बैठे हैं फोक ॥ १ ॥
क्लेशकहे कु संप को । जंप न लेने देय ॥
लंप लगे घट घट में ।वरणी बतावूं तेय ॥ २ ॥

चोपाइ

निजमति विरुद्ध सुने जाने बात।उस से होवे प्रकृति उत्पात
जस वश अन्य को वचन सुनाय।सोविरुद्ध अन्य को प्रगमाय
नय विरुद्ध ता कारण लही। द्वेष भाव मनमें परगमही ॥
ही अन्य को प्रगमाने काज। प्र- रे क्लेश प्रबल साम्राज ॥
जि के अन्दर क्लेश भराय । तो समूल राज नाश कराय ॥
न . अश्वदंती पायदल।सहश्रों गमे की होवे कतल॥५॥

शेठ के हाट जो पेशे क्लेश ।तो द्रव्य का नाश होय हमेश॥
थोडे दिन में कंगाल बनाय।शेठजी भिक्षुक बन जाय ॥
ग्रहस्थ के घरमें क्लेश जो होय । कुटुंब कदाग्रहीबन के रोय।
फूटे घर टुकडे होय अनेक । दुशमन रगड अवसर देख ॥
कुनस्य कर भइ भाइ लडे । लुटावे धन कचेरी चडे ॥
भंडावे आपसमें मां और बाप।भोगवे केइ महा संताप॥ ८॥
धर्मस्थान क्लेश पेशियो । धर्म विगाड भरमज कियो ॥
नास्तिक बहुत धर्मी जन बने ।कदाग्रह कर बहुत ही हने॥
यों क्लेश पसरा है सब संसार । जहां तहां किया सत्य संहार
इसलिये पाप में मुखीया यहे ।प्रत्य देखें ज्ञानी जन कहे ॥

क्लेशका स्वरूप—मनहर छंद.

वीतराग के अनुयायी । फसे क्लेश फास मांही ॥
निज शुद्धि को भुलाइ । धर्मध्यान को डुबाइ है ॥
गच्छ संप्रदा बनाइ । एक का अनेक थाइ ॥
कुच्छ तत्व न जनाइ । व्यर्थ रूढीही थपाइ है ॥
जरा जरा भेद मांहि।मचावत जो लडाइ ।
शास्त्रार्थ जो फिराइ । निज हट्ट ही थपाइ है ॥
सत्सूत्र को छिपाइ । उत्सूत्र को जमाइ ।
हुवे जग निन्द्य नाई । ऐसा क्लेश दुःख दाइ है॥
कर दया धर्म मूल । गये तत्व अर्थ भूल ॥
तेन इन में प्रति कूल । रुके अर्हपद मांही है ॥

निज भक्तों को वेहकावे । प्रति पक्षी से ०.।
शिर केइ के फोड वे । रक्त ना लीयों वही है
धर्म कही धन संचावे । मांस आहारी को ..
स्व धर्मी यों हरावे । ताते अति हर्षाइ है ॥
दया धर्मी के लक्षणदेख मन हुवे क्षीण ॥
हंसे अन्य मति जन । क्लेश ऐसा दुःख दाइ है
फसी क्लेश फंद मांही । मूल सम्यक्त्व गमाइ
तो श्रावक साधु पन भाइ किस विध रहाइ है
प्रथम लक्षणहे सम । सम्यक्त्वी खावे गम॥
रहे सब से हो नरम । सो तो कचित देखाइ है
हरामी से नरमाइ । स्व धर्मी से करडाइ ॥
साधु सती से धीठाइ । कर सम्यक्त्वी कहाइ
जरा २ वात मांही । जुदा स्थान क बंधाइ ॥
ऐसी क्लेश भ्रमणाइ । भाइ वडी दुःख दाइ है
दोहा—क्लेश है ऐसा धर्म में । तो संसार की क्या वा
जलमें जा अग्नि लगी । तो भट्टी में क्या रहा

फूट से फजीती—इन्द्रविजय छंद

न्याया लय में फूट धसी । कामनी एक एक को नहीं च
ग्राम रक्षक पण फूट काम कम । रक्षक को भक्षक ठरावे

राज घराणे में फूट पडी तव । राज गमाइ गुलाम कहावे ॥
कलजुगी हिन्द मे फूट की लूंटा॰ खूटलो चूंट सबीकेपावे ॥
जागीरदारों फूटमें फस के । पीडीयों की जागीर गमावे ॥
साहूकारों में फूट भरीं । परतीत गमाइ व्यापार डुबावे ॥
शेटकी पेठ गमाइ है फूटने।एक की एक आसामी फटावे॥
कलजुगी हिंद में फूट की लूंट अखुट लो चुट सबीके पावे॥
फूटसे बाप देवे धन और को । फूट से बेटा बाप मरावे ॥
फूट से सासु बहु धमकावत् । फूट से बहू सासु कों दबावे ॥
फूट से भाइ यों जात लजावत।बाप कोधनदरबारें पहोंचावे
कलजुगी हिंद में फूटकी लूंट। अखुट लो चुंट सबीकेपावे॥
पती पत्नी में फूट पडीतव अन्य नारी अन्य नर संग जावे।
गुरू शिष्य में फूट पडी तव । अन्य गुरू को नाम बतावे ॥
कृत घनता घनी बधगइ फूट से गावन वालो कहां लगगावे।
कल जुग में फूट की लूंट अखूट । लो चुंट सबीके पावे ॥
बधा महा बली रावण राज में।फूट पडी तब राज गमावे॥
हाबली पांडव कौरव फूटसे।नाम डूबाइ महा दुःख पावे॥
से ऐसे की खुवारी करी तो।अन्य की कहानी कहा कथावे
लजुगी हिंद में फूटकी लूंट अखुट लो चुंट सबी के पावे॥

कथा—तवीसवीं

क्लेश का फल बताने वाली–"चार मित्रोंकी"

दोहा–फूट पडाइ पिशून्य जन । साधे अपना काम ।
फूट पडी जहां जाय के । गये सुख संप तमाम॥
यह स्वरूप दर्शाववा । चउ मित्र दृष्टांत ॥
सुनिया जैसा यहां कथुं । सुन समजो धर खांत ॥

चोपाइ

जनपद नामें पुर शोभाय । पिशुन जय राजा सूख दाय ।
सो भागी राणी गुणवंत । शूर सिंह नामें पुत्र सोहंत ॥ ३
सुबुद्धि मंत्री को पुत्र सोहन । शंकर पूरोहित पुत्र मोहन।
धना शेठ को पुत्र धनंत । यह चौ मित्र सदा संप रहंत ॥
विद्याऽभ्यास विन भूले भान । सेवे सात व्यश्न तज कान।
हट काण कोइ की नमनाय । स्वइच्छा चारीकरे अन्याय।
एकदा क्रीडा करन सो जाय।चारों ग्राम के बाहिर आय।
खेत मक्का का पकाहुवा देख । चला मन खावे अब सेख।
चारोंही पेठे तबखेत मझार।रखवाला देखकरकरे विचार
मोटे घरके ये चउ बलवंत। हटकन से नहीं कहा मानंत।
में एकला यहतो हैं चार । लडनेसे होवे मुझ हार ॥
मालक का कैसे करूं नुक शान। जिसका पेट में पडाहेधान
किसी उपाव से बचावूं माल।सोची नरुकने आयो तत्काल।

ली तुली आते किया प्रणाम।भले पधारे कृपाकरी श्याम
र पाति पुत्र प्रधान जी साथ। पुरोहित पुत्र है ब्राम्हणजात
तु वनीया क्यों आया यहां।इसमें हक इसका है कहां ॥१
दे दूणे पाहिले ले दाम । घर में इसने रखे हैं श्याम ॥
नों हर्षे कृषी भक्ति जोय ।कहे सच हे पटेलके सोय ॥
नीया कैसे खावे यह माल।कृषी पकडा उसको तत्काल॥
ाले के एक स्थंभ सेबांध।तीनोंसे कहे फिर तक सांध॥
न्य भाग्य पधारे राज कुमार।प्रधानजीके वेटे तुमलार ॥
ाह्मण भिकारी हें ऐय।मांग के धान वहूत गया लेय ॥
फेर आया खेत लूटने काज। यह तो अच्छा न लगेमहाराज
दोनों कहेसच पटेलकीवात। दूजे स्थंभ पुरोहित बंधात ॥
हर्षोकूमर से कह कृपान। खेत मालिक आप कृपानिधान॥
प्रधान जी पहिले हम पास । तैसी ली चुका लिया धन रास
किस न्यायसे भुट्टेये खाय।नृपति आप न करो अन्याय ॥
राज पुत्र तव नीचा जोय । सचीव पुत्र स्थंभे वंध्यासोय।
अव एकही रहे राज कुमार। कृषी क्रोधातुर हो उसवार ॥
कहे राजपूत्र हो चोरीकरो।जरा शरम घर की नही धरो ॥
चोथे स्थंभ बांधयों कही। चोर पकडे पुकारा तव सही ॥
सुनकर लोक वहुत दोड आय चारो बंधे देख आश्चर्यपाय
फिट २ निंदेसहू जन ताल।शरमी चारों रहे वेवातप्रकाश ॥
चारों के पिता खवर ये पाय अपमानी देश पार कराय१९

मिले उसपर धरते संतोष । समजे नहीं केसे होवे रोष ॥
सन्ध्या समय सब मिल बेठंत।शेठजी हित शिक्षा देवंत ॥
निर्मळ मन सरदे सब सचा।करे अंगीकार न करे कच पचा।
बहु पुण्य जोग बहु संगम थाय।बहुत मिले बहुतही शोभाय
बहुत मिले होवे बहुतही काम । एक राजासे नवसेगाम ॥
एसा जान सब संपसे रहे । जिससे विसी क्षण में दहो ॥
इत्यादि उपदेश शेठ सुणाय । सुने सबी उसी तरेहवरताय
दारिद्रता तस अतिसताय।तोभी ते दुःख वेदे न जराय ॥

दोहा— उसवक्त उनकेधामकी । पडीअचानकभींत ।
वांधनको दमडानहीं । खुलीरहेफर्जात ॥ १२ ॥
सबमिल हातोहाततब । करनेलागेकाम ॥
समरसे अशुभकर्महटे । शुभपुण्यप्रकटेताम ॥ १३ ॥

चोपाइ

नृति हाकाजे धरती खोदाय। मारतकुदाल अवाज वहांथाय॥
धन भरीयो चरवो वहांदेख । आश्चर्यपावे हर्षविशेख ॥
शेठहुकमे तसलिया निकाल । दूसराउसके नीचेमाल ।
उसे नीकाला तीनरादेखाय । उसेनिकाल शेठनचिताय ॥
अतिलोभ भाइ दुःखदाय । इनवेनेनव सुखहीथाय ॥
खाडापुरकर पंथाइभीन । द्रव्यनेघर्धा सुखअनप्रीन ॥
स्वजनरान वस्त्रभूषण दिया । द्रव्यपमाय सुखनवलिया ॥
वहांशीघ्रफ स्वर्गसाहवरे । धनदरिद्र बहुतन्याहे ॥ १८ ॥

चोपाइ

एकदालक्ष्मी उससुरसंग । गगनजातेदेखा धनदत्तढग ॥
सुरकहे लक्ष्मी तूंनिशरम । अनइछितजगरहे तुरम ॥ १९
चाहेतहां तोतूंनहींजाय । तवहीपगमे रहीठेलाय ॥
लक्ष्मी कहे संप जहां मुझ वास।ते अब तुझे देखावु खास
कमलाअर्धनिशीमें वहां आय।धनदत्त से कहे क्य करो सहाय
शेठ कहे सुता हुं तू नारी कुण।सा कहे में लक्ष्मी सुणो निपुण
विन बोलाइ वसी तुझ घर । तुम राखो मुझ कचरा पर ॥
नरेंद्र सुरेंद्र मुझ आदर करे।न रहे तुझपास रखे इस तरे३२।
शेठ कहे कल खडा खोदाय।गाडी देवूं तुझे उस मांय ॥
खिशाणी हो बोली सासुरी।खड्डेमें दाटो ऐसी में नाबुरी।३३।
में तो नहीं रहुं क्रोड उपाय।शेठ कहे करो ज्यों सुख थाय॥
दोलत आन जाने की में जान । पहिले इस्तरे रखी इस ठाण
सुर संग सुरी फिरी शेहेर मझार। मुझरहने उत्तमठोर देखाइ
दगा कुसम्प सब जगह देखाय । धन दत्तसम घर एक नपाय॥
फिर आइ लक्षमी धनदत्त घर। वडे पुत्र से कहे इस पर ॥
में लक्षमी शेठजी कहाडे मुझ। मुज गये जावेगा सब सुखतुझ
तुम राखो तो रहु तुम आवास। बडा पुत्र कोपी कहे तास ॥
शेठ हुकम विन क्यो आइ पास। जा शीघ्र नहीं तो पावेगा त्रास
दूसरे पास जा विनंती करी। मुझे तुम राखो कृपा करी ॥

दीनी गाली कहाडी ललकार । यों सब कने पाइ तिस्कार ॥
पस्ताइ सुरी सुर से कहे ताम । सुख रहने को गमायो में ठाम
औरभी देख इनसबकासग।फिर धन दत्तपास श्रीआइजम्
कहे शेठ जी घर थांरा केम्हारा । शेठ विचार महारा करेउ वा॥
घर धन सब लक्ष्मीका वाइ।लक्ष्मी कहे तुम तजो इस तांइ ॥
तत्क्षण शेठ उठ घर बाहिर आय । हाक मार सबी को बोलाय
शेठ वचन सुन सवी उठ भागा । मोटा छोटा ढेकेरु नागा ॥
कर जोडी कहे हुकम फरमावो । शेठकहे श्रीकियो रीसावो ॥
वस्त्र भूषण उसका उसे देना । फक्त तीन २ वस्त्रसवी रखलेना
सुनतेही सब फेंक दिये तत्क्षन।जरा नहीं दुःखीया किसकामन
आगे शेठ पीछे सब चला परिवार । वनमें आये वट वृक्षनिहार।
विसामा लिया शेठे चिंता भराइ ।खाने मांगे गे देवूंगा में कांइ
बुद्धि उपाइ कहे घांसतोड लावो।चार जने मिलरस्सीवनावो
वेंच के भोजन करेंते भाइ । सुन सब लगे उसी काम मांइ ।
दुःख विषवाद किसके मन नहीं । उलट हुष रहे सब सनाइ

दोहा—कमला बैठीतिहांसोचकर।यक्ष आया वहां चाल।
डर पायो मनमें आति । रस्सी वटतले निहाल ॥
पूछे मानव रूप कर । रस्सी वटो किसकाज ॥
शेठ कहे हम भूतका । करेंगे इससे इलाज ॥४९॥
भूक का भूत निकल गया।पूण्य पसाय बचन ॥
मेरा किया मेने लिया । चमका भूत तब मन॥५० ॥

चोपाइ

करजोडी कहे करोगुन्होमाफ । अवनहीं संतावुंगा कदाफ ॥
अगमबुद्धि वनीया भूतजान । कहेलछी रुशीतुझहान ॥
भूतकहे मेरावारह क्रोडधन । सोआप लेकरकरोगमन ॥
लक्ष्मीको मेलावुंमनाय । तत्क्षण सो लक्ष्मीपासआन ॥
कहे तूछ वचनेपुण्यात्म सताये । मेरेपीछे क्योंतेनेलगाये ॥
चलोशीघ्र तसमनाइ लावें।जिससे अपनदोनों सुखपावें ॥
लक्ष्मीकहे पहिले थेमुझछेडी।।परकाजघडपडे उसपगवेडी ॥
दोनोंमीलआये धनदत्तपास । घरेपधारोयों करेअरदास ॥
धनलेभूत शेठसंगभया । सपरिवार शेठ निजघरगया ॥
चमत्कार पुरजनसवदेख । आश्चर्यानन्द मनहुवे विशेख ॥
वीतीवात शेठसवसुनाइ । सम्पसत्य प्रत्यक्षसुखदाइ ॥
रुठीलक्ष्मी मुझमनाइलाइ । वारेकोटी धनभूत वसथाइ ॥
सुनसवजन तसमाहिमाकरी । सत्यसम्पलिये वहूतेवरी ॥
धनदत्त सपरीवार दीक्षालइ । स्वर्गगये मोक्षपावेंगेसही ॥

दोहा— श्रोताइसदृन्तसे । पेखोसम्प सुखदान ॥
धनदत्त परेसवरहो । द्रडसम्पको सदाय ॥
क्लेशतजो सम्पकोंभजो । गजोधर्मभूमंड ॥
सजोप्राचीन साजको । वरतोजैन अखंड ॥
निजपर आत्मसुखवरन । द्वेषपापउद्धार ॥

इति अमोलखोक्तमा । द्वादशमो अधिकार ॥ १०॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज

के सम्प्रदाय के बालब्रह्मचारी मुनि

श्री अमोलख ऋषिजी महाराज

रचित- अधोद्धार कथागार

ग्रंथका द्वितीय पडद्धार

नामद्वादशवा अधिकार

समाप्तम्





मंजिल तेरवा-"अभ्याख्यान पापोद्धार"

पुर्वविभाग-"कुआल"

दोहा-इर्षा धर अन्य ऊपरे । जो दे कूडा आल ॥
अभ्या ख्यान सो पापहे । सद्गुण भक्षण काल ॥

चोपाइ

इसजग मे पुण्यात्म प्राण । पुण्य पसाय कीर्ती मंडाण ॥
सो पापात्मा को न सुहाय । उसे दाटण करे उपाय ॥ २ ॥
दुष्टात्मा चिन्ते मन मांय । सबही मानते उनके तांय ॥
सबही सद्गुण वाकोही कहे . सबही पंथ ताही को गहे ॥ ३ ।
मुझ न पुछे टुकडा साट । बोलावे न करे को बात ॥
मेरे मत मे कोइ नहीं आव । जब लग कायम यह रहाव ॥
इसलिये ऐसा करूं को उपाय । जिससे कीर्ती जिसकी दबजाय
यों विचार छिद्र ग्राही होय । सद्गुण को दुर्गुण कर जोय ॥५

जो कभी किंचित दुर्गुण पाय । तो राइका पहाड बनाय ॥
ठोर २ बकतो सो फिरे । ज्यों परिणाम जगत् कागिरे ॥ ५
जो कभी दुर्गुण लगे नहात । तो सद्गुण को दुर्गुण बनात ॥
भोले लोक को सो भरमांय । दुर्मति तामे प्रागमाय ॥ ७ ॥
खोटा कलंक तस सीस चडाय । उभय भवका डर नहीं लाय
ब्रह्मचारी को व्यभिचारी कहोतपस्वी को भक्षसी कहदहे
ज्ञानी को अभिमानी भनंत । वक्ता को कु-कथक कथंत ॥
विपरीत यों सबही प्रगमाय । अछत्ते कु-कलंक चडाय ॥
ऐसे जो हैं अधर्मी जीव । भोगवत दोनों भव रीव ॥
आखिर तो सत्यही प्रगटाय । तब अभ्याख्यानी मुहछिपाय
फिट २ बजता लोकों के मांयावयण परतीत कोइ नहींलाय
ताको पाप ताकें सिर पडे । सच्चे कलंक तास सिर चडे॥

अभ्याख्यान दुर्गण-मनहर छंद.

जे नर अभ्या ख्यानी । ताकी मति सदा भृष्ट मानी
गुण आच्छादन भनी । दुर्गुण सो जोवे है ॥
आप की जमावे पेठ । अन्य की बतावे हेट ॥
इरषां को भर्यो दर्यो पर माम खोवे है ॥
अच्छता चडावेआल । बोले जैसो काटे व्याल ॥
नाहक सतावे गुणी । सती संत होवे है ॥
लही महात्मा का श्राप । उपार्जे महा पाप ॥

अभ्याख्यान पाप ऐसे जग को बिगांवे है ॥ १२ ॥
ईर्षा भराये जन गुन को करे औगुन ॥
त्यागी ब्रह्मचारी मुनि । अज्ञानी जो रहावे है ॥
जा को मेला कहीं निंदे । जाने कोइ नहीं वंदे ॥
शुचाशुची भेदकों । अज्ञानी कहांसे पावेहैं ॥
देखलो पुरान अशुची चारतरह पहेचान ।
दयाहीन निंदकं मैथुनी चोरंधावेहैं ॥
यहचारोंकु कर्मकरे । ताकोतो शुचीउचरे ।
अन्ध अभ्याख्यानिको उलटही दोखावेहै ॥ १३॥
केइधर्मधारी कर्मवशहैं संसारी ।
पालपरवारी करेनिर्वद्य व्यापारीहे ॥
अभ्याख्यानी छिद्रजोय । धर्मगुण ढंकेसोय ।
कुडाकलंक लगाकहे । यहतोढोंगी भारीहे ॥
हाथमांहि माला राखे पेटमेंकोदाला ।
गुसकरे कर्मकाला भाला लेखणीका मारीहे ॥
धापण दवाय ऐसेकलंक लगाय ॥
ऐसे अभ्याख्यानीकी तोदोनों भवख्वारीहे ॥ १४ ॥

इन्द्र विजयछंद.

नरनम्य जोगेकेइ योगीयने । अन्यकीकीर्ती नाहींसुहावे ॥
अन्यमनकेकेइ तपीजपीगुनी । नाहीकेमान कलंकलेठावे ॥

हीनाचारी अज्ञानी वताकर।उनके भक्तोंके भावफिरावे ॥
वडोअभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघर।देखअमोल अचंभोइलावे॥
श्वेताम्बरदीगाम्बरकोमिथ्यातीके।दीगाम्बरश्वेताम्बरने ठिरावे
साधूमार्गी मंदीर मार्गी । यह विध एकेक पे आल ठावे ॥
सत्य को असत्यु असत्य सत्य कर।अपनी टेकको पक्की जमावे।
वडो अभ्याख्यान घुस्यो धर्मीघर।देख अमोल अचंभहीलावे
कलंक है वंक अचंक लगे सो जगे दुःख शंक निरंक उपावे ॥
देवकीके गये पुत्र छहो हरी।हरिण गमेषी सुलसाके पहोंचावे॥
कलंक से सीता वसी वन वासही।योंही कलंक अनेक सतावे।
यो दुःख कार अपार कु आल हैं।दोनों भव दुःख को ये उपावे

कथा—पच्चीसवीं

अभ्याख्यान के फल वतानेवाली—भव भूत क्षत्रीकी

दोहा—वहुते जीवन कलंक दे।दुःख पाये संसार ॥
भव भूत नामें क्षत्री की ।कथूं कथा सुनी सार ॥

चोपाइ

मेदनी मंडण ग्राम मझार।भव भूति क्षत्री रहे धन धार ॥
विषय लंपटी सदा दुर्मति । परदारा भोगन लुब्ध अति॥२॥

दुष्ट इच्छा पूरने के काज । काजा काज की न धरे लाज ॥
परपंच रच करे इच्छापूर।सत्पुरूष उससे रहे सदा दूर ॥
तहां रहे एक मंगल शाह शेठ।मंगला नारि गुण की पेठ ॥
महा रूप वती तैसी महासती।जिनधर्म प्रीति विद्यावती ॥
एकदा भवभूती मंगला को देख।हूवे मोहा काम पीडाविशेष
वस करने किये अनेक उपाय । परंतु न चला एकही दाव॥
पापी तब खोटे परपंच रचे । काज साधन जो मन जचे ॥
मोतिजूगल अतिसुंदर लाया।बाण में बांध तस घरमें फेकाय
सोमि लिये मंगला सती तांय । भूषण से पडे जाने मनमांय
नथनी मे सो लिये डलाय । दासी हाथ भव भूती भेदपाय॥
पोशाक क्षत्री वाणीकी बनाया।तस धोवन को दी सो जाय॥
सांच दे मंगला गेह में सुकाय।मंगला भेद जानन नही पाय॥
मंगला शब्द सम एक वेश्या तांय।आधिराते रथ में बैठाय॥
मंगल शेठ घर सन्मुख रही । तब सुने देसा शब्द कही ॥
मंगलशा दुःख दे अतिमोय। इस लियेयहां रेना नहीं होवेय
जावूं मैं भवभुतीजी घर । यों पुकार रथ भग गया नर ॥
मंगला मंगल शेठ सुणी नही यह।अन्य सुनी अचंबेलह ॥
प्रभाते मंगला नदी न्हाने जाय तब [illegible] सम [illegible] पाय॥
[illegible] सुने [illegible] वस्त्र पहने [illegible] ॥
वस्त्र [illegible] घर तब आय [illegible] कर [illegible]
अहो [illegible] अपने [illegible]

सती कर छोडावन करे जोरापापी न छोडे धरा कठोर॥१३॥
लोक वहुत भेल वहां होय। भव भूती को दवावे सोय ॥
भव भूती वस्त्र में मांस देखायासती वस्त्र डाल दिये उसठाय॥
निडर भव भुति रूवी से व हे । ३ाज रात मुज घर रह रहे
पुछे पाडोसीसे कही आइ भागाकहे पाडोसी सुनाथा राग॥
पुनः भवभूति नथ मोती वतायाखरीदे उस जौहरीकोंजताय
इत्यादि प्रत्यक्ष भेद पाय। लोक चुप रहे अचंभा लाय १६
सतीको अती उपजा संताप। चिंने प्रगटे पूरा कृत पाप ॥
खसावे नहीं सा तहां से पायामंगलशा अतिगये मुरझाय ॥
राज भट दोनों राज में लेजाय । नृप सन्मुख ऊभा कराय॥
सती गुंम हुइ वोलानहींजायाभव भूती औरभी वात वनाय
क्षत्रीयाणी की पोशाक इस घरधरीावो पहरी के आतीहमघरी
भेज सीवाइ पोशाक मंगायादेख सच हूइ भव भूती की वाय
घवराइ सती तवकह पूकाराअहो प्रजा पितानिराधारआधार
जितने कृतघ्न भव भूनिने कियेएकही भेद स्वपने नहीं लिये
निर्दोष अवला में यहू प्रभूशाखाडुवी लाज पिता तूं ही राख
सव जन कहे स्वप्न में महारायामंगला खोटी हूम जानी नाय
भव भृती खोटा जन्म से सही। परंतु यह परपंच समझे नहीं
सव की वुद्धी गइ चक्रायाकिम विध करें अव ये न्याय॥२६॥

दोहा—विमल वुद्धि रायपुत्रिने । सुने सवी यह हाल ॥
राजशभा में आ कहे । मैं करुं न्याय एक ताल ॥

चोपाइ

सती कों अपने पास बैठाय। भव भूतसे कहे सत्य कहे वाय
इसने क्या किया तेरेघर आहार। कब खाया सत्य कर उचार।
भव भूति कहे आज कीरात। खा आइ ये मांस दाल भात ॥
फिर पूछे तूं सचकहे वाइ क्या।वस्तु कब तेंने खाइ ॥ ३० ॥
सती कहे कल सन्ध्या समय। दाल शाक रोटी खाइ मय ॥
औषधी देतस वमन कराय। दाल रोटी पडीसूं आगे आय ॥
राय पूत्री कहे देखो सब लोक।भव भूति की वात सब फोक ॥
पुनः वाइ पूछे सती के ताय। तुझ वस्त्र में मांस कैसे आय ॥
सती कहे न्हाने नदी में गइ। धोसुका वस्त्र वांधे शुद्ध सही ॥
फिरन्हाइ चलीये गांठी उठाय। न जानूं मांस कैसे भराय ॥
कन्य कहे सती निधा चुकाय। पापी दाना मांस इसमेंठाय॥
भलां वाइ मोती कैसे आये हात। सती कहे मुज आंगणमें पता
कन्या कहे पापी दिये तहां न्हाख। घर के जान लिये इन राख
अच्छापोशाककैसे धरीघरमांय।सती कहे गठडीदी धोवनलाय
तैसीही मे संदूक में धरी। और वात में जानूं नहीं जरी ॥
तहीं तब उस धोवन को वोलाय। दीधमकी सचदीना वनाय

दोहा–अदल इनसाफ वाइ किया। टाला सति कलंक ॥
सुन सब जन आनंदी या। कहा वाइ बुद्धिवंत ॥ ३१
मंगलश। मंगलावती। माना अति उपकार ॥

डूबे जन कों तारीये । विद्या बडी संसार ॥ ३८ ॥

चौपाई

बाइ सती कों धर्म वेन वनाय । नृपति पुत्रीजानी ताय ॥
उत्तम वस्त्र भूषण सजाय।आडंबरे तस घर पहोंचाय ॥३०
सती कहे घर अब जावूं नहीं । देखी जग रचना में यहीं ॥
कर्मोदय कोइ किसका नाय।संयम लेवूं गुरुजी ढिगजाय ॥
अति उत्सव सम दीक्षा दी राया।झ न ध्यान में आतमराम॥
करी करणी स्वर्ग सोपाया।थोडे ही भव से मोक्ष सिधाय ॥

दोहा—भव भूत शरमाइया । सब कर अति धिक्कार
कहा जुलमी यह पापीयों । थूं थू करे नर नारय ॥

चोपाई

भव भूति का अति जाण अन्याय।नृपती अति कोपातुर थाय
घर धन उसका दिया लूंटाय।मूछ मुंडा शाम मुख कराय॥
रक्त वस्त्र तस अंगपहराय । लंबा कारण पर तस वेठाय ॥
फिराया सब चौहटे मांय । पुकारा करे जो किया अन्याय॥
सब जन देवे उसे धिक्कार । निकालदिया पुर के बाहर ॥
पापोदय प्रकटा तन रोग।अनेक विटंबना मे हुआ तन वियोग॥

दोहा—नरकादि दुर्गति विषे पाया दुःख अपार ॥
अभ्याख्यान महापाप कीजो सुख इच्छना ॥



मंजिल तेरवा "अभ्याख्यान पापोद्धार"

उत्तर विभाग—"मौन"

दोहा—ईर्षा न करे कोइ की। वाणी न वदे दुःख दाय॥
सद्बोध वक्के उचरे। सो मौनी मुनिराय। १॥

चोपाइ

पर अवगुण पर दृष्टी न दये। निज अवगुण अंतर द्रग गये॥
अपार अवगुणी निजात्मज्ञान। तदा करे गुणी गुणका ध्यान
पंच में अंग में कहा जिनराय। जो अभ्याख्यान अन्य सिरठाय
सताही तस आवे कलंक। यह बात श्रद्धी होकर निशंक॥
कलंक किसी सिर जरानधरो। निज हित चिंत पाप परिहारो
आप गुणी हो पाडो अन्य पे छाप। ज्यों देखी गुणी सुधरेआप
बोधकर सद्गुण प्रचार। जिनतरह गुण इच्छक धारे॥
करार योग्य गुणी गुण उच्चार। ताही मुनी नहीं दुःखे दुसरार

अभ्याख्यान से बचने कीर्ति–मनहर छंद

पूर्व कर्म के संयोग । मिले शुभा शुभ जोग ॥
अमन्योग व मन्योग्य । ज्ञानी जन यों विचारी ।
कभी कलंक जो आय । संचित कर्म के पसाय ॥
निज वन्धे प्रकटाय । ऐसा निश्च निरधारी ये ॥
पहिले दीना जो कलंक । उससे लगा यह डंक
ऐसी कर्म गति वंक । भोगूं धरी में लाचारी ये
भोगवतो दुःख पावूं । तो क्यों नवा में संचावूं ।
जिसमें आगे न पस्तावूं । यों अमोल मन धारी
सचालगे कलंक खोटा । हिये दुःख का जो चोट
तो न बांधे नवी पोटा । तुज आगे न सतावेगा ।
न धर दाता द्वेष । जाणी धर्म की रेप ।
न्याय दया लूं विशेष । येह किया आगपावेगा ॥
जैसा गमाया है सुख । तैसा पावेगा ये दुःख ॥
नव कूटेगा ये सुख । किये उदय जब आवेगा ॥
यह तो हुवा देनदार । तूं तो कर्जी मत हो यार
धार अमोल विचार । तोही सुखी सदा रहावेगा
जो तुज हो मन निशंक । नहीं कर्ड किन अंक
कूड़ा दीया कोइ रंक । तो नेरा क्या जावे है ॥
मग मारा जाने नोरु । आखीर होवेगा यहफार

वैठ तूंतो क्रोध रोक। जोक तुझ नहीं आवे है ॥
कभी खोटा कहे सहू। तो न करना मन लहू ॥
यह तो निर्जरा है वहू। लहू थोडे काल थावे है ॥
आखीर ते सत्य तेरे। ऐसा जेष्ट जो उचरे ॥
तेंहा नीवडे आखीरे। यों अमोल दरशावे है ॥
कभी न होवे कलंक दूर। तोभी मन मर्ता झूर ॥
धैर्य कर्म बंध चूर। शूर होके भव विचार ने ॥
चोरी जारी व्यभिचारी। कीये कर्म अनंती वारी॥
हुवा नीच रगी वारी। सब दिया तुझ धिकारने॥
तहां परवश्य सहे दुःख। नहीं रख कर्म लुक ॥
यहां स्व वश्य सन्मुख। कर निर्जरा ये अपारने ॥
एक भव निकल जाय। आगे नहीं दुःखपाय ॥ ।
यों अमोल मन समजाय। शुद्ध ज्ञानसे विचारने

हितशिक्षा—इंद्रविजय छन्द

मतदे मत दे कलंक कोइ को। लगा कलंक सहो सम भावे
कलंक अंक अति दुःख दायका।जाण दूसरे का कलंक गमावे
कलंक दिये से कलंक लगे। अरु कलंक सहेसे कलंक न आवे
गुणकी स्थाप करे यथा योग्य। सोही अमोल सदा सुखपावे

मुनिका उपकार—मनहर छंद.

जग कलंक निवारे। एसा महात्मा विचारे ॥
करे विवाद अपारे। निज मुख से विमार्ग है ॥

फिरे सदा ग्रामो ग्राम । रहे मिले जैसे धाम ॥
खावे निर्वद्य जोपाम । दृष्टी परोहते धारी है ॥
वांचे सरस व्याख्यन । मधुर रागश्वर तान ॥
कटू मधु अवसर पाम । पन सब हित कारी है ॥
सुणी चेतो भव्य प्राणी । त्यागो कलंकी जे जाणं
पावे सुख आगे वानी । ऐसे गुरूकी बली हारीहे।
जो हैं गुरू ज्ञानवंत । सब का भला जो चावंत ।
कर कृपा फरमा वंत । सत् तत्व निरधारी हे ॥
पाप पुण समजावंत । धर्माधर्म दरशावंत ।
हिता हित ठसावंत । निज बुद्धे विस्तारी हैं ॥
सूत्र अर्थ कथा न्याय । ढाल सवैया सज्झाय ॥
यों नाना कर उपाय । बात गले दे उतारी है ॥
ज्ञानी रस्ते शीघ्र आय । अज्ञानी मन मुरझाय ॥
जैसा होत तैसा थाय । गुरू दूषण नलगारी हैं ॥
मत दोवो कुडा आल । बोलो मत आल पाल ।
चालो मत खोटी चाल म दुःखावो परातमा ॥
मत उचारो अलिक । धरो अपयश विक ॥
रहो नम्र हो वनीत । जो आवो थे विख्यातमा ॥
तजो सर्वेही दुर्गुण । ग्रहो सर्वही के गुण ॥
तजो अनीती विकर्म । भजो परम परमात्मा ॥
ऐसी शिक्षा बहूप्रकार । देके करें जग सुधार ॥

धार सुधरे नर नार तो तां मिटे दुख शांतन...

गुरु उपकार–इंद्रविजय छंद.

धर्मेश्वर दातार गुरू के उपकार ने पार वो किमपी न होवे ॥
जो दातार सम्यक्त्व सुमन के, तासु प्रसाद मुक्ति मग जो...
ता उपकार को पारनवार होयो अध्यात्म मन में जोवे ॥
...हु जन्म भक्तिकर पर पहोंचावे। तोहो शुशिष्य उऋण न होवे
...जग में सजीव मिजिन के दर्शन तब है उपकारी ॥
...इह भव ...क परभव। आवे है कान ... ॥
...किमपि को अज्ञान वने तो। ता उपकरन टार विकारी
...कलंक न लगा तूं अंक दोनों अभ्याख्यान दोषनिवारी

कथा—ठच्यामित्री

मौन ...के ...ने वाली—"सर्वांग सुंदरीकी"

दोहा—सतसार कलंक सहन करना है किन को दोष।
सर्वांग सुंदरी सतीसे। जो आनंद पाप संतोष ॥

चौपाई

...नगर ... ... धन ... धर्म धार ॥
...सर्व ... जान। सर्वांग सुंदरी ... ॥

साकेत पुर एक दूसरागाम.अशोक दत्त शेठ काव- हां धाम
उभेय पुत्र तस रूप निधान।समुद्र दंन, वरदत्तं, गुनखान॥
एकदा अशोक दत किसकाम।गजपूर आये शंख शेठ धाम॥
सर्वांग सुंदरी का रूप निहार।जानी पूत्र समुद्र दत्तसार ॥
सगाइ कर आया निज घर । समुद्रदत्त कों दीनी खबर॥
लग्नोत्सव कर व्याईतास।आये शयन भूवन में खास॥
कर्म जोग जहां अन्यनरछांय।देख समुद्र दत्त संशय लाय।
चुप उठ आया साकेतपुर।विमर्की बात प्रकट करी भुर ॥
मानी सवही सची बात । अन्यस्थान तस लग्न करात॥
साथही वरदत्त को परणाय । श्रीमती कांतिमती ले आय।

दोहा—पाछे सयन भवन में। सर्वांग सुंदरी आय ॥
पति जोये मिलीये नहीं।तव ते अति घबराय ॥८॥
तात मात से जा कही।साकेतपूर खबर कराय ॥
अन्य परणे सो जान के। दुःख अति मन पाय॥९॥

चौपाइ

सर्वांग सुंदरी धैर्य मन लाय।जाने कर्मप्रकटेरे अंतराय ॥
धर्म ध्यान दान सुकृत्य करे।दुःखीयेंके दुःख स शक्ति हरे।
भाग्योदय सुवता सती आय।धर्म कथा सुन वैराग्य लाय।
ली दीक्षा शिक्षा दो ग्रहै।दुक्कर तपश्चर्या ध्याने अनुसरै।
विचरत फिरत साकेतपुर आय।अशोकदत्त घर गोचरी जाय।

ोनों भ्रात नारी वंदन करी।भोजन देवन रसोडे संचरी
ासमे कर्म उदय वली आय। मयुर खूंटी मोतीका हार खाय
त्र आर्जका आश्चर्य पाय। गुरुणी को सब दिया सुनाय ॥१३।
सोडे से दोनों आइ बाहिर। हार देखा नहीं खूंटी पर ॥
आर्जिका का वेम लाइ सोय। अयुक्त वात ये कैसे होय ॥
निन्दासती की करी गाम मांय। सती सुन दृढ मौनरही सहाय
ज्यों निन्दा सुनेते कान। त्यौंत्यों ध्यावे उत्तम ध्यान ॥ १५ ॥
धर्म ध्यान से शुक्ले चडी। कर्म दग्ध कर दिये उसी घडी ॥
क्षपक श्रेणि चड केवल पाय। जय २ देव करे व्योम मांय ॥
ते अवसर सागर दत्त सन्मुख। खूंटी मयुर हार उगले मुख ॥
सागर दत्त आश्चर्य पायो आपर। निजात्म को दे धिक्कार ॥
ऐसेही छांय सयन घर पडी। बिन गुने में सती पर हरी ॥
यहां भीतस दिया कूडा आल। हाहा में हूं कर्म चंडाल॥१७॥
धन्य २ सती की गंभीर ता खरी।आज लग कंही वाणीनउचरी
चारों मिल आया साध्वी पास। केवल महिमा जो पायेहुलास
वंदन कर बैठे सन्मुख आय। कृत कर्म चिन्ती शरमाय ॥
सुरनर की वहां परिषद भरी। केवल ज्ञानी धर्म कथा ऊचरी॥

दोहा—सुणो भव्यों एकाग्रचित्त। अभ्या ख्यना दुःखदाय
जिसविध बंधे जीव ये।उसी विध भुक्ताय ॥ २१ ॥

चोपाइ

वसंतपुर नगरी के स्थान। उभय शेठ वसते गुनवान ॥
गुणवंत पत्नी धन बहू घर। विख्यातस भक्ती धनश्री कर॥२२
धर्म घोषऋषि महात्म पसाय। जप तप धर्म करे उमंगाय ॥
भ्रात आज्ञा मे सुकृत्य मांय। यथा शक्ति सो द्रव्य लगाय।
बंधू प्रेम की परिक्षा करण। एकदा खोटा करे आचरण ॥
रात को भाइ सूने घरमें आय। भोजाइ को सा पास बैठाय
जोरसे हित शिक्षा यों देय। शील कुल रखे लज्जा रेय ॥
दुशीलका कभी न वरो पंथ। भ्रात मेरा प्रेम अखंड धरंत ॥
भली भोजाइ कहे सत्यवान। धनपति के तब वैम भरात॥
मुझ नारी ये दर्शन चारिणी।तब भगिनि हित शिक्षा देतेभणी।
वनीता जब आइ पतिके पास। छलकारी कहाडी दी तास॥
ते विचारि गइ मन मुरझाय। विन गुन्हे किम अपमानकराय
आमूनी मां घर के बार। धन श्रीदेख हर्षी अपार ॥
वृद्ध भाइ का सचा है प्रेम। अब लघु भाइ का देखें क्षेम।
एकदा लघु भाइ सूना घर जाय। लघु भोजाइ को बात चेताय
पतिव्रत धर्म नारी का शिणगार। अन्यन देखणा दृष्टी पसार
सुणी लघु भाइ वैम मन लाय। पति पास जब नारी जाय।
धिक्कारी तस कहाडी बार। न मुरजाणी चैन हर्षी पार ॥
दोनों विरहणी दुःख दिलधरे। नणंदमे एकदा अजैसो करे।
विन गुन्हे हम को नहीं तुम थान। निर्णय इसका निकालो मान

धन्ना श्री दया लाय ।दोनोंसे पुछे अजान जों थाय ॥
ना गुन्ह किम नन्दा भौजाइ।सो कहे तुझ शिक्षासुनवाइ
श्री कहे भोले तुम सही । मैं तो सहज धर्म शिक्षा दइ
ठवंती नहीं करे अकाज।ऐसे कभी लेनी नही लाज ॥
नों शरमा किया नारी सत्कार।दोनों नारी डरीमन मझार
नों ही रहे नणंद हुक्ममांही ।अभ्याख्यान तहां कर्मवन्धइ
वसरे पांचोही लीनी दीक्षा।करी करणी पढकर धर्म शीक्षा
लोचन ते कर्मकी न करी । पांचों मर स्वर्ग में अवतरी ॥

दोहा—स्वर्ग से आयु पूर्ण कर।यहां लियो अवतार ॥
दोनों भाइ भाइहूवे । यह दोनों नार तुम नार ॥
धन श्री कुल कलंक दे । सर्वांग सुंदरी हूइ मेय ॥
कलंक दीयो कलंक लीयो।देख्ये प्रत्यक्ष तेय ॥
छांया पूरुष लख धण तजी।मयूर खुंटी गिल्योहार
पाप खुटे पाछा वम्या।मौन से निपजा सार ॥

चौपाइ

ों प्रत्यक्ष अभ्याख्यान। फल । मौन के फल भी देखेसकल
अभ्याख्यान के किये पत्तखान।हुछ कर्मी वैराग्य मन आन
सर्वांग सुंदरी का सब कुटंब।जग जंजाल को जान विटंब॥
सती पास लीनो संयम भार । ज्ञान आचार की शिक्षा धार
केवली आयु अंते मोक्ष पाय । और सबी तो स्वर्ग सिधाय॥

प्रकाण रत्न से कथा ये लही। यथा बुद्धि यहां कथ दइ ॥४१
शोरठा—यों जान अभ्व्यान। छोडो सुगुण सब तुम॥
ज्यों रहे अविछलमान। दोनों भव सुख पावोगे॥
दोहा—धन्य सती सर्वांग सुंदरी। विकट प्रसंग मोनधार।
कर्म कलंक दोनों हरे। येही सुने का सार ॥ ४३
कलंक न देना कोई को। सहना अपना समभाव
तोसर्वांग सुदरीपरे। पावोगे सवउत्साव ॥ ४४ ॥
निजपर आत्म सुख वरन। अभ्याख्यान पापोद्धार॥
ऋषि अमोलख ने रचा। येह तेरवां अधिकार ॥ ४५ ॥

परमपूज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनी श्री
अमोलख ऋषी जी महाराज रचित
अघोद्धार कथागार ग्रन्थ का
अभ्याख्यान पापोद्धार नामे
चउदशवां मंजल

समाप्तम्





मंजिल चउदवा–"पैसुन्य पापोद्धार"

पूर्वविभाग–"चुगली"

दोहा–इतउत चुगली जो करे । तो है पैशुन्य पाप ॥
अनर्थ दंड जबर यह । उपजावे संताप ॥ १ ॥

चोपाई

भारी कर्मी ओछा उदरी जीव । खुशी होय देखी पर रीव ॥
नारद किया जो पैलाप । शांति स्थान संतान उपाय ॥ २ ॥
पहिले मिले होंमिल तानन । जाने के पुत रखे सनमान ॥
पीछे देवे अग्नि लगाय । नाम अगी को देवे नर नाद ॥ ३ ।
अन्य नन्न देवतन मन उरे । इतन बिगड कुबुद्धिवन्तनके
लग झगडे अर देवे न्याल । हंत हंतवे स्वाब नान ॥ ४

देखी सुनी जानी नइ वात । सुनाने दूसरे को मन उभरात
जहां लग नहीं निकसेमुख वार । तहां लग चेन पडेनलगार
यों प्रत्यक्ष दुःख प्रदयेह पाप । अपयश दुःख दायक अमाप
यों जान जीव जो करे परिहार । सोही सुख पाविए संसार ।

चुगली के दुर्गुण–मनहर छंद

जो नर चुगली खोर । ताको चित्त है निठोर ॥
विगोइ उभय ठोर । आपाही विगोवे है ॥
शांति में लगावे आग । सम्प में करे विभाग ॥
तोडे साचा अनुराग । द्वेषही जगावे है ॥
आग मो विरोध वडे । जुलम सो अति करे ॥
केइ यों केप्राण हरे । अनर्थ निपावे है ॥
यहां अपयश पावे । आगे नर कादि में जावे ॥
पैशुन्य यह पाप वहुत जीवों को सतावे है ॥ ७
निज हितको विसारी । होइ पर दुःख कारी ॥
करे चुगली नर नारी । सुसज्जन फोडावे है ॥
वाप वेट को लडाय । भाइ भाइ को भिडाय ॥
सासू वहू को चिढाय । क्लेश कामही मचावे है ॥
दोट गुमारने लडे । संग न्यायालय चडे ॥
धन इज्जन को हरे । पीछे वहुत पस्तावे हैं ॥

१

चुगल देख ठर्प धरे । महा पाप संचय करे ॥
पैशुन्यता पाप बहुत जीवो को सतावे है ॥ ८ ॥
चुगल खोर ठोर ठोर । करत है खोटा शोर ॥
जोर से भिडावे ओर । मोर को ठोकावे है ॥
होवे राजों की लडाइ । देते बहूतों को कटाइ ॥
रक्त नाले को बहाइ । महा पातक उपावे है ॥
वो विरोध आगे भाइ । चले जेता काल तांइ ॥
जे अनर्थ निपाइ । तस फल चुगल पावे है ॥
कछु नहीं आवे हाथ । पाप लेके जावे साथ ॥
पैशुन्य यों पाप बहुत जीवों को सतावे है ॥ ९ ॥

चुगली से दोनों भवमे दुःख-इन्द्रविजयछंद

इहभव वैरी हुइ बहूतों का । अविश्वासी हुइ निजपेठ गमावे
कोइन संग करे जन वाकोकदी गुत स्थानमें पेसन नहीं पावे
चित दुर्ध्यान अहो निशीध्यावत । विन बोले चितचेननपावे
चुगल खोर इह लोकफजीत हो । आगेहीगति नरक सिधावे
चुगल के मुहमें यम नरक में । तीक्षण लोहकी शूलभरे हैं॥
छेदित जिहवा ताडित तर्जित । एसे फजीती बहुत करे हैं ॥
आगे भवो में सबका विरोधीहो । दुःख से आयुष तासस्रेहै
पैशुन्य पाप संताप देना यों । ज्ञान सुज्ञान गंभीर्य धरे है ॥

कथा—सत्तावीसवी

पैशुन्य पापके फल बताने वाली—"यज्ञदेवकी"

दोहा—चुगली फल दर्शानको । यज्ञदव चरीत्र ॥
ग्रन्थ अनुसार यहां कहूं । जाणी चेतो मित्र ॥ १

चोपाइ

महाविदेह महा क्षेत्र मझार । चक्रवाल नगर श्रेय कार ॥
अप्रीतहतचक्र तहां शेठ । सुमंगला शेठाणी विशेष्ठ ॥ २ ॥
तास पुत्र चक्र देव सोहत । कृतज्ञादि गुण गण वंत ॥
विनय विद्या परिणण करी । तस कीर्ती पुर में विस्तरी ॥ ३
सोम श्रम पुरोहित यहां रहे । नन्दी वर्धन नारी गुण गहे ॥
यज्ञदेव तस पुत्र मलीन । कृतघ्न द्रोही इर्षाल्लु दीन ॥ ४ ।
देवयोग्य चक्रदेव के संग । प्रीति हुइ वरते एक रंग ॥
चक्रदेव सदा रहे सरल भाव । यज्ञदेव खेलत रहे दाव ॥ ५
चक्रदेव घर ऋद्धि अपार । यज्ञदेव देख धरे मन खार ॥
कैसे करुं इसका धननाश । जिससे यह बनरहे मुझदास । ६
छिद्र पेखननहीं अवगुण पाय । तब कूआल चडाना चहाय॥
चंदन सार्थ वहा तहां रहे । राज्यमान्य धन बहु तस गेह ॥

यज्ञ देव तहां चोरी करी । बहूत मोलके भूपण हरी ॥
चुपछिपी चक्रदेव पास आय । धन उसकों सो सब बताय
मित्रमेरा तूं जीवन प्राण । तुझ से छिपी कोइ बातम जान
यह गुप्तधन मैंने मेला कि । । मुज वक्तपे काम आवेगाजिय
रखेने लाया में तेरे पास । अवीरख लेवूंगा जब होवेगाखास
चक्रदेव बहू मूल्य भूपण देख । रुशाय मनमें आया विशेख
कहे भाइ में यह धन रखुं नाय । अन्यस्थान रखइस नूंजाय
तेरे पर जैसा यह नहीं देखाय । बुरा मतमान यहांसेलेजाय
कोप करी यज्ञदेव तब कहे । क्या तुमुझे चोर जार सदहे ।
स्नेहकियेका यहहुवासार । क्याआगे प्रेम पाडेगापार ॥
सुणचक्रदेव मनमुरझाय । भूपणउठारख दियघरमांय ॥
यज्ञदेव घरगया सुशधाय । होणहार तेतोटलेनाय ॥

दोहा— चंदनशाह तबजानीयो । चोरीहुइमुझघर ॥
बहुतहीदेखे नबमिले । भूपणओर तस्कार ॥
अर्जीदीतब राजमें । नृपढंढेरापिटाय ॥
पांचदिनमें प्रगटो । आगे दरुहूंदंडजाय ॥

चोपाइ

तहंदिन यज्ञदेव नृपराज । मुलआके नमीअरदाज ॥
[illegible]

पतुंर दुर्गुणी मित्र जान। देखो जैसा मै करुं बयान ॥
चक्रदेव शठ पुत्र घरमांय। चोरीकी धनसब है महाराय ॥
सुनीधरणीधव आश्चर्यपाय।कहे यहबात कैसेसत्यमनाय ॥
यज्ञदेवकहे लोभवश महाराज। बडे २ करतेहैं अकाज ॥
देखोचक्रदेवका भंडार। जबरनिकलेगा मालउसीमझार ॥
नहींनिकलेतो सजामुझकरो। येहीविनंती ध्यानमेंधरो ॥
नरेश्वरतब पंचोंको बोलाय। कहेचक्रदेव घरतपासोजाय ॥
पंचसुनि अतिअश्चर्यपाय। किसकावेम राजादिललाय ॥
चंदनशाहाका भंडारीलेय। चक्रदेव घरआयेतेय ॥
शरल चक्रदेव कियासत्कार। मुझलायक सेवाकरो उचार ॥
पंचकहे देखावो भन्डार। क्याक्यामालहै तुमआगार ॥
सर्वमाल सन्मुख रखदिया।चोरीकामाल उसमेमिलगया ॥
पंचपूछे चक्रदेव सत्यकहो। यहमाल तुम कहासेलहो ॥
येहीहै चंदनशहाका माल। हुवासो सबप्रकाशोहाल ॥
चक्रदेवसुन मनमुरझाय। मित्रकाभेद दियानहींजाय ॥
चक्रदेव कहे मुझे नहींभान।कैसेमालआया मुझघरन्यान ॥
अश्चर्यधरी आग्रहसे पूछेसब। सचकहोतो बचोतुमअब ॥
नहींतो फजीती होवेगाअपार।इसका करोजरा उंडाविचार ॥
चक्रदेवतो कहेएकवात। मालसाहित नृपपासलेजात ॥
अकृतीये गुणलख नृपविस्माय। पूछहुइसोदेवो दरशाय ॥
चक्रदेवकहे एकहीजबान। जबकोपातुरहुवा राजान ॥

कहेइनेकहाडो पुरदरबार । राजभटकीया उर्मगप्रकार ॥
चक्रदेव अतिमननुरझाय । जातकुलमुझधर्म लजाय ॥
अवजीतवमें नहींकुछलार । फासीबांधी मरणोमनधार ॥
सत्यरक्षक देवसहायताकरी।नसत्यंभननहींकिय उसघरी ॥
राजनातेकशरीरमेंआय । किंकालीकर योंचेताय ॥
प्रमादीभूपकरे अन्याय । नाहकसत्य वन्तोकोसताय ॥
यज्ञदेव धूतारा केकेंह । सत्यवन्त चक्रदेवकोदेहे
यज्ञदेव चोरीकरले माल । चक्रदेवके घरदियाडाल ॥
चुगलीकरी तेपालआय । जाणके चक्रदेव नहींजणाय ॥
मित्रद्रोही चक्रदेव नकियो । जिससे उसेदेश वटोदियो ॥
सोशरनाइ मेरेफासीलेय । ग्रामबाहिर वटतलेदेय ॥
र्शभ्रजाला तसकरसत्कार । ओतूंनवे इच्छेचेनचार ॥
नहींतो समूल करूंसंहार । देववचन मिथ्यान लगार ॥
योंकिह देवअद्रश्यथाय । राजाजानिहीं डरामनमाय ॥
तेसेही नृपग्राम बाहिरगहो । चक्रदेवफासो दूरकियो ॥
वहूलजनदोड आयेनृपानिसार।नृपति नमीतसकियासत्कार ॥
गुसलाये तसनेहलमझार । पंचकनेटी भरीउसवार ॥
यज्ञदेवको नफरहाथ बोलाय । तेजाने इनाम देवेमुझराय ॥
तेशीघ्रआयो नृपतिपास । नृपबंधननें डाल्योतास ॥
पूछधमकाइ कहेनसच्चन । किसनेकरी चोरीशाहदरान ॥
पापी फिरबोला मिथ्याबोल।मालमिला अवश्यामुझतोल ॥
नाइननर्जन अनिहीकरी । नवेनभृजन सत्यउचरी ॥

मचीरकीधा महाराज । मित्रनाममें झूठालियाज ॥
राजादेव कोपकिया प्रकाश । आजहोतामुझ सबकानाश।
यज्ञदेव महादुष्ट चंडाल । लेजावो इसेमारो इसकाल ॥
दोहा—सुनी वचन चक्रदेव तब । तुर्तही बोलनम्र होय।
मेरे प्यारे मित्रका । गुन्हा माफ करे दोय ॥ ३९
सर्व चकित भये देखकेधन्य कृतज्ञ कुमार ॥
आपकारी पे उपकारतो ।विरला जग करतार॥ ४०

चोपाई

नृपति कर जोडी कहेतास । अहो पुण्यात्मा मत कर पक्षयास
यह कृत्घनी पृथवी भार । शीघ्रहोने देइसका संहार ॥ ४१
कटावुं जिहवा फोडावूं तन । तब शीतल होवे मुझ मन ॥
फिर न करे कोइ ऐसा काम । राज धर्म यह चुररहो धाम ॥
चक्रदेव कहे मारा नहींजाय ।नृप कहे ठीक करुं तेसाउपाय
कृष्ण मुख हरित पग करी । लंबो करणे बैठा बजार में फिरी
ग्राम हदबाहिर दिया निकाल । तबसब लोकजाने सचेहाल
फिट २ हुवा बिन माराही मरा । चुगली का फल वरणन् कारा
दोहा—चक्रदे यह चित्त लख । वैराग्य आतेमन लाय ॥
गणधर अग्नि भूतजी । तस भाग्य तहां आय ॥
लींदीक्षा शिक्षा वरी । करी करणी अपार ॥
पंचम स्वर्गमें उपने । आगेखेत्र पार ॥ ४६ ॥

चोपाई

यज्ञदेव अपमा नीया गया। किसीभी स्थान सुख नहीं लिया।
भटकी महादुःख से मरत्यू पाय। नरक दूसरी में उपना जाय।
आग वहू भवान्तर विस्तार। समरादित्य चरीत मझार ॥
चुगली फल जाणन कथा येकही। सुखेच्छु चुगली तजदही ॥

दोहा—यों चुगली दुःख दायनी। जान तजो सुसंत ॥
होवेगंभीर समता धरो। दो भव सुख मिलंत ॥



जानी सुनी देखी विपरीत । कदापि नहीं विगाडे चित ॥
जाने जग का अनादी स्वभाव । फिरत सदा नरहे एक साव
यों चिन्ती व भी मन वच काय । वर्ते नहीं ज्यों अन्य दुःख पा

गंभीरताकेगुण — मनहरचंद

छांडी चुगल ताइ भाइ । धारांनर गंभीराइ ॥
आप पर सुख दाइ यह होवत सदाइ है ॥
पर हीनता दर्शाइ । देते सज्जन लडाइ ॥
ताके हाथ कहा आइ । व्यर्थ पातक लगाइ है ॥
ऐसा डरी मन मांही । नहीं झलके कदाइ ॥
शेन वेन न जनाइ । दूसरेकी हीनताइ है ॥
सोही सागर सेकहाइ । अमोल तेही जगमाही ॥
इह लोक सुख पाइ । आगे स्वर्ग सिधाइ है ॥ ८॥
वधे गंभीर का यश । होत जग तस वश ॥
आदर पावत सब लोक के मझारी है ॥
पंचों सभा में बोलाय । लेते सला तस चहाय ॥
गुप्त रखे नहीं काय । जानी तस भारी है ॥
वोतो जाने सब कथन । नहीं जाने कोइ तस मन
चाहाते है वोलाना क्यों तेहितही उचारी है ॥
यों इस भय मांय । गंभीरता सुखदाय ॥
सुख संपत सौभाग्य । वना रहे तस द्वारी है ॥

अरे नर खाइने पचाइ जाय मणों वंध ॥
निर्जीवी वात एक केसे नपचायरे ॥
अपचा से रोग वहूत । पेदा होते तन मांहीं ॥
तैसेही चुगली भाइ । क्लेल को वढायरे ॥
पचा अहार गुणकरे । पुष्टकर होवतहे ॥
तैसेही पचाइ वात । गुणकर थायरे ॥
योगायोय विचारी उचारि म उच्चारियेरे ॥
अमोल प्रत्यक्ष यह । दृष्टान्त लगायरे ॥९॥
गंभीरों का धोखा टेल । इछित सो आय मिले ॥
वैरीयों का मान गले । गंभीरता धारते ॥
तनमें आवे पुष्टाइ । रुप वल अधिकाइ ॥
बुद्धि निर्मळरहे । मन अर्वीकारते ॥
लोक सब अच्छे कहे । जावे तहां आदरलहे ॥
वहूत जन सेवे तस रहे जोविचारते ॥
इत्यादिक वहूत गुण । गंभीर ता मे निपुन ॥
जाणी अमोल क इसे करोने स्वीकारते ॥ १० ॥

कथा—अठावीसवीं

गंभीर्यताकेफल वतानेवाली — "परदेशी राजाकी"

दोहा—केइहैगुणी जन विश्वमे । गंभीर गुण अलंकृत ॥

पण वक्ते जो गंभीर रहे । ताके गुण गवावंत
राय प्रदेशी मरणांत तक । गंभीर्यता रखी धा
रायप्रसेणी सूत्र से । कथा कथूं यहां सार ॥

चोपाई

केकैदेश सेतांविका पुरी । परदेसीराय नास्तिकमत धरी ।
जीव देखन हने बहूजी काय । परन्तु जीव उसे नहीं पाय ॥
चित्तप्रधान से एकदा केह । सावथी पुरी जावो भेट लेह ॥
जीतशत्रु नृप को भेट ये करी । सुख समाचार ले आना फिरी॥
वहूत ठाठ से चित्त सवाथी आय । जीतशत्रु को भेट कराय
सावथी पति अति सत्कार । सुखस्थाने रहे भोगे चेन चार

दोहा—उस अवसर वहां पधारीये । केशी श्रमण कुमार ।
चले जन वंदन बहून । देखे चित्त उस वार ॥ ६
पूछे मुनि आगम सुणी ।आपभी वंदन जाय ॥
परिषद बेठी भरय के । गुरु सद्बोध फरमाय ॥७

चोपाइ

...हो अहो भव्यों इस वार । आये किनार होवो पार ॥
...विधी धर्म जग तारण नाव।अणगारी आगारीलो चाव॥८
...न भिन्न भेदकर दरसावीये । भव्यों ग्रहने को ...

यथा शक्ति करी व्रत अंगीकार । परिषद् गइ निज २ आगार
पीछेसेउठे चित्तप्रधान । छुलीवंदे कहेवचनप्रमान ॥
नहींसमर्थ होवनअनगार । श्रावकव्रतकिये अंगीकार ॥ ॥
नवतत्वादिक हुवेजान । अपूर्वधर्म पायेहर्षआन ॥
सेतांविका जावनसजथाय । नमनकियाकेशी गुरुकोंआय ॥
करजोडी नमीकरे अरदास । मुझपुरी पावनकरो गुणरास ॥
मुनिकहे पारधी रहे उसजाग । पक्षी कैसे आवे दुःख लाग ।
चित्त कहे नृपसें क्या आपके काम । श्रावक बहूत पावोगेआराम
कहे मुनि अवसरे देखा जाय । हर्षी प्रधान विदा तब थाय ॥
मार्ग ग्रामे सब कों चेताय । सेवा करना जो केशी गुरु आय ॥
पुरी बाहिर वाग माली से कहे । केशीगुरु कों जगाये दये ॥
बधाइ देना मुझे तूं आय । दरिद्र तेरा देउंगा गमाय ॥
फिर भेट प्रदेशी बात सब कही । निज घर धर्म करे सुखे रही ॥

दोहा—पांचसो साधुसे परिवरे । कर केशी श्रमण विहार
सुखे आये से ताम्बिका । उतरे बाग मझार ॥ १५॥
माली बधाइ दी चित्त को । दिया द्रव्य तस अपार ।
श्रावक बहू साथे लही । वंदे आमुनि चरणार ॥ १६

चोपाई

सुण व्याख्यान कहे अहो महाराय । मुझ राजाको देवोसमजाय

गुरु कहे साधु दरसने आय । सन्मुख मिले बैठे महार बोहत
तो साधु सत करे उपदेश। चित कहे ठीक यहां लहुं मे
नवीन अन्न रस को बोताय । कैन्त नृपसंग चित तहां अ
बाग में मुनि देखराजा कहो चोन बड सुठ बाग घेरी रहे
कहे प्रधान यह है विद्वान । बीच कथा कहे सुनी २ मान
सुनी नृप तब मुनिहिंग आय । पुछे बनायो मुनी बीच कथ
मुनि कहे तूं मेराचोर राजान नृप कहे क्या चोरी कीनी बान
मुनि कहे तेरा ज्ञान चोराय। क्या शिक्षा उनकी करे राय ॥
तनको राय कियो नमस्कार । जाने प्रेमना तारन हार ॥
पूछे नृप यहां ने बैठे महाराजामुनि कहे यह है ठेठी बाणाव
तबै साधु ताही को जानमुनि शिक्षा मन नृपको देना
कहे देखत बड नृप हने कहानृप कहे सुख मेरे कैसे रहे ॥
मुनि कहे अबकी शान्त करो तबक्यो नृप मान लखी सबै ॥
फिर पूछे राय हे मुनी बीच कथमुनि कहे इसमें संशय नाय।
?तन कहे मुझ शरीरमहा पायोआप कहै सन्तक्षोणयो
बो जो आकर मुझको देखय । तो मानू में मुझ कैसे जाय ॥
मुनि कहे रानी सुत कलासंग । को मुझ जो सेवे अनंग ॥
सा को शोभा कैसी करे तूं राजराय कहे देवुं तोहे उठाय ॥
कहे देनाआवूं न मांय । तूं मन जाने देख्या राय ?
राय कहे सिष छोडूं हिना यामुनि कहे ऐसे नमस तूं राय ॥
सार करना को छोडे नहीमुझ शरो आठारेसेचन्हीं ॥

२ राव कहे दादी मेरी धर्मात्मा।देवलोक में गइ तस आत्मा
वो आकर जो मूझे चेताय।तो जुदा मानुं जीव और काय ॥
मूनिकहे नृप तेंने सजे शिणगार।कोइ बोलाय पायखानेमझार
तुं उसजगे जाय के नहींजाय।नृप कहे अशुचि में कैसे जवाय
तैसे ही राय यहांकी दुर्गंध । जोयण पांचसो जाय उतंग ॥
इसलिये देव सके नहीं आय।जुदी मान राय जीवरु काय ॥
३ जीवता भरा कोठी में चोर।सीलें सुर बंधकिये चउ ओर
फिर खोली कोठीचोर मरापाया।कहोस्वामी जीवकिदरसेजाय
मूनिकहे गुफा के जडे कमाड।अंदर रहे कोइ ढोल बजाइ॥
तस शब्द बाहिर जैसे आया।तैसेही जीव गया जानोराय ॥
स्वामीतैसेहीचोरकोठीमेंबंधकिया।निकालेअसंख्यकीडेदेखिया
कैसे गयेजीवअंदर भराय । मूनिकहे लोह पिंड कोइ तपाय॥
जैसे अग्नि उस में पेसंत । ऐसे ही जीवकोठी में धसंत ॥
५ राय कहे जीवजो एकसा रहे।तोजुवान वृद्ध सरॅके जेद्द॥
एकसा दुर क्यों नहीं जाय । मुनि कहे सुन द्रष्टांत तूं राय ॥
जुने धनुष्य बान दिग पडे । नवे धनुष्य से जावे परे ॥
६ नृप कहे जवान वृद्ध नर दोय। बराबर वजन उठावे न सोय
मुनि कहे ठीके नवे ज्युन पे।उपकरण सम भार दोनों धरे ॥
७ नृप कहे जीवता मरा तोलानर।वजन दोनों का हुवा बराबर
जीव गये हलका नहीं पडा।जीव का वजन अधिक न चडा
मुनि कहे मशक ॅ हवाभर । तोले तराजु में कोइ नर ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चोपाइ

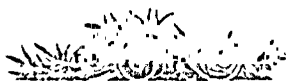
जाना राजा को धर्म में लीन। राणी का मन हुवा मलीन ॥
यह पति मेरे काम क्या आए। इस बैठे अन्य कर सकूं नाए।
अवके पारणा मेरे घर कराय। जेहर देकर मारुं इस ताँय ॥
आइ नृपकनेकरी परिणाम। अवके पारणा मुझघर करोश्याम
राय मानी हर्षीसाघर आया।खान पान आसने में विषमिला
भूपति बैठे आ आसन परे। तत्क्षण जेहर तस अंग संचरे ॥
जाना भूपति पौषध शाले आये। सलेषणा कर धर्म ध्यान ध्यां
धारी गंभीरता नकरी बात। रखे समभाव सबजीव खमा
पुत्र प्रधान आदि आपूंछत। नृप ध्यान लीन नजरा बोलंत
राणी डरी रखे कहे नृप भेद। मुझको फिर उपजे महा खेद
रुदन करंती पौषधशाल आय। सुख पुछती गले नख दवाय
तोभी राय जरा शब्द नकियो। सागर घर गंभीर हो रियो॥
अयूपूर्ण कर सुधर्म स्वर्ग जाय। सूर्याभदेव चारपल्य आय॥
तेरेही बेलामें किया कल्यान। महा विदेह से जावेंगे निर्वान

दोहा—सुने धर्म प्राप्त करी। धरी गंभीरत्ता अपार ॥
परदेशी राजा भणी। वारम्वार धन्य कार ॥ ५५
अहो ज्यूंन धर्म धारीयों। तदृष्टान्त ये ध्यान ॥
बनो गंभीर सर्व सुम्वलहो।बरो पद शिव स्थान ॥

निज पर आत्म सुख वरन । पैशुन्य पाप उद्धार
ऋषि अमोलख ने रचा । चतुर्दशवां अधिकार
परम पूज्य श्री कहानजी ऋषजी महाराज
के सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी
मुनि श्री अमोलक ऋषिजी
रचित अपोद्धार
कथागारग्रन्थका
पैशुन्यपापोद्धार
नामकचउदवा
मंगल

समाप्तम





मंजिल पन्दरवां—"परपरीवाद पापोद्वार"

पूर्वविभाग—"निन्दा"

दोहा—निन्दा निन्द्य सदा कही । सेवे पातक घोर ॥
मूत्र गूंथ कचिना विषे । निन्दा निन्दी ढोर ढोर॥

चोपाइ

देखो दशवै कालिक उत्तराध्येन । ठाणांग समवायांग जैन ।
भगवति और अनेकही ठाम । पीठमांस भखो निन्दा नाम
मांस भक्षीसो नरक में जाय । निन्दक उपजे निगोद कमांय
नरक मे निगोद में दुःख अनंत । भोगवे जबर निन्दक जंत ।
जिम कोइ निन्दा करमां दुःख पाय। निन्दक निजात्म दुर्गुणी थाय
जिम आगनिन्दे साद समलीना । यों अनेक निन्दामें दुःख लीन
संगत निन्दकोंकी पाप पूर । सुमती उससे रहो सदा दूर ॥
सद्गुण नहि ढूंढन मा गहे । गुण गुणी मे दुर्गुणमने रहे ॥

निन्दक निन्दामें धर्म स्थपाय । कटनी के केइ ग्रंथ बनाय ॥
पडे सुने सो ही निन्दाही करे । कहा अंत कहू इसपापका अरे
योंअनेकों कोंअनेक भवमांय । निन्दा होय अनंत दुःखदाय।
योंनिन्दा की जान खोटी रीत । धर्मात्मान करे कभी प्रीत ॥

निन्दा के दुर्गुण–मनहर छंद

अति पाप कारी प्रभु निन्दा को निहारी ॥
सूत्र पाठ के मझारी । मांस भखी जोडचारी है ॥
आचार का आठेवण । ठाणांग में जिन भणे ॥
कर्री हुइ करणी का नाश करन हारी है ॥
असमाधी दोष मांही । अविनीत गुण गवाइ ॥
ऐसे बहुत स्थान इस निन्दा को धिकारी है ॥
निन्दा ही निन्दक करे । निन्दकही कान धरे ॥
निन्दक है निन्दा । ऐसा अमोल वीचारी है ॥
निन्दक समान नीच । नहीं कोइ जग वीच ॥
उपमा देवाय लक्ष । भंगी से नीचाइ है ॥
भंगीतोविष्टा के तांइ । गूहे कष्टा दिक सहाइ ॥
एकन्ता मे जाइ तास देत सोपठाइ है ॥
निन्दक दुर्गुण विष्टा । हृदय में कर प्रनिष्ठा ।
जिव्हा से गृहीने अन्य करण में न्हस्वाइ है ॥
आप नन मेला भोर । अन्य को मलीन करे ॥

साथी साथ लेकर नरक निगोदे सिधाइ हे ॥ ९।
सद्गुण अनेक तजी । एकही दुर्गुण भजी ॥
राइ सा विस्तारी ताको मेरु सा वनावे हे ॥
करे आपकी बडाइ । दाखे अन्य की नीचाइ ॥
जाने मुझसम गुणी । जगमें नकोइ पावे हे ॥
जवझूठी पडे वात । तव मनमें मुरझात ॥
निन्दक निन्दाइ जग वहूत पस्तावे है ॥
स्थान २ झूठो पडी । आपणी विगोइ घडी ॥
निन्दकजी मर आगे दुर्गति सिधावे हे ॥ १० ॥

इन्द्र विजय छंद

निन्दा करीजन निन्दालहे जग।निन्दक कोमन मेलोसदाहोइ
द्रोही वने जपी तपीसंजमीको । महागुणी कोपणन्हाखेविगोइ
श्राप लहे संतापसहे परितापदये सो सुखी कैसे होइ ॥
दुःखकी खान दुर्गुण का स्थान निन्दाके समान नदूसार कोइ
सूत्र कृतांग के सुतसंघ दूसरे । अध्येन सात में गौतम केवे ॥
जोजपी तपी ज्ञानी गुणी संयमी । आचार्य आदिके अवगुणलेवे
निन्दा करे सो हारी करणीफल । किलविष सुरमें जादुखसेवे
आगे अनन्त संसार भमेयों जान सुजान निन्दा तज देवे ॥

कथा—एकुनतीसवीं

निन्दा के फल बताने वाली—"वेगवती की"

दोहा—निन्दा से इस विश्वमें। पाये दुःख अपार ॥
पन इहां सीता सती तणो। कथुं पूत्र भव सार।
निन्दाकरो निन्दा लहो। सज्जन विरह वनवास
वेगवत्ती सीता भइ। कही कथा रामरास ॥२॥

चोपाइ

भरत क्षेत्रे मणीकुंडल गाम। श्रीभूति विप्र सर स्वातिवाम
वेगवति तस धूया बुद्धि वंत। मिथ्याशास्त्र पठी निपुणवर्णंत
एकदा कोइ महामुनिराय। वनमें रहे कायोत्सर्ग ठाय ॥
तपोधनी महाध्यानी देख। दर्शन नरवृन्द आय विशेख ॥
तहां वेगवति क्रिडा कों जाय। देखी मुनि को द्वेष भराय ॥
इर्षा लाकर मिथ्या कहे। अहो लोकों यह ढोंगी अहे ॥
व्यभिचार सेवत मेंने देखीयो। यहां ये बन बैठे सखीयो ॥
धूतारो ठग इने ठगे लोक बहू। सच मानो जो वचन मेंकहूं
ऐसी निन्दा बहुतही करी। मिथ्या मति मानी सबही खरी
सम्यक्त्वी नहीं चले लगार। वेगवति बान्धे कर्म अपार ॥
मुनिश्वर चिन्ते मन मझार। अबर नमुझको कोइ विचार ॥
जिन सासन कीहीलना होय। यह दुःख नहीं खमावे मोय
अभिग्रह धारो उसही बार। जहां लग अपवादनहोय निवार
तहां लग नहीं भोगवु चउ अहार। ध्यानमें रहूं दृढता धार

सासन देवी यह बात को जान । वेगवति पर हुइ रुष्ट मान।
वेदन प्रक्षेपी तास शरीर । वेगवती मुरछा पडी पीर ॥ १०।
जल विन मीन परे जड फडे।आक्रन्द रूदन अनि ही करे।
धर्मी कहे देखो निंदा के फल।कर्म उदय यह हुवे अटल
धिक्कारे बहु लोक नम तांय।महांमुनी को और सताय ॥
नस सज्जन वेगवती उठाय । मूनि चरण ढिग मेली लाय
वेगवती तब कहे नरमांय। मिथ्या में बोलीमहा राय॥
कुड़ कलंक आप शिरदिया । क्षमो २ करी मुझपर मयां ॥
यों कही वारम्बार नमन करे।साशन देव तब ...
देखा मन में पश्चात्ताप पूर।वेदना उसकी कीनी दूर ॥
सुखी हुइ देखी चमत्कार । सच्चा जैन धर्म जाना उस
साध्वी पाम ले संयमभार।करी करणी ज्ञानादिक धार।
आलोयणा विन सा मरकरी।प्रथम स्वर्ग में देवी अवतरी
तहांसिचव मनुष्य लोक मझार।जनकराय घरकुमरी हुइ
सीता सती हुइ जगत विख्यात।राम अंगना गुग गणगात
राम लछमन संग रही बनवास।रावण दगाकर लेगयातात
राम रावण मार लाये छुडाय।शोकोनम इरषों में भराय ॥
पूछे सीता से देखा रावण रूप।सीता कहेफक्तपगदेखुभु
कुकम पट्टीये पर डाल लाय।भोली सीता पास पग मंडाये
शोको पुष्पादि नाव चढाय । रख दिये एक आलेकमांय

दोहा— रातको फिरतेरामजी । धोबीघरटीगऽ
होनहारकेजोगसे । वचनवोंकाने सुनाय ॥ २

चोपाइ

धोबणकहे झटखोलकीमाड । धोबीकहे कहांगइथीरांड
क्याघरोघर रामहीदेखीये । दुशीलसीता घरमेंलिये ॥
सुनीराम मुरझाये अतिमन । अपकीर्तिकालगालांछन ॥
चिंताकरते मेहलमेंआय । चित्रपग रावणके देखाय ॥
पूछेसेंसोकोंयोंकीये । सीतानीत पूजेफिरअन्नलिये ॥
सुनीराम अतिआश्चर्यपाय । लक्ष्मणसे वीतकचेताय ॥
लक्ष्मणकहे स्वपनेनहींहोय । सीतामाइइच्छ नहींकोय ॥
तोपणराम नहींमानेबात । सीताकेकर्मउदय जबआत ॥
रथसारथीकों रामबोलाय । कहेसीताछोडो वनमेंजाय ॥
रामहुक्मसें कपटसोकरी । गर्भवंती सीतावनमेंधरी ॥
वियोगविति सहेअनेकप्रकाराकलंकशल्यमनसाले आगार ॥
वज्रजंघ राजातहांआय । सीतारूपदेख आश्चर्यपाय ॥
पूछेबाइतुम केनइनस्थान । सीताइरी नननन्कारजान ॥
अंगके भूषण देखडनार । नयनृपकहे नहींमेंचोरजार ॥
कहेंअहंनकाधनकधनक । धर्मशक्तिपर हूं बेबारक ॥
सीताहर्षी निजर्वीनरसुनाय । जानभई निजघरलेजाय ॥
हासीता प्रसवे जुगलकुमार नगरअंकुश नामेंधरकार ॥

सुखे चडे पढे हुवे होंश्यार । नारद मुनि आये उसवार ॥
दोनों कुमर से कही सब वात । क्रोध भरा कर सेनासजात
अनेक नरेन्द्र परां जय करी । अयोध्या ढिग आये हर्ष भरी ॥
सुना परचक्री राम आय । सेना सजी सोभी सन्मुख थाय ॥
मचा संग्राम जीते सीता नन्द । नारद राम से कहा सम्बन्ध ।
पिता पुत्र योग्य मिले हर्षाय । सीता जीको राम वोलाय ॥
अपवाद निवारण धीज तब करी । ऊंडीखाइ अग्निसे भरी ॥
सीताजी कूद पडे उसमांय । अग्नि फिटी तव जल [illegible]
नरसुर सब करे जय २ कार । मिटी निन्दा हुवा यश विस्तार
सीताजी तब दिक्षा वरी । ज्ञान ध्यान तप करणी करी ॥
अचुत स्वर्ग में इन्द्र थाय । एकही भव से मोक्ष सो पाय ॥
दोहा—वेगवति निन्दाकरी । दोनो भव पाइ दुःख ॥
कथा सार ये गृही करी । तजी निन्दा वरो सुख ॥





मंजिल पन्दरवा—"परपरीवाद पापोद्धार"

उत्तरविभाग—"गुणानुवाद"

दोहा—सर्व गुणों में प्रथम गुण । गुणानुवाद पहिचान।
गुन वन्त बनने के लिये । प्रथम उपाय यह जान॥

चोपाई

ज्ञाता सूत्र अष्टमें अध्याय । तीर्थंकर गोत्र उपार्जन उपाय ॥
वीस बोल कहे श्रीभगवान । सात पहिले का गृहो ज्ञान ॥ १ ।
अरिहंत सिद्ध सूत्र और गुरु । स्थिविर बहु सूत्री तपे श्रुरु ॥
इन सातों का करे गुणानुवाद । तीर्थंकर हो पावे समाद ॥
यों गुनियों के करने गुण उच्चार । होय गुनवन्त गुन का दातार।
गुण इच्छुक गुणानुवाद करो । निज परात्म सुख दे सुख वरो ।

गुणानुरागसेगुन—"मनहरछंद"

गुणवन्त होना जो चहाइ । गुण रागीबनो भाइ ॥
तासु गुण आकर्षाइ । तेरे पास आवेगा ॥
गुणवन्तो से गुणी मिले । गुणही गुण अटकले ॥
लेन देन गुणकाहो । दुणा बढ जावेगा ॥
वहू रत्नी वसुं धरा ॥ गुणी जन से रही भरा ॥
गुणीही गुणों को जाणे । तबही सर सावेगा ॥
जो गुणी गुणको सर साइ । गुणीहो जगमें पूजाइ
अमोल गुणानु वादी । सदा सुख पावेगा ॥ ५ ॥
धन्य सम्यक्त्व धारी । धन्य श्रावक शुद्धा चारी ।
धन्य साधु महाव्रती । धन्य अप्रमादी हे ॥
धन्य ज्ञानी धन्य घ्यानी धन विनीत धन्य दानी ।
धन्य तपी जपी खपी । धन्य जो मर्यादी हे ॥
धन्य पर उपकारी । धन्य सती ब्रह्मचारी ॥
क्षमावन्त दयावन्त । धन्य सत्य वादी हे
यों सदा गुणानुवाद । करे जोहे गुणी जन ॥
अमोल गुणानुवाद । सदा सुख सादी हे ॥ ६ ॥

गुणानुवादी की भावना—इन्द्र विजय छंद

आपही आपमें सोचलेरे नर तेरो तुझ क्या प्यारो लागे ॥
गुणानुवाद करे कोइ तेरातो तापर प्रेम तेरा कैसो जागे ॥
ताही को तूंतो अहो निश चहःवेल्ड् गुग प्रकाश करे तूं आगे ॥
तैसेही तूं करे अन्य के गुनतो अमोल महिमा होवे विन मांगे॥
जो कोइ तेरी निन्दा करे तो तेरे मन ऐसा विचार करीजे ॥
धोबी धोवे वस्त्र दामहू लेतहै यह विन दामहू मेल हरीजे ॥
मेरे मल ले लगावत पोतेये । और बुरा ताको कहा कीजे ॥
योंअतरमें निहाल अमोलक निन्दक ऊपर प्रेम धरीजे ॥ ८
तप जप कोटी किये कटे पातक ते पातक कटे क्षणके मांहीं
जो निन्दक मुखसे सुन अवगुण द्वेषकी बुद्धि जरा नहींलाइ
पाग पखालन घरबैठे गंग जान अमोल ये सन्मुख आइ ॥
मन धैर्य मुख मौन रही कर पूरा कृत अघसे ले न्हाइ ॥ ९
जो मन होवे निन्दा करनको तो कर आत्म निन्दा सदाइ ॥
जासुं आत्म पवित्र बने अरु आगे अजोग न बने खदाइ ।
पन मतकर कभी पारकी निंदा जो दोनोंभव है दुःख दाई।
पाप को निंदे मत पापी कोनिंदोरे अमोल एशिक्षासुखदाई
जो जाकाग्राहक सोसोइपावतगुण ग्राही गुण अवगुणीऔगुण
दोनों वस्तु मे विश्वभरा यह न पसंद कों मुखसे मत थुण ॥
तो तूं बने गुन सागर जीवरे लले जगत् में सद्गुण को लुण।
यह शिक्षा सद्गुरुकी अमोलव धारके होले सदाही निपुण

कथा—तीसवीं

गुणानुवाद के फलवतानेवाली—श्रीकृष्ण वासुदेवकी

दोहा—देखो कृष्ण नरेश्वरू।गुण ग्राही गुग वंत ॥
सडी स्वानी अंगके । आप बखाणे दंत ॥ १ ॥

चोपाई

प्रथम स्वर्ग सौधर्मा मझार । शक्र-सिंहासनें स परिवार ॥
बेठे शक्रेंद्र अवधी निहार । सब सुरों से यों करे उचार।
शोरठ देशे द्वारका पुरी । कृष्ण वासुदेव नृपेश्वरी ॥
द्रढसम्यक्त्वी गुणानुरागी । नहीं अन्य दिखता ताकेलागे
क्रोडों दुर्गुण मेंगुण चुन लेय।निसार दुर्गुण सब तज देय ॥
सर्वदेवता कहे सत्य वचन।एक सुरके नहीं मानी मन ॥ ४
करण परिक्षा मृत्यु लोकआय।सडीश्वानी का रूप बनाय
क्रमि पडे हैं सब तन मांय।अतीही दुर्गंधरही गंधाय ॥५ ॥
रक्त पीरू बहे तांके अंग।देखतेही मन होजाय भंग ॥
द्वारानगर राजपंथ मांय । तहां पडी सो कूत्वी आय ॥ ६ ॥
दोहा—तासमें कृष्ण स्वारीसजी।वन क्रीडा कों जाय॥
मार्ग में टेगडी पडी । लोक कहाड़े बहूताय ॥

नाडी तन्जी अति घणी । चिल्लाय ते नहीं जाय॥
सकल लोक थू थू करे । विद्रूप रहा गंधाय ॥ ८॥

चोपाइ

कृष्ण शब्द सुन दया तस लाय।कहे सबसे ताडो मारो नाय
लोक कहे देखने नहीं योग्य।सडी दुर्गंध अति असन्योग॥
कृष्ण कहे यों निंदो नाय। पुद्गलोंका यों स्वभाव पलटाय॥
कृष्ण चली तस नजीक जाय।सर्व लोक दुर रहे नाकदबाय
कृष्ण नहीं दूभायो जरामन।पास खडे तस करे अवलोकन
दाडिम कलीसम तस मुख दाँत।बरोबर जमेसोहे भली भाँत
कृष्ण कहे देखो सब लोक।क्यों तुम निंदा करो हो फोक॥
दाँत पंक्ति यम केसा सोभाए।एसा और कहा कहांदिखाय
सुण वयण सुर आने आश्चर्य लाय।तत्क्षण श्वानी रूपविरलाय
आकाश से देव प्रगट भये।कुंडल मुकुट वस्त्र दीप रहे॥१३॥
धन्य गुणग्राही यादव सिरदार।बार २ सुर करे नमस्कार ॥
नम्रहोय विनवे इम नरे । शक्रेन्द्र तुम पर संस्या करे ॥१४॥
परीक्षा करी कुत्ती रूपदनाय।गुणग्राही तुम सा और नाय॥
सम्यक्त्वा के शुद्ध लक्षणधार।नरक प्राप्त धारो अवतार॥
मेरे योग्य कुछ आज्ञा दीजे । कुछक चाकरी मुझसे लीजे॥
कृष्णजी कहे सब दो निरधान।धारो जैन धर्म सम्य दर्शन॥
सम्यक्त्वी बन देव गुरु सम जाने मेरी दे मेरुपाडे स्थान।

एक वक्त यह भेरी वजाय । जहां लग इसका शब्द सुनाय
तहां लग छ मास लग तांय । मरी मारी रोग नहीं प्रकटा
पर उपकारी तस जान । लाने कृष्ण हर्षा मन आन ॥
देव प्रणमी देवलोके जाय । महिमा अवी लग रही फेलाय
कृष्ण आगे तीर्थंकर पद पाय । जग उद्धारी मोक्ष सो जा

दोहा–गुण ग्राहक श्रीकृष्णजी । भेरीली यश प्रस.र॥
आगे तीर्थंकर पदवरी । करेंगे खेवे।पार ॥ २०
ऐसे सब निन्दातजी । गुणानुवादी लोक॥
तोइहभव परभव विषे । मिलेंगे वांछित थोक ॥
निज परआतम सुख वरन । पर परिवाद पाप उद्धा
ऋषि अमोलकने रचा । यह पन्दरवा अधीकार ॥

परमपूज्य श्रीकहानजी ऋषिजी महाराज
केस्मप्रदायके वाल ब्रह्मचारी
मुनिश्रीअमोलकऋषिजी
महाराज रचित
अघोद्धारकथागार
ग्रंथकापरपर्रा
वादपापउद्धार
नामपन्दरवा
मंगल
समाप्तम्



मंजिल शोलवां-"रतिअरति पापोद्धार"

पूर्वविभाग-"प्रवृत्ति"

दोहा-पुद्गल परिचय अनादिसे । स्वभावे वृतिप्रवृताय
अशुभ शोक शुभमें हर्ष । सोरति अरति कहाय ।

चोपाइ

सब सकर्मी जगत् के जीव । कर्म स्वभाव पलटे है सदीव ॥
शुभका अशुभ अशुभ शुभहोय । प्रणति तामे परिणमावेसोय
शुभ माने जिन पद्गलों ताय । तासंयोग रति सुखपाय ॥
जिन पुद्गल को अशुभ ले मान । अरति उपजे होयदुःखखान
इन दोनों में से एकसदाही रहे । संकल्प विकल्प करमनदहे
यह हीज है अज्ञानता स्वभाव । आत्मा तासुं धरत विभाव
इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग । रोगोदय और इच्छे भोग ॥

यह गउ अरति उपजाय अमुलद रति आर्त ध्यान ध्याय ॥
क्षण में हंसैन क्षणमें रोय । इस विचित्र तासे जन्म विगोय
यहां दुःख आगे गतिकुपाय । रतिअरति पाप दुःख खदाय

वस्तुनिस्वरूप—मनहर छंद

स्वजन स्नेही धन धान और निज देही ॥
निज करी माने येही । वियोग नचावे हैं ॥
इनके नशाने जोग । मिले जो कदा संयोग ।
चोर सिंह विष आदि । दुःखी मन आवे हैं ॥
उनके संयोग अथ इनका वियोग चहाय ॥
संकल्प विकल्प यों चित्त उपजावे हैं ॥
यथा स्थितो रहे जाय । किया किसी का न थाय ।
दोनों अरति पाय । जीव को सतावे है ॥ ७ ॥
रत जीव सुख चहावे । रोगादि से दूर रहावे ॥
दोनों कर्म नम मनावे । उदय जब आवे है ॥
[illegible] गिन ॥
[illegible] हैं ॥
[illegible] ॥
[illegible] हैं ॥

सातवेदनी में राति । असाता से ले अराति ॥
योंरति अरति पाप । जीवको सतावे है ॥ ८ ॥
रति उपजाने काज । मुढमति करे अकाज ॥
स्थावर त्रस जीवोंके जो घमशाण करावे है ॥
श्रवण नयन घ्राणा । फरस रसन पोषाण ॥
वाजित्र नाटिक गंध । रसादि निपावे है ॥
तान टूटे घर फूटे । विरस दुर्गंध छूटे ॥
वस्तुका स्वभाव नाशे । क्लेश मन पावे है ॥
जगत् के स्वभाव लारे । आत्मा विभाव धारे ॥
यों रतिअरति पाप । जीवों को सातावे है ॥ ९ ॥
संपति अन्य की देख । मन में झुरे विशेष ॥
याकी कैसी ऋद्धि । ऐसी मेरे क्योंनी थावे है ॥
यह अरति मिटायवा । केइ करे हावा धावा ॥
अपने भले को दूसरे का बुरा चावे है ॥
निज कृत्य अनुसार । पावे जग सुख सार ॥
यह बुद्धि विसार रतारति चित्त लावे है ॥
यों कुकर्म को उपाइ । जावे दुर्गति मांइ ॥
योंरतिअरति पाप । जीवों को सतावे है ॥ १०
रतिपाप वश रत । होकर करे अनर्थ ॥
भक्ष अभक्षण नेवे वेश्या पर नार के ॥

जुवा चोरी मदिरापान । मृगया सेहरे प्रान ॥
यह सातों खोटे व्यशन । सेवे दुष्टा चार के ॥
इनों से प्रगट आय । दुःख शोग रुप लाय ॥
रोग भोग से पीडाय । बुद्धि बल हार के ॥
घातकी यह सातों पाप । आन के तज देवो साप
कहत अमोल दीर्घ दृष्टी से विचार के ॥ ११ ॥

रतिअरति से दुःख—इन्द्र विजय छंद

रतिअरतिरुप रोगलगो जहां । तहां चित्त कोविश्रान्तीनाहीं
जोदेखे सुने वस्तु मनोगम । ताहीकों गृहण करन चित्तचाही।
जेता पुण्य तेती वस्तुपावत । अधिक मिलेनहीं तवपस्ताहीं
प्रापहीजावेतोहीदुःखपावे ।अमोलक चित्तकीहै विकलताही
छवीवस्तु अतृती से भोगत । उससे अधिकी जोसुनपाइ ॥
मनोग्य वस्तु अमन्योग लागत । अधिक गृहण करनसोधाइ
कूड कपट झपट कोर केइ । पुण्य विना सोहाथान आइ ॥
अतिलालसा सो कर्मको संचतहोय अमोलचित्तकीविकलाइ
एकसे एक अधिक सुखदायक । नाना वस्तु हैजग के मांही ॥
सबही नमिले एकही जीवको । ताने कभी संतोप नआइ ॥
चिन्ताही चिन्तामें आयु करे छिनदय जीरण तृष्णनाजिरणाइ
रतिअरति पाप के वशमें जन्म चिन्तामणी देन गमाइ ॥

कथा—इकतीसवी

रति अरति के फल बतानेवाली—"ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिकी"

दोहा—रति अरति पाप वश्ये। दुःख पावे संसार ॥
ब्रह्मदत्त चक्रीपरे। दोनों भव मझार ॥ ११ ॥

चोपाइ

कम्पिल पुर ब्रह्मनामें राय। चुलणी राणी अति सुखदाय।
चउदे स्वप्ना ले जन्मापूत। ब्रह्मदत्त नाम रखा सुख सूत।
ब्रह्मराय असाध्य रोगी भयै।दीर्घराय मित्र बुलाकर कहे॥
राणी पुत्र की तुमे संभाल।ब्रह्मदत्त संभाले वहां लग पाल।
दीर्घ दीयो संतोषब्रह्म कियो काल।मर्णक्रिया कर करेप्रतिपाल
चुलणी दीर्घ राय वश्य भइ।व्यभिचार सेवे ब्रह्मदत्त देखलइ
दीर्घ कहे पुत्र होगा दुःखकार।चुलणी कहे मैं न्हाखुं मार॥
लाख को महल बना परणाय।दम्पती को उस में सोवाय।
आधीराते दी आग लगाय। सचीव स्वार्थी सुरंग खोदाय
उसमें से ब्रह्मदत्त गया निकल।प्रदेश फिर पाया राज सकल।
चक्रवर्ती हो कम्पिल पुर आया।मारी दीर्घ नृप सुखे रहाय
संचित पुण्य से जमा नव साज।भोगवे भोग पाये सुखेराज
दोहा—कुरुमिनाम नगरविषे शठ नकुल नाम द्विज॥

सो पहिल भव पांच का।ब्रह्मदत्त का मित्र ॥८
दीक्षा ले ज्ञानी भये।भाइ समझाने काम ॥
आये कम्पिल पुर बाग में।ब्रह्मदत्त वंदे ताम ॥१

चोपाइ

मुनिवर तस सद्बोध सुनाय।पूर्व भव का सम्बन्ध बताय
दशारण देशमें दोनों थ दास।मृगं हुवे कालंजर पर्वत प.
दोनों हंसे हुवे गंगानदी तीर।काशी नगरमें मातंग शरी
वहां सचीवने किया अन्याय।गाय मारण दिया पिताकेन
उसे छिपा रखा अपने घर।उस ने अपन को पढाये नेह
अपने ही घरकिया उसनेअन्याय।आप ननिकालदियाउसत
वो हस्तीनापुर में हुवा प्रधान।अपन करने लगे पुर में गा
मोहित हो लोक छीये अभडाय।आपन को पुर बाहिर कर
अपमानित हो मरने काज।पहाड से पडने देखे मुनिरा
आपन वंदे उन दिया उपदेश।आपन संयम ले फेरा मुनि
फिरते आये हथिना पुर बाग।प्रधानदेख किया उल्टट विष
पुरमें जाते थे दिये अटकाय।आपन दिया संथारा ठाय
तुम कोपी ने तुलेश्या प्रकट करी।मेंतुम मुख हाथदिया न
धूम्र गोटा गया पुरके मांय।तरा चक्री राणी साथ ले आ
वंदन तुम देखा श्रीदेवी रूप।यह नियाणा तुमने किया
देवलोक हो यहा उत्पन आया।नियाणे जोग अलग जन्म
तब चक्री कहे करणीके फल।में नाः यह भोग हूं विमल

पुनभी आचारांगक मांयाभोगवो सुख इच्छित सदाय ॥
मुनि कहे जिस से पाये सुखाउसे पुनः वरो मिटे सव दुःख
राज भोग रति नरक लेजाय।निश्चय एक दिनसव छिटकाय
मैं भी पाया था वहुतही रिद्धाछोडके करू आत्म कार्य सिद्ध
राय कहे यहतो अव छूटेनाय।भारी कर्मी तस जानामुनिराय

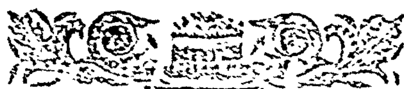
दोहा—मुनिवर किये विहारतव।ब्रह्मदत्त भोगे लुब्धाय
अति रति जिस जागा रहे।तहां अरति प्रगटाय ॥

चोपाइ

एक ब्राह्मण ब्रह्मदत्त ढिग आयानामी कहे याद हैमहाराय॥
वनमें मार्ग वतावन हार । दियो वचन अव पाडो पार ॥
राय कहे मांगो जोतुमे चहाय।विप्र कहे आपभोजन मुझेकराय
समजायो समजो न लगार।जिमाइ खीरउपजो महाविकार
घर आ किये मात पुत्रीसे भोगातन फटीयो उपज्योकुष्टरोग
कुवुद्धि चक्री पर क्रोधभरायामारनचिंतन लगा उपाय ॥
एक वन में एक भील देखीया।एक वान वड पत्त वहुछेदीया
उसे वश्यकर कही मनकीवातागो कहे में करूं राजाकीघात
वन क्रीडा को आया राजान । भील गलोल मारी तवतान।
फोडी दोनों आँख तत्काल । चक्री कोप्या जैसा काल ॥
भट भील को लियो पकड । उस ने विप्रकी वात दीकर ॥
कुवुद्धी जानी ब्राम्हण की जात।मगा कर उसकी आँखमंगात

मसली पगतले क्रोध आतेलाय।नित प्रते यों ब्राह्मण मराय।
सचीव योजी जोग उपाय। गुंदा फल बीज दे नित लाय॥
पग तले मसले विप्र नेत्र माना।रति अरति ध्यावे आर्तध्यान।
सातसो वर्ष लायू पूर्ण करी।सातमी नरक गया सो मरी॥
एक श्वास के भोगवे सुख।त्रेपन पल्य लिये झाजेरे दुःख॥
सात सो वर्ष सूख का परिमाण।तें तीस सागर दुःख लियेजाण।
दोहा—रति अरति के पाप वश्य।ब्रह्मदत्तपायादुःख॥
यों जाणी निवृत्ति वरो। ज्यों मिले पूर्ण सुख॥





मंजिल सोलवा—"रतिअरति पापोद्धार

उत्तारविभाग-"निवृत्ति

दोहा—पुद्गल परिणति मनकी । निवार निवृत्तिधार ॥
रतिअरति चिंतना धेर । तेही सुखी संसार ॥

चोपाइ

रतिअरति पाप मझार । स्वभाविक मन करे परिचार ॥
उस स्वभाव को ज्ञान संजोड । टाले यह अनादि मोड ॥
अनंत वक्तजो हुवा मनबन्ध । उस ममतामें रहा मनबन्ध ।
उनमें उनमें उपजनाहोय । सब भ्रमण मिटाना वहोवमोय
योज्ञान पुद्गलका स्वभाव । शुभाशुभ [illegible] मोविभाव ॥
ता स्वभाव मे परिणमे नहीं [illegible] मे निवृत्ति [illegible]
वहीनिवृत्ति है सुख उपाय । [illegible] ॥

तत्वज्ञ योगी महानुभाव। करे खप होवे विश्वके राव ॥ ५

निवृत्तिस्वरूप–मनहरछंद

रतिअराति निवार। निवृत्ति भावकों धार ॥
पुद्गल परिणति विचार। चैतन्य स्वभावरे ॥
एक रुप जोनरहे। तासुं कैसे निभेनेह ॥
देखले तुं तेरी देह। खेले कैसा दावरे ॥
मेरी तुंतो ताको करे। तेनेह न तुझेस धरे ॥
पुद्गल की वनी अंतः पुद्गल मिलावरे ॥
कभीरोगी वृद्ध थाय। पोपत्तही गिरजाय ॥
दगादार फंद मांय। अमोल मत आवरे ॥ ६ ॥
मनुष्य समान वली। और कौन रणस्थली ॥
छोडदे कायरता तो। सिद्ध बने उपावरे ॥
जेहर को अमृत करे। अग्निकी उष्णता हरे ॥
गज सिंह जैसे क्रूर। कामोडे स्वभावरे ॥
स्थावर जंगम तीर्यंच का स्वभाव फेरे ॥
तोक्या ज्ञानी चेतन्यका नहोवे पलटावरे ॥
अडग होसाध काम। सब पूरे तेरी हाम ॥
रतिअरति मन भाव। कदापि मलावरे ॥ ७ ॥

निवृत्तिका उपाय—इन्द्रविजय छंद

रतिअरति जेहर निवारण। मंल ज्ञानी गून्थों में बतावे ॥
निल रखे अभ्यास वैराग्यका। पुद्गल परणाति कदा नहीं ध्यावे
तासे भिन्नपना लखी आपना। निज स्वभाव तामे नरमावे ॥
निज आपो भज पर आपो तज। तोही अमोल सदा नन्द पावे
रेमन ज्ञानी! होजराध्यानी। वात लेमानी अभिन्न नहोइ ॥
जोकभी जोग वनाशुभ वस्तुका। तुझको शुद्धन करसके सोइ
अशुद्ध मिले तू अशुद्ध नहोवत। जो निज भाव को न पलटोइ॥
यह द्रढ़ ठान न आनरतारति। तोहि अमोल पर मानन्द जोइ
यमं नियमआसन प्राणायाम। प्रत्याहारधारणा ध्याँन समाधी
यह अष्टउपाव मनप्रसन्न करने। धारले पालेसेविधी आराधी
रोक केयोग कोयोगी बनासन। वाह्य आभ्यन्तर त्याग उपाधी
बुद्धहो शुद्धहो नहो विरुद्धतूं। योंही अमोल मेटे सवव्याधी ॥
जिनेश्वर चक्री हलधर नरवर। खेचर भूचर विज्ञ वहूताइ ॥
रति उपजाने केसाज मिलेसव। अरति कारक तास लखाइ ॥
तज प्रवृति निवृति वरी वर। अमोल आरम संपतितो पाइ ॥
संत अनंत वने शिवकंत। यही वात तंत महंत वताइ ॥ ११

कथा—वत्तीसवी

रतिअरति से निवृत्तिके फल वताने वाली—"जंवुकुमारकी"

दोहा–रति अरति कुं पर हरी । वरी निवृत्ति सन्ध ॥
जंबू कुमार के पड़ने से । कथु संक्षेप सम्बन्ध ॥१॥

चोपाइ

राज ग्रही ऋषभदत्त साहुकार । प्रभूत धनी धारणी नार॥
महा गुणी उनके जंबुकुमार।सुरूपसर्व कलामेंहोंशियार ॥२॥
आठ कुमारी संग सगपनकिया।व्यावन दिन वाकी कुछरया
तहां पधारे सूधर्मा अणगार।विद्या चरण करण गुण धार॥
पांच सो साधु के परिवार । उतरे गुणशील बाग मझार ॥
वंदन आये लोक अपार । साथही आये जंबु कुमार ॥४॥
श्री गणधर सद्बोध सुणाय । परिषदा सुणे चित्त लगाय॥
अनंत पुद्गल परावर्तन किया । अनंत दुःख जाव भुक्तिय॥
अनंत पुण्ये पायो नर अवतार । अनंत सूखका आपनहार
इस से अधिक अनंत वार । ऋद्धी सुख पाये संसार ॥६॥
गरज सरी नहीं एक लगार।जहांलग नहीं मिलीसम्यक्त्वसार
यह अवसर मिलाहै अब । तारो आतमा भवी जन सब॥
जो चूके तो गये भवहार । फिर पस्तावे न सार लगार॥
चेतो चेतो ! चतुर सुजान।इत्यादि बोध दिया भगवान॥
भव्यों बहुत किये त्याग पचखान।जंबु कुमर वैराग्य मनआन॥

पर आते पुर द्वार के मांय।तोप गोळा पडा पग विचआ
चम के चिंते अबी पात।मरण।धर्म बिना जाता विन शर
पुनः आये सुधर्मा गुरू पास।श्रावक के व्रत धारे उल्लास ।
सर्वथा करे अब्रह्म पचक्खान।आमातपिता ढिग कहे नर मा
आज्ञा देवो लेवूं संयम भार।सुन मावित्र दुःख पाये अपार
कहे अवल तुम करो अवीव्याव।हमारे मनका पूरो उत्सा
जंबु कहे आठों को दो चेताय।परण के दिक्षा लेूंगा में जा
आठों सुन कहे फिकर न लगार।हम समर्थ तो रखेंगी घरना
ओरसव कर परणे आठों नार। सयन घर में वैराग्य सोध
मुनि परे बैठे ध्यान लगाय।रतारनी तजी निवृत्ती ध्याय
आठों अचंभीकहेकरीप्रणाम।क्यागुन्हा कियानबोलाबो स्वा
लायो जैसा करो निर्वाह।धन यौवन लाने लो उत्साह॥१८
जंबु कहे येही मेरा परिणाम।जन्म विषय में न करूं निरा
आठ कथा जुदी २ नारी कही।कथा सुन उत्तर जंबु ततद

दोहा—चोर प्रभवा ने सुणा। जंबु नाम कुमार ॥
कोड निन्याणव टावल। लाये घर मझार॥ १६
पाच सौ चोर न आवीया। [illegible]
पेटा जंबु महल में [illegible] । १७

शक्रेन्द्र आसन चला।देखी चिंते मन ॥
फल दीक्षा जंबु लिये । लोक करेंगे ।चिंतन ॥
धन गये से उदास हो।साधु हुवे कुमार
यह अपवाद निवार ने। स्थंभे चोर उसवार ॥१९॥

चोपाइ

जंबु लिया सुन जागते जोय।चिंते मुझ विद्या चाली न कोय।
पांचसे चोर स्थंभे निहार।जाने जंबु विद्या बली अपार ॥
विद्या लेने आया जंबु पास।अति नरमी यों करे अरदास ॥
निद्रित करण ताला तोडन।दोनों विद्या आप लो मुझ कन॥
स्थंभन विद्या कृपाकर दीजीये।जंबु कहे इने क्या कीजीये ॥
में फजर लेवुंगा संयम भार।सून तस्कर अचंभा अपार ॥
कहे समजा एसा करना नाय।विलसो तरुणी संपदा पाय ॥
एक कथा प्रभवे कही । कथा सुन उत्तर जंबू तस दही ॥
सुनी प्रभवा पाया वैराग्य।कहे में दीक्षा लेवुंगा महा भाग्य
पांचसों चोरों ने कहे आवों घर।हम तो साधु होवेंगे फजर॥
पांचसो ही कहे हम भी तुमसाथ।हुवा न चक्का एक ही विचार
प्राते जंबु के मात पिता। अ पानव को वैरागी देख अचंभाय

कन्याके तात मात कों बुलाय।तोलही मिल सोभी आय ॥
जंबू कहे बाल वैरागी भये।वृद्ध हो लोभाइ तुम क्यों रये ॥
इत्यादि सुन समजे सवजन।पांचसोसतौवीस का हुवाएकमन
सुण कोणिक आश्चर्य नन्द पाया।सव ऋद्धी से महोत्सवकराय
लिया संयम सुधर्माजी पास।ज्ञान ध्यान तप क्रिया अभ्यास
जंबूजी पाया केवल ज्ञान। महा उपकार कर पाये निर्वाण ॥
और गये सब स्वर्ग मझार। लागे मोक्ष पावेंगे सार ॥
रति अरति त्यागन के फल। जान के भव्यो बनो विमल ॥

दोहा—पंचजाणी सुखार्थियों। रतिअराति त्याग ॥
जंबुजी परे सुखवरो। धरो चित्त वैराग ॥ ३० ॥
निज पर आत्म सुवखरन। रतिअराति पाप उद्धार
ऋषि अमोलख ने रचा। यह सोलवा अधिकार ॥

परमपूज्य श्री कहनजी ऋषिजी महाराज
केसम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री
अमोलख ऋषिजी महाराज रचित
अधोद्धार कथागार ग्रंथका
रतिअराति पापोद्धार नामे
सोलवा—मंजल

समाप्तम्



मंजिल सतरवां-माया मोसोपापोद्धार

पूर्वविभाग—"गुढ-असत्य"

दोहा—दूसरा नवमां पाप मिल।पाप सतरवां होय ॥
एकही अति दुःख दाइ है।तो दो की गति लो जोय

चोपाइ

माया मोसा मेटा है पाप। इस के अंदर मिथ्यात्व की छाप
कहलाते उतम स्थान मांय । यह पाप वहां रहां छिपाय॥
ऊपर से बनते भक्त राज । मन में मेले करें अकाज ॥
भक्त महात्मा नाम धराय । लोक ठगन केइ भेष बनाय॥
पोथा थोथा संग्रह करे घना।लोभावे मन कामी लोभी जना
मार गपोडे शभा को हंसावे।मिथ्या लाभ बता ललचावे॥
सत्य के आगे पड़दा डालीया।कलयुग में पाखंड मालीया

अहंताममता विन मारे।माया मोसा जोलगावेहेयुग्म
ऐसे केइ साधु यती।रखे ओगा रू मुहपती ।
केइ शुभ्र केइ मैले।वस्त्र धारी ही देखावे हैं ॥
ऊंचे-पाट पर विराजें । शास्त्र कथा कथे गाजे ।
केइ एकांत उत्सर्ग । केइ अपवाद ठसावे है
पोते पाले न पलावे । श्रद्धा भृष्ट जो करावे॥
बलके बगले की चाल । आल अन्य पे चडावे है॥
आप थापी महापापी।मिले मुक्ति न कदापी ।
ऐसे महात्मा कहाइ । माया मोसा जो लगावेहै।

इन्द्रविजय–छन्द.

बने भक्त राज शिरताज से साज केइ अवाज मधुर उचारे।
शुभ्र पोशाक सुपाग धरे तिलक छापे लगाये विचित्रप्रकारे
गले कर माल छोटी बडी डाल बैठे उंची गादी बने साहूकारे
बात २ में इश का नाम कहे इस ढोंगसे अपना मतलबसारे
माया मोसीभाइ करन ठगाइ।स्वभाव पडे अडे धर्ममें आइ
महात्मा बधारन ढोंग रचे केइ होवेंठे सागे बगलाके साइ।
मीठे जीकारे व्याख्यान सुने श्रद्धे नहीं जरा आंच लगाइ॥
अकृत्य करे भंडार भरे पापी। ज्ञान गुरू और धर्म लजाइ॥
मनमंहन को ठगे माया मोसी।चान बनावे करी नम्रताइ॥

अहार पानी वस्त्र औषधकी। अति आग्रह करी भावनाभाइ
द्वार लगाइ बैठे घर अन्दर।योग्य वस्तु को असुजती ठाइ॥
गुप्त अपमान करे मुनि राजको।पापी ऐसे वज्र कर्म बंधाइ।
पूर्ण पुण्य से माया मोसी की।कदाक कीर्ती जगमेंफलाही॥
माया मोसा महा पाप सेवनसे।संचित पुण्य खुटे क्षण माही
इसही भवे जो फल लगे तो होय निंदा बहुतही शरमाइ॥
पर भव में होवे नारी नपुंशक कटुवचन दीनतां दुःखपाइ॥
भक्त बने केइ ठगे भगवान को।ढोंगी भक्ती रचे भाव देखाइ
गुणानुवाद करे छंद बंधही।नमन खमन गुणभी दरसाइ॥
यश सुख लक्ष्मी चहाय धरे।नहीं आत्म के हित की चिंताइ
फीकी भक्ती में शक्ति कहां रहे।माया मोशी ठगे ईसके तांइ

कथा तेंतीसवीं

माया मोसाका फल बताने वाली "काल्हू नाइकी"

दोहा—माया मोसी मानवी हित साधन करे पाप॥
खाडा खोदे और को। उसमें डूबे आप॥ १॥
जग जन सहुकहत हैं। दगा सगा नहीं होय॥
इनाम पुरोहित को मिला।नाइ नाक दिया खोय॥

चोपाइ

बसंत पुर पिशुन जय राज वाणी शंकर पुरोहित गुणमाज

वाक्य पटुरव रींजे राजान । नवी २ कथा नित्य सुनेकान
फुरसत राते पुरोहित जी आयाकथा सुना रुका लेजाय॥
प्राते भंडार से नाणो पाय। उससे सुखे निज खरचचलाय
काल्लूनाबीक राजा का दासाराते पग चंपी करावे तस पास॥
रशीली कथा पुरोहित जी सुनायानिशा उसी में वहू बिताय
पग दाबता नाइ थक जायाक्रोध पुरोहित परसो लाय ॥
चिंते करूं नृप विप्र विरोधाकहाडू उपाय ऐसा कोइ सोध॥
एकदा पुरोहित किस कामे गयोनृपति नाविक दोनों हारये॥
माया मोसा नाविक तब करे । बहुत नरमी वचन प्रचरे ॥
धन्य २ श्वामी आप के तांयाआप जैसे कोइ गुणवंत नाय॥
अवगुनी ऊपर करो उपकार । जीव से ज्यादा रखते प्यार॥
पुरोहितजी हैं गुण के चोरानिंदा करे आपकी ठोरठोर ॥
कहे राजाजी करे मदिरा पानाउसमें मस्त श्रद्धे नहीं ज्ञान॥
मुख भी उनका अति गंधाय । पास मेरेसेबैठा नहीं जाय ॥
करूं क्या पडा पेट के वश्य ।कथा सुनाने लगा राय का रस
गये बिना तो चालेही नहीं । मुख बांध अब जावुंगा सही॥
दूर बैठ देवुंगा कथा सुना ।ऐसी बात में ने सुनी महाराय।
नृपति कहे देखें गे काल।तो सच्च मानेगें तेरे कहे हाल ॥
सुनकर नाइ मन हर्षाय । अब देवूं पुरोहित को सयजाय ॥
दोहा—पहर निशा ढलेतांथकाआया पुरोहित पास ॥
लली २ नमन कियामधुरी करे अरदास ॥ १३ ॥

चोपाइ

ताते आपको जगाये आज। सो गुन्हा माफ करो महाराज
आप गुरू मेरे आप हित काजाइस वक्त आया गुप्त साज॥
आज आप नहीं पधारे दरवाराआपकी वात करी सिरकार
पुरोहित आता नित्य कांदाखायाजिससे मुख उसका गंधाय
सदा आकर वैठे मेरे पास। ब्राह्मण जाण न वोलुं तास॥
समझे नहीं सो पढकर ज्ञानाकल करूंगा मैं तस अपमान॥
यह सुन लागामुझे अतिदुःख। तुर्तहीआकहा आपसन्मुख ।
देखो आपका कहां उपकार। देखो राजा का कैसा विचार॥ ६
कल सेदूर वैठना आप। मुख पर वंध कोइ वस्त्र साप ॥
यह चेताया आपके हितकाज। रखे वुरो मानो महाराज॥
सरल विप्र कहे भली चेताइ। उपकार कोइ वक्त फेडूंगा भाइ
कल मुख वांध आवूंगा शभामांइ। अदवसे रहूंगा अव सदाइ
हर्षाइ नाथी आया निजे घरे। कलतो मजा देखूंगा भलीपरे
दूसरेदिनविप्रेतसाहिकियाराजा नाथीकाकहा तचश्रद्धलिया
पुरोहित रसीली कथा सुनाय। राजा क्रोपमें गये भराय ॥
रुक्का लिखब्राह्मण कर दिया। पुरोहित उठ तव निज घरगिया
नाथिक भीगया उनके लार। कहे देखा क्रोध नृपका इसवार ॥
पुरोहित कहे राखी गेजी पे मुझ। आज का इनाम देवुंतनुझ
सो रुक्का नाथीक को दिया। नाथी हर्ष कर निज घर गया ॥
पुरोहित सुखे स्तुते घर मांय। कर्म केरन कननाही दाय ॥

वांची भंडारी अचंभीयो ।छुरी गुप्त कर लेय ॥
एकान्त लेइ नाइ कों । दीनो नाक उडाय ॥
मैंनहीं मैंनहीं करतही । नावीक नकटा थाय ॥

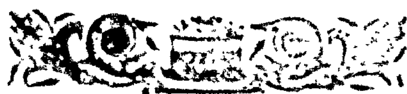
चोपाइ

नावीक पुकार राय पे करी । राय कहे क्यों पे चिट्ठी गिरि
नावी हत्र गयांमन मुरझाय । राजातब पुरोहीत कोंबुल
पूछे क्यों एक नाइको दिया । पुरोहित कहे उपकार उसनेकि
नृपूछ्या किया उपकार । विप्र कहेन हुवा आपकापुन्देग
मुन मुज गंध आपका मन दुभाय ।उसेन चेताया बैठादूरा
मुर्णा नावीक माया मेरासी नृपजाणाजाना नावीकीपापनिहाण
निकला दियानावीको गामबार । पुरोहितजीका कियासत्य
कहे पुरोहीत मुनियोंमिरदारा एक दोहा मुख उपजाइनया

दोहा—दगा किसीका सगा नहीं । करदेख्यारे भाइ ॥
एक तो भटजी कोंपाया । नाक कटाया नाइ ॥

चोपाइ

यों सुन समजे सबहीमन माय । मुनमाया मोपदियाछिटकाय
जिनने छोडाया मुनिया भया । मुन हूवा दृष्टान्तयह कया
दोहा—छिद्र नन माया मायमानावीक पाया दुःख ॥
[illegible]



मंजिल सतरवीं—"माया मोमा पापांडाग

उत्तरविज्ञाग—सरलसत्य"

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

सत्यसरा होलेय सद्बोध–मनहर छंद

समय के अनुसारी । शक्ति नर के महारी ॥
पन तैनही आचारी । आनि तैसही विचारी है
जिसमें वशनलगारी । उसमें नहीं गुन्ह गारी ।
कैसे वजन उठ भारी । जोहीन शक्ति धारी है
याते करण अधिक तारी । योपे शक्ति न लगारी
तो भी नहीं पहोंचे पारी । तहां तो वरजा लगारी
मन निन्दा नर नारि । यहां गुनी धारकारी ।
सो अमोल तिरे तारि । कलयुग के महारी है ॥
जान निजातम सुधारी । सोही परको उगारी ।
विना छिद्र की नावारी । पोते तरे पर तारी है
कहा साधु कहा संसारी । जिन तो परमोल की
नहीं भेद को रारी । कर गुन भव पारी है ॥
गुन भेद दोनों लिउ । तो निश्चय व्यवहार को
शास्त्र सब केरा [illegible] । ऐसी जिनकी उघारी है
बाह्य अन्तर विशुद्ध । वही मन थी बुद्ध ।
अघोर यो पार वार । [illegible] है ॥
[illegible] । [illegible] ।
[illegible] । [illegible] है
[illegible] । [illegible] ।

रमें धर्म में संसारी । मनसा नमति हारी है ॥
करे निजात्म निन्दारी । रटे गुणी गुण धारी ॥
सोहे जग में साधु सारी। जावूं ताकी बली हारी है
माया मोसा जो निवारी । सोतो सदाशुद्धाचारी
अमोल यह संसारी । रहे धर्म को दीवारी है ॥ ८

इन्द्र विजय छंद

माया मोसा वत्य लोभ माने कस वातको सत्यन [illegible]
मानी यश व धारण कारण धारी माया मोटी [illegible]
लोभी फसी महा आसकी फास खरी मेंखोटी [illegible]
ज्ञानो जानी इन गुप्त ठगारों कोआन नदे पास [illegible]
पडे मानमें अकड मकड कर । एव छिपा निज [illegible]
करे राइ और पहाड बतावन । खोटेको ओपदे [illegible]
धर्मी इसे जाने दुर्गति कारण । इह भवमें भी [illegible]
नकरे मान जो माया मोसाधर । अवसर [illegible]
सत्य आचर स्सत्य विचार हे ; सत्य उच्चर [illegible]
अवगुण गुण यथातथ्य जानत वखाणन [illegible]
डर खुशामदी नकरे किनको । नधरे [illegible]
मध्यस्त वृति स्मृति वहे लहेसो [illegible]
सोही गुनीज्ञानी ध्यानी जगतमें [illegible]
संत महंत पद सोभित नर सुगन [illegible] ॥

शाहा वादशाह की लायकी तामेही गुरु शिष्यसोहीगुणपाइ
जहां नहीं माया मोसा अमोलक तेही पुनित सदा सुखदाइ

कथा--चौतीसवीं

सरल सत्य के फल बतानेवाली–"केशी गोतमकी"

दोहा—अनेक मही साधु गुनी।माया मोसा छोड ॥
आत्म परमात्म रूप करा।हुवे जग जंतु मोड ॥ १॥
अवी चतुर्थ काल में।केशी गौतम महाराज ॥
सरल भावसत्य आदरी।कर चरचा मिल। समाज॥
श्रीउत्तराध्येन सूत्र के।तेवीस अध्याय अनुसार ॥
कथाकथुं सो सुणगुणी।करो ते कली में प्रसार ॥

चोपाइ

श्रीपार्श्व प्रभुजी मुक्ति गया।श्री महावीर शाशनसूरू जवभया
तव पार्श्व प्रभू के संतानिये।केशी कुमार श्रमण वखानिये ॥
विद्या चरण गुण के सागर।पांचसो मुनि के संग परिवर ॥
आवेथे सावथी नगरी वार।उतरे तिंदुक वाग मझार ॥५ ॥
उसी वक्त श्री गौतम स्वाम।महावीरके शिष्य गुण धाम ॥
च सो शिष्य सावत्थी वार।उतरे कोष्टक वाग मझार ॥६
नों केसाधु मिल आपसमांय।देख भिन्नता संकित थाय ॥
लोकों केमन में भी भ्रम भया।दोनों जैन सत्य कोनसेरया॥

एक कहंथे महा वृत चार । दूसरे पंच महावृत के धार ॥
एक के वस्त्र है बहु मोल । एक के परिमाणिक धरे तोल॥
दोनों के परूपक जिनराज।दोनोंही खपते मुक्तिके काज ॥
निर्णय इसका होय तो भला।जरूर मिटा चाह गलचला॥
गोतम मन पर्यय ज्ञान धारा।जाना साधू श्रावकका विचार॥
निर्णय करन का निश्चय करी।विनय भाव दिल में आदरी।
पहिले हुवे पार्श्व जिन मोटे जान।गोतम गये केशीजी स्थान
केशी गोतमका किया सत्कार।दोनों के मिले साधु हजार ॥
और नर नारी देव मरे अपार।कौतुक धरे केइ मन मझार॥
केशी गोतम दीप शशी रवी परे।गणी गणधर का पद सो धरे

दोहा—केशी श्रमण तीनज्ञानधर।गोतम धरे ज्ञान चार ॥
केशी श्रमण पृश्न करे।अधिक ज्ञानी नत धार ॥

१ पार्श्व प्रभु कहे महाव्रतचार।महावीर पंच महाव्रत उचार
दोनों जिनेश्वर फेर क्यों यहा।गोतम स्वामी उत्तर तब दिया॥
पहिले जिन के साधु सरल जड तिनसे दुर्लभ है [illegible]॥
छेल्ले जिनके मुनि शठ और वक्र। दुर्लभ तिनसे [illegible]
इस लिये पंच महाव्रत किये। [illegible]॥
बावीस जिन मुनि सरल बुद्धिवंत [illegible]॥
[illegible]
[illegible]
२ [illegible]

गोतम कहे धर्म साधनलिंग होय।मूक्तिका कारण नहींहेसोय
लिंग से लोकको परतीत आय।मोक्ष साधन सहायक भंथाय
ज्ञान दर्शन चारित्र मोक्षदेय । दूसराभी मिट गया संदेह ॥
३ अनेक वैरीयोंके गणमें रही।कैसे उन्हेतुम जीतो सही ॥
गोतम कहे एक मनवश करे। तो इंद्रि कषाय सब वैरी डरे॥
४ अहो,गोतम इस लोक के मांय।बहूतलोक फासमें रहेवंधाय
तुम फासकोछेदके विचरोकैसे।गोतम कहे सुनो केशीजीऐसे
जिनाज्ञा तीक्षण शस्त्र गिरी।राग द्वेष स्नेह पासछेदकरी ॥
हलका हो मैं विचरूं सदा । समझे चौथे प्रश्नका मुदा ॥
५ हृदय में लता अति बढ रही।विष भक्षण सम फल तसकही
समूल नाश तस कैसे किया।गोतम केशी को उत्तर दिया॥
भव तृष्णा वेल अनंतदे ताय।जिनाज्ञा सम शस्त्र साय ॥
तस छेदी मैंतुष्ट सुखी रहूं । केशी कहे वली प्रश्न कहूं ॥
६ महाप्रज्वलित ज्वाला तन मांय।बुद्धि बल सब गुण जलाय।
आश्चर्य तुम कैसे दीनी बुझाय।कहे गोतम सुनो सो उपाय
तीर्थंकर महा मेघ से हुइ वर्षाद।सुत्र धाराशीतल अगाध
कषा । अग्नि बुझा शीतल भयो।प्रश्न छट्ठा को उत्तर कयो
७ दुष्ट अश्व वापू वेगी धाय।अरूढ हो चलावो आज्ञामांय।
आश्चर्य हारी तुम कोण उपाय।गोतम तब उपाय बताय॥
मन घोडा सुत्र वचन लगाम।धर्म शिक्षण कल्याण सुठाम॥
कुमार्ग तज सुमार्ग चलें । केशी श्रमण सुणके हर्षेत ॥



समय पलटा उसके अनुसार । केशी समण सर्व परिवार ॥
चार महाव्रतके पंच महव्रत किये । हुजासाधु सर्व एकत्रभये
सर्व लोक अति पाये आनन्द । गुण उचारे गये घर पगवंद।
गोतम केशीरहेवीर ढिगआय । बहुत उपकार कियाजगमांय
दोनों मोक्ष पाये भगवंतानाम लिये ही सुख वरतंत ॥
दोहा—माया मोसा तज करासरल सलता धार ॥
गोतम और केशी गुरू । पाये सुख अपार ॥४३॥
तेस सब शरल सत्य धरावरतो जग मझार ॥
तो दोनों भव सुख लहोआशीर ग्वबा पार ॥
निज परातम सुख वरन । माया मोसा पाप उद्धार
ऋषि अमोलख ने रचायह सतरवां आधिकार।४५
परम पूज्य श्री कहानजीऋषिजी महाराजकी
सम्प्रदायके बाल ब्रह्मचारि मुनि श्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
अर्थोद्धार कथागार ग्रंथका
माया मोसा पापोद्धार नामे
सतरवां—मंजल

समाप्तम्



मंजिल अठारवां
मिथ्यादंशण शल्य पापोद्धार
पूर्वविभाग—"मिथ्यात्व"

दोहा—पाप सतरे शिर सेहरो । मिथ्या दंशण शल्य ॥
काल अनादि से जीव के लगा यह महा मल्य ॥१॥
बार अनंती त्यागिये । जीव सत्तरे ही पाप ॥
अठारवां त्यागे बिना । नहिं आत्मा आप ॥ २ ॥

चौपाई

मिथ्या को झूठा कहे [illegible] ॥
[illegible] कोई ना सुधार । अठारवां पाप की धार ।
मिथ्यात्व के मूल [illegible] अभिग्रहि अनभिग्रहि [illegible] ।
[illegible] ।
१ [illegible]
[illegible]

२ अना अभिगृही निर्बुद्धि होय। सत्यासत्य नहीं समझे सोय
सर्वमत को माने एकही सार। समझायो नहीं समझे गॅवार।
३ अभिनिशिक अभीमानी नर। अपनो मत मिथ्याजान कर
गर्धव पूंछ ज्यों छोंडे नहीं। उत्सूल क-ी अधिक वढाय ॥
४ संशयिक सत्य पक्षी सही। परन्तु मतिकी नुन्यतालही ॥
सर्वज्ञ कथित को मिथ्य. करे। शंकासे सम्यक्त्व कों हरे ॥ ८
५ अनाभोग अन जाने लगे। चोवीस दंडमें खाली नहीं जागे
डूबे इस वश्य में पडेजीव। भोगे अनंत संसार मे रीव ॥ ९ ॥
दोहा—दोभेद मिथ्यात्य के। लोकीक लोकोत्तर जान।
लोकीक लगे अन्य मतमें। स्वमत लोकोत्तर मान
एकेक के भेद तीन तीन। देव गुरु और धर्म ॥
सु-कुभेद मानता विषे। वरणु ताका मर्म ॥ ११ ॥

कुदेव गुरु वरणन्—मनहर छंद

मिथ्या मति प्राणी। अज्ञान मदिरा छकाणी ॥
देव गुरु धर्म खोटे। सत्य रहे मानी है ॥
ज्ञानादिक गुन विन। देव गुरु स्थापन किन ॥
हिंसा झूट चोरी रत। पास राखे रानी है ॥
वस्त्रभूपण सजाय। फल फूल भाचाडाय ॥
धूप दीप अंतरादिक। सोभा यह सजानी है ॥
भाग उपभोगरन। वहा केसी वैरग्य मत ॥

डूला डूली काहे ख्याल । तामें धर्म माने बाल ॥
महा अनर्थ निपाय । कैसी अक्कल गइमारी है ॥
घूमे अंग देव लाय । केइ ढोंगतहां जमाय ॥
तोभी भोपा रु पुजार । सदा देखते भिख्या री है ।
जो अन्य को सताय । सोस्वपने नसुख पाय ॥
थापी मानी दो डूबाय । यामे वैम न लगारी है ।
जड पूतला बनाय । वस्त्र भूषणे सजाय ॥
केइ ठाठ को जमाय । फेरे ग्रामके मझारी है ॥
नाचे हींजडे की तरे । ताता थै लटके करे ॥
गान तान नाना परे । ढोल जंजीरे झणकारी है ॥
छत्र चामर धराय । गुलाल अंतर उडाय ॥
प्रभु कर के बोलाय । खुशी ताकी करण धारी है॥
धर्म प्रभावना समजाय । देखी आश्चर्य आय ॥
ऐसे बाल ख्याल रचे । कहा कैसे पावे पारी है ॥

कुगुरु लक्षण—मनहर छंद

कहूं गुरु गत भाइ । केते इस जग मांही ॥
साधु शेन्याशी कहाइ । जोगी यति भीवजाइ है
षट काय को हनाइ । मृषा भाषा जो बोलाइ ॥
चोरी करे रुकराइ । करे सेंघटा जो नारी है ॥
धन का संचय करे । क्रोध मान माया धरे ॥

लोभे रागे द्वेष पडे । कलह कुआल ठारी है ।
चुगली निन्दा जो करे । हर्ष शोक कपट झूठवेर
ऐसे मिथ्यामति ताको कैसे गुरु धारी है ॥ १७ ॥
हुवे जगत् केपूज । रहे जगत् से धुज ॥
पेट के अर्थी अबूज । निज सुजन लगारी है ॥
परम्परा चली आइ । तैसा भेष लेवनाइ ॥
भेद भावन समजाइ । गावे राग ललकारी है ॥
वने कोडीके लाचार । फिरे सदा द्वारो द्वार ॥
साथ छोरा छोरी नार । और भार सिर भारी है॥
तेतो कहलाते महाराज । सजे वेगारी कासाज ॥
ताहे देखे आवे लाज । एक येही रुज गारी है ॥
केइ जटा कों वढाय । केइ मूंड जो मुडाय ॥
केइ भभूती रमाय । केइ नग्नही रेवता ॥
केइ वहू रंगीवने । छ पा टीके दीये घने ॥
केइ रहेत हैं वने । केइमठ घर सेवता ॥
भांग धतुरा चडावे । गांजा तमाखू फुकावे ॥
केइ विषय लीला गावे। केइ पूजे केइ देवता ॥
वेद पुरान सुनावे । अर्थ विस्तारी समजावे ॥
एक दया घट आये विन सर्व भाव भेवता ॥
गच्छादिप होइ घने । छके अभिमान पने ॥

जोगा जोग नहीं गिने । तने खेंचा तान में ॥
सम्प्रदाय कों वढावे । मूंडे जैसा तैसा आवे ।
सो तो क्लेशही मचावे । नहीं समजे जरा पान में
फिर दोष कों छिपावे । ऐसे भडे कों वढावे ।
आगें बहुत विगड जावे।तो लजावे मत जहान में।
विना वैराग्य भावआये । नहीं मिथ्यामती जावे ।
कहो कैसे मत दीपावे । कैसे आवे मुढ ज्ञान में॥
विना सम दम पन । ज्ञान ध्यान रू नमन ।
अज्ञान रू खमन । ते तो जानीये अयोग्य है॥
हट ग्राही क्लेश कारी । लोकीक न सुधारी ।
अभिमाने मत विगारी । धारी ईर्षाइ भोग है ॥
जो आप न सुधारी । वो अन्य क्या उगारी ।
लक्ष जाको अनाचारी । भारी कर्म को रोग है॥
गुरू वने ने संसारी । यह मिथ्यामत टारी ॥
रे आत्मा निहारी । हारी जाय मां सुजोग है ॥
भेरव व्यवहारी बनायो । पक्ष दृढ कर थपायो ।
मत अनमत न ज्ञायो । ये ही गायो है पुराण में।
जाने न्याय विसरायो । भेद हाथ नहीं आयो ।
मूल लखी न तकायो । गायो ज्ञानी जो ज्ञान में॥
सत्य मन को छिपायो । सत्य मति को हरायो ।
कली पाखंड वढायो । भुलायो अवज्ञान में ॥

नशो कुप में घोलायो । गुरू सर्व जग पायो ।
ताते चुप भयो डायो । तो समायो खड म्यान में।
एक किरिया सत्य माने । एक किरिया झूट ठाने॥
एक विनय वखाने । एक ताने अज्ञान में ॥
एक कोरा ज्ञान कथे । एक कोरी करणी मथे ।
एक दूर रह सब ते एक नास्तिक ठान में ॥
एक एक के अनेक । मतांतर जग देख ।
लगी सत्यही पे मेख । रेख छिपी घटा भान में ॥
छायो घोर अंधकार । डूबे जग काली धार ।
कहा कथे कथनार । समजावे आत्मान में ॥ २३॥

कुधर्म वरणन–इंद्रविजय छंद.

धर्म को मर्म न जानत ठानत। मिथ्यामत कुबुद्धि अनुसारे ॥
जीव अजीव को भेद न जाने। बिन दया मूल धर्म मुखे उचारे
करे घमशाण छः कायको अहोनिशी। हर्षित ताते मन अपारे
ऐसो जो धर्म सो मरन रूप नर मूढही धारे रु नाही तो वारे
? मट्टी मढ़ी धर्म स्थान बना बना देवालय मठ नानाप्रकारे।
ध्यान को धावत लिये फेंदावत। तालिन ऊंच स्थापन संहारे॥
धर्म स्थान विषे मोक्ष जो पावे तो चक्रवर्ति मंदन क्यों धारे।
ऐसो जो धर्म सो मानस्य नर मूढही धारे रु नाही तो वारे ॥
र [illegible] स्थानमें [illegible]

जल मे शुद्धी जो होवी कदाप तो अपवित्रकोले पवित्र[illegible]
[illegible] [illegible] तीर्थ [illegible] नर पापी ही मोक्ष पावेंगे वयारे
[illegible] जो धर्म सो मरम [illegible] मुढहा धार रु नाहीं सोत[illegible]
३ [illegible] दशा का [illegible] [illegible] जीवों पड़ते बहु अ[illegible]
[illegible] पदार्थ [illegible] [illegible] [illegible] क्या पावे अपतारे
[illegible] [illegible] यज्ञ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वयारे ॥
एसे जो धर्म सो मरम [illegible] [illegible] नाहीं सो ता[illegible]
४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अज्ञानी अन थे सोसं[illegible]
देव गुरु का [illegible] [illegible] [illegible] धर्म के अपहारे ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करना [illegible] प्रभुकी प्रश तार[illegible]
एसा जो धर्म सो मरम [illegible] [illegible] [illegible] नाहीं सोतार
५ [illegible] को जान लो [illegible] [illegible] [illegible] अनंतजीवां[illegible]
[illegible] जीवन [illegible] संहारना [illegible] [illegible] [illegible] विदारे ॥
मंडप अंगीया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आंगीकियार
एसाजो धर्म सो मरम [illegible] मुढहा धार [illegible] तारे
६ [illegible] [illegible] में [illegible] अनीपना [illegible] दुःख धर्मी आत्मार
शुद्धीकही [illegible] मरण विच्छु [illegible] [illegible] [illegible] अग्नि मंजारे
ने [illegible] [illegible] को दुःख [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मारे ॥
एसा जो धर्म सो मर[illegible] [illegible] तारे
[illegible] शीतल [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इस लोक अर्थ लगाय के । उलटे बांधे कर्म ।
उलटे बांधे कर्म । कष्टनिवारणतेला ।
बुद्धि वर्धन आंबिल । कमाइ को सामायिक पहिल
मद्दा निर्जरा के धर्म का करे लिलाम पड़े भर्म ॥
कितनेक भोले जीवडे । करते करणी धर्म ॥ ५

मिथ्यात्व कथन—इंद्रविजय छंद.

वीतराग कथन से औंधी अर्थाकी विपरीत श्रद्धा न करना
ब्रह्माड व्याप के एक आत्मा मानत कोइ कहे तरतर समहे
कोइ उपजी कहे पंच भुतन कोइ लोक कर्ता इश्वर जोइ ॥
जन्म मरन जाने बिन पंडित आतम परमातम रूप सिगोइ ॥
हिंसा मय अधर्म का धर्म कहा मरणदया धर्म कौ निरा
कनक कांता धारी गुरू मान अकानि ग्रंथ कहिग जानाहिरा
अजीव को जीव र जीव को निर्जीव मार्ग उन्मार्ग उलट हिउ था
• कोउ अर्थों के भेद न जानत सो मिथ्यात्वी • दुर्गति

सामान्य मिथ्यात्वी—अमृत छंद.

विवेक गुरु उपकारी तथा अविनय करे ।
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ॥

कथा—पैंतीसवी.

मिथ्यात्व के फल बतानेवाली—"जमालीकी"

दोहा—अनंत जीव मिथ्यात्व में। डूब रहे संसार ॥
करणी उत्कृष्टी करे। लेखे न लागे लगार ॥
ते स्वरूप दर्शाववा। भगवइ अंग अनुसार ॥
जमाली की कहूं कथा। सुणो स्थिरता चित्तधार ॥

क्षत्री कुंड नगर सोभाय। तहां क्षत्री राजा एक रहाय ॥
धारणी नामें गुणवंती नार। उसके जमाली नामें कुमार ॥
मेहलो में उदार भोगवे भोग। विविध पंच इंद्रिके सन्योग ॥
सुख में जाता जाने नहीं काल। मशगुल जग में पुण्य विशाल
उस अवसर श्रीजिन वृद्धमान। सहश्रो गमेसंग मुनिमहान॥
महाणकुंड नगरकेवार। विराजे बहुशाल बागमझार ॥५॥
क्षत्रीकुंड जन सुनहर्षाय। बहुजन संघ मिल वंदन जाय ॥
जमाली दास से जाना भेद। सजो च ...दर्शन की उमेद ॥
द्वादश परिषदा गइ भराय। महावीर सद्बोधसुनाय ॥
बूजो २ शीघ्र सुस्वार्थी जन। सामग्री नरनंकी मिली सुधन।
ज्ञान दर्शन चारित्र आदर। कर्म हणी होवो अजर अमर ॥
अपूर्व बोध सुन भव्य हर्षाय यथा शक्ति सो धर्म आचराय
जमालीजी पाये वैराग्य। कहे प्रभुने दीक्षा लेवूंस भ ...च ॥

सुख उपजे सो करो वीर फरमाय धर्म में ढील करोजारनाय
हर्षा वंदी आये निज नदन । मात तात से किया न मन ॥
कहेमें जाना अस्थिर संसार । दोआज्ञा लेवु संयम भार ॥
मात तात कहे सुन वच्छ वात । तूं नव योवन सुन्दर गात
तुझे पाला तूं हमे देसुख । फिरले संयम हम होवे मरण मुख
कहे कुमर यह उदारिक शरीर । अकची रोग भरा जरा तरि
विध्वंसन धर्म कोन पहिले जाय । अभी संयमलेवूं वापमाया
कहेमावित्र तुझेजेसी आठनार । नवयोवना रूपगुणगणधार
नमणी खमणी संगभोगी भोग । हमनरेवाद आदरजो जोग
कहेजमालीनारी तनअपवित्र ।मोक्षविघनी भोगेदु :खविचित्र
मुनिनिन्दे अनंतसंसार वढाय।मरण विश्वासनहीं दोआज्ञया
अम्मापिता कहे पुत्रसुजान।सातपीडीको संचयो धनधान ॥
सोविलसी फिर संयमधार । इत्नी कहीतोकर अंगीकार १५
कहेकुंमर द्रव्यमें सातसीर।जेमीजवलाचोरकुटुम्बरीयनीर ॥
अनित्य यह पुर्व पश्चात जाय।लेवुं दीक्षा ढील कहमें जाय॥
भोग वहुते आमंत्रण कीध।जमाली चित न चला को विध॥
तव संयम कठणाइ वताय । कोइ भी उपाये रहे घर माय॥
जाया संयम अतिदुकर कार । भुज सिन्धु तरे चडे गंग धार
शीत ताप सहे ले निर्दोष आहार।पीछ पस्तावो करेगाकुमार
कुमर कहे कायर अज्ञानी नांय।संयम दुःख कारक लखाय ॥
रम हितेच्छु को सुख खान।लेवुंगा पालूंगा जीवन प्रान॥

उत्तर नहीं दिया पुछा दोतीनबार।तब स्व इच्छासे कियाविहार
फिरते सावर्त्थी नगरी आया।कोष्टक उद्यान में रहे सुख मांय।
अचिंत अंग दहाज्वर प्रकटाया।शिष्य के पास बिछाना कराय।
पूछे असहाय वेदन से घबराया।किया ।बिछानाके करोहो भाय
हाल नहीं किया करे है श्राम।यों सुनते उनके फिरे परिणाम॥
वीर "कड़े,माणे कडे" कहाय।यह मिथ्या हुवे कार्य किये थाय॥
,केड माणे कडे चले माणे चले"।यह वीर वचन झुटे अटकले
मिथ्यात्व तब उपार्जन किया। हाथ आया रतन गमादिया॥
सर्व साधु को बोला दे उपदेश।यह वीरकी जाणो मिथ्यारेश॥
नहीं श्रद्धी जो संत बुद्धिवंत।छोड जमाली मिले जा भगवंत॥
कितनकेसाधु रहे जमालीलार।आये फिरते चंपा नगरमझार
वहां विराजेथे वीर भगवंत। जमाली प्रभू को नहीं मानंत॥
अभीमान धरी वचन यों केय। केवली होकर आयों मेंय॥
गौतम प्रश्नोत्तर पुछंन। लोक जीव शाश्वत के अशाश्वत॥
सुन जमाली चुपकर रहे। तब जमाली से प्रभुजी कहे॥
इस का उत्तर देवे ममछ द्मस्तमुनी।केवलीसेक्या छिपाहे गुनी॥
द्रव्यास्तिकनयशाश्वता लोक।पर्यायास्तिकनयअशाश्वतथोक॥
ऐसे ही जीव शाश्वता सदारहे।अशाश्वत गति रुप पलट है॥
जमाली नहीं श्रधे यह वचन। द्वेष ईर्षा अति व्यापामन॥
धर आहंकार बिन वंदे जाय। आप डुबे बहू जीवों डुबाय॥
बहुत वर्ष ऐसे विचरोय। अर्धमास अणसण अंत होय॥

लांतक कल्प तेरे सागर स्थिती। किलविषी देव हुवा नीचगती
तहां से आगे चार पांच भव लहीं। तिर्यंच मनुष्य देवता भइ।
संसार पर्यटन यों पापसे करी। फिर मोक्ष गती पावेगा खरी ॥

दोहा—ऋद्धि तज संयम लियो। करणी दुक्कर कीन ॥
एक जिन वचन उत्थापते। मिथ्यात्वी भयेहीन॥
तो जो उत्सूत्र भाखके। कुपक्ष बांध करे तान ॥
करनी करे सिद्धी तरन। कैसे पाय निरवान ॥४२॥
ऐसे डर भव्यातमा। करो जिन वयण प्रमाण ॥
खेंचा तानी छोडकर। पालो जिनवर आन॥ ४३ ॥





मंजि लअठारवां
"मिथ्यांदशण—शल्य पापोद्धार"

उत्तार विभाग—"सम्यक्त्व"

दोहा—सम्यक्त्व सर्व का मूल गुन । प्रथम चाहीये एय।
वृत करणी लेखलगे । सम्यक्त्वी शिव लेय ॥ १ ॥

चोपाइ

संख्य असंख्य अनंत प्राकार । सम्यक्त्व केशास्त्र मझार ॥
संख्याते-सातपांचेतीनदोय।असंख्यात-संसारी सम्यक्त्वीहोय
सिद्धआश्रिय अनंतही कहे । सातका अर्थ आगे सुन लहे ॥
मिथ्यत्व सम्यक्त्व प्रथम जान । नैगम नय रहे अंशगुनमान ।
वेप मिथ्यात्व प्रकृतिं उपशमाय । कृतव्य सम्यक्त्वी के कराय,
सम्यक्त्वपडवाइकेसास्वादानं। जहांलगनहींआवहीं ।मिथ्यास्थान
मिश्रसो मनमें गडबड होय । दोनों कनेंकर एकसम जोय ॥



मंजिलअठारवां "मिथ्यादंशण—शल्य पापोद्धार"

उत्तर विभाग—"सम्यक्त्व"

दोहा—सम्यक्त्व सर्व का मूल गुन । प्रथम चाहिये एव।
वृत करणी लेखलगे । सम्यक्त्वी शिव लेय ॥ १ ॥

चौपाइ

संख्य असंख्य अनंत प्रकार । सम्यक्त्व केदाग्र मझार ॥
संख्याते-सात पांचमें निर्दोष। असंख्यात-संसारी सम्यक्त्वी होय
सिद्धआश्रिय अनंतही कहे । मानका अर्थ आगे सुन लहे ॥
मिथ्यत्व सम्यक्त्व प्रथम जान । नैगम नय रहे अंशगुनमान ।
वेद मिथ्यात्व प्रकृति उपशमाय । कृतक्य सम्यक्त्व ही है कहाय,
सम्यक्त्वपड़ताइ हेमाम्यादानी। सहल्लगर्नेदा रहैं ।मिथ्यात्वथान
मिश्रसा मनमें गड़बड़ होय । दोनों धर्म । ए हमस ··



श्रद्धान यह रखे चार । सोही सम्यक्त्व धार ।
अमोल सम्यक्त्व । रत्नउत्तम ही आचरे ॥ १२॥

२ लिंग तीन–इंद्रविजय छंद.

जों क्षुधातुरे इच्छित भोजन मिले ताहे
ज्यों कामातुर नवयुवति मिले प्रेमोत्सुक
ज्योंबुद्धिवंत विद्या इच्छक पण्डित से ज्ञान
त्यों सम्यक्त्वी इच्छे जिनवाणी श्रवण जो

३ विनयदश–अनुष्टुप

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपध्यां ।
गण संघक्रियावंत दर्शोका । नि .

४ शुद्धतातीन–अरल

देव अर्हंत गुरु निर्ग्रंथ, धर्म दय
मनसे अच्छा जाने, वचने की
काया से करे नमन, अन्य
तीनशुद्धता अमोल सम्यक्त्वी

५ दूपण पांच –छपय छंद

गहन केवली वचन नसमझे शंका

ऐसी अभक्त ढोंग स्वमत से मैन नहीं लावे ॥
निश्चय करणी फल होय अशुभ तज शुभ करावे
हितकर करणी की महिमा सहजे न चलावे ॥
पाखण्डीका परिचय कोनहीं, यांच दोषन गुण मावारे
अनोड अपिलो समकर्ता। निश्चयनय सागर वरे

६ लक्षन पांच — कुंडलिया छंद

समे ज्ञान सव प्राण कों। करे पतला द्वेषराग ॥
वैराग्य भाव हृदय धरे। सांके अरंभ कों त्याग ॥
शांके अरंभ कों त्याग। दुःखी की अनुकम्पा लावे
जैन धर्म धरे अनुराग। आस्ता रखे दृढ रहावे ॥
यह लक्षन पांच समक्तके धरे सदा महा भाग ॥
समझावे सब प्राण को कर पतला द्वेष राग ॥१०

७ भूषण पांच — उपजाति छंद.

कुशल सदाई धर्म काम मांह्
तीर्थ चारों की सेवा नित्य चहाई ॥
तीर्थ गुन जाने अस्थिर चित्त करना ॥
जिनमत दीपावे भूषण पांच धरना ॥ ११ ॥

८ प्रभावना आठ — शार्दूल विक्रीडित.

श्रद्धान यह रंग नाग । सोही सम्यक्त्व धार ।
असाद सम्यक्त्व । उत्तम हीं आवे ॥ १२ ।

२ लिंग तीन–इंद्रविजय छंद.

जों क्षुधातुर इच्छित भोजन मिले ताहे उत्सुकता से अहा
ज्यों कामातुर नवयुवति मिल प्रेमोत्सुक भोग का प्यारे ॥
ज्योंबुद्धिवंत विद्या इच्छक पण्डित से ज्ञान ग्रहे सत्कारे ॥
त्यों सम्यक्त्वी इच्छ जिनवाणी श्रवण जोग बने अवधारे ॥

३ विनयदश–अनुष्टुप छंद

अर्हन सिद्ध आचार्य उपाध्याय स्थविर तपश्री साधु
गण [illegible] संघ [illegible] विनय सम्यक्त्वी आराधु

शुद्धता तीन–अमल छंद

[illegible] जिन [illegible] ध [illegible] सम ज्यों नहीं ॥
[illegible] वचन [illegible] कहीं ॥
[illegible] नहीं ॥
[illegible] ज्यों गावे नहीं ॥ १९ ।

[illegible]

[illegible] नह [illegible] ॥

देखी अन्यमत ढोंग स्वमत से मन नहींडगावे ॥ ॥
निश्चय करणी फल होय अशुभ तज शुभवढावे
हिंसक करणी की महिमा नइच्छे न चरचावे ॥
पाखन्डीका परिचय करेनहीं।पांच दोषतजगुणआचारे
अमोऊ ऋषिसो सम्यक्त्वी । निश्चयभव सागर तरे

६ लक्षण पांच —कुंडलिया छंद

समे जाण सव प्राण कों । करे पतला द्वेपराग ॥
वैराग्य भाव हृदय धरे । शक्त आरंभ कों त्यागे ॥
शक्ति आरंभ कों त्याग । दुःखी की अनुकम्पालावे
जैन धर्म धरे अनुराग । आसतों रखे दृढ रहावे ॥
यह लक्षण पांच सम्यक्त्वके धरे सदा महा भाग ॥
समजाने सव प्राण को कर पतला द्वेष राग ॥१०

७ भूषण पांच—उपजाति छंद.

कुशल सदाई धर्म काम मांइ
तीर्थ चारों की सेवा नित्य वजाइ ॥
तीर्थ गुन जाने अस्थिर स्थिर करता ॥
जिनमत दीपावे भुषण पांच धरता ॥ ११ ॥

८ प्रभावना आठ-शार्दूल विक्रीडित.

जोजाणे सर्व शास्त्र निपुण मति,धर्म कथ आ
त्रिकाल के ज्ञाता होवे धर्म अपवाद सहू दूर
विद्या पारग तप दुक्करकरे, वृत प्रगट आचरे॥
रचि कविता धर्म दीपावइ प्रभावक वसु ए खरे

९ यत्ना छः–वसंतिलका.

स्वधर्मी सम्यक्त्वी मिले आपस मांहीं॥
एक वार बहुवार हर्षी तसे बोलाहीं
दे इच्छित वस्तु निजकी सन्मान कराहीं॥
गुणानुवाद नमन करे छःयत्ना कहाहीं॥ २०॥

१० आगारछः–भुजंगी छंद

करे जबरी राजा जो पंचो दबावे॥
बली वश्य पडे त्रास देवों उपजावे॥
पडे अँटवी में तात माता सताइ॥
आगर छः सम्यक्त्वे वहा लगाइ॥ २१॥

११ स्थानकछे–हरीगीतछंद

धर्म रूपी वृक्षका सम्यक्त्व मूल हीजाणीये।
धर्मकू नगरकोट सम्यक्त्व पेटीधर्मकी मानीये।
धर्मकोट वासका नींम सम्यक्त्व हाटहे धर्म मालको
धर्म भोजन भाजन समकित स्थान षटयेमालको

१२ भावनाछः–शिखरिणी

अस्ति है आत्मा की। नित्य अमर आत्म हैता
आत्मा कर्म की कर्ता। भुक्ता यह नछूटे कदा॥

मोक्ष आत्मही पावे । ज्ञान चरण आदरे जदा ॥
यह हैं छेही स्थानक । सम्यक्त्वी श्रद्धे मुदा ॥ २२
दोहा—व्यवहार सम्यक्त्वके । सतसठ बोल वेहोय ॥
जोइनको आराधेगा । सम्यक्त्वी है सोय ॥ २३

सम्यक्त्व—मनहर छंद

नहीं वेष जग तारे । नहीं कुपक्ष उगारे ॥
नहीं मत करे पारे । जेवने मत वाले हैं ॥
मतवालता निवारी । मत चालना विदारी ॥
मत मति की सुधारी । मत ताही जग चाले हैं ॥
पाले रूडो व्यवहार । शुद्ध आत्मा आचार ॥
ऊंडो जाही को विचार । नहीं तुच्छकार हाले है ।
तेही सम्यक्त्व साता । जगजीवन के त्राता ॥
सेव चरण हित आता । साता पावन मगाले है ॥
जो सम्यक्त्व रंगीले । नहीं मांन्दे नहीं ढीले ॥
रहेधर्म सेजो लीले । पाले मोह अभिमानको ॥
बने पाखन्ड के कीले । जिन उलटी मे रीले ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शांत दांत क्षांत शीले । मोह मद माया छीले ॥
ज्ञान ध्यानके रसीले । धन्य अमोल ताकी मातकों

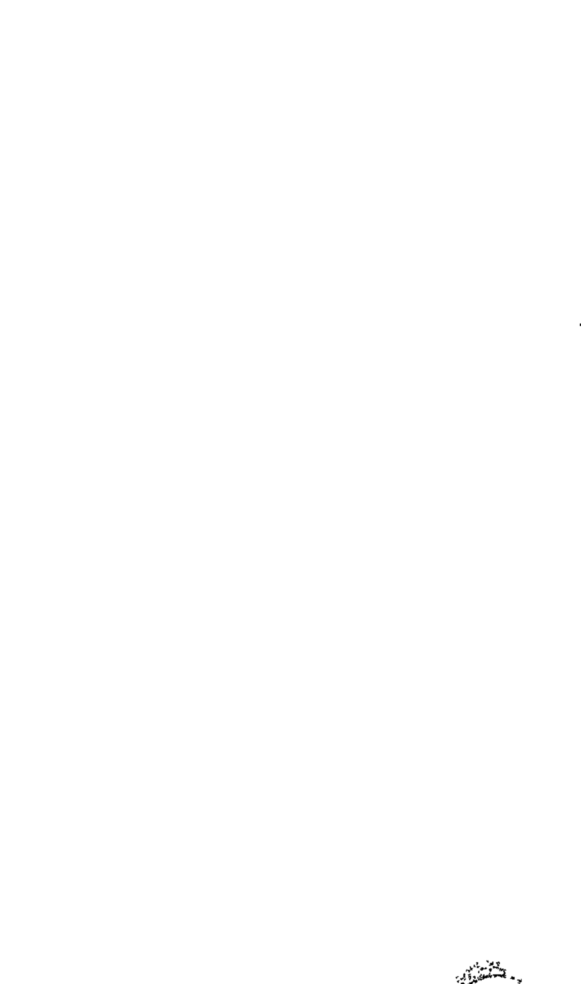
कथा-छत्तीसवीं

सम्यक्त्वके फलवतानेवाली-"विजयरायकी"

दोहा-सम्यक्त्व धर्म आराध कर । तरे अनंते जीव ॥
विजयरायजी की कथा । गून्थ सें भणु अतीव ॥

चोपाइ

दक्षिण भरत विजय पुर मझार ।विजयराज सम्यक्त्व केधार
त्रिखंड पति तीन राणी सुन्दर । तीन पुत्र ऋद्धिज्यों पुंरदर
एकदा सुधर्मा पति शक्रेन्द्र । विदेहमें वंदे सीमंधर जिनेन्द्र
पूछे अर्यी कोइ भरत क्षेत्रमांय । दृढ धर्मी श्रवक रहाय ॥ ३
प्रभु प्रकाशे विजयपुर पति । विजय राय निर्मळ समकिती ॥
देवदानव नहीं सके चलाय । सुनि सुधर्मीपति हर्षाय ॥ ४ ।
निज शभामें किया व्याख्यान । एक मिथ्यात्वी देवान मान
आया भरत में श्रावक बना । जैन पंडित नाम पूजे घना ॥५
फिरता २ विजय पुर आय । राजा की पोषधशाळे उतराय॥
धर्म चरचा कर हुये राय प्रसन्न । सत्य मानेसव उसके वचन।
एकदा धर्म चरचा के मांय । निगोदादि सुक्षम भाव जनाय



सुनराजा मनमें खिन्न होय।हित शिक्षा यहां नहीं चलेकोय
और मुनिश्वर सब गुणवंत।येहो टोळ। पापीपाप सेवंत ॥
चुप चाप फिर निज घरआय।रस्ते में मुनिकेइ खोटेपाय।
आचार्य निकले अंतेउर मांय।राजा आश्चर्य अतिही लाय॥
श्रावक कहे देखा राजान । जैन मुनि कैसे हैं गुनवान ॥
रायकहे सब खोटे नहीं ।कर्म गति से विगडे यह सही ॥
सूर्य से कदापि न होयअंधकार।तैसे जिन वचनसदाश्रेयकार
पंडिन कहे तुम दृष्टी राग पूरा।दुर्गुण गुणकर मानो भूर ॥
सुणी वचन तस मिथ्यात्वजिान।बोलगो वंध कियोराजान।
श्रावक तव कर गये विहार।नृप नहीं पुछो शुद्ध लगार ॥
दोहा—देव चिन्ते पर परिक्षासे । चला नहीं यह राय ॥
अब बीतांबु घर पर । तवही इच्छित थाय ॥ २० ॥

चोपाइ

राय प्रधान मुख्य सामंत तांय । देव कहे स्वपने में आय ॥
सर्प उपसर्ग पुर में होनार । जैसा पहिले हुवा न कोइ वार ॥
इसलिये नाग देवालय जाय। राजा प्रजा पुजो वंदो हितलाय
प्राते सब बैठे समाभें आय । तब निर्मितिक एक अ्य चेताय ।
राजा प्रजा पूजो नाग देव । होता उपसर्ग मिटे ततुक्षेव ॥
स्वप्न निर्मितिक कीमिली एकवात। सबके मनमें निश्चय आत
मंत्री सामंत सर्व पुर लोक। पूजे नाग देव दीनो धोक ॥

फक्त एक नहीं गये विजदारय। तब देव अतिकोपित थाय
सहश्रोंगमे नागरुप बनाय।प्रचन्ड काले क्रोधे धम धमाय॥
राजघरे अंत उरादिस्थामफिले डरे राणी रक्षक तमास॥
डरे रोवे सब इत उत धायासरप भी उनके पीछेही जाय॥
प्रधानादि नृप से अर्जि करोदेव कोपं आगे नरका क्याचले
इसलिये आप पूजोनागदेव।लोकीक शरम निजहित धरहेत्र
वहां एक नर के अंगमें देवआय।कोपातुरहो कहे सुनराय॥
सर्व मुझमाने तुं अवज्ञा करे। मेरी शक्तीसे जरानहीं डरे॥
एक क्षण में सब कुटुम्ब साथातुझेयम सदनपहोंचावुं नरनाथ
यो कही देव अंतर ध्यानथायाते तले तहां समाचार आय
तीनों राणी तीनों कुमर तांयाअहीकाटा पडे मूरछा खाय
तब गारुडी एक चलआय।सामंत सत्कार करेनमें पाया॥
दया धर गारुडी नृप से कहायह महा जहरी फणी प्राणलहे
मंत्र शक्ति से में करुं आरामासब राखो मन में विश्राम॥
कन्या के अंग नाग देव बोलाय।कहेगारुडी जहर हरोनागराय
कोपी देव कहे सून गारडी वातासब मुझे पूजे सीस नमात
सुखकाट समनहीं नमेराय। अवज्ञा करहु छोडंगा नाय॥
जोनमें तोसत दुःखअति हरूं। औरउपाय सातानहींकरुं
गारुडीकेह यहतो सहजबाता नमोना जोडीनाग केहाथ।
राजाजी वातधेर नहींकान रुडीकेहे तुम जैनीराजान॥
मेभीकुछ जानुंजैन काज्ञान अपवादेन लेनही दोष प्रमान।

छठौंडा में भी यह आगार । नमो राजेश्वर समय विचार॥
राय कहे कायरों को आगार।पाप में साक्षात नहीं लगार२
धन परिवार पाया अनंत वार।धर्म मिलना बहुत दुष्कर कार॥
प्राणांते न नमुं निजस्वार्थ काज।कु देवगुरु और खोटासमाज
आ वीर तूं पक्ष्नावेगा राय।यों कही गारुडी कोपे उठजाय॥
कें डोंगरे भुजंग उत्पन्न भये।रायपरिवार को लपटी गये ॥
एक महा भुजंग अति विकराल।नृप अंग लपटा जैसा काल॥
दंश दिया सर्व अंग करूर।नरक सी वेदना हुइ भरपूर ॥
हाहा कारमचा महल के मांय।तब सुना राणीपुत्र मृत्युपाय
विजयराय सुमेरूसे धीर । जाने होनहार सोहोवे आखीर ॥
सामंत गारुडी बुलाकर लाय।सो कहे क्या करुं नहीं मानेराय
समज २ नृप मन हो धीठ । क्यों गमावे मिली योग्यतानीठ
राय कहे ऐसी बात मत कर।जाने तो दे मुझ प्रश्नउत्तर ॥
जो किस ही ऐसा दंश थाय।कितने दिन सो जीता रहाय ॥
कहे गारुडी उत्कृष्ट छः मास।वेदना वधे,सब पायेत्रास ॥
राय कहे युगांतर ये दुःख देय।तोभी धर्म न छंडू मेय ॥४२॥
अनंत दुःख भोगे अनंती वार।यह दुःख नव दुःख कापनहार
ध्यानस्थ हुए हो परमेष्टि ध्यान।महा मुनिवर विघ्न न थाय॥
देव देख मन अति अचंबभाय।ततक्षण सब ही दुःख विरलाय।
पंचद्रव्य की वृष्टी वहां करी । देवपरषदा अति दिव्य भरी ॥
मुकुट धरा नृप चरण के माय। वारंवार अपराध खमाय ॥

केवल ज्ञान भानु प्रकट भयो।साधु वेष देव आगल ठयो॥
पहरा वेष देव करे जयकार।जानी सब स्वजन हर्ष अपार॥
नर सुर की परिषद भराय।जिनजीतवे सद्बोध सुनाय ॥
तीन नारी तीन पुत्र जय भ्रात।तजी माया सब साधु थात
भुमंडमें फिरी कियो उपकार।केवली गये मोक्षमझार ॥
और भी पाये स्वर्ग विमान।आगे पावेंगे सवा निर्वाण ॥
अर्थ दीपिका ग्रंथानु सार । उत्तरार्ध कही कथासार ॥
सम्यक्त्व यह उत्तम फल।आराधी सुखी बनो अमल ॥

दोहा–शुद्ध सम्यक्त्व को आदरी वि.याविजयरायकल्यन
त्यों सब सम्यक्त्व आदरी।वरो सुख सब जान ॥
निज पर आत्म सुख वरन।मिथ्यादर्शण उद्धार ॥
ऋषी अमोलक ने रचा।ये अष्टदशवा अधिकार॥६१॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के
सम्प्रदाय के बालब्रह्मचारी मुनि श्री
अमोलख ऋषीजी महाराज रचित
ग्रंथाधार कथागार ग्रंथका
मिथ्यादर्शण शल्योद्धार नामे
अष्ट दशवां मंजल

समाप्तम्



शिखर उपसंहार—"सर्व पापोद्धार"

पूर्व विभाग—"पाप"

दोहा—एकेक पाप सेवन करी। पाये दुःख अपार ॥
जोअठारह सेवन करे। उनके क्या हवाल ॥ १ ॥

चोपाइ

१ एकाइ राठोड जीवोंदुभाय। मृगा लोडाहोकर दुःखपाय।
आगे भी भमे वहुत संसार। दुःख विपाक सूत्रे अधिकार व
२ इक्षुराय ममत्व गृही करी। पाप थापा अनत्य ऊवरी ॥
अकाले मर नरके जाय। शलाका ग्रंथ में कथादे पाय ॥ २ ॥
३ अभग्गसेन चोर सत्तावंन। चोरीने दुःख पया अत्यन्त ॥
कुटुम्ब साथ मर नरके गया। वीपाक सूत्रने वीगतो कय ॥
४ काम कुमरकुशील प्रभाव। लाज सुवगन किये एन्नाव

दोनों भव सोदुःख पावीया । कथा सुणी जैसी गावीया ॥
५ सागर शेठ महा परिगृह धार । तृष्ण सेडूबा समुद्र मझार
मरके नरक में पची याजाय । गौतम कुलके कथा कथाय ॥
६ क्रोध कुवचन बंधुमति कहे । बाल विवाहो बहुदुःखसहे॥
दोनों भवमें विपति पाय । गौतम पृच्छा सें कथा कहाय ॥
७ सभुमचक्री मानमें चड़ा । सप्तमुखंड साधन समुद्रे पड़ा।
नरक गया भमेगा जगमांय । शलाका चरित्रे येकथाय ॥
८ पातलसुंदरी माया करी । अत्यन्त दुःख भोगी नरक पड़ी
अर्थदीपीका अंतरगत कथा । माया के फल बताये यथा ॥
९ लोभवसकोणिकभाइसेलडा । चक्रहोवनइच्छासेवलमरा
भाग्यविन मनकीचलेही नहीं । निर्यावलीसूत्र रगूंथे सेकही
१० गगवदत्तपुष्पनन्दी कुमार । चारसेनिन्याणवेराणीसंहार
दोनोंभव पाया दुःख अपार । विपाक सूत्रमें यह अधिकार
११ द्वेपसे दुर्योधन कोटवाल।वहूते दुःख पायाविकराल ॥
भव भ्रमणमें दुःखीया भया । विपाक सूत्रसे कथनये कया॥
१२क्रूरतासे चारों मित्र खेत मांय । वांधिकूपी दीड्जत गमाय॥
जिनदास चरित्र अंतरगत कथा । कूटहोवे दुःख दायी यथा
१३ मत्ता पर कुआल भवभूत दिया । अपयशी होदुर्गति गया
कहानियों की पुस्तक में कथा । मतानुसार कहिये यथा ॥
१४ चकदेव मित्र चुगली करी । मान गमाया दुःख सेभरी ।
सबो भव दुःख अनिही लिया । यह प्रकरणे दृष्टान्त दिया ॥

१५ संत की निन्दाकरी वेगवति । सीताजीहो दुःख सहेअति
सीता चरित्रमें यहअधिकार । परपरीवाद पापदुःख धार ॥
१६ भोगरति दुःख अगनिधर । ब्रह्मदत्तचक्री गये नरक मर ॥
उत्तराध्ययन सूत्र अधिकार ।पापकी गती विचित्र प्रकार ॥
१७ मनमेला मिष्ट वचन उचारी।कालुनाइ नाकइ ब्रनहरी॥
जगमें प्रचलित यहहै कथा । मायामोसा का फल है यथा ॥
महावैरागी जमाली अनगार।निन्हव बने गये किल्बिषिनकार
मिथ्यादर्शण से दुःख पावीया ।भगवती सुत्र में यह गावीया
यों अठारे ही पाप ऊपरी । एकेक कथा की रचना करी ॥
अनंत जीव दुःख भोगे संसार।ऐसेंही सब जानो पाप चार ॥

दोहा–पाप फल को देखने।सोचो यह दृष्टांत ।
सहज कमावे कर्म को।पावे दुःख प्राणांत ॥ २१ ॥
पाप प्रभावे प्राणीया । दुर्गति मांहे जाय ॥
नरक तीर्यंच नर देवता । रहे दुःख बहु पाय [illegible]॥

नरक का वर्णन–चौपाई

अधो लोक में नरक स्थान सात।महाअंधकार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

एक एक तीनपद सात । पाँची जिव कन्हां उपजो दु :खपोतैग।
एकतीनि सात दैश भैतरा जान।बाईस तैतीस सागर आयुमाना
आयु जघन्य धर्ष दशहजार।पहिलै में उत्कृष्ट दूजी जघन्य धारे

नरक के दुःख—इंद्रविजय छंद.

हिंसक को मारे हथीयारों से।झूटे बोले की जबान उखाडे ॥
चोरों को बांधे भार धरे शिर।मैथुनी उष्ण स्थंभ चोंटाडे ॥
परिग्रही के अंगार दे हाथ में।क्रोधी को अतिक्रोध से ताडे ॥
मानी को मरदे मायी को छेतरे।लोभी को अतित्रास देखाडे।
रागी अरु द्वेषिको संताप दे।क्लेशीको अतिक्लेश करावे ॥
अभ्याख्यानीको भेदे भालेसे रु चुगेल की जिव्हा कानछेदावे
निंदक के पीछे कुत्ते लगावत । रैनारती को रोदन करावे ॥
मायामोषी को तोशूलीचडावते।मिथ्यात्वीको नानाविधसतावे

दोहा—यों नाना विध दुःख दे।जिन मत्रं पाप अठार ॥
औरभी विधि बहुत है। करूं संक्षेप उचार ॥२१॥

दशप्रकार की क्षेत्र वेदना—इंद्रविजय छंद.

क्षेत्रकी क्षुधा अनंतही तृषा।अनंतही शीतं सदा पर गाढ॥
अनंत ताप अनंत ज्वरकी चले।अनंत खुजाल सदा अंग दाहे॥
अनंत रोगरु अनंत भोगहै। अनंत भय सदा रहत उर मांहु ॥
अनंत पर वशपनाहिदुःख यह दश।क्षेत्र वेदन नारक मांहे ।

यों नाना विध कर्म कर जिन ।तैसे ही यन तहां दुःख चखावे ॥
तीसरी नरक के नीचे यम नहीं ।तहां आपस में लडत सदाइ
जैसे कोइ नवा कुत्ता आयेसे।अन्य कुत्ते पडे उसपर जाइ॥
पंजे दाँतों से तन तस फाडत । मारके अति त्रास उपजाइ ॥
त्यों तहां नरक में एकेक नेरी येकों।आपसमें मार ताड सताइ
पिंपालिका सम कीडे बनाते।वज्र मुख तास अति तीक्षण ताइ।
आपस में एकेक के तन में उन को भरी आरपरांभेदाइ ॥
चालणी से छिद्र पडे सबतन मेंक्रोडों विच्छु दंश सा सोदुखाइ
पाप प्रभावे पापी नरक में ।अनंतानन्त दुःख भोगे सदाइ ॥

तीर्यंच के दुःख का वरणन–मनहरछंद.

तेंतीस सागर तांइ । सातमी नरक मांइ ।
उत्कृष्ट दुःख भाइ । पापी जीव पावे है ॥
आँख के टमकारे मांही । समय असंख्य थाइ ॥
तेंतीस साग के तो।समय केते थावे हैं ॥
एक एक समयपर तेंतीस सागर दुःख ।
सागर तेंतीस के सम यों का दुःख किती भावे है
तासेही अधिक दुःख निगोद एक भव मांही ।
तीर्थंच के दुःख का तो पार कहा आवे है ॥
सूइ अग्र भाग जित्ती साधारण वनस्पति
यथा दृष्टांत तामे जीव वास पावे है ॥
श्रेणि यों असंख्य श्रेणी २ में प्रतरअसंख्य ।
प्रतर २ गोले असंख्य समावे है ॥

एकएक गोले मांही । असंख्य शरीर राही ॥
प्रेतेक शरीरे जीव । अनंत भरावे है ॥
एक श्वाश मांहे साडी सतरे जन्म मरण ॥
तिर्यंच के दुःख काता । पार कहा आवे है ॥३९॥
पृथवी पाणी रुअग्नि । वायु अरु वनस्पति ॥
एकेके शरीर जीव । असंख्य रहावे है ॥
छेदन भेदन अरु । खांडन पीसन मांही ॥
प्रतिकुल द्रव्य काजो । संयोग मिलावे है ॥
अहो निशी जगत् में । स्थान वर संहार होत ॥
ताको दुःख कौन कहो । गिनतीमें लावे हैं ॥
असंख्य काल तांइ । पापी पचे ताके मांही ॥
स्थावर केदुःख । ऐसे ज्ञानी दर्शावे हैं ॥ ४० ॥
स्थावर सजीव निर्जीव का आश्रय लइ ॥
कीडों कीडी पटमल । जुंवा दिक रहावे हैं ॥
ताको संहारत तेतो । मरत है वीच मांही ॥
केइक अज्ञानी जान । मारत मरावे हैं ॥
हलन चलन लेस देत । केइ मरे और ॥
प्रवाहीक वस्तु मांही। पड दुःख पावे हैं ॥
शीत उष्ण धुम्रजल । आग्नी आदिसे मरने केइ ।
विद्रिंशीने दुःख देने । पापीजीव पावे हैं ॥ ४१ ॥
थलचर गज गाडी गाड़ । देल मेन आदिनाइं ॥

परवश्व पडे वध बन्धन में बंधावे हें ॥
वक्तसिर पेट पूर मिलनहींआहार पाणी ॥
तुच्छ थोडा मिले जब खाय के सो रहावे हें ॥
पहाड खाड झाड बीच काँटे भाटे मांहे खीच ॥
अतिभार भरकर । ताकोही फिरावे हे ॥
तीव्रमार मार । कितने कोस नविचारे ॥
पापीजीव पशुहोके । ऐसे दुःख पावे हे ॥॥ ४२
हिरन सुसले आदि केइ । वनचर जीव ॥
वृक्ष गिरी कन्दरा के आश्रय से रहावे हें ॥
मिलेवन माहें उतना खान पान कर रहे ॥
शीत ताप वृषाऋतु । तीनही सतावे हें ॥
आपसेंमे मार खाय । शीकारी भी मारजाय ॥
अग्नि पाणी वायु आदि । विघन केइ आवे हें ॥
रोग सोग मांय तस शरणन कोई थाय ॥
पापके प्रभावे पशुहो कर दुःख पावे हें ॥ ४३ ॥
जल वासी प्राणी तड फड मेरे जल खुटे ॥
धविरादि रही मारेपचावे हखावे हें ॥
पक्षीको जाल तीर गोली से गिरावे मारे ॥
अन्डे बच्चे पीछे भूखे प्यासे मरजावे हें ॥
पींजरे में बान्धे खान पान कीन सार पुरी ॥
साप उंदर घंस आदि इन भीसतावे हें ॥

केइ तन वल दीनअहो निशी झुरत हैं ॥
लेने का देन का अरु रहने का सहने का दुःख ।
इज्जत रखन केइ करे हिफाजत हैं ॥
केइ म्लेछ देश मांही उत्पन्न हुवे जाइ ॥
पशुसा आचार जाका नगन फिरत हैं ॥
पाप कर पाये दुःख पापही कमावे मुख्य ॥
आगेही दुःखी सो होय पाप फल भरत हैं ॥

देवगति के दुःखका वरणन–मनहर छंद

अकाम कष्ट के जोग पापी पाय देव गत ॥
वांही सदा दुःख सोगे काल गुजरत हैं ॥
अभी योगी देव होय सदा तस कामें चोय ॥
भोगन भोगी सकत मनमें झुरत हैं ॥
देव होय पशुवने नोकरी में सदा घने ॥
नाट किये नाचतरु गंधर्व गावत हैं ॥
किल विषी हीन जात । रुप सुख हीन पात ॥
देव हुवेतोभी ऐसे । पाप को भरत हैं ॥ ४८ ॥
अन्याय करत देव । दूजे धरे तनुखेव ॥
वज्र प्रहार इन्द्र तहे को लगा वता ॥
षटमास तांइ तसतन अग्नि सा दझाइ ॥
रोवन अरडाइ तव महा दुःख पावना ॥



शीखर–उपसंहार–"सर्व पापोद्धार"

उत्तर विभाग "धर्म

दोहा–एकेक धर्म अराध के।पाये सुख अपार ॥
जो आठरह आचेरा।तो निश्चय तरे संसार ॥

चौपाइ

१ परेवा पाला मेघरथ राय । दया धरी अर्पिनिज काय ॥
बाहुबे उत्तम छः पद्वी धार । शांति चारित्र में पे अधिकार।।
२ सुनन्द व्यश्र मानों सेवनो । एक सत्यवृत दृढ लेवतो ॥
[illegible] बना नृप प्रधान । धर्म कथा कोपे में वयान ॥
३ोटाशाह शाग्दी होरया । चोरी न जी चोग्या शाहभया
धर्में धन पाया सुख सार । धर्म कथा कोष अधिकार ॥४॥
४ सुदर्शन शेटशी र ब्रह्मचारी । शूली किटी सिंहासन थाइ

यशः फैलाया तरे संसार । योगशास्त्र ग्रन्थ म अधिकार ॥
५ लक्ष्मी पति रहे सुखी सदा । किंचित दुःखे तजी संपदा॥
तवही पाये केवल ज्ञान । दिगम्बर ग्रंथ में यहवयान ॥ ६ ॥
६ खंधकमुनिकी उतारी चमाडी । महा परिसहेक्षमा आचरी
तेरे क्रोडभवका वैर चुकाय।मोक्ष गये कहा धर्मकथामांय ॥
७ महा विनयवंत नन्दी षेण । देवभी नहीं चला सका तेण
वसुदेव हो सुख पाविये । हरिवंश चरित्र में गाविये ॥८ ॥
८ विमल सुख पाये शरल ताकर।देव अरी हरा के ऋद्धिवर
समल कपट से गया आपमर।धर्मकथा कोषमें उचर ॥ ९ ॥
९ सोमचंद गरीव संतोषधरा।तो घर वैठही धन आपडा ॥
धर्म आराधी सुख पावीया।धर्म कथा मुजवदर्शावेया॥१०॥
१० वैराग्य धर पृथ्वीचंद राज । ग्रही वेशे केवल पायाज ॥
तरण तारण हुवे सो संसार । रत्नप्रकरण में अधिकार ॥
११ समता धारी दमदंत मुनिराय।दुर्गुणी पररहे समलाय
तो भव व्याधी दीनी गमाय।पांडव चरित्र में यहकथाय॥
१२ धन दत्त शेठ रहेसम्य कर।लक्ष्मीयक्ष हुवे चाकर ॥
यशःसुख पाये सो यथा।जिनदास चरित्रे अंतर कथा ॥
१३ मौन वृत धरा सर्वांग सुंदरी।कलंकगमया केवलश्रीवरी
सर्व जन पाये हर्षअपार।जैनकथा रत्नकोष अधिकार॥१४
१४ धरी गंभीरता प्रदेशीराय।महा पापथोड में दियाखपाय
धर्मात्म एका अवतारी होय।राय प्रसेणी सुत्र में लोजोय॥

१५ गुणानुवाद किश कृष्ण नरेश दुर्गंधी श्वानी को प्रशंश।
तीर्थंकर गोत्र उपजिया । जैन कथा रत्न कोष दर्शाविया।
१६ निवृत्ति भाव धरे जंबुकुमार।आप तरे बहुतोंको तार॥
चरम केवली इस काल में भये।जंबूपइना में यों कये ॥
११ शरल सत्य केशी गोतम धरी।धर्म चरचा से एक श्रद्धकरी
जगत् में धर्मज फेलादीया । उत्तराद्धेन सुत्र फरमावीया ॥
१८ दृढ सम्यक्त्वी विजयराजान।ग्रहस्थाश्रमें लिया केवलज्ञा
सम्यक्त्व धर्म अतीफेलावीया।जैनकथा रत्न कोष गाइया ॥
यों अठोरहीं धर्म ऊपरी । एकेक कथाकी रचना करी ॥ २०॥
अनंतजीव सुख पाये संसार।ऐसा ही जानो धर्म उपकार ॥

दोहा—धर्म फलको दाखने।सोचे यह दृष्टान्त ॥
मुशकिल स निपजेखरो ।पण सुख देत अनन्त ॥
पाप तजो धर्म आचरो । शुद्ध आचार विचार ॥
करो तारो निज आत्मा । जन्म पाया को सार ॥
धर्मी धर्म प्रशाद से । सदा रहे सुख मांय ॥
आगेभी सद्गति वरे । छेवट मोक्ष सो पाय ॥ २३

नरक में सुख का वरणन—चोपाइ छंद.

धर्मी जन नहीं नरक में जाय । निश्चय मनुष्य देव गति पाय
परन्तु पहिले आयु बंध किया। ताजोगे कभी नरक में गया॥
वो पूर्व पाप के संच प्रभाव । क्षेत्र वेदना सहे समभाव ॥
जिससे दुःख थोडासा लगे । कर्म क्षय करने उमंग जगे ॥

कर्म उदय जान समता धरे । अन्य को पीडा नहीं सो करे ।
अन्य उसे पीडा नउपजाय । यम देव भीतस छिटकाय ॥
स्वल्प काल पूरा कृत भोग । तम से थोडे में होय निरोग ॥
आग उंचगति सो पाय । धर्म करणी के फल प्रगटाय ॥२॥

तिर्यंच के सुखका वरणन्—छपय छन्द

धर्मी जीव मर कर तिर्यंच गति में नहीं जावे ॥
पूर्व आयु बन्ध जोग अरु व्रत भंग प्रभावे ॥
कदापि होय तिर्यंच सो जुगल पनाही पावे ॥
देव जैसे सुख भोग तीन पल्य तहां रहावे ॥
फिर मर होवे देवता । आगे सुधेर गति सही ॥
धर्म सदा सुख कार । जावे तहां साथेरहा ॥२८॥
कर्म भुमी में होय तो।पशु ऊंच पद धारे ॥
अश्व रू गज रतन । देव सेव तस सारे ॥
मिले इच्छित खान पान सयनादि सुख कारे ॥
काम विशेष ना पडे काल यों सुखे गुजारे ॥
कुगति में सुगति समां, धर्म सुख दाता होवेसही॥
धार सुखेच्छु धर्म, जावेतहां साथही रही ॥ २९ ॥
मनुष्य गति के सुख का वरणन्—मनहर छंद.
उत्तराध्यायन तीजामहो । दिया जिन फरमाइ ॥

दशबोल जोग तहां धर्मी जीव आवे है ॥
बाग रु सदन बहुत, धन धान पूर्ण होत ॥
गोआश्वादि पशु दास बोलएक कहावे है ॥
मित्र न्याति गोती घने, ऊंच गोत्र रुपवंत ॥
निरोगी बदन महा प्रज्ञा बुद्धि पावे है ॥
अभीजात यशवंत वलिष्ट यह बोल दश ॥
होय तहां धर्मी जीव आकर सुखी रहावे है॥३०॥
तीर्थंकर पद पाय । इन्द्रा दिकों से पुजाय ॥
जुगली यों की इच्छा सदा कल्प वृक्ष पुरावे हैं ॥
चक्रवर्ती बने बलदेव वासुदेवपने ॥
मंडलिक सामान्यराज सेना पति थावे है ॥
शेठ गथापति रुपटेल आदि ऊंच पद ॥
पाकर सुख संपति सदैव विलसावे है ॥
आचार्य उपाध्याय । मुनि श्रावक समदृष्टी ॥
ज्ञान ध्यान तप कर । मुक्ति सो सिधावे है॥३१॥

देवगति का वरणन्-चोपाइ छंद

देवनाकेहैं चारप्रकार । भवनपति व्यांन्तर जोतिषी धार ॥
विमानिक रहतेहैं उर्द्धलोक । स्वर्ग छव्वीसका है थोक ॥
[illegible] इशांन सनंतकुमार। महेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्रसहसार ॥
आनं पांन आरण अरु अंचुत। यहकल्प बारह मर्यादि सुत ॥

भद्रे सुभद्र सुजात सुमानस । सुदंशण प्रियदंसण वास ॥
आमोए पडिभेद्र अमोधर । यह नव ग्रीवेकउचर ॥ ३४ ॥
विजय विजयंत जयंतेवर।अपराजित सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर ॥
यहचउदह कल्पातीतजान ।अहमेंद्र स्वेच्छारहे सुखमान ॥
अधोलोकमें भवनपतीरहे । मध्यमें व्यं.र जोतिषीकहे ॥
परमाधामी भवनपतीमांय । त्रिझमक व्यंन्तरमे समाय ॥
लोकांतीक छट्टस्वर्गपास । किलविषी एकदो छट्टेवास ॥
ऐसेदेवके रहनेका स्थान । उपजतजीव करनपिरमान ॥
भवनवासी आयुएकसागर । व्यन्तरका आयुष्यपल्यभर ॥
पल्यझाझेरा जोतिषीकाजान । विमानिकका आगेवयान ॥
दोसागर पहिले दूसरे देवलोक।सातसागर तीसरे चोथरोक ॥
पांचमेंदश चउदेहैंछह । सातमेंसतरेवर एकएकअधिकलेह ॥
सर्वार्थसिद्धमें सागरतेतीसायेउत्कृष्टआयु जघन्यवरणीश ॥
दशसहश्रवर्ष पहिलेदोस्थान।जोतषीमें पल्पआठ भागमान॥
दोस्वर्गमें एकपल्यजान।आगेनीचे उत्कृष्टसो जघन्यवरठान॥
जो अधिक करणी धर्म की करे।सो उंचा जायअधिक सुखवरे॥

देवताके सुख का वरणन–मनहर छंद.

धर्मी पावे देवगत । कल्पोत्पन्नामें उपजत ।
देव देवी जाने तव । आय के वधावे हैं ॥
अभिशेप कराय, वस्त्र भूषण सजाय ॥

तहां नाटीक निपाय । सहश्रों वर्ष ही बीतावेहैं ॥
सामानिक आत्मरक्ष । त्रयांत्रीस परिषद ।
सात सेना अग्रम हर्षी।आदि ऋद्धि बहु आवे है॥
रत्नो के विमान । रूप करत इच्छा फरमान ॥
ऐसे देवता के सुख धर्मीजन पावे हे ॥ ४२ ॥
जितने सागर आय उतने सहश्र वर्ष मांय॥
होत भूख की इच्छाय ।तृतीही तब आवेहैं ॥
सागर जे ते पक्षजान।लेते श्वासोस्वास मान ।
होत भोग में गुलतान।सहश्रों वर्षही बीतावे हैं ॥
कल्पातीत मांय फक्त साधुजी मरके जाय ।
ताके भोग इच्छा नाय।ज्ञान ध्यान मग्न रहावे हैं॥
यह तो कहा कूछ सार।सुख देव के अपार ॥
निजकरणी अनूसार । तहां धर्मी जन पावे हैं ॥

मोक्षके सुख का वरणन् –अरल छन्द.

आराधक उत्कृष्ट धर्म पाप तजतहै ॥
वोसय कर्म खपाय मुक्ति पद भजत है ॥
मुक्ति के सुख अनंत अनोपम जिन कहे ॥
पुनरावर्ति नाकरे जोसिद्ध स्थाने रहे ॥ ४३ ॥
अक्षय अव्याधाध चलत्र शिव स्थान हे ॥

वर्ण गंध रस स्पर्श वेद नहीं वान हैं ॥
जन्म जरा रोग सोग मरण सब दुःख दहीं ॥
अनंत ज्ञान दर्शन परणामिक पण रही ॥ ४५ ॥
दोहा—धर्म प्रशाद से जीवयों।चारों गति के मांय ॥
सुख अनुभव लेतहे । आगे सो मोक्ष पाय ॥ ४६॥
भगवइ अंग जिन कहे । पाप अठारह त्याग ॥
अरूपी आत्मिक गुण है । प्रगटे तेसुभाग ॥ ४७ ॥
मिष्ट फल यों धर्म के । प्रत्यक्षही देखाय ॥
ज्ञानं जान हितेसे गृहे । सोही सदा सुख पाय ॥

अंतिमसार-इन्द्रविजय छन्द

इत्यादि बोधसुनी महावीर को। भव्य हृदय अमृत सेभरायो ॥।
त्याग्य मिथ्यात्व अवल जिने। सम्यक्त्व रत्न प्रिति दृडसायो ॥
देशसे त्याग हुवे केइश्रावक। सर्व तजे सो मुनिपद पायो ॥
श्रवन पठन मनन कोसारेय। धार अमोल जन्म सुधरायो ॥
केइक भारी कर्मी पाषाणसे। जिन बोधसे नहीं हृदयभेदायो
पुद्गला नन्दमें राच रहे जेह। ताको आत्मानन्द नाहींसुहायो
निश्चय भव्यतव्य तासो होवइ।तहां कहा चाल संत उपायो
दविरि गइ परिषदा तव। सदा रहो यह आनन्द छायो ॥



विज्ञाप्ति—हरगीत छंद.

अघोद्धार कथा आगार यह ग्रन्थ रचना जो करी ॥
जितनी सुमत्यनुसार ग्रन्थाधार सुनि गुनि ऊचरी॥
आशय पाप उद्धार आत्म सुधार की मन में धरी॥
यह लक्ष धर पाठक श्रोता गुण ग्रहो दुर्गुणपरहरी।
प्रत्यक्ष पाप प्रभाव से वृतमान में दुःख बढ रया ॥
अनेक रोग दुष्काल दुःखसे भारत खंड पीडित भया
कुमत्य और कदाग्रह कर सत्य प्रेम मन से गया ॥
अनूप यह सत्य समजो जो सद्बोध इस में कथा ॥
प्रत्यक्ष धर्म प्रभाव से वृतमान में सुखी देखिये ॥
दया सत्य शीलवंत के घर कुटुंब संपती पेखिये ॥
सन्मान के गान पंथ में चित्त निर्मल हर्ष विशेषिये
अनुभव लखो अंतस में यों धर्म के फल लेखिये ॥
अहो भव्य गणो! सुख इच्छको! विशेष कहा क्या कीजिये।
दुःख सुख के पंथ यह बताये इच्छा होवे सो लीजिये ॥
दुर्गुण तजो सद्गुण भजो यह विनंति चित्त दीजिये ॥
अमोल आत्मिक आपका धर्मात्मा सुखी कीजिये ॥
चोवीस में जिन महावीर को चोवीस सो वर्ष होगया ॥
अडतालीसा दीपवाली को यह ग्रंथ सम्पूर्ण भया ॥

सुस्थान चारकमान हैद्राबाद, (दक्षिण.)देश में ॥
लाला सुखदेव शाहय दीहे जगह रहे यहां सदा एस में॥
श्री महावीर के पाटानुपाट आचार्य पद्वी पाविया ॥
पूज्य कहानजी ऋषिकी सम्प्रदाय जग में धर्म दीपावीया।
महात्मा खूबाऋषिके शिष्य केवल ऋषिजी मुनि ॥
सेव में रहे अघोद्धार कथागार रचा अमोलक मुनि ॥६॥
जिनराज ज्ञान विरुद्ध अशुद्ध लेख जो इस में किया ॥
तो मिथ्या दुष्कृत उचरी शुद्ध करुं निजपर जिया ॥
वक्ता श्रोता के आनन्द मंगल जय विजय धर्म की रहो ॥
आत्मिक सुख सम्पति वर कर सर्व परमानंद लहो ॥७॥

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषीजी महाराज के सम्प्रदायक
महात्मा श्री खूबा ऋषीजी महाराज के शिष्यवर्य
आर्यमुनिश्री चेना ऋषीजी महाराजके शिष्यबाल
ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषि जी रचित
अघोद्धार
कथागार
नामक
ग्रंथ
समाप्त



अघोद्धार कथागार ग्रंथका–शुद्धिपत्र.

☞ पाठक गणों ! अव्वल निम्न लिखे मुझब शुद्धकर फिर यत्नासे पढियेजी.

पृष्ठ.	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध
१	७	व्रद्ध	वृद्ध
२	१६	ननरकेकेंअां	नरक के अं
३	२१	सुख।	सुखन
४	८	स्मनृद्धी	समृद्धि
५	१	अल्प	अल्प
,,	२	हैं	तहां
,,	१६	बहुतगा	बहूतगांव
,,	१९	बहु	वड
६	२०	त ाल	तमाल
,,	६	ढोर ढोर	ठोर ठोर
,,	८	ढैंक	ढेंक
,,	९	चालि	चोल
,,	,,	पपय	पपैया
,,	१०	हादे	होद
,,	,,	झरणा	झरणों
,,	१५	सपर्थवीशाठ	पृथवी शिला
८	१	विघापते	वियापति
,,	२	सघन	साधन
९	२	बोपये	बोध पाये
,,	४	देशवकोशो	दे सर्व कोशा
,,	१६	वपु	वपु
१२	१४	शद्द	शब्द
१३	१८	ईन	ईन
,,	१९	भग	जग
१४	२	केइल	केईक
,,	२	नुन	न्युना
,,	१२	परसिहझापेतां	परिसहझोपेत
१६	१२	क्षत्र	प्रेत्र
१८	१८	औडझो	आईझो
,,	१९	तष्णा	तृष्णा
२२	१८	कता	कर्ता
२३	१३	तिनने	तितनेनें
२४	१	चेल	चले
२५	३	वदन	वंदन
,,	८	वदन	वद्न
,,	,,	स्थंभ	स्थंभन
२९	१०	रे	०
२९	११	का॥	करे
३१		प्रभा	प्रपाति
३२	११	अपक्षेतं	अपेक्षंत
३५	१०	अमडो	चमडो
३७	३	व्रष्ठ	पृष्ठ
३९	१९	झिन	झित
४१	२०	डिके	फोडे
४३	२०	मगा	मृगा
४८	६	गोतमजी	गोतमजी
५१	१७	जानसाया	जान लिया
,,	नोट	भागवे	भोगवे
५६	१०	पथ	पथ्य
,,	१३	पत्ना	यत्ना से
६२	७	छोड	छोडो
६३	०	छ.डो	छोडो
६३	२१	काळ	काळके
६९	१४	अमसन	असन
,,	१५	असत्र	असत्त
७०	४	च.रे	चं.र
७३	१३	यहैं	हैं॥
७६	७	हैहै	हैं
८०	६	आय	आवो
८४	१४	सूनि	मुनि
१०५	४	हाथे	आते
१०६	११	कने	करने
११०	२	युक्तो	यूनतो
,,	११	विजर	अनाग
११३	१५	देरवे	देखे
११४	३	अदव	दत्त
११५	८	वद्यानो	विद्वानो
११६	१०	विजय	इंद्रविजय

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध.
११९	१४	स्रब	सब
,,	१६	हेयु	वेयु
१२१	३	सघाट	सचाट
१२३	८	द्राता	पात
१२५	१	जो	ज्यों
,,	२	जहेनके	जनके हे
१२५	५	ऐसे	से ऐसे
,,	१२	अवस्मो	अधस्मा
,,	२०	येहेतसि	ये हे तसि
१२६	१७	जांवों	जांवो
,,	२०	वायदु	डुवाय
१२८	११	वनरअरूय	वने अरू
,,	१२	भृनने	भृण्यंन
१२९	४	सर मोघे	सा रमाघे
,,	७	राज	राम
१३१	७पक्रगाधाकम हे देखा शुद्धिपत्र-के अन्त में		
१४४	१	कुक्छ	कुछ
१५५	१४	टल	टल
१५८	१७	काल	कार
१६६	६	१६	दा६
१६८	२	रवूम	खुरा
१७१	८	श्रोता	श्रोता
१७७	७	७व	७कर
१८९	१७	निकाजित	निकांचित
१९५	३	अपमान	अममान
१९६	९	जेव	जीव
१९७	२	पाय	पाप
,,	,,	ओं	वों
,,	१२	सा	सों
२००	३	अनाघो	पताओ
२०१	१०	मुसा	मुखी
२१६	१७	घता	घात
२२१	२१	लाके	लोक
२२२	९	सलम	समल
२२४	१२	उक्ष	उष्ण
२२५	६	बोहिर	वाहि
,,	१५	भाट	भट

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध.
२३१	१	ये हे	गय हे
२३२	१७	नानराय	नानरम्य
२३४	१२	आपिन	आपने
२३६	४	फेकर	६कर
२३७	११	मय	भया
२३८	१४	जम	जर
२४०	१०	दूट	टुटे
२४३	६	ऊपरर	ऊपर
२४४	२०	निकाल	निकलन
२४५	१०	मट्टा	मटा
,,	१५	चरू	चरू
,,	१७	चुपक	चुपका
,,	२०	लनधवा	लंघाधन
२४६	१४	हवीलो	हवला नेद
२४७	३	६कारन	प्रकार के
२५२	११	निन्यणव	निन्य पंव
,,	१६	रादोड	रोडोड
,,	१८	द्वदत्ता	देवदत्ता
,,	२०	केन्या	केन्या
२५३	५	वेठाव	वेठाय
,,	१८	तायेच	तियंच
,,	,,	याय	थाय
,,	२०	थाम	थाय
२५४	४	उफ	एक
२५७	१५	।द्दहा	दोहा
२६४	२	द्देप	द्वप
२७१	७	प्रगममावे	प्रगमावे
२७५	१७	यगया	मन गया
२७९	५	भइ	भाइ
२८१	१४	जुगमें	जूग हिंदमें
२८६	११	शास्र	शास्त्र
२८९	१६	उसक	उसके
२९०	१	यघाइ	बधाइ
,,	८	कुत्र	कुटुम्ब
२९१	१४	दखाइ	दखाड
२९२	७	दकेरू	दकेरू
,,	१५	हप	हर्प
,,	१७	घटनले	वटने

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
२९२	९	आन	आय
"	१६	दुन्त	दृष्टांत
"	"	दान	दाय
"	१७	सद्दाय	सहाय
२९६	६	भखती	भखी
२९६	७	इर्यी	इर्या
२९७	१	शोखावे	देखावे
"	१७	स्याहै	स्यावेहै
२९८	१७	विंषय	विषय
२९९	१४	हायेय	हाय
३०२	७	रना	रनाइ
"	१०	नारव	नार
३०५	१	आवइ	आवेहै
३०७	१	विकारेर	विलारी
३०८	१६	प्रकटेर	प्रकट
	२०	अय	उाय
३१०	२	धाप	घोप
३११	१७	पखखान	पचखान
३१४	१०	दहुं	वहुं
३१४	१	ह्रं	हर्ष
"	८	ञ	ञ ञ
३१६	३	दखदव	दखदेव
३१७	४	कि I	किसा
"	,	[illegible]	[illegible]
३२१	१४	[illegible]	[illegible]
३२०	१	मे चीर	मे चोरी
"	११	[illegible]	[illegible]
३२२	६	[illegible]	[illegible]
३२५	७	[illegible]	[illegible]
"	९	[illegible]	[illegible]
३२४	८	[illegible]	[illegible]
३२८	११	[illegible]	[illegible]
३२१	१४	[illegible]	[illegible]
"	"	[illegible]	[illegible]
"	१७	[illegible]	[illegible]
३३७	१	[illegible]	[illegible]
"	६	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
"	१४	लद्दाइ	ल्दाइ
३४४	२	ल्यने	लोंके
३४५	८	पद्रलो	पुद्गलो
३५१	२	[illegible]	[illegible]
"	१२	गी	यो
३५२	४	लाय	आय
३६०	६	नेटा	मोटा
३६१	१८	आया	आपा
३६४	१७	सुना	सुनाय
"	११	[illegible]	[illegible]
३६८	१२	मनरी	संमारी
"	"	परनेन	परनाम
"	१७	पाले	पावे
३६९	१	मनावे	[illegible]
२७२	३	आन	आव
३७३	१४	लहोस	[illegible]
३७४	१	सर्प	[illegible]
३७६	४	नहीं	[illegible]
३७९	१४	[illegible]	[illegible]
३८०	१४	[illegible]	[illegible]
३८६	६	[illegible]	[illegible]
३८९	७	[illegible]	[illegible]
[illegible]	८	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१०	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१७	[illegible]	[illegible]
"	१८	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१७	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१२	[illegible]	[illegible]
"	१७	[illegible]	[illegible]
"	१८	[illegible]	[illegible]
"	११	[illegible]	[illegible]
"	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	२	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
११९	१४	सब	सघ	२३१	१	ये है	गय है
,,	१६	हेयु	देयु	२३२	१३	नानगाय	नामरस
१२१	३	सघाट	सचाट	२३४	१२	आंपन	आपने
१२३	८	दाता	पात	२३६	८	कंकर	कंकर
१२५	१	जो	ज्यों	२३७	११	भय	भया
,,	२	जहैनके	जनके है	२३८	१४	जभ	जर
१२५	५	पेसे	से पेसे	२४०	१०	टूट	टुटे
,,	१२	अचम्मो	अधम्मो	२४३	६	ऊपरर	ऊपर
,,	२०	येहेतसि	ये है तसि	२४४	२०	निकाल	निकाल्ल
१२६	१७	जांवो	जांवो	२४५	१०	मट्ठा	मद्दा
,,	२०	वायडु	डुवाय	,,	१५	चरू	चरू
१२८	११	घनरअरूय	वने अरू	,,	१७	चुपक	चुपक
,,	१२	भृनने	भूपवने	,,	२०	लनधवा	लवेधन
१२०	४	सर मोघे	सा रमाये	२४६	१४	हवीली	हवेला तेह
,,	७	राज्ञ	राग	२४७	३	प्रकारन	प्रकार के
१३१	उपक्रगाथाक्रम है देखो शुद्धिपत्र के अन्त में			२५२	११	निन्यपाव	निम्य पावे
१४४	१	कुकछ	कुछ	,,	११	राहोड	गोहोड
१४५	१४	टल	टल	,,	१८	दयदत्ता	देयदत्ता
१४८	१७	फाल	कार	,,	२०	केन्या	केन्या
१६६	६	।इ	दाइ	२५३	५	वेठाव	वेठाय
१६८	२	खूम	खुश	,,	१८	तीर्यच	तिर्यंच
१७५	८	श्रोता	श्रोता	,,	,,	याय	थाय
१७७	७	श्व	श्वर	,,	२०	थाम	थाय
१८९	१७	निकाजित	निकाचित	२५४	४	उक	एक
१९५	३	अपमान	असमान	२५७	१५	।दहा	दोहा
१९६	९	जेव	जीव	२६४	२	ढदेप	द्वेप
१९७	२	पाय	पाप	२७१	७	प्रगममावे	प्रगमावे
,,	,,	आं	घां	२७५	१७	यगया	मन गया
,,	१२	सा	सां	२७९	५	भइ	भाइ
२००	३	अनाघों	घताओ	२८१	१४	जुगमें	जूग हिंदमें
२०१	१०	मुसा	मुसी	२८६	११	शास्र	शास्त्र
२१६	१७	घता	घात	२८९	१६	उसक	उसके
२२१	२१	लाके	लोक	२९०	१	पधाइ	वधाइ
२२२	९	सलम	समल	,,	८	कुत्र	कुटुम्ब
२२४	१२	उक्ष	उष्ण	२९१	१४	देखाइ	देखाड
२२५	६	वोहिर	वाहि	२९२	७	ढंकेरू	ढकेरू
,,	१५	भाद	भद	,,	१५	हप	हर्ष
				,,	१७	घटनेल	घटते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	ओली	अशुद्ध	शुद्ध
१११	१४	सब	सघ	२३१	१	ये है	गये है
„	१८	हेतु	हेतु	२३२	१७	नामराय	नामरस्य
१२१	३	मघाद	सचाद	२३४	१२	आपन	आपने
१२३	४	दाता	पात	२३६	४	फेकर	देकर
१२४	१	जो	ज्यों	२३७	११	भय	भया
,	२	जहेनके	जनके है	२३८	१४	जम	जय
१२६	५	पेसे	से पेस	२४०	१०	टूट	टूट
,	११	अधरमो	अधरमी	२४३	६	ऊपरर	ऊपर
,	२०	येहेतमि	ये है तमि	२४४	२०	निकाल	निकालन
१३२	१३	जोवो	जीवो	२४५	१०	मट्टा	मद्दा
„	२०	वायदु	बुवाय	„	१५	चरू	चरू
१३०	११	पनरअरुय	पने अरू	„	१७	चुपक	चुपका
,	१२	भनन	भूधनन	„	२०	लेनधया	लेबोधन
१३४	४	मर माये	मा रमाये	२४६	१४	हथीली	हुयदा तेह
„	७	राज	राम	२५०	३	ऽकारन	प्रकार के
१३८	अरुमायाकम है देखो शुद्धिपत्र के अन्त मे			२५२	११	निन्यणाय	निम्ब णाय
१४४	१	कुवछ	कुछ	„	१६	राहोड	रांहोड
१४६	१४	टल	टल	„	१८	दुयदसा	देवदसा
१४८	१३	काल	कार	„	२०	पेम्या	केम्या
१६८	६	११	राइ	२५३	५	पेडाय	पेडाय
१६८	४	न्तुम	न्तुत	„	१८	तोर्यच	तिर्यच
१७४	८	धोता	धाता	„	५	याय	घाय
१७७	३	प्य	प्यर	,	२०	थाम	थाय
१८१	१३	निकालित	निकाचित	२५४	४	उक	एक
१८४	४	अपमान	अममान	२६३	१४	देहा	दोहा
१८६	९	अव	आय	२६४	२	दोप	द्वप
१९३	२	पाय	पाग	२७१	७	प्रममाये	प्रनमाये
„	„	बा	वा	२७५	१३	यगया	मन गया
„	१४	मा	मो	२७९	१०	भा	भाई
२०४	३	बनायो	बताओ	२८१	१३	जुगमे	जुग हिरमे
२०९	१०	मुम्रा	मुम्रो	२८६	११	दाम्य	दाम्य
२१८	१३	घना	घान	२८९	१८	उमक	उसके
२२१	२१	टाक	टाक	२९०	१	पचाइ	पथाइ
२२४	९	समल	समल	„	८	कुछ	कुछुम्य
२२८	१४	दुम	दुम	२९१	१४	दयाइ	दयाइ
२३०	६	वांदिर	वांदर	२९४	७	दंकर	ढूंकर
„	१४	आइ	मइ	„	११	इन	इन
				„	१२	पटने	पटने



पृष्ठ.	ओलि.	अशुद्ध	शुद्ध.
	१८	ग्यों	त्यों
०५	१	नीच	नीचे
०६	१	कतहां	तहां
	७	दु श्चपातीर	दु चपात
	३	हजी	दुजे
०९	९	स्थानपर	स्थ वर
१०	६	मार	मार

पृष्ठ	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४११	३	मयह	मनहर
४१३	१	सुद्धि	शुद्धि
४१४	७	धोतुरउत्तम	धांती न थतुर्थ
४१६	१	उपाजत	उपार्जित
„	५	धडुकारी	छद्मकारी
„	७	कगल्ह	दे मग्रान
४२०	२	धर्म	पुण्य
„	४	फ-मान	पामान

पृष्ठ ११० की ७ वी ओली के नीचे दो ओलीयो रहगइसो नाकरता शील नाशाही पायाउयों ठ्हाउपीक प्रेहेंद्री भाजाप नित्यप्रत नहींकेरसरस आहाग|जिमनेजागृक होवेंकाम विकार

☞ इन अशुद्धियों सिवाय औरभी ह्रस्व दीर्घ काना मात्रा अक्षर चरणोला या पिंगल सम्बन्धि बहुतसी अशुद्धियें छद्मस्थबुद्धि दृष्टिदोष वकंपो जिटर की अविज्ञता से रहगई है उन सब को स्वमत्युनुसार सुधार कर ग्रंथ कर्ताके आशयको तरफ लक्ष रख सर्व दुर्गुणों को त्याग कर पढिये और सद्गुणों का स्वीकार कीजीये पापकात्यागकर धर्मात्माबन अनन्त आनन्दीबनीये ! येही नम्र विनंती हैजी.

वीरसंवत्सर २४३९ अमोलखऋषि.
भाद्रव पूर्णीमा जैनस्थान चारकमान हैद्राबाद.

